राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 243

मूल्य ₹6.00, नई दिल्ली, रविवार, 9 फरवरी 2020

www.jagran.com

पृष्ठ 16

बोबडे बोले, मुकदमे से पूर्व अनिवार्य मध्यस्थता वाले कानून के लिए यह सही वक्त >>3

सरोकार

वाह उस्ताद नहीं, वाह बोड़ाम बोलिये जनाब

जमशेदपुर : पूर्वी सिंहभूम, झारखंड के बोड़ाम प्रखंड का आंधारझोर गांव

वाद्ययंत्रों के लिए विख्यात है। यहां 200 वर्षों से पारंपरिक वाद्ययंत्र बनाए जा रहे हैं। बोड़ाम के ढोल, नगाड़ा, मांदर, मृदंग, तबला, ताशा और ड्रम की धमक दूर-दूर तक है। (पेज-15)

रविवार विशेष

सोशल मीडिया पर मचा रहे धूम, कमाई भी बूम-बूम

नई दिल्ली : टेक ज्ञान से ब्रेक डांस और कॉमेडी तक, सोशल मीडिया के सुपर

स्टार करोड़ों दिलों पर राज कर रहे हैं। यही कारण है कि 18 साल का टिकटोअर युवराज सिंह बॉलीवुड में छा गया है। (पेज-15)

एक्जिट पोल में फिर केजरीवाल सरकार

अनुमान ▶ दिल्ली में आप की प्रचंड बहुमत से वापसी की संभावना, भाजपा की सीटें बढ़ने की उम्मीद, लेकिन सत्ता से बहुत दूर

पिछले चुनाव जैसी रह सकती है कांग्रेस की स्थिति

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

दिल्ली विधानसभा चुनाव के नतीजे भले ही मंगलवार को आएंगे, मगर तमाम एक्जिट पोल के अनुमानों से साफ है कि आम आदमी पार्टी (आप) लगभग प्रचंड बहुमत के साथ सत्ता में धमाकेदार वापसी कर रही है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के पक्ष में साफ दिख रही लहर पर सवार आप सूबे में 50-60 से भी अधिक सीटें हासिल कर सकती है। एक्जिट पोल के अनुसार जनता केजरीवाल के काम और चुनावी वादों पर पूरी तरह मुहर लगाती दिख रही है। वहीं, शाहीन बाग के जबर्दस्त विरोध के इर्द-गिर्द केंद्रित भाजपा का राष्ट्रवाद का धुआंधार चुनावी अभियान एक्जिट पोल में धराशायी होता दिखाई दे रहा है। जबकि केजरीवाल की इस आंधी में कांग्रेस की जमीन दिल्ली में पूरी तरह लुटने के करीब पहुंच गई है।

जिसके सिर पर माता-पिता का आशीर्वाद होता हो उसके साथ ईश्वर स्वयं होते हैं। आज वोट डालने से पहले माता-पिता का आशीर्वाद लिया और फिर उनके साथ वोट डालने गया। मेरे बेटे ने पहली बार अपना वोट डाला।

अरविंद केजरीवाल, मुख्यमंत्री दिल्ली

ये सभी एक्जिट पोल फेल होंगे। मेरा यह ट्वीट संभाल कर रखिएगा। दिल्ली में भाजपा 48 सीटें लेकर सरकार बनाएगी। कृपया ईवीएम को दोष देने का अभी से बहाना न ढूंढें।

मनोज तिवारी, दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष

दिल्ली में वोटिंग के बाद सभी टीवी चैनलों के एक्जिट पोल नतीजों ने एक सुर में अरविंद केजरीवाल की दिल्ली की सत्ता में धमाकेदार वापसी का अनुमान जाहिर किया है। सटीक चुनावी आकलन के लिए चर्चित आजतक-एक्सिस के एक्जिट पोल के अनुसार आम आदमी पार्टी को दिल्ली में करीब 56 फीसद वोटों के साथ 59-68 सीटें मिलने का अनुमान है। जबकि भाजपा पिछले विधानसभा चुनाव के बाद करीब तीन फीसद मत बढ़ाते हुए 35 फीसद वोट हासिल कर रही है। लेकिन इसके बाद भी भाजपा को केवल 2 से 11 सीटें ही मिलने की उम्मीद है। जबकि कांग्रेस का पिछले चुनाव की तरह इस बार भी खाता खुलने की उम्मीद नहीं है। कांग्रेस के लिए गहरी चिंता की बात यह भी है कि पिछले चुनाव के मुकाबले उसका वोट प्रतिशत भी लगभग आधा होता हुआ पांच प्रतिशत तक सिमटता दिख रहा है। एक्जिट पोल के इन आंकड़ों से साफ है कि कांग्रेस का वोट बैंक पूरी तरह केजरीवाल के खाते में शिफ्ट हो गया है और इसीलिए आप की सीटों की संख्या 2015 के चुनाव परिणामों के आस-पास फिर से पहुंच सकती है। एबीपी-सी-वोटर के एक्जिट पोल में भी केजरीवाल की लहर का अनुमान लगाया गया है और इसके अनुसार आप को कम से कम 49 से लेकर अधिकतम 63 सीटें मिलने की संभावना जताई गई है। भाजपा को 5 से 19 सीट मिलने की उम्मीद है तो कांग्रेस को इसमें शून्य से चार सीटों के बीच अटकता हुआ आंका गया है। टाइम्स नाउ-इप्सोस के एक्जिट पोल में आप को 47 सीटों के साथ सत्ता मिलते हुए दिखाया गया है तो भाजपा को इसमें सबसे अधिक 23 सीटें मिलने की उम्मीद जताई गई है।

मध्यम वर्ग और महिलाओं का भी मिलता दिखा जबर्दस्त समर्थन पेज>>2

एक्जिट पोल (सीटें 70)

संस्था	आप	भाजपा+	कांग्रेस+
एबीपी-सीवोटर	49-63	5-19	0-4
सुदर्शन न्यूज	41-45	24-28	1-2
टाइम्स नाउ-इप्सोस	47	23	0
टीवी 9 भारतवर्ष-सिसरो	54	15	1
रिपब्लिक टीवी-जन की बात	48-61	9-21	0-1
इंडिया न्यूज-एनइटीए	53-57	11-17	0-2
न्यूज एक्स-पोलस्टार्ट	50-56	10-14	00
आज तक-एक्सिस माय इंडिया	59-68	2-11	0
इलेक्शन चस्का	48	19	3

मतदान में सुस्त पड़ी दिल्ली, 61.67 फीसद पड़े वोट

नई दिल्ली : दिल्ली विधानसभा चुनाव की 70 सीटों के लिए शनिवार को 61.67 फीसद मतदान हुआ। मतदान का यह आंकड़ा दिल्ली में वर्ष 2008 के बाद हुए सभी विधानसभा चुनावों के मुकाबले न्यूनतम है। मुस्लिम बहुल इलाकों में बड़े पैमाने पर मतदान हुआ, जबकि पॉश कॉलोनियों में मतदान का फीसद अत्यंत कम रहा। (पेज-2)

न्यूज गैलरी

राज-नीति ▶ पृष्ठ 3

बुजुर्गों के लिए देश भर में खुलेंगे डे-केयर सेंटर

नई दिल्ली : बुजुर्गों को सरकार अब अकेला नहीं छोड़ेगी, बल्कि उनकी जरूरतों व सुख- सुविधाओं का पूरा ख्याल रखेगी। इसी कड़ी में सरकार ने घरों में अकेले रहने वाले बुजुर्गों के लिए देश भर में डे- केयर सेंटर खोलने की योजना बनाई है जहां उन्हें नाश्ता, भोजन, समाचार पत्र, खेलकूद जैसी सारी सुविधाएं मिलेंगी।

नेशनल न्यूज ▶ पृष्ठ 6

निवेशक शिखर सम्मेलन के लिए मिले 50 करोड़

श्रीनगर : केंद्र शासित जम्मू-कश्मीर राज्य में आयोजित होने वाले अपनी तरह के पहले वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलन के प्रचार-प्रसार, आने वाले मेहमानों की आवासीय सुविधा व यात्रा के लिए सभी तैयारियों को अंतिम रूप देने के केंद्र सरकार ने 50 करोड़ रुपये भी उपलब्ध करा दिए हैं।

बिजनेस ▶ पृष्ठ 12

मजबूत स्थिति में है देश की इकोनॉमी : सीतारमण

चेन्नई: सुस्ती की बहस के बीच वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इकोनॉमी की वर्तमान स्थिति पर संतोष जताया है। 'जन-जन का बजट' नामक कार्यक्रम में कारोबारियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि इस समय देश की इकोनॉमी अच्छी स्थिति में है, खासकर वृहत अर्थव्यवस्था के संकेतक अपने सुनहरे दौर में हैं।

स्पोर्ट्स ▶ पृष्ठ 14

रिकॉर्ड पांचवें खिताब पर है युवाओं की नजर

नई दिल्ली : गत चैंपियन भारत पहली बार फाइनल में पहुंचे बांग्लादेश के खिलाफ दक्षिण अफ्रीका के पोचेफ्रस्टूम में रविवार को अंडर-19 विश्व कप फाइनल में रिकॉर्ड पांचवीं बार खिताब जीतने के प्रबल दावेदार के रूप में उतरेगा। इस मैच में टीम इंडिया के यशस्वी जायसवाल, स्पिनर रवि बिश्नोई और तेज गेंदबाज कार्तिक त्यागी के प्रदर्शन पर सबकी नजरें रहेंगी।

करतारपुर कॉरिडोर पर पाकिस्तान का नया पैंतरा

इस्लामाबाद, एजेंसियां : करतारपुर कॉरिडोर पर पाकिस्तान ने नया पैंतरा चला है। पाकिस्तान के गृह मंत्री इजाज शाह ने कहा है कि उनका देश गुरुद्वारा दरबार साहिब के लिए भारतीय श्रद्धालुओं को बिना पासपोर्ट के करतारपुर गलियारे में प्रवेश देने के प्रस्ताव पर विचार कर रहा है। उन्होंने कहा कि इसका मकसद और अधिक आगंतुकों को आकर्षित करना है।

पिछले साल नौ नवंबर में पाकिस्तान और भारत ने अपनी-अपनी सीमा के अंदर इस गलियारे का अलग-अलग उद्घाटन किया था। भारतीय क्षेत्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, तो पाकिस्तान में वहां के प्रधानमंत्री इमरान खान ने गलियारे का उद्घाटन किया था। यह गलियारा भारतीय सिख श्रद्धालुओं को पाकिस्तान में नारोवाल के करतापुर में पवित्र गुरुद्वारा दरबार साहिब पहुंचने के लिए सबसे छोटा मार्ग उपलब्ध कराता है।

करतारपुर साहिब में गुरुनानक देव ने अपने जीवन के आखिरी 18 साल गुजारे थे। उन्होंने 1504 में रावी नदी के तट पर करतारपुर में सबसे पहले सिख समुदाय को बसाया था। शाह ने नेशनल एसेंबली

भारतीयों को पासपोर्ट मुक्त प्रवेश पर कर रहा विचार, इसका मकसद अधिक आगंतुकों को आकर्षित करना है

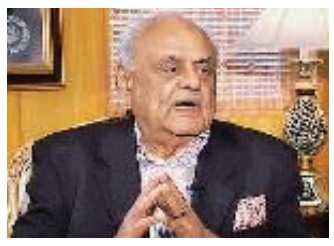

पाकिस्तान के गृह मंत्री एजाज अहमद शाह की फाइल फोटो। ट्विटर से

में प्रश्नकाल के दौरान कहा कि फिलहाल भारत से हुए समझौते के तहत भारतीय श्रद्धालुओं को बिना पासपोर्ट के करतारपुर गलियारे में जाने की इजाजत नहीं है। लेकिन, और अधिक पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए उन्हें बिना पासपोर्ट के आने देने के प्रस्ताव पर विचार किया जा रहा है।

इस समय यह है नियम पेज>>5

मध्य प्रदेश के थप्पड़ कांड में जा सकती है डीजीपी की कुर्सी

भोपाल: मध्य प्रदेश के चर्चित कलेक्टर थप्पड़ कांड से पैदा हुए आइएएस-आइपीएस विवाद की आंच प्रदेश के पुलिस मुखिया (डीजीपी) वीके सिंह तक पहुंच गई है। राज्य सरकार ने उन्हें हटाने की जमीन तैयार कर ली है। सिंह पर आरोपों की फेहरिस्त काफी लंबी है, लेकिन थप्पड़ कांड में कलेक्टर निधि निवेदिता के खिलाफ कार्रवाई के लिए गृह विभाग को उनका पत्र व उत्तर प्रदेश की तर्ज पर मध्य प्रदेश में भी पुलिस आयुक्त प्रणाली लागू करने का खुला समर्थन सरकार से तकरार का बड़ा सबब है। (पेज-4)

चीन में कोरोना वायरस से पहली बार दो विदेशियों की मौत

बीजिंग, एजेंसियां : महामारी का रूप लेते जा रहे कोरोना वायरस से चीन के वुहान शहर में पहली बार दो विदेशी नागरिकों की मौत हुई है। इनमें अमेरिका की एक महिला और जापान का एक पुरुष शामिल है। इनको मिलाकर शनिवार तक चीन में मरने वालों की संख्या 723 हो गई है, जबकि 34,598 लोग इससे संक्रमित पाए गए हैं। यह आंकड़ा 200-03 में सार्स नामक बीमारी से हुई 774 लोगों की मौत के करीब पहुंचते जा रहा है। चीन की सरकार इससे निपटने की तमाम कोशिश कर रही हैं। (पेज-13)

भारत-श्रीलंका दोस्ती की मजबूती पर मोदी और राजपक्षे ने लगाई मुहर

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

भारत-श्रीलंका के दोस्ताना रिश्तों को गति देने की प्रतिबद्धता के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्रीलंका की नई सरकार से वहां के तमिल अल्पसंख्यकों की सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित किए जाने की पुरजोर वकालत की। श्रीलंका के पीएम महिंदा राजपक्षे के साथ द्विपक्षीय बातचीत में मोदी ने श्रीलंकाई संविधान के अनुरूप तमिलों के अधिकारों को लेकर बेबाक रुख अपनाया। वहीं दोनों देशों के मैत्रीपूर्ण रिश्तों को मजबूती देने के लिए सभी मुद्दों को सुलझाने में मानवीय नजरिये को तवज्जो देने पर हामी भरी।

श्रीलंका में हुए चुनाव में राष्ट्रपति चुने गए गोतबाया राजपक्षे के सत्ता में आने के बाद प्रधानमंत्री बने महिंदा राजपक्षे अपनी पहली विदेश यात्रा पर भारत आए हैं। मोदी के साथ हैदराबाद हाउस में द्विपक्षीय बैठक में दोनों नेताओं के बीच दिखी गरमाहट से साफ है कि राजपक्षे नई पारी में चीन की तरफ एकतरफा झुकाव की पुरानी राह पर नहीं चलेंगे। इसीलिए अपने छोटे भाई गोतबाया के पहले विदेश दौरे के लिए भारत को चुनने के बाद महिंदा ने भी मोदी से मुलाकात को पहली वरीयता दी है। इनके राष्ट्रपति रहते चीन का श्रीलंका पर प्रभाव बढ़ गया था, जिससे भारत के साथ उसके रिश्तों में काफी खिंचाव आ गया था। लेकिन, मैत्रिपाल सिरिसेन की सरकार ने भारत से निकटता रखकर चीन से रणनीतिक दूरी बनाए रखी। अब राजपक्षे ने भी भारत से दोस्ती और चीन के साथ संतुलित संबंध बनाए रखने का संदेश दिया।

मोदी ने वार्ता के दौरान पुराने दौर से आगे निकलकर भारत-श्रीलंका के मैत्रीपूर्ण रिश्तों को आम लोगों के स्तर पर बढ़ाने पर खास जोर दिया। मोदी ने बैठक के बाद संयुक्त प्रेस कांफ्रेंस के दौरान कहा कि श्रीलंका में शांति बहाली से संबंधित मुद्दों पर हमने खुले मन से बातचीत की। हमें विश्वास है कि श्रीलंका सरकार एकीकृत श्रीलंका के भीतर समानता, न्याय, शांति और सम्मान के लिए तमिल लोगों की अपेक्षाओं को साकार करेगी। मोदी ने साफ कहा कि इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए श्रीलंका के संविधान में 13वें संशोधन को लागू करने के साथ-साथ सुलह की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जाए। मोदी ने कहा कि भारत और श्रीलंका अनादि काल से पड़ोसी ही नहीं घनिष्ठ मित्र भी हैं। चाहे सुरक्षा हो या अर्थव्यवस्था या सामाजिक प्रगति, हर क्षेत्र में हमारा अतीत और भविष्य एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है।

मोदी ने कहा कि श्रीलंका में स्थायित्व, सुरक्षा और समृद्धि भारत के हित में तो है ही, पूरे हिंद महासागर क्षेत्र के हित में भी है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भी शांति और खुशहाली के लिए हमारा घनिष्ठ सहयोग बहुमूल्य है। हमारी सरकार की 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति और सागर डॉक्ट्रिन के अनुरूप हम श्रीलंका के साथ संबंधों को प्राथमिकता देते हैं।

- **मोदी ने तमिल अल्पसंख्यकों की सत्ता में भागीदारी तय करने की वकालत की**
- **नई पारी में चीन की तरफ एकतरफा झुकाव की राह पर नहीं चलेंगे राजपक्षे**

आतंकवाद की समस्या पर भी हुई बातचीत पेज>>3

अब सीपी जोशी बोले-लागू करना ही होगा सीएए

जागरण संवाददाता, जयपुर

कांग्रेस के दिग्गज नेता कपिल सिब्बल और सलमान खुर्शीद के बाद अब राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी ने नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) को लेकर स्पष्ट किया है कि यह कानून राज्य सरकार को लागू करना ही होगा। कांग्रेस में राष्ट्रीय महासचिव व यूपीए सरकार में केंद्रीय मंत्री रहे जोशी ने कहा कि नागरिकता कानून केंद्र का विषय है, ना कि राज्य का। ऐसे में केंद्र द्वारा इस पर बनाए गए कानून को राज्यों को लागू करना ही पड़ेगा। गौरतलब है कि राजस्थान की अशोक गहलोत कैबिनेट ने सीएए के खिलाफ पिछले दिनों संकल्प पारित किया था। कांग्रेस भी इसका विरोध देशभर में कर रही है।

राजस्थान में कांग्रेस सरकार भले ही नागरिकता संशोधन कानून (सीएए), राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) और राष्ट्रीय पब्लिक रजिस्टर (एनआरपी) के खिलाफ हो, मगर विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी इससे इत्तेफाक नहीं रखते हैं। जोशी शुक्रवार को उदयपुर के मीरा कन्या महाविद्यालय के कार्यक्रम में शिरकत करने पहुंचे तो उन्होंने न सिर्फ प्रतिभावान छात्राओं को पुरस्कृत किया, बल्कि संविधान पर विस्तार से व्याख्यान भी दिया। संविधान की इसी व्याख्या के बीच उन्होंने केंद्र और राज्य सरकार के विषय को अलग-अलग तरीके से समझाया। डॉ. जोशी का यह बयान चर्चा में बना हुआ है, क्योंकि कांग्रेस शासित राज्य सरकारें अपने प्रदेश में सीएए को लागू नहीं करना चाहती हैं। पंजाब और छत्तीसगढ़ सरकार तो बाकायदा इसके खिलाफ प्रस्ताव भी पारित कर चुकीं हैं।

डॉ. सीपी जोशी। जागरण आर्काइव

- **कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने छात्राओं को संबोधित करते हुए संविधान पर दिया व्याख्यान**
- **कहा- नया कानून केंद्र सरकार का विषय है न कि राज्य सरकार का**
- **पार्टी के नेता कपिल सिब्बल और सलमान खुर्शीद पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं स्थिति**
- **राजस्थान सरकार ने खिलाफ में पारित किया है प्रस्ताव, कांग्रेस कर रही है विरोध**

केंद्र से कानून वापस लेने की गहलोत ने की थी मांग : राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत तो सीएए और एनआरसी को प्रदेश में लागू नहीं होने देने का एलान कर चुके हैं। उन्होंने जनभावना का हवाला देते हुए केंद्र सरकार से इस कानून को वापस लेने की मांग भी की थी।

विरासत

उप्र के रामपुर में है नवाब मिक्की मियां खानदान का स्ट्रांग रूम, गैस कटर वालों ने खड़े कर दिए हाथ, स्ट्रांग रूम को बनाने के लिए लंदन की छब कंपनी के इंजीनियर बुलाए गए थे

बंकर से ज्यादा मजबूत नवाब खानदान का स्ट्रांग रूम

मुस्लेमीन, रामपुर

राजा-महाराजाओं के दौर में शाही खजाने को सुरक्षित रखने के लिए किस कदर जतन किए जाते थे, इसका अहसास उप्र के रामपुर स्थित नवाब मिक्की मियां खानदान के स्ट्रांग रूम ने करा दिया है। इस स्ट्रांग रूम की बाहरी दीवार में चार गुणे सात फीट का दरवाजा है, लेकिन उसकी चाबी गुम हो जाने से इसे खोलने के लिए काटा जा रहा है।

आज के आधुनिक समय में भी तीन दिन के प्रयास के बाद भी स्टील से बने स्ट्रांग रूम की बाहरी दीवार की तीन परत ही काटी जा सकी है। अब लॉकर का दरवाजा दिख तो रहा है, लेकिन उसकी भी चाबी गुम हो जाने से उसे भी काटना पड़ेगा। फिलहाल काटने का काम यह जानने के लिए रोक दिया गया है कि आखिर इसके लिए उचित तरीका क्या अपनाया जाए। पांच माह पहले सुप्रीम कोर्ट ने शरीयत के हिसाब से बंटवारा करने के आदेश दिए। नवाब खानदान की कोठी खासबाग का भी सर्वे हो रहा है। इसी कोठी में नवाब खानदान का स्ट्रांग रूम है, जिसमें शाही खजाना रहता है।

उत्तर प्रदेश के रामपुर में कोठी खास बाग में बने स्ट्रांग रूम का गेट। जागरण

स्ट्रांग रूम की बाहरी दीवार की चौड़ाई-ऊंचाई करीब 20 गुणा 20 फीट है। नवाब खानदान की बहू नूरबानो ने बताया कि 1930 में उनके ससुर नवाब रजा अली खां के पिता नवाब हामिद अली खां ने कोठी खासबाग का निर्माण कराया था, तभी स्ट्रांग रूम बना था। उन्होंने बताया कि स्ट्रांग रूम को बनाने के लिए लंदन की चब कंपनी के इंजीनियर रामपुर आए थे। इसमें जर्मनी की उस स्टील का इस्तेमाल किया गया, जिससे फौज के टैंक बनाए जाते हैं।

नूरबानो का दावा है कि स्ट्रांग रूम पर यदि बम बरसाए जाएं, तब भी इस पर असर नहीं होगा। इस दीवार में 16-16 एमएम धातु की तीन परत है। इसमें ही चार गुणे सात फीट का एक दरवाजा है। काटने के दौरान मिले मिश्रण एवं लोहे के महीन टुकड़ों को जांच के लिए गुरुग्राम भेजा है ताकि पता चल सके कि इसमें कौन-कौन सी धातु मिली हैं।

ये हैं खासियत

- रामपुर में खासबाग 12 किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है, इसी में कोठी खासबाग बनी है।
- आलीशान कोठी को इस तरह बनाया गया कि भीषण गर्मी में भी पूरी तरह ठंडी रहे, आसपास तापमान भी पांच डिग्री कम रहता है।
- कोठी में ढाई सौ कमरे और सिनेमा हॉल सहित कई बड़े हॉल हैं।
- कोसी नदी किनारे बनी इस कोठी के चारों ओर बाग हैं, जिसमें एक लाख से ज्यादा पेड़ लगे हैं।
- कोठी यूरोपीय इस्लामी शैली में बनी है। यहां के बड़े बड़े हाल बर्माटीक और बेल्जियम ग्लास के झूमरों से सजाए गए हैं।

147 मतदाता 100 साल से ज्यादा उम्र के हैं दिल्ली में, जबकि 2,04,830 मतदाता 80 साल से अधिक उम्र के हैं।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 9 फरवरी 2020

मतदान में सुस्त पड़ी राजधानी, 61.67 फीसद पड़े वोट

लोकतंत्र का पर्व ▶ मुस्लिम बहुल इलाकों, अनधिकृत कॉलोनियों, झुग्गियों व ग्रामीण इलाकों में हुआ अधिक मतदान, पॉश कॉलोनियों में वोट फीसद अत्यंत कम रहा

वर्ष 2008 के बाद से किसी भी विधानसभा चुनाव में दिल्ली के मतदाता नहीं रहे इतने उदासीन

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

दिल्ली विधानसभा चुनाव की 70 सीटों के लिए 61.67 फीसद मतदान हुआ। मतदान का यह आंकड़ा दिल्ली में 2008 के बाद हुए सभी विधानसभा चुनावों के मुकाबले न्यूनतम है। मुस्लिम बहुल इलाकों में बड़े पैमाने पर मतदान हुआ, जबकि पॉश कॉलोनियों में मतदान का फीसद अत्यंत कम रहा। उत्तर-पूर्व जिले में सर्वाधिक 65.24 फीसद, जबकि दक्षिण-पूर्व दिल्ली जिले में सबसे कम 54.89 फीसद मतदान हुआ। इसी के साथ ही कुल 672 प्रत्याशियों का भविष्य ईवीएम में कैद हो गया। अब सभी की नजर 11 फरवरी को आने वाले नतीजों पर है। मतदान के दौरान हिंसा की एक-दो घटनाएं और ईवीएम खराब होने के कुछ मामले अवश्य सामने आए, लेकिन आमतौर पर मतदान शांतिपूर्ण रहा।

मतदान केंद्रों पर रहीं लंबी लाइनें : राजधानी के 2,688 मतदान केंद्रों के 13,751 बूथों पर मतदान आठ बजे सुबह शुरू हुआ, लेकिन उसके करीब एक घंटे पहले से ही कई मतदान केंद्रों पर मतदाताओं की लंबी लाइनें लग गई थीं। विशेष तौर पर झुग्गी बस्तियों, अनधिकृत कॉलोनियों, ग्रामीण क्षेत्रों व मुस्लिम बहुल इलाकों में मतदान को लेकर भारी उत्साह देखा गया। मतदान की अवधि शाम छह बजे खत्म होने के बाद भी 103 मतदान केंद्रों पर मतदाताओं की लाइन लगी हुई थी। मुस्लिम बहुल विधानसभा क्षेत्रों में से मुस्तफाबाद में सर्वाधिक 70.55 फीसद, मटियामहल में 68.36 फीसद, जबकि सीमापुरी में 68.08 फीसद मतदान हुआ।

दिल्ली में पहली बार 12 विधानसभा क्षेत्रों में मतदाता पर्ची पर प्रकाशित क्यूआर कोड को स्कैन कर मतदान कराया गया। ये व्यवस्था विधानसभा क्षेत्र सुल्तानपुर माजरा, सीलमपुर, छतरपुर, बल्लीमारान, बिजवासन, त्रिलोकपुरी, राजौरी गार्डन, शकूरबस्ती, नई दिल्ली, रोहतास नगर व जंगपुरा के सभी मतदान केंद्रों के साथ ही दिल्ली कैंट के आठ मतदान केंद्रों पर भी लागू की गई थी। इसके कारण कई केंद्रों पर मतदान की प्रक्रिया धीमी रही और कुछ जगहों पर मतदाताओं को परेशानी हुई।

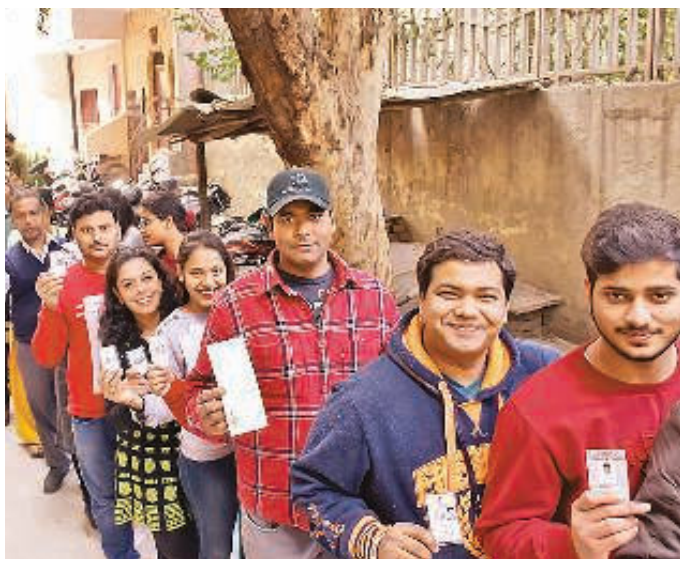

करोल बाग के कृष्णा गली स्थित मतदान केंद्र के बाहर मतदाताओं की लगी कतार। पारस कुमार

कलितारा मंडल ने भी किया मतदान। जागरण

दिल्ली की सबसे बुजुर्ग महिला ने दिया वोट

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : ग्रेटर कैलाश विधानसभा के चितरंजन पार्क में दिल्ली की सबसे बुजुर्ग मतदाता 111 वर्षीय कलितारा मंडल ने शनिवार को मतदान किया। उनका जन्म वर्ष 1908 में हुआ था। मतदान के बाद कलितारा ने कहा कि वोटर आइडी बनने के बाद मैंने सभी चुनावों में मतदान किया है। वोट देते वक्त मैं खुशी महसूस करती हूं। मतदान मुझे मेरी शक्तियां बताता है इसलिए सभी लोगों को मतदान करना चाहिए। वहीं, ग्रेटर कैलाश-2 में 92 वर्षीय अमृतलाल खन्ना ने कहा कि मुझे बुजुर्ग न समझो। अगले चुनाव में फिर वोट डालूंगा। चिराग दिल्ली में 87 साल की सत्तो देवी ने निगम स्कूल में बनाए गए मतदान केंद्र में सुबह से सबसे पहले वोट डाला। वह व्हीलचेयर पर आई थीं। उनके साथ पति भगवान, पुत्र योगेंद्र व घर की सदस्य सावित्री व पौत्र देवाशीष ने भी वोट डाला। देवाशीष ऑस्ट्रेलिया में पढ़ाई करते हैं। वोट डालने के लिए वह विशेष रूप से दिल्ली आए थे। उधर, ग्रेटर कैलाश विधानसभा क्षेत्र के सीआर पार्क में किरनमयी दास (90), एससी पॉल (88) व रेखा दास (73) अपने परिवार के सदस्यों के साथ वोट डालने पहुंचे।

चुनावी दंगल में दिखे लोकतंत्र के खूबसूरत रंग

संतोष कुमार सिंह, नई दिल्ली

चुनाव प्रचार अभियान की तरह मतदान के दिन भी राजधानी की फिजा हर पल बदलती रही। नेताओं के बीच जहां जुबानी जंग होती रही, वहीं कार्यकर्ता दिनभर पसीना बहाते रहे। आरोप-प्रत्यारोप, नोकझोंक, हल्की झड़प और नाराजगी के साथ ही उत्साह व उत्तेजना के बीच मतदाताओं ने अपना फैसला ईवीएम का बटन दबाकर दे दिया है। अब सभी को 11 फरवरी का इंतजार है, जब ईवीएम में बंद सूरमाओं के भविष्य खुलेंगे।

कार्यकर्ता जहां अपने उम्मीदवारों को जीत दिलाने के लिए जी-तोड़ कोशिश करते दिखे तो मतदाताओं ने भी लोकतंत्र के इस उत्सव में बढ़ चढ़कर भाग लिया। रिठाला सहित कई स्थानों पर कार्यकर्ता आपस में भिड़ते रहे तो कहीं एक-दूसरे पर तंज कसते दिखे। इसके विपरीत कई मतदान केंद्रों से कुछ दूरी पर अलग-अलग पार्टियों के टेबल के पास टोपी लगाकर खड़े कार्यकर्ता हंसी-मजाक कर रहे थे। कड़वाहट भरे चुनाव प्रचार अभियान के बाद कार्यकर्ताओं का यह मिजाज संदेश दे रहा था कि यह लोकतंत्र का पर्व है और इसमें कटुता का कोई स्थान नहीं है। इस हंसी मजाक के बीच मतदाताओं को अपने टेबल पर बुलाने और हाथ जोड़कर अपने प्रत्याशी के समर्थन की मूक अपील करने को लेकर भी वह सजग थे। कई मतदान केंद्रों पर क्यूआर कोड वाली वोटर पर्ची दी जा रही थी। जिनके पास यह पर्ची नहीं थी, उन्हें मतदान करने में दिक्कत आई और कई वंचित रह गए, जिससे उनमें नाराजगी थी। त्रिलोकपुरी में साहिल परिवार के साथ वोट देने आए थे, लेकिन उन्हें वापस लौटा दिया गया। इसी तरह से मोबाइल लेकर वोट देने पहुंचे मतदाता भी सुरक्षा कर्मियों से उलझते दिखे। द्वारका में विजय का कहना था कि चुनाव आयोग को मोबाइल रखने की व्यवस्था करनी चाहिए। इसी तरह से कई स्थानों पर लोगों को वाहन खड़ा करने में परेशानी हुई। इन सबके बीच आदर्श मतदान केंद्र, पिंक बूथ पर पहुंचे मतदाताओं को वीआइपी होने का एहसास हो रहा था।

फूलों से हुआ स्वागत, मोबाइल रखने को मिला लॉकर : प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में बनाए गए एक-एक आदर्श मतदान केंद्र पर लोगों को काफी बेहतर सुविधाएं मिलीं। स्वागत के लिए गुब्बारे और फूलों से सजे हुए गेट बनाए गए थे। जिस रंग के गुब्बारे गेट पर लगाए गए थे, उसी रंग का पंडाल और टेंट भी लगाया गया। इन केंद्रों पर मोबाइल रखने के लिए लॉकर की सुविधा देने के साथ ही लाइन में लगकर इंतजार करने के बजाय बैठने के लिए सोफे लगाए गए थे। क्रेच की व्यवस्था भी की गई थी, जिससे जब तक महिलाओं ने मतदान किया, बच्चे क्रेच में खेलते रहे।

विस और लोस में मतदाताओं की पसंद अलग-अलग

विस चुनाव 2015			विस 2013		लोस 2019		लोस 2014	
वोट पड़े 67.47%			66.02%		60.60%		65.10%	
पार्टी	सीटें	वोट%	सीटें	वोट%	सीटें	वोट%	सीटें	वोट%
आप	67	54.3	28	29.5	0	33	0	33
भाजपा	3	32.2	31	34.1	7	46.6	7	46.6
कांग्रेस	0	9.7	8	24.5	0	15.2	0	15.2
अन्य	0	3.8	3	11.9	–	–	–	–

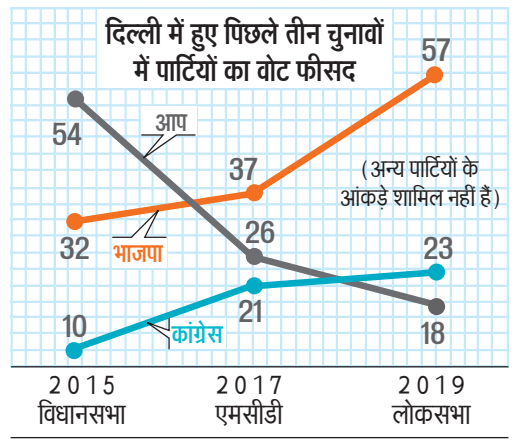

कतार में लग डाला वोट, शाम को धरने पर पहुंचे

अरविंद कुमार द्विवेदी, नई दिल्ली

करीब दो माह से पूरे देश में नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) व एनआरसी के विरोध में आंदोलन का केंद्र बने शाहीन बाग के लोगों ने शुक्रवार को विधानसभा चुनाव में जमकर मतदान किया। शाहीन बाग पर देश-दुनिया की नजर रही। हर कोई यहां के मतदाताओं का रुख देखना चाहता था। मतदान केंद्रों के बाहर वोटरों की लंबी कतारें लगी थीं। ओखला विधानसभा क्षेत्र के शाहीन बाग, जामिया नगर, बटला हाउस, ओखला गांव, अबुल फजल एंक्लेव, जाकिर नगर, नूर नगर, जोगाबाई, जोगाबाई एक्सटेंशन, गफ्फार मंजिल आदि के मतदान केंद्रों पर भीड़ के कारण पैर रखने की जगह नहीं थी। तैमूर नगर गांव व खिजराबाद गांव में भी वोटरों ने जमकर मतदान किया। इसके बाद शाम को शाहीन बाग के धरनास्थल पर लोग पहुंचे और पहले की तरह विरोध-प्रदर्शन किया।

तंग गलियों में वोटरों का हुजूम : शाहीन बाग के ठोकर नंबर आठ, बटला हाउस व अबुल फजल एंक्लेव के निगम स्कूल में बने मतदान केंद्रों पर सुबह छह बजे से ही मतदाता उमड़ने लगे थे। गलियों तक में लंबी लाइनें गई थीं। पूरे इलाके में पुलिस व अर्धसैनिक बलों के जवान तैनात थे।

विधानसभा चुनाव में शाहीन बाग प्रचार का मुख्य केंद्र बिंदु बना रहा। शनिवार को यहां के अबुल फजल एंक्लेव स्थित एसडीएमसी स्कूल में मतदान के लिए बने बूथों पर लंबी-लंबी कतारें लगी रहीं। विपिन शर्मा

स्थानीय लोगों का कहना है कि दिल्ली के किसी भी चुनाव में उन्होंने इतनी जबरदस्त वोटिंग पहले कभी नहीं देखी थी।

बारी-बारी वोट डालने आए लोग : जामिया नगर व शाहीन बाग में सुबह पुरुष मतदाता बड़ी संख्या में वोट देने पहुंचे। दोपहर होते-होते महिलाओं की संख्या भी बढ़ने लगी। शाहीन बाग पब्लिक स्कूल, शाहीन बाग ठोकर नंबर-8, ओखला स्कूल, एसडीएमसी बालिका स्कूल आदि पर सुबह करीब आधा किमी लंबी लाइन लग गई। वहीं, दोपहर होते-होते महिलाएं भी वोट देने के लिए पहुंचने लगीं तो ये कतारें और बढ़ती गईं। दरअसल, सुबह पुरुषों की भीड़ ज्यादा थी इसलिए महिलाओं ने इंतजार किया, पर भीड़ कम न होते देख वह भी कतार में लग गईं।

चलने तक नहीं थी जगह : बटला हाउस की गलियों में चलने की जगह नहीं मिल पा रही थी। पुलिस को अनाउंसमेंट कराना पड़ा कि जो लोग वोट डाल चुके हैं, वे अपने घरों को लौट जाएं। इसके बावजूद लोगों की भीड़ कम नहीं हो रही थी।

मुंबई वाली के जवाब में तापसी बोलीं, 'मैं दिल्ली वाली ही हूं'

सुशील गंभीर, नई दिल्ली: अभिनेत्री तापसी पन्नू ने मुंबई से आकर रोहिणी विधानसभा क्षेत्र में परिवार के साथ मतदान किया। इसके बाद उन्होंने फोटो सोशल मीडिया पर शेयर किया और दूसरों को भी वोट डालने के लिए जागरूक किया। तापसी के ट्वीट पर एक यूजर ने लिखा कि मुंबई वाले क्यों तय करेंगे कि दिल्ली में किसकी सरकार बने। इस पर तापसी ने करारा जवाब दिया कि मेरी नागरिकता पर सवाल उठाने की जरूरत नहीं है। मेरी आय का टैक्स दिल्ली को जाता है और मैं दिल्ली वाली ही हूं।

तापसी ने सोशल मीडिया पर पिता, मां और बहन के साथ वोट डालने के बाद फोटो शेयर की थी। तापसी ने लिखा मुंबई से खासतौर पर वोट डालने के लिए आई हूं। यहां घर पर किसी को आने का अंदाजा भी नहीं था। पन्नू परिवार ने वोट डाल दिया, आप भी वोट जरूर दें क्योंकि हर वोट जरूरी है। इस पर एक यूजर ने टिप्पणी करते हुए कहा कि मुंबई में रहने वाले लोग हमारे लिए सरकार क्यों तय कर रहे हैं। काफी समय हो गया है तापसी को मुंबई में रहते हुए और उन्हें अपना वोट भी शिफ्ट करवाना चाहिए। इस पर तापसी करारा जवाब दिया।

बॉलीवुड अभिनेत्री तापसी पन्नू (दाएं से दूसरी) ने अपने परिवार के साथ दिल्ली विधानसभा चुनाव में मतदान के बाद अंगुली पर लगी स्याही दिखाती हुईं। प्रेट्र

मध्यम वर्ग और महिलाओं का भी मिलता दिखा जबर्दस्त समर्थन

▶ प्रथम पृष्ठ का शेष

न्यूज एक्स-पोल स्टार्ट के एक्जिट पोल में आप को 50 से 56, भाजपा को 10 से 14 तो कांग्रेस को शून्य सीटें मिलने का अनुमान लगाया गया है। रिपब्लिक चैनल के एक्जिट पोल में भी केजरीवाल की आंधी चलने का अनुमान लगाया गया है जिसमें करीब 52 फीसद वोटों के साथ आप को 48-61 सीटें जीतते हुए दिखाया गया है। भाजपा को 38 फीसद वोट के साथ 9 से 21 सीटें जीतने की स्थिति में आंका गया है। तो कांग्रेस को पांच फीसद वोट के साथ अधिकतम एक सीट मिलने की गुंजाइश है।

एक्जिट पोल के सभी अनुमानों से स्पष्ट है कि दिल्ली में आप को दलित-मुसलमान, गरीब, छात्रों ही नहीं मध्यम वर्ग और महिलाओं का भी जबर्दस्त समर्थन मिलता दिख रहा है। चुनाव नतीजों के इस अनुमान से यह भी साफ है कि मुफ्त बिजली, पानी, महिलाओं की मुफ्त बस यात्रा, वाई-फाई के साथ दिल्ली में शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में केजरीवाल सरकार के कामों पर लोगों ने न केवल मुहर लगाई है बल्कि इन्हें आगे जारी रखने के आप के वादे पर भी भरोसा किया है। भाजपा के आक्रामक राष्ट्रवादी प्रचार और कांग्रेस के रोजगार दिलाने व दिल्ली की पुरानी विरासत लौटाने के वादे को जनता ने पूरी तरह से ठुकरा दिया है।

केजरीवाल ने देर शाम बुलाई बैठक

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने मतदान के बाद इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) की सुरक्षा को लेकर अपने आवास पर एक बैठक बुलाई। इस बैठक में उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, पार्टी के दिल्ली संयोजक गोपाल राय, वरिष्ठ नेता संजय सिंह एवं पार्टी के रणनीतिकार प्रशांत किशोर मौजूद थे। इस दौरान स्ट्रांग रूम में जमा ईवीएम की सुरक्षा को ज्यादा पुख्ता करने के उपायों पर विस्तारपूर्वक चर्चा हुई।

बैठक में मौजूद सभी नेताओं ने ईवीएम की सुरक्षा को लेकर मुख्यमंत्री और पार्टी संयोजक केजरीवाल के साथ अपने विचार साझा किए और उन्हें कुछ सुझाव भी दिए। इस दौरान एक्जिट पोल को लेकर भी चर्चा हुई जिसमें कहा गया कि परिणाम इससे भी बेहतर आएंगे।

कम मतदान ने बढ़ा दी भाजपा की चिंता

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

दिल्ली विधानसभा चुनाव में पिछली बार के मुकाबले कम मतदान हुआ। मतदाताओं की इस उदासी से राजनीतिक पार्टियों खासकर भाजपा की चिंता बढ़ा दी है। पार्टी के कई नेताओं को लग रहा है कि मतदान में गिरावट की वजह मध्यम वर्ग की उदासीनता है और इसका सीधा नुकसान उसे होगा। पार्टी के शीर्ष नेता मतदान फीसद को लेकर चिंतित थे। उनकी चिंता का कारण कुछ माह पहले हरियाणा विधानसभा चुनाव के अनुभव को लेकर था।

हरियाणा में मतदान फीसद में गिरावट से भाजपा को नुकसान हुआ था। भाजपा के शीर्ष नेताओं को लग रहा था कि कहीं दिल्ली में भी मतदान फीसद कम न हो जाए, इसलिए वे मतदाताओं को घर से बूथ तक पहुंचाने को बड़ी चुनौती मान रहे थे। इसे लेकर वे कई दिनों से बूथ प्रबंधन को मजबूत करने में लगे हुए थे। बूथ कार्यकर्ताओं को ज्यादा से ज्यादा मतदान कराने के लिए काम करने का निर्देश दिया गया था। सांसदों को उनके काम की निगरानी करने की हिदायत दी गई थी। बावजूद इसके पिछले विधानसभा चुनाव की तुलना में इस बार लगभग सात फीसद कम मतदान हुआ है। भाजपा नेतृत्व की चिंता इस बात से भी है कि मुस्लिम बहुल इलाके व झुग्गी बस्तियों में दिनभर मतदाताओं की लंबी लाइनें लगी रहीं। इन क्षेत्रों को आप का मजबूत गढ़ माना जाता है। अनधिकृत कॉलोनियों में भी मतदान केंद्रों पर मतदाताओं की लंबी लाइनें लगी रहीं। पार्टी के रणनीतिकार इस बात का विश्लेषण करने में लगे हैं कि इन कॉलोनियों में लोग घरों के मालिकाना हक पर मतदान किया है या फिर अरविंद केजरीवाल सरकार की मुफ्त बिजली-पानी योजना पर। इसी तरह से मतदान केंद्रों पर महिलाओं की अच्छी भीड़ रही।

एक्जिट पोल को नकारा

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : मतदान के बाद सभी एग्जिट पोल में आप की सरकार बनने की संभावना जताई गई है। भाजपा को वर्ष 2015 की तरह पराजय का सामना करना पड़ सकता है। इसके विपरीत भाजपा नेता जीत का दावा कर रहे हैं। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष मनोज तिवारी ने एक्जिट पोल के नतीजों को सिरे से खारिज कर दिया। उन्होंने ट्वीट किया, 'ये सभी एक्जिट पोल फेल होंगे। मेरा ये ट्वीट संभाल के रखिएगा। भाजपा दिल्ली में 48 सीट लेकर सरकार बनाएगी। कृपया ईवीएम को दोष देने का अभी से बहाना न ढूंढ़ें।' राज्यसभा सदस्य व पूर्व केंद्रीय राज्य मंत्री विजय गोयल ने भी दिल्ली में भाजपा की सरकार बनने का दावा किया है। उन्होंने कहा कि पूरी दिल्ली में जिस तरह से लोगों का समर्थन दिखा, उससे स्पष्ट है कि दिल्ली में भाजपा की सरकार बनने जा रही है।

नेशनल कैपिटल

पेटीएम संस्थापक व सीनियर वाइस प्रेसिडेंट पर धोखाधड़ी का केस

जागरण संवाददाता, गाजियाबाद : पेटीएम के संस्थापक विजय शेखर शर्मा, सीनियर वाइस प्रेसिडेंट अजय शेखर शर्मा व पेटीएम पेमेंट बैंक समेत पांच के खिलाफ कविनगर थाने में आइटी एक्ट व धोखाधड़ी की धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की गई है। कैशबैक का झांसा देकर पेटीएम खाता हैक कर कारोबारी के खाते से करीब डेढ़ लाख उड़ाने के मामले में एसएसपी कलानिधि नैथानी के आदेश पर रिपोर्ट दर्ज की गई है।

राजनगर में आयुर्वेदिक और हर्बल प्रोडक्ट की एजेंसी चलाने वाले राजकुमार सिंह का बिजनेस पेटीएम खाता है, जिसमें आइसीआइसीआइ बैंक का खाता जुड़ा हुआ है। उनके पास 28 दिसंबर को कॉल आई कि मैं अजय शेखर शर्मा पेटीएम से बोल रहा हूं। बातचीत में एक बार उसने अपना नाम अजय शर्मा भी बताया। कॉलर ने कैशबैक देने की बात कहकर बताया कि उन्हें मैसेज किया गया है। मैसेज में दिए लिंक पर क्लिक करने को कहा गया। राजकुमार सिंह ने लिंक पर क्लिक करने से इन्कार कर दिया। इस पर कॉल करने वाले ने उसी दिन हुई राजकुमार की दो ट्रांजेक्शन के बारे में बताया। कॉलर द्वारा खाते से जुड़ी गोपनीय जानकारी देने पर उन्हें विश्वास हो गया और उन्होंने लिंक पर क्लिक कर दिया। इसके बाद खाते से 1.47 लाख रुपये कई बार में निकल गए। पीड़ित के अनुसार इसमें से 41 हजार रुपये रजत जैन के पेटीएम में गए, जबकि बाकी रकम अन्य एक बैंक खाते में गई।

ट्रांजेक्शन के दौरान 1400 रुपये का कैशबैक मिला था, उसे भी निकाल लिया गया। शिकायत पर बैंक ने रकम को लीन खाते में डाल दिया। ये रुपये उनके खाते में ही दिख रहे थे, लेकिन जनवरी में ये रुपये दिखने बंद हो गए। एसएसपी ने बताया कि तहरीर के आधार पर रिपोर्ट दर्ज की गई है। साक्ष्यों के आधार पर छानबीन कर विवेचना कर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

महिला एसआइ के हत्यारे साथी एसआइ ने कर ली आत्महत्या

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- 2018 बैच के प्रशिक्षु सब इंस्पेक्टर थे दोनों
- छह माह पूर्व ब्रेकअप कर लेने से परेशान था आरोपित

रोहिणी ईस्ट मेट्रो स्टेशन के पास शुक्रवार देर रात दिल्ली पुलिस की प्रशिक्षु सब इंस्पेक्टर प्रीति अहलावत की गोली मार हत्या करने के बाद आरोपित प्रशिक्षु सब इंस्पेक्टर दीपांशु राठी ने सोनीपत में अपने घर के पास जाकर उसी पिस्टल से खुद को गोली मार ली। दोनों 2018 बैच के सब इंस्पेक्टर थे। शुक्रवार को घटना के बाद पुलिस को उसके बैचमेट प्रशिक्षु सब इंस्पेक्टर दीपांशु राठी पर भी शक हुआ था। पुलिस जांच कर ही रही थी कि शनिवार तड़के दीपांशु का शव सोनीपत में कार में मिला। जांच में साफ हो गया कि उसी ने प्रेम-प्रसंग में नाइन एमएम पिस्टल से तीन गोली मार प्रीति की हत्या कर दी और कार से दिल्ली से सोनीपत भागकर सिर में गोली मार आत्महत्या कर ली।

प्रीति हरियाणा के रोहतक की रहने वाली थीं। वह बतौर सब इंस्पेक्टर भर्ती हुई थीं और आठ महीने के प्रशिक्षण के बाद उनकी पहली तैनाती पटपड़गंज औद्योगिक थाने में हुई थी। रोहिणी में किराये पर घर लेकर वह अपने बैच की ही दो अन्य महिला प्रशिक्षु सब इंस्पेक्टर के साथ रहती थीं। वहीं से रोज मेट्रो से थाने आती-जाती थीं। आरोपित दीपांशु राठी सोनीपत की शास्त्री कॉलोनी का रहने वाले थे। प्रशिक्षण के पश्चात उनकी तैनाती भजनपुरा थाने में हुई थी। पुलिस के मुताबिक प्रशिक्षण के दौरान दोनों में जान पहचान हुई थी। धीरे-धीरे दोनों एक-दूसरे से प्यार करने लगे थे, लेकिन छह महीने पहले प्रीति ने दीपांशु से दूरी बना ली थी और बातचीत बंद कर दिया था। प्रीति ने दीपांशु से कहा था कि वह पहले अपना कॅरियर बनाना चाहती है। इस पर वह परेशान हो गया था। हालत यह थी कि वह उसका पीछा करने लगा था। इससे प्रीति परेशान हो गई थीं। सहकर्मियों से इसका जिक्र किया था। हालांकि उन्होंने कभी पुलिस अधिकारियों से शिकायत नहीं की थी।

यह है घटना : शुक्रवार शाम ड्यूटी खत्म कर प्रीति मेट्रो से रोहिणी के लिए निकली थीं। रात करीब नौ बजे मेट्रो स्टेशन से बाहर निकल कर महज दस कदम की दूरी पर ई-ब्लॉक की संकरी गली होकर जब वह पैदल अपने फ्लैट की ओर जा रही थीं तभी पहले से सेंट्रो कार में घात लगाकर बैठे दीपांशु राठी ने पीछा शुरू कर दिया। बिना कुछ कहे दीपांशु ने पीछे से प्रीति पर पिस्टल से तीन गोलियां चलाईं। सिर में एक गोली लगने से उनकी मौके पर ही मौत हो गई। वारदात के तुरंत बाद दीपांशु कार से फरार हो गया।

पुलिस अधिकारी का कहना है कि शुक्रवार शाम को दीपांशु ड्यूटी के दौरान सरकारी नाइन एमएम की पिस्टल लेकर इलाके में गश्त करने के बहाने निकल गया था। वह कार से सीधे रोहिणी ईस्ट मेट्रो स्टेशन के पास पहुंच गया। जांच से पता चला है कि प्रीति के घर वाले उनकी शादी दूसरी जगह करना चाह रहे हों। उधर, दीपांशु के घर वाले भी शनिवार को उसके लिए रिश्ता देखने जाने वाले थे।

पुलिस अधिकारी का कहना है कि दीपांशु का सोनीपत के अस्पताल में पोस्टमार्टम करा दिया गया। प्रारंभिक रिपोर्ट में आत्महत्या की पुष्टि ही हुई है। उसके अंगूठे में पिस्टल के ट्रिगर का हिस्सा फंसा हुआ था। गोली चलाने वाले आरोपित के हाथ में धुएं के साथ बारूद लग जाता है। साथ ही ट्रिगर पर अंगुली का निशान रह जाता है। फोरेंसिक एक्सपर्ट से दीपांशु के हाथ के धोवन से बारूद के बारे में पता लगाया। साथ ही अंगुली का निशान लेकर ट्रिगर पर पड़े निशान से मिलान किया।

उत्साह

पहली बार मतदान करने वाले युवाओं ने शिक्षा और ढांचागत विकास जैसे मुद्दों पर दिया वोट

नए दबंगों ने भी दिखाया मताधिकार का दम

किशन कुमार, नई दिल्ली : लोकतंत्र के महापर्व में पहली बार सहभागिता निभाने वाले मतदाताओं में जोश देखने को मिला। दिल्ली के इन नए दबंगों ने शिक्षा से लेकर दिल्ली के ढांचागत विकास जैसे मुद्दों परी अपना वोट डाला। युवतियों ने महिला सुरक्षा के नाम पर अपना पहला मतदान किया। विभिन्न पोलिंग बूथों पर शाम तक युवा मतदाताओं की भीड़ सबसे ज्यादा देखी गई।

सुबह से ही ओल्ड राजेंद्र नगर, पटेल नगर, करोल बाग व पहाड़गंज के मतदान केंद्रों पर युवा मतदान के लिए पहुंचने लगे थे। सियासी दंगल में उम्मीदवारों के वोट डालने के पहले अनुभव की मुस्कान युवाओं के चेहरे पर देखते ही बन रही थी। करोल बाग में मतदान करने पहुंचीं शालू ने कहा कि दिल्ली में महिला सुरक्षा का मुद्दा अहम है, आमतौर पर दिन ढलने के बाद महिलाओं का निकलना सुरक्षित नहीं है। दिल्ली में शैक्षणिक स्तर पर भी सुधार की जरूरत है। मतदान के लिए पहुंचे ऋतिक ने कहा कि दिल्ली को ढांचागत विकास की जरूरत है। इसी मुद्दे पर उन्होंने अपना पहला वोट डाला है। उन्होंने कहा कि निर्वाचन आयोग द्वारा दिल्ली के मतदाताओं को दबंग नाम देना सराहनीय है।

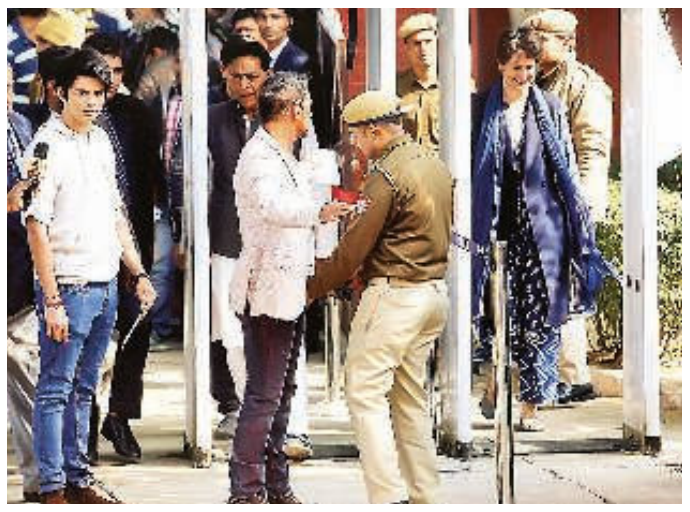

दिल्ली विधानसभा चुनाव में मतदान करने पहुंचे कांग्रेस पार्टी की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी के दामाद रॉबर्ट वाड्रा की तलाशी लेता पुलिसकर्मी। तस्वीर में कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी (दाएं) और पुत्र रेहान (बाएं) भी नजर आ रहे हैं। रेहान ने पहली बार चुनाव में वोट डाला। एएनआइ

55 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है रेलवे को इस साल यात्री सेवाओं से। 2004 में यह आंकड़ा 8,000 करोड़ रुपये का था। रेल मंत्री पीयूष गोयल ने यह जानकारी दी।

दिल्ली से मुंबई व हावड़ा रेल लाइनों के दोनों ओर दीवार बनाने का काम शुरू

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

रेलवे ने दिल्ली-मुंबई और दिल्ली-हावड़ा रूट पर ट्रेनों की रफ्तार को 160 किलोमीटर तक बढ़ाने के लिए ट्रैक के दोनों और दीवार बनाने का काम शुरू कर दिया है। इस क्रम में 3000 किलोमीटर की लंबाई में ट्रैक के दोनों ओर दीवार बनाने के ठेके पहले ही जारी किए जा चुके हैं।

भविष्य में दोनों रूटों पर वंदे भारत जैसी सेमी-हाईस्पीड ट्रेनों के संचालन की योजना के तहत ट्रेनों को हादसों से बचाने तथा यात्रियों की सुरक्षा के लिए रेलवे ने अनेक कदम उठाए हैं। ट्रैक के दोनों ओर कंक्रीट की दीवारें खड़ी करने के ठेके दिया जाना उनमें से एक है।

इसके अलावा ब्राडगेज लाइनों पर चौकीदार रहित क्रासिंगों को पूरी तरह समाप्त कर दिया गया है। चौकीदार वाली क्रासिंगों को भी क्रमिक रूप से खत्म करने का अभियान शुरू होना है। इसके लिए ऐसी क्रासिंगों पर ओवरब्रिज अथवा अंडरपास बनाकर खत्म किया जा रहा है। क्रासिंग हादसे खत्म करने के लिए क्रासिंगों की इंटरलॉकिंग भी की जा रही है। अब तक

3000 किमी कंक्रीट की दीवार खड़ी की जाएगी दोनों रूटों पर

160 किमी प्रति घंटा तक होगी इन रूटों पर ट्रेनों की रफ्तार

दिल्ली-हावड़ा रेलवे रूट पर दौड़ती ट्रेन। फाइल

11,552 लेवल क्रासिंगों की इंटरलॉकिंग की जा चुकी है। यही नहीं, ट्रैक के रखरखाव के काम में मानवीय गलतियों को न्यूनतम करने के लिए मशीनों का उपयोग बढ़ा दिया गया है। चलती ट्रेनों में कोच और वैगन की यांत्रिक खामियों का पता लगाने के लिए ट्रैक पर ऑनलाइन मॉनिटरिंग आफ रोलिंग स्टॉक (ओएमआरएस) और ह्वील इंपैक्ट लोड डिटेक्टर (वाइल्ड) प्रणालियां लगाई जा रही हैं। अब तक 7 जगहों पर ओएमआरएस लगाए जा चुके हैं, जबकि दो और जगहों पर इन्हें लगाया जा रहा है। इसी प्रकार 17 स्थानों पर वाइल्ड लगा दिए गए हैं।

दुर्घटना की स्थिति में यात्रियों को न्यूनतम चोट पहुंचे, इसके लिए लंबी दूरी की सभी ट्रेनों में पुराने आइसीएफ कोच की जगह पर लिंक हॉफमैन बुश (एलएचबी) कोच लगाने का अभियान छेड़ा गया है। कोच कारखानों में अब सिर्फ एलएचबी कोच का उत्पादन हो रहा है। कोच के भीतर आग से सुरक्षा के लिए उन्नत क्वालिटी ज्वलनरोधी की इलेक्ट्रिकल फिटिंग एवं फिक्स्चर्स का उपयोग किया जा रहा है। आगामी सिग्नल के प्रति लोको पायलट को पूर्व चेतावनी देने के लिए सिग्नल से दो पोल पहले इलेक्ट्रिक पोल पर प्रकाश में चमकने वाले रिट्रो-रिफ्लेक्टिव सिग्मा बोर्ड लगाए जा रहे हैं। उत्तर भारत में कोहरे के दौरान सुरक्षित ट्रेन संचालन के लिए जीपीएस आधारित फॉग पास डिवाइस लगाई जा रही हैं। इससे ड्राइवर को आगे आने वाले सिग्नल, क्रासिंग आदि की दूरी का अंदाजा लग जाता है।

हाल ही में रेलवे ने सिग्नल प्रणाली के आधुनिकीकरण की पायलट योजना प्रारंभ की है जिसके तहत बीना-झांसी समेत 640 किलोमीटर की कुल लंबाई वाले चार रूटों पर काम शुरू किया जा रहा है। इस प्रायोगिक परियोजना पर 1609 करोड़ रुपये की लागत आने का अनुमान है। इस प्रोजेक्ट के पूरा होने पर ऑटोमैटिक ट्रेन प्रोटेक्शन (एटीपी) सिस्टम, ट्रेन कोलीजन एवाइडेंस सिस्टम (टीकैस) तथा कैब सिग्नलिंग (जिसमें लोको पायलट को केबिन के भीतर मानीटर पर सिग्नल दिखाई देता है) जैसी आधुनिक प्रणालियों की कुशलता को आजमा कर देखा जाएगा और फिर संपूर्ण रेलवे में इन्हें अपनाया जाएगा।

वीडियो सर्विलांस से होगी यात्रियों की सुरक्षा

प्रदीप चौरसिया, मुरादाबाद

- दो किमी दूर तक होगी निगरानी, तीन प्रकार के लगेंगे लेंस
- रेलटेल को सौंपा गया काम, हरिद्वार स्टेशन पर लगेगा सिस्टम

महिलाओं की सुरक्षा के लिए बनाए गए निर्भया फंड से रेलवे इंटरनेट प्रोटोकॉल (आइपी) आधारित वीडियो सर्विलांस सिस्टम लगाने जा रहा है। यह सिस्टम देशभर के 983 रेलवे स्टेशनों पर लगाए जाएंगे। कुंभ मेला के पहले हरिद्वार स्टेशन पर वीडियो सर्विलांस सिस्टम लगाया जाना प्रस्तावित है। तीन प्रकार के लेंस होंगे और दो किमी तक निगरानी की जा सकती है।

रेल प्रशासन ने 'ए' व 'बी' श्रेणी के स्टेशनों पर सीसीटीवी लगा रखा है। सिस्टम से 50 मीटर से कम दूरी तक निगरानी होती है। उनमें दूर की तस्वीर पूरी तरह से साफ नहीं आती है। घटना होने के बाद अपराधी की फोटो पहचानने के लिए प्रयास करने पड़ते हैं। रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों की सुरक्षा के लिए रेलवे आधुनिक वीडियो सर्विलांस सिस्टम लगाने जा रहा है। इसके लिए निर्भया फंड से 250 करोड़ रुपये का बजट मिला है। रेलवे ने काम रेलटेल को सौंपा है।

यह होगी खासियत : वीडियो सर्विलांस सिस्टम में शक्तिशाली लेंस लगा है, जिससे दो किमी दूर तक की चीजें पूरी तरह से साफ दिखेंगी। पूरी तरह से स्वचालित सिस्टम में लेंस स्वतः ही संबंधित को जूम करेगा और तीन तरफ से वीडियो बनाएगा। प्लेटफार्म पर लगे कैमरे से पूरे यार्ड की निगरानी हो सकेगी।

कंट्रोल रूम से हो सकेगा फोकस : सिस्टम में अल्ट्रा एचडी-4 के कैमरे लगेंगे। कंट्रोल रूम में बैठा कर्मचारी संदिग्ध पर कैमरा फोकस कर सकता है। उसके प्रत्येक क्षण का वीडियो कंट्रोल रूम को भेज सकेगा।

30 दिन का डाटा रहेगा सुरक्षित : घटना का विश्लेषण करने के लिए 30 दिन का डाटा सुरक्षित रहेगा। पुलिस अधिकारी ऑनलाइन मोबाइल से इससे जुड़ सकते हैं और स्टेशन की प्रत्येक गतिविधि देख सकते हैं।

कुंभ मेला के पहले हरिद्वार में लग जाएंगे सिस्टम : कुंभ मेला जनवरी, 2021 से शुरू हो जाएगा। इससे पहले रेलवे हरिद्वार स्टेशन पर सिस्टम लगा देगा। प्रवर मंडल वाणिज्य प्रबंधक रेखा ने बताया कि आधुनिक सिस्टम वाला सीसीटीवी हरिद्वार में कुंभ मेला के पहले लगाया जाएगा।

मंडल में 12 स्टेशन पर सामान्य सीसीटीवी लगाए जाएंगे

मुरादाबाद रेल मंडल के चार स्टेशनों पर सामान्य सीसीटीवी लगे हैं। सभी का कंट्रोल आरपीएफ करती है। फंड से रेल मंडल के 12 स्टेशनों पर सामान्य सिस्टम के सीसीटीवी कैमरे लगने हैं। बाद में उनको अपडेट सिस्टम में परिवर्तित कर दिया जाएगा।

न्यूज गैलरी

एससी-एसटी एक्ट में संशोधन के खिलाफ याचिका पर फैसला कल

नई दिल्ली : सुप्रीम कोर्ट अनुसूचित जाति-अनुसूचित जनजाति (एससी, एसटी) (अत्याचार रोकथाम) संशोधन अधिनियम, 2018 को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सोमवार को फैसला सुनाएगा। इस कानून के जरिए एसटी,एसटी के खिलाफ अत्याचार के आरोपितों के लिए अग्रिम जमानत के प्रावधान को खत्म कर दिया गया है। जस्टिस अरुण मिश्र, जस्टिस विनीत सरन और जस्टिस रविंद्र भट की पीठ फैसला सुनाएगी। पिछले साल अक्टूबर में पीठ ने इस कानून में केंद्र सरकार द्वारा किए गए संशोधनों को बरकरार रखने के संकेत दिए थे। केंद्र सरकार ने संशोधनों के जरिए आरोपित की तत्काल गिरफ्तारी और अग्रिम जमानत के प्रावधान को फिर से बहाल कर दिया था। अदालत ने यह भी कहा था कि वह इसको भी स्पष्ट करेगी कि पुलिस एससी,एसटी कानून के तहत की गई शिकायत पर कोई कार्रवाई करने से पहले प्राथमिक जांच कर सकती है, अगर उसे शिकायत प्रथम दृष्टया फर्जी लगती है। सुप्रीम कोर्ट की दो जजों की पीठ ने 20 मार्च, 2018 के अपने फैसले में इस कानून के तहत शिकायत पर स्वत: गिरफ्तारी के प्रावधान पर रोक लगा दी थी। साथ ही अग्रिम जमानत का प्रावधान भी जोड़ दिया था। बाद में 30 सितंबर, 2019 को सुप्रीम कोर्ट की तीन सदस्यीय पीठ ने पुराने कानून को बहाल कर दिया था। केंद्र सरकार ने कानून में संशोधन कर सुप्रीम कोर्ट के 20 मार्च के फैसले को पलटते हुए दोबारा पुराने कानून को लागू कर दिया था। (एएनआइ)

गुजरात में बच्चों को नाश्ते में अंडा नहीं देगी सरकार

अहमदाबाद : विज्ञापनों में भले ही संडे हो या मंडे रोज खाओ अंडे स्लोगन का प्रचार होता रहा है, गुजरात सरकार ने आदिवासी बहुल दाहोद जिले में कुपोषित बच्चों को अंडा देने से साफ इन्कार किया है। सरकार की ओर से बच्चों को पौष्टिक आहार व दूध पहले से दिया जा रहा है। दाहोद जिले में अत्यंत कुपोषित बच्चों को नाश्ते में अंडा देने की खबरों के बीच शनिवार को मुख्यमंत्री विजय रूपाणी के कार्यालय ने स्पष्ट किया है कि राज्य में कुपोषण अभियान के जरिये कुपोषित व अत्यंत कुपोषित बच्चों को नाश्ते में पौष्टिक आहार व दूध दिया जा रहा है। फल व फास्ट फूड सामग्री दी जा रही है, ऐसे में बच्चों को नाश्ते में अंडा दिए जाने की बात पूरी तरह बेबुनियाद है। गौरतलब है कि गुजरात शाकाहारी बहुल प्रदेश है तथा मुख्यमंत्री विजय रूपाणी स्वयं जैन समुदाय से आते हैं और शाकाहार, अहिंसा व जीव दया का गंभीरता से पालन करते हैं। (राब्यू)

मुकदमे से पूर्व अनिवार्य मध्यस्थता वाले कानून के लिए यह सही वक्त : बोबडे

दो टूक ▶ सीजेआइ ने कहा, जजों का लक्ष्य लोकप्रियता पाना नहीं, विवाद सुलझाना

भारत में मध्यस्थता प्रणाली को लेकर लोगों को कम जानकारी

नई दिल्ली, एजेंसियां : प्रधान न्यायाधीश (सीजेआइ) शरद अरविंद बोबडे ने शनिवार को कहा कि देश में मुकदमे से पहले अनिवार्य मध्यस्थता वाला कानून बनाने का यह सबसे सही समय है। उन्होंने कहा कि इससे कार्यक्षमता सुनिश्चित होगी और पक्षकारों के साथ ही साथ अदालतों के लिए मामलों के लंबित होने का समय घटेगा।

प्रधान न्यायाधीश 'वैश्वीकरण के युग में मध्यस्थता' विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के तीसरे संस्करण को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि किसी भी जज का लक्ष्य लोकप्रियता पाना नहीं होता है। उसका उद्देश्य यह होता है कि विवाद का हल हो। जस्टिस बोबडे ने कहा कि भारत में संस्थागत मध्यस्थता के विकास के लिए एक मजबूत 'आरबिट्रेशन (मध्यस्थता) बार' जरूरी है क्योंकि यह ज्ञान और अनुभव वाले पेशेवरों की उपलब्धता और पहुंच सुनिश्चित करेगा।

नई दिल्ली में शनिवार को 'वैश्वीकरण के युग में मध्यस्थता पर अंतरराष्ट्रीय' सम्मेलन के तीसरे संस्करण के मौके पर सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश जस्टिस शरद अरविंद बोबडे। एएनआइ

सीजेआइ ने कहा कि आज अंतरराष्ट्रीय व्यापार, वाणिज्य और निवेश वाले वैश्विक आधारभूत ढांचे में मध्यस्थता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वैश्विक समुदाय के एक अभिन्न सदस्य और व्यापार व निवेश के लिहाज से महत्वपूर्ण होने के नाते भारत अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता में किस तरह से शामिल होता है इसका सीमापार अंतरराष्ट्रीय व्यापार, वाणिज्य और निवेश के प्रवाह पर महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। जस्टिस बोबडे ने कहा, 'वाणिज्यिक अदालत अधिनियम में उल्लिखित पूर्व-संस्थान स्तर वाली मध्यस्थता और समाधान मुकदमा से पहले मध्यस्थता के कई फायदों की जरूरत पर जोर देते हुए कई और संस्थानों के लिए एक रास्ता तैयार करेगा।' उन्होंने कहा, 'मेरा मानना है कि एक व्यापक कानून बनाने का यह बिल्कुल सही समय है, जिसमें मुकदमे से पहले अनिवार्य मध्यस्थता हो..।' अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता में भारत की भूमिका का जिक्र करते हुए सीजेआइ ने कहा, 'हाल के समय में, वैश्वीकरण के चलते भारत से जुड़े सीमापार लेनदेन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है जिससे सीमापार मध्यस्थता की मांग भी बढ़ी है। इसके परिणामस्वरूप बढ़ते मामलों की जटिलता से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय परंपराओं की स्थापना हुई है।'

सीजेआइ बोबडे ने कहा कि जजों का उद्देश्य किसी विवाद का सुलझाना होता है। जजों के लिए लोकप्रियता मरीचिका है। न्याय करना बहुत जटिल काम है और जज वह काम करते हैं जो अन्य लोग करने से बचते हैं। किसी मामले को सुलझाने के लिए जज फैसला सुनाते हैं, लेकिन फैसले से असहमति के चलते याचिकाओं की बाढ़ आ जाती है, जिससे बचा भी नहीं जा सकता है। इसलिए मुकदमेबाजी से पहले विवाद को सुलझाने के लिए मध्यस्थता प्रणाली जैसी वैकल्पिक व्यवस्था बहुत अहम हो गई है।

युवाओं के कौशल विकास में उत्तर प्रदेश अव्वल

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

रंग लाई कोशिश

- राज्य में 13 लाख युवा ले चुके हैं अब तक प्रशिक्षण, पिछले पांच साल में देश में 92 लाख युवाओं को मिल चुका है प्रशिक्षण

धीरे-धीरे ही सही प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना युवाओं को रोजगार परक प्रशिक्षण की ओर आकर्षित करने में सफल हो रही है। युवाओं के कौशल विकास में उत्तर प्रदेश देश में अव्वल रहा है। खास बात है कि बड़ी संख्या में महिलाएं भी इस योजना का लाभ उठा रही हैं। कौशल विकास मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक पांच साल पहले शुरू की गई इस योजना के तहत 92 लाख से अधिक युवाओं को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। इनमें 39 लाख महिलाएं और 38 हजार दिव्यांग शामिल हैं।

सरकार की कोशिश आने वाले सालों में देश के हर जिले में कौशल विकास केंद्र स्थापित कर स्थानीय जरूरतों के मुताबिक प्रशिक्षित युवाओं को तैयार करना है। प्रशिक्षित युवाओं को तैयार करने में उत्तर प्रदेश देश भर में पहले स्थान पर रहा है। यहां अब तक 13 लाख युवा कौशल विकास का प्रशिक्षण ले चुके हैं। वहीं महाराष्ट्र में आठ लाख, राजस्थान में सात लाख और मध्य प्रदेश में 6.5 लाख युवाओं ने प्रशिक्षण लिया है। इलेक्ट्रानिक्स और हार्डवेयर का क्षेत्र युवाओं की पहली पसंद रहा है, जबकि वस्त्र व परिधान दूसरी पसंद के रूप में सामने आया है। कौशल विकास मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि फिलहाल देश के 513 संसदीय क्षेत्रों में आने वाले 638 जिलों में 723 से अधिक प्रधानमंत्री कौशल केंद्र चल रहे हैं, जहां अच्छी आधारभूत संरचना के साथ-साथ अच्छे प्लेसमेंट की सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। जल्द ही 53 संसदीय क्षेत्रों के 85 जिलों में 89 नए प्रधानमंत्री कौशल विकास केंद्र खोलने की तैयारी है। इससे देश के हर जिले में कम-से-कम एक कौशल विकास केंद्र खोलने की लक्ष्य को हासिल करना आसान हो जाएगा। इसके साथ ही आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, थ्रीडी एनालिटिक्स जैसे नए क्षेत्रों में युवाओं को प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम भी शुरू करने की योजना है।

सरकार की कोशिश देश में प्रशिक्षित युवाओं को विदेश में नौकरियों के लिए तैयार करने की भी है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इसके लिए स्वास्थ्य मंत्रालय और कौशल विकास मंत्रालय के साथ मिलकर नई योजना तैयार करने की घोषणा की है। उनके अनुसार दुनिया में डाक्टरों, नर्सों, शिक्षकों और देख-भाल करने वाले प्रशिक्षित युवाओं की भारी मांग है। इसके लिए युवाओं को प्रशिक्षण देने के साथ-साथ संबंधित देशों की भाषा भी सिखाई जाएगी।

आतंकवाद की समस्या पर भी हुई बातचीत

प्रथम पृष्ठ का शेष

मोदी और राजपक्षे की बैठक में आतंकवाद की समस्या को लेकर भी बातचीत हुई। दोनों देशों ने इस समस्या का डटकर मुकाबला करने की प्रतिबद्धता दोहराई। मोदी ने पिछले साल अप्रैल में श्रीलंका में ईस्टर डे पर बर्बर आतंकी हमले का जिक्र करते हुए कहा कि यह केवल श्रीलंका नहीं, पूरी मानवता पर आघात था।

दोनों नेताओं ने श्रीलंका में संयुक्त आर्थिक परियोजना, व्यापारिक और निवेश संबंधों को बढ़ाने पर भी विचार-विमर्श किया। मोदी ने कहा कि दोनों देशों के लोगों के बीच आपसी संपर्क बढ़ाने, पर्यटन को प्रोत्साहन देने, और संपर्क बेहतर बनाने पर भी चर्चा की गई। चेन्नई और जाफना के बीच हाल ही में सीधी फ्लाइट की शुरुआत इसी दिशा में प्रयासों का हिस्सा है।

श्रीलंका को दी जा रही सहायता की चर्चा करते हुए मोदी ने कहा कि उसके विकास में भारत एक विश्वस्त भागीदार रहा है। पिछले साल घोषित नई लाइन ऑफ क्रेडिट से हमारे विकास सहयोग को और अधिक बल मिलेगा। श्रीलंका के उत्तरी और पूर्वी क्षेत्र में आंतरिक रूप से विस्थापित लोगों के लिए 48,000 से ज्यादा घरों के निर्माण

नई दिल्ली के हैदराबाद हाउस में श्रीलंका के अपने समकक्ष महिंदा राजपक्षे के साथ बातचीत करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। एएनआइ

का इंडियन हाउसिंग प्रोजेक्ट पूरा हो जाने को लेकर मोदी ने खुशी जताई। मोदी ने मछुआरों के मानवीय मुद्दे पर राजपक्षे से बातचीत की और कहा कि इस विषय का प्रभाव दोनों देशों के लोगों के जीवनयापन पर सीधे रूप से पड़ता है। इसलिए इस मुद्दे पर मानवतापूर्ण नजरिया रखने पर दोनों सहमत थे।

ई-गवर्नेंस मामले में दिल्ली और चंडीगढ़ अव्वल

मुंबई, प्रेट्र : राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस सेवा वितरण मूल्यांकन (एनईएसडीए) के सभी मानकों पर संघ शासित प्रदेशों में दिल्ली, चंडीगढ़, दमन एवं दीव प्रशासन अव्वल आए हैं। शनिवार को यहां जारी आधिकारिक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है।

यह मूल्यांकन व्यापक रूप से चार श्रेणियों-संघ शासित प्रदेश, शेष राज्य, संघ शासित प्रदेश एवं केंद्रीय मंत्रालयों की वेबसाइ-के लिए किया गया। शेष राज्यों की श्रेणी में 18 राज्य शामिल हैं। इनमें हरियाणा और राजस्थान अव्वल रहे हैं।

यहां 23वें राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस कांफ्रेंस में कार्मिक राज्यमंत्री जितेंद्र सिंह ने यह रिपोर्ट जारी की। रिपोर्ट के मुताबिक पूर्वोत्तर और पहाड़ी राज्यों में नगालैंड सर्विस पोर्टल के मामले में शीर्ष पर है। सर्विस पोर्टल के लिए तय इस्तेमाल में आसानी, सामग्री की उपलब्धता समेत सात मानकों में नगालैंड ने 45 फीसद मापदंड पूरे किए। केंद्रीय मंत्रालय सेवा पोर्टल श्रेणी के मूल्यांकन में वित्त मंत्रालय के तहत आने वाले केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) की वेबसाइट पहले नंबर पर रही। जबकि, सभी मापदंडों पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण और मानव संसाधन विकास मंत्रालय की वेबसाइट अव्वल रही।

एनईएसडीए के ढांचे के तहत सभी सर्विस पोर्टल (राज्य/संघ शासित प्रदेश और केंद्रीय मंत्रालय सर्विस पोर्टल) का सात प्रमुख मानकों पर मूल्यांकन किया गया। इन मानकों में पहुंच, सामग्री उपलब्धता, उपयोग में आसानी, सूचना सुरक्षा और गोपनीयता, सेवा अंतरण, एकीकृत सेवा वितरण और स्थिति और अनुरोध ट्रैकिंग शामिल है। इस ढांचे में छह क्षेत्रों-वित्त, श्रम व रोजगार, शिक्षा, स्थानीय सरकार एवं उपयोगिता, समाज कल्याण और पर्यावरण को शामिल किया गया था। रिपोर्ट में केंद्र शासित प्रदेशों के मूल्यांकन का विवरण देते हुए कहा गया है कि अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, चंडीगढ़, दिल्ली, दादरा एवं नगर हवेली, पुडुचेरी से संबंधित आंकड़ों की समीक्षा की गई। रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली, चंडीगढ़ और दमन और दीव सभी सात मानकों पर अपने सेवा पोर्टल पर 10 प्रतिशत से अधिक की औसत अनुपालन के साथ अग्रणी संघ शासित प्रदेश रहे।

आर्थिक मंदी पर गलती मानकर मनमोहन से सलाह मांगे सरकार : चिदंबरम

हैदराबाद, एएनआइ : बेरोजगारी में बढ़ोतरी और आर्थिक मंदी को लेकर कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य पी. चिदंबरम ने शनिवार को केंद्र सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा, सरकार माने कि उसने गलती की है और पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह से डूबती अर्थव्यवस्था पर सलाह देने का अनुरोध करे।

बजट 2020-21 विषय पर छात्रों को संबोधित करते हुए चिदंबरम ने कहा, 'यह अब तक की सबसे गरीब विरोधी सरकार है। ग्रामीण भारत और कृषि क्षेत्र खराब स्थिति में है। कम से कम सरकार इतना तो कर ही सकती है कि वह गलती स्वीकार करे और डॉ. मनमोहन सिंह से कहे कि आइए और हमें सलाह दीजिए।' वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण पर निशाना साधते हुए उन्होंने बजट-2020 भाषण की तुलना 'सत्यनारायण कथा' से की। चिदंबरम ने कहा, 'वित्त मंत्री देश की आर्थिक स्थिति क्यों नहीं बताना चाहतीं? अगर मैंने सत्यनारायण की कथा पढ़ी होती तो मुझे पता होता कि बजट पेश करने के दौरान उन्होंने क्या कहा। भारत के इतिहास में कभी भी जीडीपी लगातार छह तिमाही तक नहीं गिरी। सातवीं तिमाही में क्या होगा, मुझे नहीं पता।

नई पहल

इन सेंटरों में उन्हें नाश्ता, भोजन व खेलकूद जैसी सारी सुविधाएं मिलेंगी, चलने फिरने में लाचार बुजुर्गों के लिए ली जाएगी एनजीओ की मदद

बुजुर्गों के लिए देश भर में खुलेंगे डे-केयर सेंटर

अरविंद पांडेय, नई दिल्ली

बुजुर्गों को सरकार अब अकेला नहीं छोड़ेगी, बल्कि उनकी जरूरतों व सुख- सुविधाओं का पूरा ख्याल रखेगी। इसी कड़ी में सरकार ने घरों में अकेले रहने वाले बुजुर्गों के लिए देश भर में डे- केयर सेंटर खोलने की योजना बनाई है जहां उन्हें नाश्ता, भोजन, समाचार पत्र, खेलकूद जैसी सारी सुविधाएं मिलेंगी। इन सेंटरों में जहां उन्हें अपनी उम्र के लोगों का साथ मिलेगा, वहीं वे अपना दिन भर का समय एक खुशनुमा माहौल में बिता सकेंगे।

फिलहाल मौजूदा समय में उन्हें दिन भर घर में ही कैद होकर रहना होता है। बुजुर्गों के प्रति सरकार की फिक्रमंदी के कदम यहीं नहीं थमे। वह उन बुजुर्गों को लेकर भी एक और नई योजना पर काम रही है, जो चलने-फिरने या फिर अपने खराब स्वास्थ्य के चलते प्रस्तावित डे-केयर सेंटरों तक भी नहीं आ सकते हैं। घर में अकेले रहने वाले ऐसे बुजुर्गों के लिए एनजीओ के माध्यम से ख्याल रखने की योजना पर काम करने की तैयारी है जिसकी जल्द ही घोषणा हो सकती है।

प्रतीकात्मक।

बुजुर्गों पर इसलिए भी है जोर

बुजुर्गों की देखरेख को लेकर सरकार का इसलिए भी जोर है, क्योंकि यही वह उम्र होती है, जब किसी को मदद की सबसे ज्यादा जरूरत पड़ती है। वैसे भी देश में बुजुर्गों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। मौजूदा समय में देश में 60 साल से ज्यादा आयु वर्ग वाले लोगों की संख्या करीब 11 करोड़ है, जिसके 2035 तक दोगुने से ज्यादा होने की संभावना जताई जा रही है।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय से जुड़े अधिकारियों के मुताबिक बुजुर्गों की देखरेख को लेकर प्रस्तावित नए कानून में ये सारे उपाय किए गए हैं। फिलहाल इससे जुड़ा विधेयक मौजूदा समय में संसद में लंबित है जिसके पारित होने के साथ ही इस पर काम शुरू हो जाएगा। योजना से जुड़ी सारी तैयारियां लगभग पूरी हैं। माना जा रहा है कि संसद के बजट सत्र में यह विधेयक पारित हो जाएगा।

बुजुर्गों की देखरेख को लेकर सरकार का यह कोई पहला कदम नहीं है, बल्कि इससे पहले भी वह उनका ख्याल रखते हुए वयोश्री नाम से एक योजना चला रही है जिसमें उन्हें छड़ी, वॉकर, बत्तीसी, सुनने की मशीन जैसे उपकरण मुहैया कराए जाते हैं। योजना की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है, कि लगभग सभी सांसदों ने मंत्रालय को चिट्ठी लिखकर अपने-अपने क्षेत्र में इस योजना के तहत कैंप लगाने की मांग की है।

राहुल का बयान मुहावरे पर आधारित : खुर्शीद

जासं, बिजनौर : वरिष्ठ कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद राहुल गांधी के 'डंडे' वाले बयान पर उनका बचाव करते दिखे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर दिया गया बयान एक मुहावरा था। 'कव्वा कान काटकर ले गया' यह भी एक मुहावरा है, वास्तव में कव्वा कान काटकर थोड़े ले गया। यदि कोई मुहावरा न समझ पाए तो वह बुरा मान सकता है।

बता दें कि चार दिन पहले दिल्ली की चुनावी सभा में राहुल गांधी ने मोदी के लिए अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल किया था। उन्होंने युवाओं को रोजगार न मिलने का आरोप लगाते हुए कहा था कि 'छह महीने के बाद मोदी घर से बाहर निकलेंगे तो युवा उन्हें डंडे से मारेंगे'। उप्र के बिजनौर स्थित एसपी कालेज ऑफ लॉ में आयोजित एक संगोष्ठी को संबोधित करने पहुंचे सलमान खुर्शीद ने मीडिया से कहा कि सीएए का विरोध करने पर गिरफ्तार किए गए पीड़ितों की मानवाधिकार आयोग, हाई कोर्ट समेत अन्य न्यायिक मंचों पर पैरवी की जा रही है।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

मप्र में रिटायर हो रहे कर्मियों को संविदा नियुक्ति देकर टालेंगे संकट

राज्य ब्यूरो, भोपाल

मध्य प्रदेश के अधिकारियों और कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति का सिलसिला शुरू होने में डेढ़ माह शेष हैं। ऐसे में राज्य सरकार ने अपनी खराब माली हालत और कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति के बाद सरकारी कामकाज पर पड़ने वाले असर को देखते हुए सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों को संविदा नियुक्ति देने पर विचार शुरू कर दिया है। संविदा नियुक्ति लेने वाले कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति के बाद मिलने वाला फंड तत्काल नहीं मिलेगा, जिससे सरकार की माली हालत पर भी असर नहीं पड़ेगा और दफ्तरों का काम भी प्रभावित नहीं होगा।

मप्र का पदोन्नति में आरक्षण का मामला सुप्रीम कोर्ट में लंबित है, इसलिए मप्र में पदोन्नति पर रोक लगी है। इससे कामकाज प्रभावित हो रहा था तो शिवराज सरकार ने कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति आयु सीमा दो साल बढ़ाकर 62 साल कर दी थी। दो साल की यह अवधि मार्च में खत्म हो रही है। यानी 31 मार्च को प्रदेशभर में चार हजार से ज्यादा अधिकारी-कर्मचारी एक साथ रिटायर होने वाले हैं। ऐसे में संकट से निपटने के लिए रिटायर कर्मियों को पहली बार एक साल के लिए संविदा पर रखा जा सकता है। इसके बाद अवधि बढ़ाई भी जा सकती है।

- राज्य सरकार की खराब माली हालत ने बिगाड़े समीकरण

सरकार के सामने दो विकल्प

1- सेवानिवृत्ति उम्र 62 की जगह 63 वर्ष कर दी जाए, ताकि फिलहाल कर्मचारियों की कमी और बड़ी देनदारी को टाला जा सके।

2- सेवानिवृत्ति के साथ ही एक साल की संविदा नियुक्ति दे दी जाए। रिटायरमेंट फंड पर सरकार सामान्य दर से ब्याज दे।

आठ हजार कर्मचारी रिटायर्ड होंगे

मार्च से दिसंबर 2020 तक प्रदेशभर से करीब आठ हजार अधिकारी-कर्मचारी रिटायर्ड हो जाएंगे। इसका सीधा असर सरकारी कामकाज पर पड़ेगा, क्योंकि इन पदों पर काम करने वाले नहीं हैं।

सरकार को युवाओं का भविष्य और कर्मचारी हित दोनों को ध्यान में रखकर फैसला लेना चाहिए।

- वीरेंद्र खोंगल, सदस्य, राज्य कर्मचारी आयोग

रिटायरमेंट उम्र 65 करने पर विचार : पिछले दिनों कैबिनेट बैठक में वित्त विभाग ने कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति आयु 62 से बढ़ाकर 65 साल करने का प्रस्ताव रखा था। बैठक में इस प्रस्ताव पर चर्चा की बजाय विकल्पों पर मंथन हुआ। यहां सरकार ने मार्च के बाद सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों को संविदा नियुक्ति देने के संकेत दिए हैं। सरकार यह व्यवस्था अगले एक साल जारी रख सकती है। इतने में पदोन्नति में आरक्षण मामले का फैसला आता है या सुप्रीम कोर्ट सशर्त पदोन्नति देने की मांग मंजूर करता है, तो ठीक, वरना संविदा अवधि बढ़ाई भी जा सकती है।

पीडीपी के वरिष्ठ नेता व पूर्व मंत्री नईम पर पीएसए

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

- पूर्व विधायक मुबारक गुल भी एमएलए हॉस्टल से छूटते ही नजरबंद
- छह माह की एहतियातन हिरासत में के बाद शनिवार को ही छूटे थे यह नेता

पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के वरिष्ठ नेता व पूर्व मंत्री नईम अख्तर को भी छह माह की एहतियातन हिरासत के बाद शनिवार को पीएसए (जन सुरक्षा अधिनियम) के तहत नजरबंद कर दिया गया। इसके साथ ही नेशनल कांफ्रेंस के पूर्व विधायक मुबारक गुल, पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला के राजनीतिक सलाहकार तनवीर सादिक को भी सबजेल से रिहाई के बाद उनके घरों में नजरबंद कर दिया है। सब जेल एमएलए हॉस्टल में अब सिर्फ छह लोग ही एहतियातन हिरासत में हैं।

नईम अख्तर को पीएसए के तहत बंदी बनाया जाएगा, यह दो दिन पहले ही तय हो गया था। नौकरशाही छोड़ सियासत में सक्रिय हुए शाह फैसल पर भी जल्द ही पीएसए लगाए जाने की संभावना है। पांच अगस्त 2019 के बाद पीएसए के तहत बंदी बनाए जाने वाले नईम अख्तर मुख्यधारा की

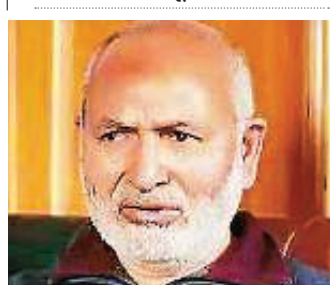

नईम अख्तर फाइल

सियासत से जुड़े छठे नेता हैं। उनसे पहले नेकां अध्यक्ष डॉ. फारूक अब्दुल्ला पर 17 सितंबर 2019 को पीएसए लगाया गया था। गत गुरुवार को पूर्व मुख्यमंत्री और नेकां उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला, नेकां महासचिव अली मोहम्मद सागर, पीडीपी की अध्यक्षा और पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती व उनके मामा सरताज मदनी को पीएसए के तहत बंदी बनाया गया था।

अधिकारियों का कहना है कि पांच अगस्त 2019 को हिरासत में लिए गए नेकां के पूर्व विधायक और जम्मू-कश्मीर विधानसभा के पूर्व स्पीकर मुबारक गुल और उमर अब्दुल्ला के राजनीतिक सलाहकार तनवीर सादिक को शनिवार दोपहर सब जेल एमएलए हॉस्टल से रिहा कर दिया गया। लेकिन दोनों नेता जैसे ही घर पहुंचे, पुलिस ने दोनों को अगले आदेश तक नजरबंद कर दिया।

सबजेल एमएलए हॉस्टल में बंद नईम अख्तर को आज ही रिहा किया गया था। इससे पहले कि वह घर पहुंचते, पुलिस ने उन्हें पीएसए के तहत दोबारा हिरासत में लेकर गुपकार रोड स्थित एम-5 सरकारी बंगले में कैद कर दिया। इस बंगले को सबजेल का दर्जा दिया गया है।

न्यूज गैलरी

छग में हुक्का बार पर प्रतिबंध शराब की 49 दुकानें होंगी बंद

रायपुर : छत्तीसगढ़ सरकार ने प्रदेश में हुक्का बार के संचालन पर प्रतिबंध लगा दिया है। शराबबंदी की ओर धीरे-धीरे बढ़ने का एक और संकेत देते हुए अंग्रेजी शराब की 49 दुकानों को बंद करने का निर्णय लिया है। धान पर गरम हुई सियासत को देखते हुए धान खरीद की तिथि भी पांच दिन बढ़ा दी गई है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की अध्यक्षता में शनिवार देर शाम को हुई कैबिनेट की बैठक में उक्त निर्णय लिए गए। हुक्का बार को लेकर यह शिकायत मिल रही थी कि हुक्का बार में स्कूली छात्रों से लेकर नाबालिग बच्चों की मौजूदगी दिखती है। इससे समाज में गलत प्रभाव पड़ता है। शराबबंदी की ओर धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए प्रदेश भर के 49 अंग्रेजी शराब की दुकानों को बंद करने का निर्णय भी लिया गया है। पिछले साल 50 शराब दुकानों को बंद किया गया था। (नईदुनिया)

जदयू के पोस्टर पर राजद ने किया पलटवार

पटना : राजद एवं जदयू के बीच बिहार में पिछले करीब एक महीने से पोस्टर के जरिये वार-पलटवार जारी है। जदयू के पोस्टर के बाद राजद ने भी उसी अंदाज में जवाब दिया है। जदयू ने दो दिन पहले पोस्टर जारी कर लालू परिवार के पुत्र मोह पर कटाक्ष किया था। वंदे मातरम् की पैरोडी बनाते हुए पोस्टर में धंधे मातरम् लिखकर राजद के शीर्ष नेताओं का मजाक उड़ाया गया था। राजद के पोस्टर में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को निशाने पर रखा गया है। पोस्टर पटना में कई जगह लगाए गए हैं। एक पोस्टर राबड़ी देवी के आवास के बाहर भी लगाया गया है। पोस्टर के बीच में नीतीश कुमार की एक तस्वीर है और चारों ओर कई स्लोगन लिखे गए हैं। तंज कसते हुए लिखा गया है कि 15 सालों में नीतीश कुमार ने कोई काम नहीं किया है। इसलिए गिनाने से भी बचते हैं। इसके अलावा सरकारी खर्च से टेलीविजन एवं रेडियो पर प्रचार, माफिया से संबंध एवं पटना में जल-जमाव पर भी स्लोगन बनाया गया है। सभी में सरकारी कामकाज पर अंगुली उठाई गई है। (राब्यू)

'बंद स्कूल खुलेंगे, पारा शिक्षकों का भी रखेंगे खयाल'

इटखोरी (चतरा) : झारखंड के शिक्षा मंत्री जगरनाथ महतो ने कहा है कि पिछली सरकार में बंद किए गए विद्यालयों को सरकार फिर से खोलेगी। सरकार की सोच झारखंड में शिक्षा का अलख जगाने की है और विद्यालय इसकी सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। शनिवार को भद्रकाली मंदिर में पूजा अर्चना करने पहुंचे शिक्षा मंत्री मीडिया से मुखातिब थे। शिक्षा मंत्री ने इस दौरान पिछली सरकार पर तंज भी कसा। उन्होंने कहा कि जिस सरकार ने राज्य में विद्यालय बंद कराया, राज्य की जनता ने उसे सत्ता से बाहर का रास्ता दिखाया। उनके साथ बरही के विधायक उमाशंकर अकेला ने भी मंदिर में पूजा-अर्चना की। पारा शिक्षकों के सवाल पर शिक्षा मंत्री ने कहा कि सरकार को उनका भी खयाल है और वह इस मसले पर सहानुभूति पूर्वक विचार कर रही है। (जासं)

मप्र के थप्पड़ कांड में जा सकती है डीजीपी की कुर्सी

बड़ा मामला ▶ वीके सिंह को हटाने की तैयारी, सरकार को देनी होगी चार्जशीट

आइएएस-आइपीएस विवाद ने भी सरकार को किया मजबूर

राज्य ब्यूरो, भोपाल

मध्य प्रदेश के चर्चित कलेक्टर थप्पड़ कांड से पैदा हुए आइएएस-आइपीएस विवाद की आंच प्रदेश के पुलिस मुखिया (डीजीपी) वीके सिंह तक पहुंच गई है। राज्य सरकार ने उन्हें हटाने की जमीन तैयार कर ली है। सिंह पर आरोपों की फेहरिस्त काफी लंबी है, लेकिन थप्पड़ कांड में कलेक्टर निधि निवेदिता के खिलाफ कार्रवाई के लिए गृह विभाग को उनका पत्र व उत्तर प्रदेश की तर्ज पर मध्य प्रदेश में भी पुलिस आयुक्त प्रणाली लागू करने का खुला समर्थन सरकार से तकरार का बड़ा सबब है। हालांकि, देर रात सीएम से मुलाकात के बाद डीजीपी संतुष्ट नजर आए।

गौरतलब है कि राजगढ़ की कलेक्टर निधि निवेदिता ने सीएए के समर्थन में रैली के दौरान एक भाजपा नेता को थप्पड़ मार दिया था। इसके बाद निवेदिता के पुराने थप्पड़ मामले भी उजागर हुए थे। उन्होंने एक एएसआइ को भी थप्पड़ मारा था। इसी मामले में वीके सिंह ने कलेक्टर पर कार्रवाई के लिए पत्र लिखा था। डीजीपी पर आरोप लगाया जा रहा है कि उन्होंने निवेदिता का अभिमत नहीं लिया था।

नए डीजीपी के रूप में सरकार यदि स्पेशल डीजी एवं हनीट्रैप मामले में गठित एसआइटी प्रमुख राजेंद्र कुमार की ताजपोशी करती है तो उसे संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) को नए डीजीपी के लिए नामों का प्रस्ताव भेजना पड़ेगा। इसके बाद अगले चार-पांच दिन बदलाव की संभावना जताई जा रही है।

वीके सिंह फाइल

वरिष्ठता की अनदेखी की तो मामला पहुंचेगा कोर्ट

डीजीपी को हटाने की तैयारी से मप्र के आइपीएस अफसर खफा हैं। कुछ वरिष्ठ अफसरों ने सवाल उठाते हुए साफतौर पर संकेत दिया कि सरकार ने वरिष्ठता को नजरंदाज किया तो वे कोर्ट का दरवाजा खटखटा सकते हैं। राज्य सरकार सबसे पहले ये बताए कि यूपीएससी के पैनल को अस्वीकार करने के क्या कारण हैं? नाम न प्रकाशित करने की शर्त पर उन्होंने कहा कि अब तक मध्य प्रदेश की परंपरा रही है कि पुलिस और वन विभाग में वरिष्ठ अफसर ही मुखिया बनता आया है। इसको तोड़ने का प्रयास हुआ तो वे अदालत में चुनौती देने से नहीं हिचकेंगे।

सुप्रीम कोर्ट की वर्ष 2006 की गाइडलाइन के अनुसार टीआइ, एसपी, आइजी और डीजीपी को दो साल के कार्यकाल से पहले नहीं हटाया जा सकता। उन्हें हटाने के लिए 'एक्शन' लेना होगा, इसलिए शासन को कोई कारण बताकर पुलिस प्रमुख पद पर बदलाव की स्क्रिप्ट तैयार करनी पड़ेगी। डीजीपी सिंह को चार्जशीट भी देना होगी।

कलेक्टर को बचाने की खातिर हटा रहे : सांसद : खजुराहो के भाजपा सांसद वीडी शर्मा ने आरोप लगाया है कि एसआइ और भाजपा नेता को थप्पड़ मारने वाली राजगढ़ कलेक्टर को बचाने की खातिर कमलनाथ सरकार डीजीपी वीके सिंह को हटाने की कार्रवाई कर रही है।

असंतोष जैसा कुछ नहीं : गृह मंत्री : मप्र के गृह मंत्री बाला बच्चन का कहना है कि डीजीपी वीके सिंह की कार्यशैली को लेकर सरकार के असंतोष जैसा कुछ भी नहीं। सिंह को हटाने के सवाल पर उन्होंने कोई जानकारी नहीं होने की बात कही।

सीएम से मुलाकात के बाद संतुष्ट दिखे सिंह : वीके सिंह ने शनिवार देर रात सीएम कमलनाथ से मुलाकात की। इसके बाद वह संतुष्ट दिखे। उधर, मप्र सरकार यूटर्न लेती दिखाई पड़ी। कयास लगाए जा रहे हैं कि सरकार विवेक जौहरी की सहमति के साथ सिंह को ही इस पर नियमित करने का प्रस्ताव यूपीएससी को भेज सकती है। ऐसे में यूपीएससी की अगली बैठक के बाद ही तस्वीर साफ हो पाएगी।

झारखंड में बजट सत्र से पूर्व भाजपा में तय हो जाएगा प्रदेश अध्यक्ष व नेता प्रतिपक्ष

राज्य ब्यूरो, रांची : झारखंड विधानसभा के बजट सत्र के पूर्व भाजपा अपने प्रदेश अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष पर निर्णय ले लेगी। नेता प्रतिपक्ष का चुनाव सत्र के पूर्व करना भाजपा की मजबूरी भी है। जनवरी में आहूत विशेष सत्र में तो बिना नेता प्रतिपक्ष काम चल गया, लेकिन करीब एक माह चलने वाले बजट सत्र में बगैर नेता प्रतिपक्ष के नहीं उतरा जा सकता। इस बीच, पार्टी की कोशिश होगी कि प्रदेश अध्यक्ष के मनोनयन की प्रक्रिया भी पूरी कर ली जाए।

प्रदेश भाजपा में संगठन की गतिविधियों को लेकर शुरू हुई कवायद भी कुछ ऐसा ही संकेत दे रही है। विधानसभा चुनाव की पराजय के बाद संगठन के स्तर के कील कांटे दुरुस्त करने में भाजपा जुट गई है। संगठन का खाका निचले स्तर से बुना जाना शुरू भी हो गया है।

बूथ व मंडल अध्यक्ष के मनोनयन की प्रक्रिया जिलों में शुरू कर दी गई है। इसमें युवाओं को ही तरजीह देने की बात कही गई है। स्पष्ट निर्देश दिया गया है कि बूथ व मंडल के अध्यक्ष की उम्र 40 वर्ष से अधिक कतई नहीं होनी चाहिए। जिला प्रभारियों को बूथ व मंडल के स्तर पर तीन-तीन नाम प्रदेश मुख्यालय को जल्द से जल्द भेजने का निर्देश दिया गया है। अगले सप्ताह जिलाध्यक्षों के लिए प्रभारियों की घोषणा की जाएगी। पार्टी की कोशिश 21 फरवरी तक बूथ से लेकर जिला स्तर तक की प्रक्रिया पूरी कर लेने की है। इसके बाद प्रदेश अध्यक्ष के मनोनयन पर विचार किया जाएगा।

संगठन महामंत्री ने की मीडिया सेल के साथ बैठक : भाजपा के संगठन महामंत्री धर्मपाल सिंह ने शनिवार को पार्टी के प्रवक्ताओं और मीडिया प्रभारियों के साथ बैठक की। बैठक में पार्टी मीडिया सेल से जुड़े पदाधिकारियों को आक्रमक तेवर के साथ अपनी बात रखने की हिदायत दी गई।

बंगाल में निजी वाहनों से स्कूल जाने पर लगाया गया प्रतिबंध हटा

जागरण संवाददाता, कोलकाता

- राज्य सरकार ने अनिवार्य पूल कार को लेकर जारी सर्कुलर लिया वापस
- मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के हस्तक्षेप के बाद स्कूल शिक्षा विभाग ने वापस लिया फैसला
- पिछले सप्ताह महानगर के 26 स्कूलों को बच्चों के आने के लिए दिया था निर्देश

बंगाल सरकार ने वाहनों से होने वाले प्रदूषण को कम करने के लिए कोलकाता के 26 प्रमुख स्कूलों में बच्चों के आने-जाने के लिए पूल कार की अनिवार्य व्यवस्था किए जाने से संबंधित सर्कुलर (अधिसूचना) को वापस ले लिया है। राज्य के शिक्षा मंत्री पार्थ चटर्जी ने शनिवार को इसकी जानकारी देते हुए बताया कि जनवरी के अंतिम सप्ताह में स्कूल शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने बिना राज्य सरकार को सूचित किए व बगैर अनुमति के यह सर्कुलर जारी किया था। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को इस बारे में पता चलने पर उन्होंने तुरंत मेरे सामने इस मुद्दे को उठाया और हमने स्कूल शिक्षा विभाग को तत्काल प्रभाव से यह सर्कुलर वापस लेने को कहा।

शिक्षा मंत्री ने यह भी कहा कि मैं ऐसे सर्कुलर जारी करने के पीछे आवश्यकता को समझने में पूरी तरह विफल रहा। पार्थ ने कहा कि हमें यह भी नहीं पता कि अन्य शहरों में पहले ऐसी कोई मिसाल या व्यवस्था है या नहीं। वहीं, स्कूल शिक्षा विभाग के एक अधिकारी ने भी कहा कि वाहनों से होने वाले प्रदूषण को कम करने के उद्देश्य से पूल कार की अनिवार्यता को लेकर जारी अधिसूचना को वापस ले लिया गया है। हालांकि, इसे वापस लेने के पीछे कारण बताने से उन्होंने साफ इन्कार किया। उल्लेखनीय है कि जनवरी के अंतिम हफ्ते में स्कूल शिक्षा विभाग ने एक अधिसूचना जारी कर कोलकाता के 26 प्रमुख स्कूलों के अधिकारियों से कहा था कि वे अनिवार्य रूप से ऐसी व्यवस्था शुरू करें जिसमें एक अप्रैल से छात्र या तो कार पूल करके स्कूल आएं या स्कूल बस से आएं। यानी असाधारण व आपातकालीन परिस्थितियों को छोड़कर स्कूल आने के लिए व्यक्तिगत वाहनों के उपयोग को प्रतिबंधित कर दिया था।

ममता बनर्जी फाइल

न्याय वितरण प्रणाली की क्षमता में 18 राज्यों में गुजरात 8वें स्थान पर

गांधीनगर, प्रेट्र : न्याय वितरण प्रणाली की क्षमता वाले बड़े और मध्य आकार वाले 18 राज्यों में गुजरात आठवें स्थान पर है। टाटा ट्रस्ट द्वारा तैयार इंडिया जस्टिस रिपोर्ट-2019 में यह जानकारी दी गई है। महाराष्ट्र शीर्ष पर है।

जस्टिस वितरण प्रणाली के चार स्तंभों-पुलिस, जेल, न्यायपालिका और कानूनी सहायता के कामकाज में गुजरात आठवें पायदान पर है। इन चारों स्तंभों के अलग-अलग मामलों में देखें तो पुलिस के कामकाज में गुजरात का स्थान 12वां, जेल के कामकाज में नौवां, न्यायपालिका में सातवां और कानूनी सहायता के कामकाज के क्षेत्र में छठां स्थान है।

गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी में शनिवार को यह रिपोर्ट मीडिया को उपलब्ध कराई गई। रिपोर्ट में कहा गया है कि न्याय वितरण प्रणाली को मजबूत करने के लिए गुजरात को जजों के खाली पदों को भरने, मामलों को सुलझाने और निचली अदालतों में और अधिक संख्या में महिला जजों की नियुक्ति करने की आवश्यकता है।

बिहार में टिकट वितरण में भी 'माय' समीकरण से किनारा करेगा राजद

अरविंद शर्मा, पटना

बिहार में जिलाध्यक्षों की नियुक्ति की तर्ज पर राजद सिर्फ संगठनात्मक स्तर पर ही नहीं, बल्कि टिकटों के वितरण में भी 'माय' (मुस्लिम-यादव) समीकरण से किनारा करने जा रहा है। पार्टी में 45 फीसद आरक्षण व्यवस्था को विधानसभा चुनाव में भी लागू किया जा सकता है।

विधानसभा चुनाव से पहले जिलाध्यक्षों की नियुक्ति में मुस्लिम-यादव की संख्या को सीमित करने के बाद नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने शनिवार को तीन मुद्दों पर राजद विधायकों की बैठक बुलाई थी। पहला जिलाध्यक्षों की नियुक्ति के बाद वह अपने विधायकों का मन-मिजाज भांपना चाहते थे। दूसरा विधानसभा चुनाव की तैयारियों पर विमर्श करना था और तीसरा 24 फरवरी से बिहार में शुरू होने वाले बजट सत्र की रणनीति बनानी थी।

चुनाव के मोर्चे सजाने से पहले संगठन के विभिन्न पदों पर आरक्षण व्यवस्था लागू करने के तेजस्वी के फैसले को राजद में थर्मामीटर की तरह माना जा रहा है। पारा अगर सीमा में रहा तो लालू के उत्तराधिकारी टिकट वितरण में भी माय समीकरण से पीछा छुड़ा सकते हैं। विधायकों की बैठक के बाद मीडिया को संबोधित करते हुए राजद के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह ने ऐसा संकेत भी दिया। उन्होंने राजद के जनाधार को 1990 के स्तर पर ले जाने का दावा किया। तब माय समीकरण जैसा कोई फार्मूला नहीं था। जिलाध्यक्षों की नियुक्ति को उन्होंने इसी कसौटी पर कसने की कोशिश की और बेबाकी से बोल भी दिया कि विधानसभा चुनाव भी इसी फार्मूले पर लड़ा जाएगा।

राबड़ी देवी की गैरमौजूदगी में उनके आवास में राजद विधायकों की बैठक करीब चार घंटे चली। तेजस्वी और जगदानंद का पूरा समय विधायकों को यह समझाने में बीता कि उनके अधिकारों में किसी प्रकार की कटौती नहीं की गई है, बल्कि राजद के जनाधार में विस्तार का प्रयास किया गया है। लालू प्रसाद की बार-बार दुहाई दी गई और कहा गया कि उनकी सहमति लेने के बाद ही परिवर्तन किया गया है। जिन्हें जिलों के कार्यों से मुक्त किया गया है, उन्हें प्रदेश कमेटी में भी जगह दी जा सकती है। तेजस्वी के लिए सुकून की बात यह है कि किसी ने भी पार्टी के फैसले पर उंगली नहीं उठाई। मुंगेर के राजद विधायक विजय कुमार विजय ने आशंका जरूर जाहिर की थी, किंतु समाधान मिलने पर सहमत भी दिखे।

नहीं दिखे तेजप्रताप : बैठक में राजद के चार बागी विधायक नहीं पहुंचे। चुनाव की तैयारियों के लिहाज से अहम माने जा रहे इस विमर्श से विधायक तेजप्रताप यादव का गायब रहना भी चर्चा का विषय बना हुआ था। तेज प्रताप के अलावा चंद्रिका राय, फराज फातमी, प्रेमा चौधरी और महेश्वर यादव का तो पहले से तय था कि वे नहीं आने वाले हैं। अब्दुल बारी सिद्दीकी के बारे में शक्ति सिंह यादव ने बताया कि वह तेजस्वी को सूचित करके किसी काम से पटना से बाहर गए हैं।

नगर-निकाय चुनावों में जीत के लिए घर-घर जाएंगे भाजपा सांसद

जागरण संवाददाता, कोलकाता

- बंगाल में जनसंपर्क पर भाजपा का जोर, विधायक भी मतदाताओं से करेंगे बात
- पार्टी के 18 सांसद एवं 10 विधायक घर-घर जाकर मतदाताओं से बात कर उनकी समस्याएं सुनेंगे

बंगाल में इसी वर्ष होने वाले नगर-निकाय चुनावों लेकर भाजपा तैयारियों में जुट गई है। लोकसभा चुनाव की तरह नगर पालिका एवं नगर निगम चुनावों में भी बेहतर परिणाम हासिल करने के लिए पार्टी जनसंपर्क पर अधिक जोर दे रही है। इसके लिए भाजपा ने अपने सांसदों एवं विधायकों को घर-घर जाकर जनता से संपर्क मजबूत करने का दायित्व दिया है। राज्य की तीन विधानसभा सीटों के उप चुनाव परिणाम के बाद भाजपा ने राज्य में तत्परता बढ़ा दी। पार्टी जनसंपर्क बढ़ाने के लिए अपने सभी 18 सांसदों एवं 10 विधायकों को घर-घर जाकर मतदाताओं से बात कर उनकी समस्याएं सुनने को कहा है। पार्टी सूत्रों के अनुसार, सांसद अपने क्षेत्र में पार्टी के स्थानीय नेताओं से संपर्क कर प्रचार की रणनीति भी तय करेंगे। उल्लेखनीय है कि नगर पालिका एवं नगर निगम चुनावों के संचालन की जिम्मेदारी पार्टी ने मुकुल राय को दी है। उन्हें 57 सदस्यीय चुनाव प्रबंधन कमेटी का संयोजक बनाया गया है। प्रदेश भाजपा महासचिव संजय सिंह को सह-संयोजक बनाया गया है। लोकसभा चुनाव प्रबंधन कमेटी में भी भाजपा ने मुकुल राय को संयोजक बनाया था। इस तरह राज्य में नगर-निकाय चुनावों के लिए भी पार्टी ने मुकुल राय पर भरोसा जताया है। पिछले साल हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा को बंगाल में रिकार्ड परिणाम हासिल हुआ था। इनके दो सांसद से 18 सांसद हो गए। इससे यहां पार्टी कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ गया। नागरिक संशोधन कानून (सीएए) के खिलाफ राज्य में शुरू हुए प्रदर्शन ने भाजपा को थोड़ा असहज कर दिया था, लेकिन दल ने इस कानून के समर्थन में व्यापक प्रचार शुरू कर स्थिति में सुधार लाई है। अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव के पहले पार्टी नगर-निकाय चुनावों में बेहतर परिणाम हासिल करना चाहती है। इसके लिए जनसंपर्क पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है।

असर

पदोन्नति में आरक्षण को लेकर आए सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद आसान होता दिख रहा है नई भर्तियों का रास्ता

उत्तराखंड में खुली नई भर्तियों की राह

राज्य ब्यूरो, देहरादून

- दिक्कतें हटीं, रोजगार देने की प्रक्रिया शुरू करेगी राज्य सरकार
- सुप्रीम कोर्ट का निर्णय आने से पदोन्नति पर रोक की बाधा दूर

सुप्रीम कोर्ट फाइल

प्रक्रिया होगी शुरू

अपर सचिव कार्मिक सुमन सिंह वाल्दिया ने कहा कि कोर्ट का फैसला आने के बाद अब जल्द डीपीसी प्रक्रिया शुरू की जाएगी। विभागों से भी पदोन्नति के सापेक्ष रिक्त होने वाले पदों का ब्योरा लिया जाएगा।

पदोन्नति में आरक्षण को लेकर आए सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद उत्तराखंड के सभी विभागों में लंबित पदोन्नतियों के खुलने व इसके सापेक्ष रिक्त होने वाले पदों पर भर्तियों की राह भी खुलती नजर आ रही है। प्रदेश में बीते मई माह से विभागों में पदोन्नति रुकी हुई थीं। अधिकांश विभागों में पदोन्नति के बाद ही निचले पद खाली होने थे, जिन पर भर्ती की जानी थी। इनकी संख्या तकरीबन 20 हजार के आसपास मानी जा रही है। हालांकि, सही आंकड़ा जुटाने के लिए कार्मिक विभाग सभी विभागों से विस्तृत जानकारी लेने की तैयारी कर रहा है।

प्रदेश सरकार ने बीते सितंबर माह में प्रदेश में सभी विभागों में डीपीसी बैठकों को स्थगित करते हुए पदोन्नति प्रक्रियाओं पर रोक लगा दी थी। इसका आधार हाई कोर्ट व सुप्रीम कोर्ट में पदोन्नति में आरक्षण के मसले को लेकर चल रहे मुकदमों को बताया गया। कोर्ट में चल रहे इन मुकदमों का सबसे अधिक असर नौकरी की राह ताक रहे युवाओं और सेवानिवृति की दहलीज पर खड़े कार्मिकों पर पड़ा।

दरअसल, प्रदेश के विभिन्न विभागों में निचली श्रेणी के अधिकांश पद सीधी भर्ती के हैं। इनके ऊपर के पदों पर भी आधे पद सीधी भर्ती तो आधे पदोन्नति के जरिये भरे जाते हैं। वर्ष 2018 में सरकार ने जब ऐसे पदों की गणना की थी तब इनकी संख्या 26 हजार आंकी गई थी। हालांकि, इसके बाद इनमें से कुछ पदों पर तो भर्ती हुई, लेकिन अभी भी बड़ी संख्या में पद रिक्त पड़े हुए हैं। इनमें राजस्व, शिक्षा, स्वास्थ्य, पुलिस, परिवहन, वन विभाग, वन निगम, सिंचाई विभाग, खाद्य-आपूर्ति, आबकारी, उद्योग व आयुष आदि समेत 40 विभागों के पद शामिल हैं।

राकांपा प्रमुख शरद पवार की हत्या की साजिश के शक में शिकायत दर्ज

पुणे, प्रेट्र : राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के प्रमुख शरद पवार की हत्या की साजिश का शक जताते हुए पार्टी के एक कार्यकर्ता ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है।

शनिवार को साइबर सेल और शिवाजी नगर थाने में दर्ज कराई गई शिकायत में कहा गया है कि जब से प्रदेश में शिवसेना-एनसीपी की सरकार बनी है कुछ लोग इस सरकार को अस्थिर करने का प्रयास कर रहे हैं। शिकायत करने वाले एनसीपी कार्यकर्ता लक्ष्मीकांत खबिया का कहना है कि यू-ट्यूब समेत सोशल मीडिया के कई प्लेटफार्म पर इस तरह के वीडियो डाले जा रहे हैं जिनमें नरेंद्र दाभोलकर और गोविंद पानसरे की तरह सबक सिखाने की बात की जा रही है। उल्लेखनीय है कि लेखक व सामाजिक कार्यकर्ता दाभोलकर की 2013 और वामपंथी विचारक पानसरे की 2015 में हत्या कर दी गई थी। इन मामलों में कुछ हिंदू संगठनों से जुड़े लोगों को गिरफ्तार किया गया था।

शरद पवार फाइल

खबिया ने पार्टी प्रमुख पवार के खिलाफ इस तरह के बयान देने और सोशल मीडिया पर पोस्ट डालने वालों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। शिकायत में दो लोगों के नाम भी दिए गए हैं जिसमें एक पत्रकार और एक सोशल मीडिया पर सक्रिय रहने वाला अतिवादी है। खबिया का कहना है कि इन दोनों के भाषण सुनने से ऐसा लगता है कि कहीं यह पावर साहब को रास्ते से हटाने की साजिश तो नहीं। राज्य में जबसे शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे के नेतृत्व में महाराष्ट्र विकास अघाड़ी की सरकार बनी है एक यू ट्यूब चैनल पर ये दोनों अनाप-शनाप बोल रहे हैं। इन चैनल के कमेंट बाक्स में पवार साहब को गोली मारो, बम फेंको जैसी टिप्पणियां की जा रही हैं।

शिकायतकर्ता ने कहा कि मैंने एनसीपी कोटे से गृहमंत्री बने अनिल देशमुख से इस मामले में विशेष जांच टीम (एसआइटी) गठित करने की मांग की है।

इस मामले में पुणे के पुलिस आयुक्त के.वेंकटेशम ने कहा कि हम शिकायत की जांच कर रहे हैं। तथ्यों की पड़ताल के बाद ही हम आगे की कार्रवाई करेंगे।

123 छात्रों की पहचान हुई है एएमयू में बवाल करने में आगरा एसआइटी की जांच में। ये छात्र अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (एएमयू) में हुए बवाल में शामिल थे। 52 छात्रों की पहचान पहले ही हो गई थी। अब 71 नए छात्रों की पहचान हुई है।

यूपीपीएससी की चयन प्रक्रिया में किया गया बड़ा बदलाव

नियम ▶ अनारक्षित सीटों पर आरक्षण का लाभ पाने वालों का चयन नहीं

18 दिसंबर को प्रस्ताव पास किया गया था, उसी दिन से व्यवस्था लागू

अजय जायसवाल, प्रयागराज

प्रतीकात्मक

यूपीपीएससी में हाई कोर्ट के निर्देश पर प्रस्ताव पास होते ही यह व्यवस्था लागू हो गई है, किसी भर्ती में ओवरलैपिंग नहीं होगी।
-जगदीश, सचिव उप्र लोकसेवा आयोग

उत्तर प्रदेश लोकसेवा आयोग की भर्तियों की चयन प्रक्रिया में बड़ा बदलाव हुआ है। अब किसी भी भर्ती में अनारक्षित सीटों पर आरक्षित वर्ग के उस अभ्यर्थी का चयन नहीं हो सकेगा, जिसने भर्ती के किसी भी चरण में अर्हकारी मानक (क्वालीफाइंग स्टैंडर्ड) में छूट का लाभ लिया है।

आरक्षित वर्ग का वह अभ्यर्थी जिसने भर्ती में आरक्षण या फिर अन्य छूट न लेकर यदि सामान्य वर्ग का न्यूनतम कटऑफ अंक हासिल कर लिया है, उसी का अनारक्षित सीट पर चयन होगा। यूपीपीएससी में आरक्षण व्यवस्था नियमानुसार लागू है, केवल सीटों पर अभ्यर्थियों के चयन में बदलाव किया गया है। उप्र लोकसेवा आयोग की भर्तियों में अभ्यर्थियों की चयन प्रक्रिया को हाई कोर्ट में चुनौती दी गई थी। उसमें कहा गया था कि आयोग भर्ती के पहले चरण से आरक्षित वर्ग के अभ्यर्थी को नंबरों के शिथिलीकरण के रूप में आरक्षण का लाभ देता है और फिर उसे दूसरे व तीसरे चरण में भी आरक्षण का लाभ मिलता है। अंत में यदि वह अधिक अंक हासिल करके अनारक्षित वर्ग का न्यूनतम कटऑफ अंक हासिल कर लेता है तो उसका चयन अनारक्षित वर्ग की सीट पर हो जाता है, जबकि आरक्षण का लाभ अंतिम चरण में ही दिया जाना चाहिए। कोर्ट ने इस पर आयोग से जवाब-तलब किया, तब आयोग ने 18 दिसंबर को असाधारण बैठक बुलाकर व्यवस्था में बदलाव करने का प्रस्ताव पास किया और उसी दिन से नई व्यवस्था लागू हो गई है। यही नहीं यूपीएससी यानी संघ लोकसेवा आयोग में ऐसी ही व्यवस्था लागू है, आयोग ने उसका ही अनुपालन किया है।

अब ऐसे होगा चयन: यदि कोई आरक्षित वर्ग का अभ्यर्थी प्रारंभिक से लेकर साक्षात्कार तक बिना आरक्षण या अन्य लाभ के अनारक्षित सीट के लिए तय कटऑफ अंक से अधिक अंक पाता है तो वह अनारक्षित वर्ग में चयन का हकदार होगा। लेकिन, यदि उसे किसी भी चरण में आरक्षण या अन्य का लाभ मिला और बाद में उसके अंक अनारक्षित वर्ग के कटऑफ से अधिक हैं तो भी उसे अपने ही आरक्षित वर्ग की सीट मिलेगी।

'भाजपा शीर्ष नेतृत्व ने सीएए पर चुप रहने को कहा'

कोहिमा, प्रेट्र : नगालैंड के उपमुख्यमंत्री वाई पैटोन ने दावा किया कि राज्य के भाजपा नेताओं को नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) पर एक शब्द भी नहीं बोलने के लिए कहा गया है। उपमुख्यमंत्री ने विधानसभा में विपक्ष के नेता टीआर जेलिआंग के सवाल के उत्तर में यह कहा।

विपक्ष के नेता ने सवाल किया था कि राज्य के भाजपा विधायक दिल्ली में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा सीएए पर बुलाई गई बैठक में क्यों चुप रहे। उपमुख्यमंत्री ने जवाब में कहा, 'एक भी शब्द इसलिए नहीं कहा, क्योंकि हमारे केंद्रीय नेतृत्व ने हमें चर्चा में भाग नहीं लेने के लिए कहा है।' उपमुख्यमंत्री विधानसभा में भाजपा विधायक दल के नेता भी हैं।

नगालैंड विधानसभा में शनिवार को शोरशराबा हुआ। विपक्षी एनपीएफ ने नए नागरिकता कानून के खिलाफ प्रदर्शन किया। पार्टी केरल और बंगाल की तरह सदन में सीएए के विरोध में प्रस्ताव पारित करने पर जोर दे रही है। एनपीएफ की मांग खारिज करते हुए पैटोन ने कहा कि राज्य के पास इनर लाइन परमिट है। इसे इस कानून से मुक्त रखा गया है।

1971 के रण में वीरांगनाएं बनीं थीं सहारा, अब होगा सम्मान

नईदुनिया, भिलाई: भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय 1971 में गुजरात स्थित कच्छ (भुज) के एरोड्रम को पाकिस्तान ने बम गिराकर तहस-नहस कर दिया था। उस समय माधापर कच्छ (भुज) निवासी करीब 300 महिलाओं के एक समूह ने मात्र तीन दिन में उस रन-वे को नया बना दिया, जहां से भारतीय वायुसेना के विमानों ने उड़ान भरते हुए पाकिस्तान के धूल चटा दी थी। इस महिला समूह की जीवित छह महिलाओं का रविवार को दुर्ग में सम्मान किया जाएगा।

बताते हैं कि जब पाकिस्तानी वायुसेना ने भुज स्थित रन-वे पर बमबारी की तो वहां रन-वे पर 12 फीट का गड्ढा हो गया। भारत के लिए रन-वे ठीक करना बहुत जरूरी था, वरना युद्ध का परिणाम उलट भी सकता था। जब रन-वे की मरम्मत करने कोई मजदूर नहीं मिला तब 300 महिलाओं ने कमर कसी और 71 घंटे में रन-वे ठीक कर दिया। इसके बाद युद्ध की तस्वीर ही बदल गई। भारतीय वायुसेना ने इसी रन-वे से पाकिस्तानी वायुसेना को दहला दिया। भारतीय सेना के साथ उन तीन सौ महिलाओं की भी जय-जयकर हुई, जिन्होंने देश के लिए स्वयं और अपने बच्चों तक की परवाह नहीं की। आज उन तीन सौ वीरांगनाओं में से छह जीवित हैं। नौ फरवरी की सभी वीरांगना दुर्ग आ रहीं है। विनय संचेती स्मृति में इन देशभक्त महिलाओं को राजन श्री सम्मान से नवाजा जाना है।

डर गए थे मजदूर तब महिलाओं ने संभाला मोर्चा: भारतीय वायुसेना के कैप्टन विजय कार्निक ने भुज के पास स्थित गांव के मजदूरों से संपर्क किया था। उन्हें बताया कि यह रन-वे ठीक होना क्यों जरूरी है। यदि रन-वे ठीक नहीं हुआ तो युद्ध का परिणाम गंभीर हो सकता है। पुरुष मजदूर जब सकपकाने लगे तो गांव की तीन सौ महिलाएं आगे आईं। इनमें से कई महिलाओं के छोटे-छोटे बच्चे भी थे, लेकिन देशप्रेम के आगे इन महिलाओं ने बच्चों की परवाह नहीं की। कैप्टन विजय कार्निक के मार्गदर्शन में महिलाओं ने काम शुरू किया। कैप्टन ने महिलाओं को पहले ही समझा दिया था कि जैसे ही पाकिस्तानी विमान आने का सायरन बजे वे पास की झाड़ियों में छुप जाएं। महिलाओं ने पहले दिन सिर्फ पानी पीकर काम शुरू किया।

बन रही है फिल्म

इस ऐतिहासिक घटना पर एक फिल्म भी बन रही है। भुज- द प्राइड ऑफ इंडिया...। इसमें अभिनेता अजय देवगन कैप्टन विजय कार्निक का रोल निभा रहे हैं। 71 घंटे में भारतीय वायुसेना को रन-वे तैयार कर देने वाली महिलाओं में जो छह महिलाएं आज भी जीवित हैं, उनमें कानबाई एस हिरानी, श्यामबाई के खोखानी, प्रेमबाई के हिरानी, वालबाई पंडोरिया, देवबाई के हलाई, वालबाई के हलाई शामिल हैं।

सीएए के विरोध में धरने में देश विरोधी नारे लगाने का आरोप

नईदुनिया, शाजापुर: मध्य प्रदेश में शाजापुर जिले के मक्सी में सीएए और एनआरसी के विरोध में आयोजित विरोध प्रदर्शन में देश विरोधी नारे लगाने का आरोप लगाया गया है। शनिवार को हिंदू जागरण मंच के सैकड़ों कार्यकर्ता आरोपितों के खिलाफ केस दर्ज कराने पुलिस थाने पहुंचे। केस दर्ज नहीं होने पर शहर बंद कराने की चेतावनी दी।

विरोध प्रदर्शन शुक्रवार को आयोजित किया गया था। धरने के आयोजकों में से एक व्यक्ति ने प्रदर्शन के दौरान दिए जा रहे भाषण का वीडियो सोशल मीडिया पर लाइव कर दिया था। इसी का वीडियो शनिवार को सामने आया और हिंदूवादी संगठन ने विरोध जताया। थाने पहुंचे हिंदूवादी संगठन के कार्यकर्ता आरोपितों पर देशद्रोह का मुकदमा दर्ज करने की मांग पर अड़ गए, लेकिन पुलिस अधिकारी मामला दर्ज करने के बजाय आवेदन देने की बात कहते रहे। इसे लेकर कार्यकर्ताओं की पुलिस से नोक-झोंक भी हुई। पुलिस को सौंपे ज्ञापन में मंच के कार्यकर्ताओं ने दो दिन में आरोपितों पर देशद्रोह का मुकदमा दर्ज करने की मांग की।

वीडियो से छेड़छाड़: मक्सी के सदर (अध्यक्ष) आसिफ मेव समेत संविधान बचाओ मंच के सदस्यों का कहना है कि यह आयोजन कांग्रेस, भीम आर्मी, बलाई महासभा, बहुजन समाज, भारत मुक्ति मोर्चा समेत कई संगठनों ने किया था। कार्यक्रम भारत माता के जयकारों के साथ शुरू हुआ था। वीडियो के साथ छेड़छाड़ हुई है।

न्यूज गैलरी

सीएए का आदतन विरोध कर रही कांग्रेस : केशव

रामेश्वरम: उप्र के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि कांग्रेस नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) का विरोध महज इसलिए कर रही है, क्योंकि लोक कल्याणकारी सभी योजनाओं का विरोध करना उसकी आदत बन गई है। मौर्य यहां श्री रामनाथस्वामी मंदिर में पूजा अर्चना करने आए हैं। उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार लोगों के हित में जितने भी कार्यक्रम बनाती है कांग्रेस उसका विरोध करती है। इसी आदत के चलते वह सीएए का विरोध कर रही है। पत्रकारों से बातचीत करते हुए उन्होंने अनुच्छेद 370 समाप्त करने समेत अन्य मुद्दों पर कांग्रेस के नकारात्मक रुख की कड़ी आचोलना की। (प्रेट्र)

राजनीतिक दल मिलकर करें सीएए का विरोध : तौकीर रजा

बरेली: इत्तेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल (आइएमसी) के प्रमुख मौलाना तौकीर रजा खां ने एक बार फिर सीएए के खिलाफ आवाज उठाई। कहा कि सभी राजनीतिक दल मिलकर भाजपा की केंद्र सरकार का विरोध करें। ऐसा नहीं किया तो उन्हें चुनाव के दौरान मुसलमान मोहल्लों में नहीं घुसने देंगे। शनिवार को बरेली के बिहारीपुर स्थित अपने आवास में प्रेसवार्ता में उन्होंने कहा कि सभी गैर भाजपाई दलों को सीएए व एनआरसी का विरोध करने के लिए सड़क पर उतरना चाहिए। मौलाना इससे पहले भी सीएए के खिलाफ प्रदर्शन कर चुके हैं। (जासं)

टीवी शो को लेकर रवीना, फराह, भारती के खिलाफ एफआइआर

नागपुर, प्रेट्र : फिल्म अभिनेत्री रवीना टंडन, निर्देशक फराह खान और छोटे पर्दे की जानीमानी हस्ती भारती सिंह के खिलाफ मनकापुर थाने में एफआइआर दर्ज की गई है। सभी के खिलाफ मजाक उड़ाने वाले अंदाज में धार्मिक पद का इस्तेमाल कर एक समुदाय की भावना को आहत करने का आरोप लगाया गया है। शनिवार को एक अधिकारी ने यह जानकारी दी।

गोरेवाडा के निवासी खुशबू भगवान पवार ने शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने दावा किया है कि तीनों ने पिछले साल 25 दिसंबर को प्रसारित एक टीवी शो के दौरान धार्मिक पद का मजाक उड़ाया था। मनकापुर थाने के निरीक्षक वजीर शेख ने कहा कि 27 दिसंबर को शिकायत सौंपी गई थी। धारा 295 ए के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है। तीनों के खिलाफ जल्द ही समन जारी किया जाएगा। खान व टंडन माफी भी मांग चुकी हैं, कहा था कि उनका इरादा आहत करने का नहीं था।

तरनतारन में नगर कीर्तन के दौरान पटाखों में विस्फोट, दो बच्चों की मौत, 11 घायल

जागरण संवाददाता, तरनतारन

पंजाब के तरनतारन में गुरुद्वारा साहिब से निकाले गए नगर कीर्तन के दौरान पटाखों में विस्फोट से क्षतिग्रस्त हुई ट्राली। जागरण

बाबा दीप सिंह जी के जन्मदिवस पर उनके पैतृक गांव पहुविंड के गुरुद्वारा साहिब से निकले नगर कीर्तन के दौरान पटाखों में विस्फोट से दो बच्चों की मौत हो गई, जबकि 11 लोग घायल हो गए। इनमें से तीन की हालत गंभीर है। धमाका भारत-पाक सीमा से करीब 40 किलोमीटर दूर गांव पलासौर के पास पेट्रोल पंप से 400 गज की दूरी पर हुआ। नगर कीर्तन बाबा दीप सिंह जी के जन्म स्थान गुरुद्वारा पहुविंड से रवाना हुआ था। यह अमृतसर जिले के गांव चब्बा के पास गुरुद्वारा टाहला साहिब में संपन्न होना था, लेकिन बीच रास्ते में ही हादसा हो गया। मृतकों में गुरप्रीत सिंह (12) व मनप्रीत सिंह (17) शामिल हैं। दोनों गांव पहुविंड के रहने वाले थे। धमाके के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। स्थानीय लोगों ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया। एसएसपी ध्रुव दहिया पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और इलाके की घेराबंदी की। आइजी बॉर्डर रेंज सुरिंदरपाल परमार भी मौके पर पहुंचे। उन्होंने दो बच्चों की मौत की पुष्टि की। आइजी ने कहा कि पटाखों पर पाबंदी के बावजूद आतिशबाजी की गई।

ऐसे हुआ हादसा : नगर कीर्तन में शामिल युवक पांच फीट चौड़ी व पांच फीट लंबी ट्रैक्टर ट्रॉली पर रखे पटाखे चला रहे थे। पटाखों में गंधक व पोटाश का मिश्रण लोहे की डेढ़ फीट लंबी पाइप में डालकर असमान की ओर छोड़ा जा रहा था। अभी तीन से चार पटाखे ही चलाए गए थे कि एक पटाखा ट्रॉली में रखे अन्य पटाखों पर जा गिरा, जिससे जोरदार धमाका हो गया।

मृतकों के परिजनों को पांच लाख का मुआवजा, न्यायिक जांच के आदेश : मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने आइजी बॉर्डर रेंज सुरिंदरपाल परमार से मामले की विस्तृत रिपोर्ट मांगी है। मृतकों के परिजनों पांच लाख रुपये मुआवजा देने व सभी घायलों का मुफ्त इलाज करवाने का एलान किया। तथा एसडीएम को न्यायिक जांच के आदेश दिए हैं।

सीएए विरोधी को थाने पहुंचाने वाला कैब चालक सम्मानित

- मुंबई भाजपा प्रमुख लोढ़ा ने दिया सजग नागरिक सम्मान
- भाजपा नेता ने रोहित को सम्मानित करते हुए तस्वीर भी साझा की

मुंबई, प्रेट्र : फोन पर नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) के खिलाफ बातचीत करने वाले यात्री को थाना पहुंचाने वाले कैब चालक को भाजपा ने सम्मानित किया है। मुंबई भाजपा प्रमुख मंगल प्रभात लोढ़ा ने शनिवार को चालक को सम्मानित किया।

कैब चालक रोहित गौड़ ने सीएए विरोधी बातचीत करने पर युवा कवि बप्पादित्य सरकार को लेकर बुधवार रात सीधे सांता क्रूज थाना पहुंच गया था। बप्पादित्य पर राष्ट्र विरोधी साजिश रचने का भी आरोप है।

लोढ़ा ने ट्वीट किया, 'सीएए के खिलाफ राष्ट्र विरोधी साजिश का संदेह होने पर उबर टैक्सी यात्री बप्पादित्य को रोहित गौड़ ने थाने को सौंप दिया था। सांता क्रूज थाने पर बुलाकर रोहित को मुंबई की जनता की ओर से सजग नागरिक सम्मान दिया गया।' भाजपा नेता ने रोहित को सम्मानित करते हुए तस्वीर भी साझा की।

जयपुर निवासी बप्पादित्य काला घोड़ा उत्सव के कवि सम्मेलन में भाग लेने के लिए तीन फरवरी को मुंबई पहुंचे थे। इसके अलावा मुंबई के नागपाड़ा में सीएए-एनआरसी विरोधी प्रदर्शन में भी उन्होंने भाग लिया। बुधवार रात कैब से यात्रा करते समय वह अपने दोस्त के साथ सीएए के खिलाफ प्रदर्शन पर चर्चा कर रहे थे।

सीएए विरोधी प्रदर्शन करने वालों के खिलाफ मामला दर्ज

सेंट्रल मुंबई में सीएए और एनआरसी के खिलाफ प्रदर्शन करने वालों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पिछले दो सप्ताह से जारी प्रदर्शन में 300 महिलाएं भाग ले रही हैं। शुक्रवार शाम नागपाड़ा थाने में दर्ज कराई गई शिकायत में बीएमसी ने कहा है कि मोरलैंड रोड पर निर्माण कार्य रुका हुआ है। प्रदर्शनकारियों ने सड़क पर कुर्सियां लगा रखी हैं और मंच बना रखा है। इससे यातायात भी बाधित हो रहा है।

इस समय यह है नियम

▶ प्रथम पृष्ठ से आगे

करतारपुर कॉरिडोर से सिख तीर्थयात्रियों को बिना वीजा यात्रा करने और उसी दिन लौटने की अनुमति है। मौजूदा प्रक्रिया के अनुसार, तीर्थयात्री भारतीय पासपोर्ट या भारतीय मूल के विदेशी नागरिक के कार्ड के साथ-साथ निवासी देश का पासपोर्ट प्रस्तुत कर गलियारे की यात्रा कर सकते हैं।

रखी जाती है नजर : पाकिस्तानी गृह मंत्री शाह ने कहा कि पाकिस्तान में बाहर निकलने से रोकने के लिए आगंतुकों को घूमने वाले गेट का उपयोग करके गुरुद्वारा परिसर के अंदर रखा जाता है। गलियारे में और उसके आसपास की सभी गतिविधियों पर निगरानी कैमरों के माध्यम से नजर रखी जाती है।

अयोध्या में राम मंदिर निर्माण में किसी का दखल स्वीकार नहीं : स्वामी वासुदेवानंद

जागरण संवाददाता, प्रयागराज

स्वामी वासुदेवानंद। फाइल

अयोध्या में श्रीराम मंदिर भव्य ही नहीं अभूतपूर्व भी होगा। इसके निर्माण में न कोई राजनीतिक दखलंदाजी होगी और न ही किसी को ऐसा कहने का मौका दिया जाएगा कि अमुक व्यक्ति अथवा संस्था की बड़ी भूमिका है। ये बातें श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के सदस्य स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती ने शनिवार को कहीं।

प्रयागराज के अलोपीबाग स्थित अपने आश्रम में मीडिया से अनौपचारिक बातचीत के दौरान वह एक बड़े संत का नाम लेकर सख्त हो गए। कहा कि इस देश की संसद ने ट्रस्ट बनाया है, अंतिम निर्णय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लिया है। इसलिए विरोध के स्वर बर्दाश्त नहीं किए जाएंगे।

अधिकतम 11 रुपये लिए जाएंगे : स्वामी वासुदेवानंद ने कहा कि मंदिर के कार्यों में अब तक खर्च होने के बाद जो भी राशि बची है, उससे निर्माण में आर्थिक कमी महसूस हुई तो जन-जन से फिर दान लिया जाएगा। दान की रकम अधिकतम 11 रुपये होगी, अधिक रकम या सोने-चांदी का दान न लेने की कोशिश की जाएगी। उन्होंने बताया कि ट्रस्ट की बैठक में सब बातें तय कर ली जाएंगी।

स्वामी वासुदेवानंद ने कहा कि मंदिर विश्व हिंदू परिषद के प्रस्तावित मॉडल पर ही बनेगा। इसमें बदलाव की गुंजाइश नहीं है। उन्होंने बताया कि अयोध्या में श्रीराम मंदिर का निर्माण पूरा होने में कम से कम दो साल लग सकते हैं। काम कितना भी तेज हो, जैसी भव्यता सोची गई है, उसमें इतना वक्त लगेगा ही। उन्होंने बताया कि मंदिर निर्माण के लिए पत्थर तराशने और नक्काशी का काम लगभग 70 फीसद पूरा हो गया है।

राम मंदिर ट्रस्ट गठन पर शंकराचार्य ने जताई नाराजगी

नईदुनिया, नरसिंहपुर: द्विपीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती ने श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए गठित ट्रस्ट पर आपत्ति जताई है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार मंदिर नहीं बना सकती, यह केवल रामभक्त ही कर सकते हैं। ट्रस्ट में सरकारी व्यक्ति शामिल हैं और सरकारी व्यक्ति मंदिर नहीं बना सकते, क्योंकि सरकार संविधान से चलती है और संविधान धर्म निरपेक्ष है। शंकराचार्य मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर जिले के झोतेश्वर स्थित परमहंसी गंगा आश्रम में पत्रकारों से चर्चा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि उन्हें ट्रस्ट बनाने पर ही आपत्ति है। इस विषय में वह केंद्र सरकार को नोटिस भेजेंगे। केंद्र सरकार मंदिर नहीं बल्कि एक स्मारक बना रही है। यह बात वह संतों को समझाएंगे। सरकार शराब के टैक्स आदि से प्राप्त राशि से मंदिर बनाएगी।

भारत में हिंदुओं के साथ काम करना होगा : आरएसएस

- भय्याजी जोशी ने कहा, हिंदुओं ने भारत का उत्थान और पतन देखा है

पणजी, प्रेट्र : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरकार्यवाह सुरेश भय्याजी जोशी ने शुक्रवार को कहा कि कोई भी व्यक्ति जो भारत में काम करना चाहता है, उसे हिंदुओं के साथ और उनके सशक्तीकरण के लिए काम करना होगा। शनिवार को विश्वगुरु भारत : आरएसएस का परिप्रेक्ष्य विषय पर व्याख्यान को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदुओं ने आदि काल से भारत का उत्थान और पतन देखा है। भारत को कभी भी हिंदुओं से अलग नहीं किया जा सकता। हिंदू हमेशा इस देश के केंद्र में रहे हैं।

जोशी ने कहा कि हिंदू चूंकि सांप्रदायिक या किसी के विरोधी नहीं रहे हैं, इसलिए किसी समुदाय को इनके साथ काम करने में संकोच नहीं करना चाहिए। दुनिया कहती है कि भारत 2020 में सुपर पावर होगा। लेकिन, मुझे एक बुद्धिजीवी की बात याद आती है, जिसमें उन्होंने कहा था कि भारत को 2020 में सुपर-राष्ट्र होना चाहिए। व्याख्यान में अन्य लोगों के अलावा गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत भी मौजूद थे।

जोशी ने कहा कि हिंदुओं में जागरूकता

भय्याजी जोशी। फाइल

फैलाने और उन्हें एकजुट करने का मतलब किसी समुदाय के खिलाफ काम करना नहीं है। किसी को इसे इस तरह से नहीं लेना चाहिए। हम पूरी दुनिया के सामने पूरे आत्मविश्वास के साथ कह सकते हैं कि हिंदुओं के मजबूत होने से विनाशकारी गतिविधियां नहीं होंगी। इतिहास का जिक्र करते हुए जोशी ने कहा कि हिंदुओं ने कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया है। जिन लड़ाइयों में उन्हें उतरना पड़ा वह आत्मरक्षा के लिए था। आत्मरक्षा का अधिकार हर किसी को है।

तीर-कमान लेकर गांधीनगर पहुंचे आदिवासी

राज्य ब्यूरो, अहमदाबाद। प्रदेश में फर्जी अनुसूचित जनजाति (एसटी) प्रमाणपत्रों के विरोध में आदिवासी समुदाय के लोगों ने लगातार दूसरे दिन प्रदर्शन किया। तीर-कमान से लैस समुदाय के लोगों ने गांधीनगर में रैली निकाली।

गांधीनगर में शुक्रवार को आदिवासी समुदाय के एक सम्मेलन में डांग से कांग्रेस विधायक मंगल गावित ने आह्वान किया था कि सरकार उनकी मांग स्वीकार नहीं करे तो तीर-कमान लेकर सड़कों पर उतरें। शनिवार को आदिवासी समुदाय के लोग बड़ी संख्या में गांधीनगर पहुंचे। यहां हाथों में तीर-कमान, तलवार, बर्छी जैसे हथियार लेकर रैली निकालकर शक्ति प्रदर्शन किया। शुक्रवार को राठवा समुदाय ने छोटा उदेपुर जिला बंद रखा था।

आदिवासी समुदाय अपने युवाओं को रोजगार व राज्य में फर्जी एसटी प्रमाणपत्र रद करने की मांग कर रहा है। एक दिन पहले ही आदिवासी विकास मंत्री गणपतसिंह वसावा ने कहा था कि लोक रक्षक दल भर्ती में एसटी वर्ग के एक भी फर्जी प्रमाणपत्र को मान्य नहीं माना जाएगा।

डिफेंस एक्सपो

सेनाओं के शौर्य व रक्षा उपकरणों की अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी का समापन, लखनऊ को मिली वैश्विक पहचान, 12 लाख लोगों ने दर्ज कराई आमद

डिफेंस एक्सपो भारत के आने वाले समय का शंखनाद : राजनाथ

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

लखनऊ में चल रहे डिफेंस एक्सपो के समापन समारोह में डिफेंस कॉरिडोर कॉफी टेबल बुक का विमोचन करते (बाएं से) मुख्य सचिव आरके तिवारी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, औद्योगिक विकास मंत्री सतीश महाना व सचिव रक्षा विभाग अजय कुमार। जागरण

भारतीय सेनाओं के शौर्य को जल, थल और नभ में प्रदर्शित करने का अंतरराष्ट्रीय मंच देने वाला डिफेंस एक्सपो 2020 अपनी स्वर्णिम यादें छोड़कर शनिवार को विदा हो गया। रक्षा के क्षेत्र में भारत के सामर्थ्य और दुनियाभर में फैले डिफेंस उपकरणों के बाजार को शोकेस करने वाले इस आयोजन की सफलता का अंदाज इस बात से लगाया जा सकता है कि 12 लाख लोगों ने इसके दीदार किए। एक्सपो के समापन समारोह में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि बीते चार दिनों में देश और दुनिया ने एक नया भारत देखा है। यह रक्षा क्षेत्र में समृद्ध, सशक्त और समर्थ भारत है। डिफेंस एक्सपो का यह ग्यारहवां संस्करण शंखनाद था कि आने वाले समय का भारत कैसा होगा। साथ ही यह संकेत दे गया कि भविष्य में हमारा देश डिफेंस मैन्युफैक्चरिंग का सशक्त केंद्र बनेगा।

राजनाथ सिंह ने कहा कि देश के अब तक के सबसे बड़े डिफेंस एक्सपो की अभूतपूर्व सफलता से मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। यह एक्सपो सिर्फ उप्र नहीं बल्कि रक्षा क्षेत्र के प्रति देश की आशा, आकांक्षाओं का प्रतीक है। यह प्रदर्शनी भारत के डिफेंस मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर के लिए मील का पत्थर है। यह देश को रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के साथ रक्षा उपकरणों का निर्यातक भी बनाएगा। आयोजन की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने डिफेंस एक्सपो के बैनर तले पहली बार आयोजित इंडिया-अफ्रीका डिफेंस मिनिस्टर्स कॉन्कलेव का भी जिक्र किया।

लखनऊ घोषणापत्र का जिक्र : इंडिया-अफ्रीका डिफेंस मिनिस्टर्स कॉन्क्लेव में अंगीकार किए गए लखनऊ घोषणापत्र का जिक्र करते हुए रक्षा मंत्री ने कहा कि भारत और अफ्रीकी देश रक्षा उत्पादन के साथ समुद्री सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग देने, आतंकवाद के खतरों से निपटने के लिए इंटेलीजेंस व निगरानी साझा करने के लिए सहमत हुए हैं। आयोजन में डेढ़ सौ से ज्यादा विदेशी कंपनियों, तीन हजार से ज्यादा विदेशी प्रतिनिधियों और रक्षा विशेषज्ञों की आमद ने इसे अंतरराष्ट्रीय शोहरत दिलाई है। डिफेंस एक्सपो दुनिया के सामने आने वाली सामरिक चुनौतियों और खतरों से निपटने का साझा मंच हो गया है।

उप्र की क्षमता पर अब नहीं उठने चाहिए सवाल: डिफेंस एक्सपो के समापन समारोह में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि इसके भव्य आयोजन ने उप्र के बारे में देश और दुनिया की धारणा बदली है। बीते ढाई वर्षों के दौरान हमने डिफेंस एक्सपो समेत विभिन्न आयोजनों को सफलता की ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। उप्र की क्षमता पर अब प्रश्न नहीं उठने चाहिए।

जंग में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस से बचाई जाएगी सैनिकों की जान

पुलक त्रिपाठी, लखनऊ

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के प्रयोग से युद्ध भूमि में सेना की राह आसान हो चली है। युद्धपोत हों या अन्य हथियार, युद्ध के दौरान उनमें टेक्निकल खामियों पर आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस अंकुश लगाएगा। इससे सैनिकों की जान बचाने के साथ ही अनहोनी से भी बचा जा सकेगा।

देश का पहला फायर आर्म्स बॉयोमेट्रिक एक्सेस कंट्रोल होल्स्टर बनाने वाली कंपनी हंस एनर्जी के निदेशक गौरव पिलानिया ने बताया कि भविष्य की जरूरत को देखते हुए ही डिफेंस सेक्टर के हथियारों व वाहनों को डिजिटल प्लेटफार्म से जोड़े जाने की दिशा में काम चल रहा है। इसी मकसद से सैन्य क्षेत्र के हथियारों (जमीनी युद्धपोत), एयरक्राफ्ट पर काम जारी है। इसमें आर्टिलरी गन व सभी तरह के कॉम्बेट वाहनों को भी शामिल किया जा रहा है।

सेना के एक अधिकारी के अनुसार वाहन या हथियार ऑटोमैटिक सिस्टम, मशीनी विशेषताओं जैसे हाइड्रोलिक लाइन, न्यूमैटिक, इलेक्ट्रॉनिक, इलेक्ट्रिक सिस्टम से लैस होते हैं। इसके अलावा कम्युनिकेशन सिस्टम का प्रोटोकॉल भी अहम होता है, जिसे हर वक्त दुरुस्त रखना बेहद महत्वपूर्ण है। ऐसे में इतनी अधिक व जटिल मशीनरी तंत्र के कभी भी खराब होने व उसमें तकनीकी खामी आ सकती है। आपात स्थिति में आई टेक्निकल खामी से जान-माल के खतरे की आशंका बढ़ जाती है। इसलिए, पहले से इन खामियों की जानकारी कर लेना और उस समस्या को दूर कर लेना युद्ध के पूर्व की सफलता मानी जा रही है। इसमें आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस बेहद कारगर साबित हो रहा है।

न्यूज गैलरी

नूतन के बंगले में चोरी करने के आरोप में एक गिरफ्तार

ठाणे : मशहूर अभिनेत्री नूतन के बंगले से नल और पाइप चोरी करने के आरोप में पुलिस ने एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया। अभिनेत्री का बंगला ठाणे जिले के मुंब्रा इलाके में स्थित है। अपराध शाखा के सहायक निरीक्षक संदीप बगुल ने बताया कि तीन फरवरी को भोर के समय तीन लोगों ने वारदात को अंजाम दिया। चोरों ने बंगले पर तैनात दो चौकीदारों को दबोच लिया और छत की टाइल्स हटाकर घर में दाखिल हुए। बगुल ने बताया, 'गुप्त सूचना पर सक्रियता बरतते हुए हमने संजय भंडारी को कलवा के भास्कर नगर से गिरफ्तार किया। उसने हमें बताया कि उसके साथ जीतू वाघमारे और गनपत गुलार भी शामिल थे। दोनों को गिरफ्तार करने के प्रयास किए जा रहे हैं।' मुंब्रा पुलिस ने आइपीसी की धारा 397 (जान लेने की कोशिश के साथ लूट या डकैती) के तहत मामला दर्ज किया है। सहायक निरीक्षक ने कहा कि आगे की कार्रवाई की जा रही है। (प्रेट्र)

कार्यालय पर हमला कराने वाला एसडीएम रिमांड पर

छतरपुर : मध्य प्रदेश के छतरपुर में खुद के कार्यालय पर हमला कराने के आरोपित छतरपुर एसडीएम अनिल सपकाले को शनिवार को कोर्ट ने तीन दिन की पुलिस रिमांड पर सौंप दिया। उधर, संभागीय आयुक्त आनंद शर्मा ने एसडीएम के कार्यकाल के कार्यों की जांच के निर्देश कलेक्टर को दिए हैं। कोर्ट में पेश करने के दौरान अधिवक्ताओं ने सपकाले के खिलाफ नारेबाजी की। एसडीएम की ओर से जमानत अर्जी भी लगाई गई थी, जिसे कोर्ट ने खारिज कर दिया। गौरतलब है कि एक कॉलेज संचालक को फंसाने के लिए पांच फरवरी को एसडीएम कार्यालय छतरपुर में सपकाले ने हमला करवाया था। हमले की साजिश में शामिल निजी यूनिवर्सिटी के चेयरमैन, पूर्व भाजपा नेता जावेद अख्तर और ड्राइवर राजू बुंदेला को पुलिस शुक्रवार को ही कोर्ट में पेश कर रिमांड पर ले चुकी है। (नईदुनिया)

एक लाख के इनामी समेत 14 नक्सलियों ने किया समर्पण

दोरनापाल : छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले में शनिवार सुबह इंजरम में सीआरपीएफ 223 वाहिनी के अधिकारियों के समक्ष भेज्जी थाना क्षेत्र में सक्रिय 12 नक्सलियों ने समर्पण किया। वहीं, शाम को दोरनापाल पुलिस व सीआरपीएफ 74 वाहिनी के समक्ष एक लाख के इनामी समेत दो नक्सलियें ने समर्पण किया। समर्पण करने वाले नक्सली पुलिस जवानों पर फायरिंग, ब्लास्ट, वाहनों में लूटपाट व आगजनी जैसी बड़ी वारदात में शामिल रहे हैं। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि दोरनापाल में समर्पण करने वाले दोनों नक्सली माड़वी राजू व हेमला सुक्का लंबे वक्त से हार्डकोर नक्सली गतिविधियों में संलिप्त थे। (नईदुनिया)

मुंहतोड़ जवाब ▶ पाकिस्तान से घुसपैठ के लिए हुई गोलीबारी, भारत ने की कड़ी कार्रवाई

चार पाक चौकियां तबाह, तीन सैनिक ढेर

पुंछ में हुई पाक गोलाबारी में नायक शहीद, दो जवान भी घायल

जागरण न्यूज नेटवर्क, पुंछ

जम्मू-कश्मीर में आशंका सच साबित हुई और पाकिस्तान ने नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर साजिशन भारी गोलाबारी शुरू कर दी। शनिवार को पाकिस्तानी सेना ने पुंछ जिले के गुल पुर सेक्टर के देगवार में सैन्य चौकियों के अलावा करीब एक दर्जन गांवों को निशाना बनाते हुए मोर्टार दागे। इसमें एक अग्रिम चौकी पर तैनात नायक शहीद और दो अन्य जवान घायल हो गए। गोलाबारी से सीमा पर कुछ जगह आग भी लग गई है। भारत ने भी पाकिस्तान को करारा जवाब देते हुए चार चौकियां तबाह कर दी। वहीं, एक अधिकारी सहित तीन पाकिस्तानी सैनिकों के मारे जाने की सूचना है।

शहीद नायक की पहचान राजीव सिंह शेखावत निवासी राजस्थान और घायलों की सिपाही शोयम सिंह व सिपाही आजाद सिंह के रूप में हुई है। पाकिस्तानी सेना ने शनिवार को गुलपुर सेक्टर में दोपहर बाद करीब 3:45 बजे पहले भारतीय सेना की अग्रिम चौकियों पर छोटे हथियारों से गोलाबारी शुरू की। बाद में एकाएक रिहायशी क्षेत्रों में भारी मोर्टार दागने शुरू कर दिए। इसी बीच, एक अग्रिम पोस्ट पर पाक गोलाबारी से एक सैनिक शहीद व दो अन्य जवान घायल हो गए। गोलाबारी के बीच घायलों को तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया। गोले जब लोगों के घरों के आसपास गिरने लगे तो भारतीय सेना ने भी जवाबी कार्रवाई शुरू की। सूत्रों के अनुसार, पाकिस्तानी सेना की कई चौकियां तबाह हो गई हैं। सीमा पार कई जगहों से धुंआ उठता देखा गया। इसके बाद पाकिस्तानी सेना ने कुछ समय के लिए गोलाबारी बंद की, लेकिन थोड़ी देर बाद फिर संघर्ष विराम का उल्लंघन शुरू कर दिया। पिछले करीब चार दिन से उत्तरी कश्मीर में टंगडार के सामने गुलाम कश्मीर में नीलम व लीपा घाटी में पाकिस्तान ने अपने तोपखाने की दिशा बदलने के साथ गतिविधियां भी तेज की हैं।

एलओसी पर लगी आग से बारूदी सुरंग में हो रहे विस्फोट

पुंछ के बालाकोट सेक्टर में सीमा पर पाकिस्तानी की ओर से साजिशन लगाई गई आग शनिवार को दूसरे दिन भी बुझ नहीं पाई। इस आग ने करीब तीन किलोमीटर के सीमांत क्षेत्र को अपने दायरे में ले रखा है। सेना के दमकल कर्मी और जवान आग पर काबू पाने का प्रयास कर रहे हैं। पाकिस्तान ने गत शुक्रवार को सीमा पर आग लगा दी थी, ताकि बारूदी सुरंग नष्ट हो जाएं और आतंकियों को सुरक्षित घुसपैठ करवाई जा सके।

हिजबुल और लश्कर के पांच आतंकी गिरफ्तार

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

पुलिस ने अपने आतंकरोधी अभियान को जारी रखते हुए शनिवार को बड़गाम व बांडीपोरा में हिजबुल मुजाहिदीन और लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े पांच आतंकियों को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से भारी मात्रा में हथियार, पोस्टर और आतंकियों के लिए जाली दस्तावेजों के आधार पर बनाए गए पहचानपत्र, दो लैपटॉप और अन्य सामान भी जब्त किया है। एसपी बांडीपोरा राहुल मलिक ने बताया कि बीते कुछ दिन से हाजिन और उसके साथ सटे इलाकों में आतंकी गतिविधियों में बढ़ोतरी की खबरें आ रही थी। इस बीच, लश्कर के कुछ धमकी भरे पोस्टर भी पाए गए। इन पोस्टरों में लोगों को सुरक्षाबलों और केंद्र सरकार के खिलाफ भड़काया गया था। इन सभी मामलों का संज्ञान लेते हुए एक जांच शुरू की गई। जल्द ही हाजिन में सक्रिय लश्कर के एक दो सदस्यीय मॉड्यूल का पता चला। इन दोनों को उनके ठिकाने से पकड़ लिया गया। मलिक ने बताया कि पकड़े गए इन दोनों की पहचान इरफान अहमद बट पुत्र अब्दुल अजीज बट निवासी सईद मोहल्ला हाजिन और आसिफ अहमद पर्रे पुत्र अब्दुल खालिक पर्रे निवासी पर्रे मोहल्ला हाजिन के रूप में हुई है। आसिफ की हाजिन में दुकान है। इन दोनों के पास से आतंकियों के लिए तैयार किए गए मतदाता पहचान पत्र, फर्जी वाहन चालक लाइसेंस, सिमकार्ड, आतंकी संगठनों के पोस्टर भी मिले हैं। पुलिस ने इनके पास से दो लैपटाप व अन्य सामान भी जब्त किया है। इसी दौरान, पुलिस ने बड़गाम जिले में सक्रिय हिजबुल मुजाहिदीन के तीन आतंकियों को अलग-अलग छापों में गिरफ्तार करने का दावा किया है। इनकी पहचान आमिर शफी डार, शब्बीर अहमद गनई और मुदस्सर अहमद खान के रूप में हुई है। इन तीनों के पास से भारी मात्रा में हथियार व गोला-बारुद भी मिला है। आतंकियों को पकड़ने के लिए एक विशेष दल भी बनाया गया है।

महबूबा पर अलगाववादियों संग काम करने का आरोप

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

महबूबा मुफ्ती। फाइल

पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती के अनुच्छेद 370 पर विवादित बयान, आतंकियों के प्रति नरम रवैया और अलगाववादियों के साथ काम करने ही मुख्य रूप से जन सुरक्षा अधिनियम (पीएसए) का आधार बना। उनकी पार्टी का झंडा और निशान भी उनके लिए पीएसए के कारणों में एक है। सिर्फ महबूबा ही नहीं पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला को भी अनुच्छेद 370 और जम्मू-कश्मीर भारत विलय पर भड़काऊ बयानबाजी के लिए जरूर रंज होगा। उन पर पीएसए के लिए बनाए आधार पर उनकी बयानबाजी का जिक्र है। पांच अगस्त 2019 की तड़के एहतियातन हिरासत में लिए उमर व महबूबा को गत गुरुवार को पीएसए के तहत बंदी बनाया गया है। सूत्रों ने बताया कि महबूबा को पीएसए के तहत बंदी बनाए जाने का जो डोजियर जारी किया है उसमें अलगाववादियों पर नरम रुख और उनके साथ मिलकर काम करने की सूचनाओं व आरोपों का जिक्र है। डोजियर में अनुच्छेद 370 हटाने से पूर्व महबूबा के ट्वीट का हवाला दिया है। आतंकियों के मारे जाने के बाद उनके सम्मान और सेना पर आतंकियों के खिलाफ केमिकल हथियार इस्तेमाल करने के आरोप व तीन तलाक और देशभर में मॉब लिंचिंग पर भड़काऊ ट्वीटों का जिक्र भी डोजियर में है।

महबूबा बोली थीं - कोई तिरंगा उठाने वाला नहीं होगा : डोजियर में महबूबा द्वारा जुलाई 2019 को दिए भाषणों का भी जिक्र है। इसमें महबूबा के उस भाषण का उल्लेख किया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि अनुच्छेद 370 व 35ए से छेड़छाड़ करना बारूद को हाथ लगाने के बराबर होगा। जो हाथ छेड़छाड़ के लिए उठेंगे, वो हाथ ही नहीं वो सारा जिस्म जलकर राख हो जाएगा। एक अन्य भाषण में महबूबा ने कहा था कि अनुच्छेद-370 की समाप्ति पर जम्मू कश्मीर में कोई तिरंगा उठाने वाला नहीं होगा।

उमर ने कहा था- आधा है भारत में जम्मू-कश्मीर का विलय : उमर को पीएसए के तहत बंदी बनाए जाने के डोजियर में 370 हटाने के खिलाफ उनकी बयानबाजी का उल्लेख है। इसमें उनके उस बयान का भी जिक्र है जिसमें उन्होंने कहा था कि अनुच्छेद 370 समाप्त करने या इसमें बदलाव से जम्मू-कश्मीर के भारत में विलय को लेकर नए सिरे से बहस छिड़ जाएगी। जम्मू-कश्मीर के भारत विलय को अर्धमिलन के उनके बयान का डोजियर में हवाला दिया गया है।

नवी मुंबई में 21 मंजिली इमारत में आग, सात घायल

ठाणे, प्रेट्र : नवी मुंबई की एक बहुमंजिली आवासीय इमारत में गैस सिलेंडर विस्फोट होने से आग भड़क उठी। 21 मंजिली इमारत में आग पर काबू पाने के दौरान अग्निशमन दस्ते के सात कर्मचारी घायल हो गए।

अधिकारियों ने बताया कि पालम बीच रोड के समीप सीवुड्स स्थित सी होम अपार्टमेंट के सबसे ऊपर की दूसरी मंजिल के एक डुप्लेक्स में शनिवार सुबह गैस सिलेंडर में विस्फोट हो गया। आग पर काबू पाने के दौरान घायल हुए सातों कर्मचारियों को नेशनल बर्न सेंटर में भर्ती कराया गया है। उनमें से तीन की हालत गंभीर बताई जाती है और उन्हें सघन चिकित्सा इकाई (आइसीयू) में रखा गया है।

नवी मुंबई आपदा नियंत्रण कक्ष के प्रमुख दादासाहेब चाबुकस्वर ने कहा, 'सुबह 6:30 के आसपास डुप्लेक्स फ्लैट में सिलेंडर विस्फोट होने के बाद सबसे ऊपर के दो माले पर आग फैल गई।'

ठाणे म्यूनिसिपल कारपोरेशन के क्षेत्रीय आपदा प्रबंधन सेल के प्रमुख संतोष कदम ने कहा कि आग पर काबू पाने के लिए अग्निशमन की छह गाड़ियां भेजी गईं। कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया गया है। आग लगने के कारणों की जांच की जा रही है।

महाराष्ट्र के नवी मुंबई में गैस सिलिंडर में विस्फोट से 21 मंजिला इमारत में लगी आग। एएनआइ

दो गैरकानूनी एक्सचेंजों का पर्दाफाश आइएसआइ से लिंक की आशंका

नई दिल्ली, आइएएनएस : जम्मू-कश्मीर की मिलिट्री इंटेलीजेंस और मुंबई पुलिस ने संयुक्त अभियान में दो वीओआइपी (वॉइस ओवर इंटरनेट प्रोटोकॉल) एक्सचेंज और सिम बॉक्स का पर्दाफाश किया है। इनका इस्तेमाल रक्षा कर्मियों से जानकारियां जुटाने के लिए किया गया और आशंका है कि इसमें पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आइएसआइ का हाथ है।

गुरुवार को उत्तर प्रदेश में नोएडा और केरल में चंगारामुकुलम में छापे मारे गए थे। सैन्य सूत्रों ने बताया कि इन छापों में दो सक्रिय सिम बॉक्स बरामद हुए। इनमें से प्रत्येक में 100 सिम कार्ड्स के स्लॉट हैं। इसके अलावा दो रूटर, तीन मॉडेम, कई एंटेना, बैटरियां और कनेक्टर बरामद हुए। इस दौरान एक व्यक्ति को चंगारामुकुलम से गिरफ्तार भी किया गया है।

दरअसल, सितंबर 2019 में रक्षा कर्मियों को संदेहास्पद नंबरों से कॉल आई थीं जिनमें अहम रक्षा प्रतिष्ठानों से जुड़ी जानकारियां मांगी गई थीं। कॉल करने वालों ने अपनी फर्जी पहचान बताई थी इसलिए इसमें आइएसआइ की संलिप्तता की आशंका जताई जा रही है। मिलिट्री इंटेलीजेंस और

- उत्तर प्रदेश के नोएडा और केरल के चंगारामुकुलम में मारे गए थे छापे, एक गिरफ्तार
- छापों में दो सक्रिय सिम बॉक्स भी बरामद किए गए

मुंबई पुलिस की आगे की जांच में उत्तर प्रदेश और केरल में गैरकानूनी वीओआइपी एक्सचेंजों का पता लगा जिनके जरिये पाकिस्तान से आने वाली कॉल्स को लोकल नंबरों पर रूट कर दिया जाता था। इनका इस्तेमाल रक्षा कर्मियों से जानकारियां जुटाने के लिए किया गया। इन एक्सचेंजों में चीन निर्मित सिम बॉक्स का इस्तेमाल किया गया जिनमें स्थानीय सेल्युलर सर्विस प्रोवाइडर्स के सिम कार्ड्स लगाए गए थे। इन सिम बॉक्स में डायनैमिक आइएमईआइ सिस्टम का भी इस्तेमाल किया गया जिसकी वजह से उन्हें ट्रैक करना कठिन हो जाता है। इसी वजह से टेलीकॉम रेगुलेटरी अथॉरिटी ऑफ इंडिया (ट्राई) ने इसे गैरकानूनी घोषित कर रखा है। अभी तक की जांच में पता चला है कि इन दोनों एक्सचेंजों की वजह से देश के टेलीकॉम विभाग को भी करोड़ों रुपये का नुकसान हुआ है।

बांडीपोरा से लापता हुए चारों किशोर पुलिस ने तलाश निकाले

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर : परिवारवालों को बिना बताए लापता हुए चार किशोरों को पुलिस ने 24 घंटे के भीतर ही तलाश कर लिया। ये सभी उत्तरी कश्मीर के बांडीपोरा से रहस्यमय परिस्थितियों में लापता हो गए थे। पुलिस ने इन सभी को पकड़ने के बाद जरूरी कानूनी औपचारिकताएं पूरी कर शनिवार को उनके अभिभावकों को सौंप दिया। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि शुक्रवार को बांडीपोरा के कलूसा इलाके से ये चारों किशोर लापता हो गए थे। इनमें 13 वर्षीय कामरान फैयाज पुत्र फैयाज अहमद, 14 वर्षीय आमिर मुश्ताक पुत्र मुश्ताक अहमद बेग, 14 वर्षीय फैयाज खान पुत्र मोहम्मद मकबूल खान और 16 वर्षीय आबिद सुलेमानी पुत्र मोहम्मद कलवा शामिल हैं। आबिद सुलेमानी मूलतः उत्तर प्रदेश में बिजनौर का रहने वाला है और बीते कुछ समय से कलूसा में ही रह रहा था। पुलिस ने बताया कि जल्द ही पता चल गया कि यह चारों लड़के जवाहर सुरंग पार कर गए हैं और जम्मू की तरफ जा रहे हैं। इसके बाद ऊधमपुर में इन सभी को पकड़ लिया गया। सभी घूमने निकले थे।

जंगल में 20 घंटे तलाशी के बाद पंजाब हरियाणा के पांच बदमाश गिरफ्तार

नईदुनिया, बड़वानी

मध्य प्रदेश के बड़वानी जिले में उमटी क्षेत्र से अवैध हथियार खरीदकर लौट रहे पंजाब व हरियाणा के पांच बदमाशों को 20 घंटे की तलाशी के बाद पुलिस ने जंगल से गिरफ्तार कर लिया। ये बदमाश गुरुवार को बड़वानी के समीप आगरा-मुंबई रोड पर जामली गांव के टोल प्लाजा पर पुलिस को देख कार छोड़कर भाग निकले थे। एक बदमाश को गुरुवार और चार को शुक्रवार को ग्राम मातमूर-मोहीपुरा के जंगल से गिरफ्तार किया गया। इनसे एक विदेशी व सात देशी पिस्टल, 27 कारतूस व कार जब्त की गई है।

चारों बदमाशों ने भागने के दौरान शुक्रवार सुबह नागलवाड़ी में एक पुलिस आरक्षक की बाइक व मोबाइल भी लूटा था। पांचों बदमाशों पर पंजाब-हरियाणा में हत्या, लूट आदि के प्रकरण दर्ज हैं। बड़वानी के एसपी डीआर तेनीवार ने शनिवार को पूरे मामले की जानकारी दी। एसपी ने बताया कि गुरुवार को सूचना मिली थी कि उमटी क्षेत्र से हथियार खरीदकर कुछ बदमाश कार (एचआर 10-टी 8007) से इंदौर की ओर जा रहे हैं। एबी रोड पर जामली में पुलिस बल लगाया गया। पुलिस को देख पांचों बदमाश कार छोड़कर फरार हो गए थे। इनमें से जबरजनसिंह को उसी दिन सेंधवा ग्रामीण पुलिस ने पिस्टल व तीन कारतूस के साथ गिरफ्तार कर लिया था। शेष चार जंगल की ओर भागने में सफल हो गए थे।

पूछताछ की तो आरक्षक को लूटा

रातभर खेत-जंगलों में भटकते चार बदमाश शुक्रवार तड़के नागलवाड़ी पहुंचे। यहां गश्त कर बाइक से लौट रहे आरक्षक गब्बरसिंह अवासे ने उन्हें रोककर पुछताछ की तो उससे मारपीट कर उनकी बाइक व मोबाइल लूट कर आरोपित मातमूर-मोहीपुरा के जंगल की ओर भाग गए। इस पर पुलिस ने छह टीमें बनाकर संभावित जंगल क्षेत्र की घेराबंदी की और चारों बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया।

डोंगल से नेट चलाकर कर रहे थे वाट्सएप कॉलिंग : पकड़े गए बदमाश इतने शातिर हैं कि वे एक-दूसरे से बात करने के लिए डोंगल (राउटर) के माध्यम से इंटरनेट चला कर वाट्सएप कॉलिंग का उपयोग करते थे, ताकि कॉल डिटेल में उनके नंबर ट्रेस न हो सकें। पुलिस ने एक डोंगल भी जब्त किया है।

ये बदमाश दबोचे गए

- प्रदीप पुत्र पवन शर्मा (23), निवासी शिवपुरी कालोनी जींद सदर, जिला जिंद (हरियाणा)
- पवन उर्फ पुनिया उर्फ पोपन पुत्र तारीख (25), निवासी नरवाना जींद (हरियाणा)
- भगवानसिंह पुत्र जसवंतसिंह जाट (23) निवासी लदाउ थाना लेहरादागा जिला संगरूर (पंजाब)
- लखबीरसिंह पुत्र पोलासिंह सरदार (26)निवासी बरनाला (पंजाब) को गिरफ्तार किया।
- जबरजनसिंह पुत्र सुखबीरसिंह (28), निवासी अलीपुर बस्ती मोगा सिटी जिला मोगा (पंजाब)

उत्तराखंड में भूकंप के झटके, बागेश्वर में दो घायल, दो मकान क्षतिग्रस्त

जागरण संवाददाता, बागेश्वर : उत्तराखंड में शनिवार सुबह कुमाऊं में भूकंप के झटके महसूस हुए। सुबह 6:31 बजे आए भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 4.7 मैग्नीट्यूड मापी गई है। भूकंप का केंद्र बागेश्वर जिले के कपकोट तहसील का गोगिना क्षेत्र था। बागेश्वर में अधिक प्रभाव होने से दो मकान क्षतिग्रस्त हो गए और दो लोग घायल हुए। कपकोट क्षेत्र में कई घरों में दरारें पड़ गई हैं। झटके से लोग घरों से बाहर निकल आए और अफरातफरी का माहौल रहा। पिथौरागढ़, अल्मोड़ा, भीमताल में भूकंप के झटके महसूस हुए।

असम तथा बंगाल में भूकंप के झटके: गुवाहाटी, प्रेट्र: असम और उसके आसपास के इलाकों में शनिवार शाम भूकंप के हल्के झटके महसूस किए गए। पुलिस ने कहा कि कहीं से भी किसी के हताहत होने या संपत्ति को नुकसान पहुंचने की सूचना नहीं मिली है। यूएसजीएस के अनुसार बोगईगांव जिले में अभयापुर से 16 किलोमीटर पूर्व में भूकंप का केंद्र स्थित था। बंगाल में जलपाइगुड़ी, कूचबिहार और अलीपुरद्वार समेत उत्तर के कुछ जिलों में भी भूकंप के झटके महसूस किए गए।

निवेशक सम्मेलन को मिले 50 करोड़ रुपये

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

केंद्र शासित जम्मू-कश्मीर राज्य में आयोजित होने वाले अपनी तरह के पहले वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलन के लिए केंद्र सरकार और राज्य प्रशासन कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते। सम्मेलन के प्रचार-प्रसार, आने वाले मेहमानों की आवासीय सुविधा व यात्रा के लिए सभी तैयारियों को अंतिम रूप देने के केंद्र सरकार ने 50 करोड़ रुपये भी उपलब्ध करा दिए हैं। यह सम्मेलन राज्य के समग्र आर्थिक परिदृश्य को मजबूत बनाने के इरादे से आयोजित किया जा रहा है। इसे पूरी तरह सफल बनाने और दुनियाभर के निवेशकों को आकर्षित करने के लिए प्रशासन हर संभव उपाय कर रहा है।

सम्मेलन अप्रैल के तीसरे या अंतिम सप्ताह में होगा। इसका उद्घाटन सत्र ग्रीष्मकालीन राजधानी श्रीनगर स्थित एसकेआइसीसी में और समापन शरदकालीन राजधानी जम्मू में होगा। सम्मेलन का आदर्श वाक्य और थीम- एक्सप्लोर, इनवेस्ट एंड ग्रो है। इसके जरिए दुनियाभर के नामी निवेशकों, उद्योगपतियों को एक ही मंच पर जमा कर उन्हें केंद्र शासित जम्मू कश्मीर में विभिन्न क्षेत्रों में निवेश के लिए तैयार करना है। जम्मू-कश्मीर ट्रेड प्रोमोशन आर्गेनाइजेशन (जेकेटीपीओ) के प्रबंध निदेशक रविंद्र कुमार ने बताया कि वैश्विक शिखर सम्मेलन बीते 70 सालों में जम्मू-कश्मीर में होने वाला अपनी तरह का पहला सम्मेलन है। यह राज्य के आर्थिक परिदृश्य को पूरी तरह बदल देगा। इसकी सभी तैयारियों को अंतिम रूप देने साथ ही हम इसकी तिथि का एलान करेंगे। फिलहाल, इसमें बुलाए जाने वाले मेहमानों की सूची बनाई जा रही है। उन्होंने बताया कि कन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्रीज को इस आयोजन के लिए राष्ट्रीय भागीदार बनाया गया है। वहीं, अर्नेस्ट यंग, प्राइसवाटरहाउस कूपर्स और एक्सप्रो को नॉलेज, मीडिया व इंवेट भागीदार के तौर पर शामिल किया गया है। जेकेटीपीओ इस पूरे आयोजन के लिए नोडल एजेंसी के रूप में काम कर रही है।

सम्मेलन में क्या-क्या होगा : सम्मेलन में विभिन्न क्षेत्रों में निवेश की संभावनाओं पर अलग-अलग सत्र होंगे। इसके अलावा टेक्नीकल प्रेजेंटेशन, राउंड टेबल चर्चा, भागीदारी में विभिन्न उपक्रम स्थापित करने जैसे विषयों पर भी कार्यक्रम होंगे। इसके अलावा विभिन्न निवेशकों, उद्योगपतियों और स्थानीय हितधारकों के बीच वन-टू-वन इंटरेक्शन और एमओयू भी तय किए जाएंगे।

जम्मू-कश्मीर के कई हिस्सों की सैर करेंगे मेहमान

शिखर सम्मेलन में शामिल होने वाले मेहमानों को कश्मीर घाटी और जम्मू के विभिन्न हिस्सों की भी सैर कराई जाएगी। डल झील किनारे स्थित कई होटलों में उनके ठहरने की व्यवस्था की जा रही है। सम्मेलन के दौरान श्रीनगर में सुरक्षा का कड़ा बंदोबस्त रहेगा ताकि आतंकी किसी भी तरह से गड़बड़ी कर माहौल न बिगाड़ सकें।

नई इकाइयों के लिए 20 हजार कनाल भूमि चिह्नित

करीब 20 हजार कनाल जमीन को नई औद्योगिक इकाइयों और निवेश के लिए पूरे केंद्र शासित जम्मू-कश्मीर राज्य में चिह्नित किया गया है। इस सम्मेलन में निर्माण, आइटी, पर्यटन, हास्पिटैलिटी, पर्यटन, दवा, बागवानी, कृषि, फिल्म-मनोरंजन, डेयरी, ऊन व रेशम उत्पादन, दस्तकारी, कौशल विकास, अवसंचना और रियल इस्टेट व शिक्षा जैसे क्षेत्रों में निवेश को जुटाने का प्रयास किया जाएगा।

आयोजन

मेघालय के शंकर मान थापा ने जीती मैराथन, केन्या के साइमन दूसरे और छत्तीसगढ़ के रामनारायण रहे तीसरे स्थान पर, महिला वर्ग में उत्तर प्रदेश की डिंपल दूसरे और रेनू तीसरे स्थान पर रहीं

शांति का पैगाम लेकर नक्सलगढ़ में दौड़े देश-विदेश के धावक

नईदुनिया, नारायणपुर

छत्तीसगढ़ में बस्तर ने शनिवार को दुनिया को एक बार फिर दिखा दिया कि लाल आतंक के खौफ से अब वह उबर गया है। शांति का पैगाम देने के लिए धुर नक्सल प्रभावित अबूझमाड़ में पीस हॉफ मैराथन का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश के सैकड़ों धावकों ने दौड़ लगाई। पुरुष वर्ग में मेघालय के शंकर मान थापा ने एक घंटा दो मिनट में 21 किलोमीटर की दौड़ पूरी कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। महिला वर्ग में केन्या की एलीसा एक घंटा 11 मिनट 22 सेकंड में दौड़ पूरी कर अव्वल रहीं। विजेताओं को नगद राशि और मेडल से पुरस्कृत किया गया।

कई दिनों पूर्व से इस आयोजन की तैयारी चल रही थी। खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए सड़क के दोनों किनारों पर बड़ी संख्या में खेलप्रेमी जुटे हुए थे। पुरुष वर्ग में केन्या के साइमन ने एक घंटा पांच मिनट 20 सेकंड के साथ दूसरा स्थान पाया।

छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिले में नक्सल प्रभावित अबूझमाड़ में शांति का संदेश देने के लिए हाफ मैराथन का आयोजन हुआ। दौड़ में पुरुष वर्ग में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पाने वाले (बाएं से क्रमश) मेघालय के शंकर थापा, अफ्रीकी देश केन्या के साइमन और छत्तीसगढ़ के रामनारायण। नई दुनिया

दल्लीराजहरा (छत्तीसगढ़) के रामनारायण एक घंटा आठ मिनट सात सेकंड में दौड़ पूरी कर तीसरे स्थान पर रहे। महिला वर्ग में दूसरे स्थान पर उत्तर प्रदेश के लखनऊ की डिंपल रहीं। तीसरा स्थान उत्तर प्रदेश की ही रेनू ने प्राप्त किया। इन्होंने दौड़ एक घंटा 17 मिनट में पूरी की। पहले स्थान के विजेताओं को मेडल और एक लाख 61 हजार रुपये की नकद राशि से नवाजा गया। द्वितीय स्थान आने वाले को 61 हजार रुपये और तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को 31 हजार रुपये की नकद राशि और मेडल से पुरस्कृत किया गया। मैराथन में प्रथम 10 स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कृत किया गया। साथ ही नारायणपुर जिले और ओरछा विकासखंड के 10 पुरुष और 10 महिलाओं को भी मेडल और 10-10 हजार रुपये की नकद राशि देकर सम्मानित किया गया।

इस मैराथन दौड़ के लिए छत्तीसगढ़ समेत देश के विभिन्न राज्यों और केन्या के छह लोगों सहित 11 हजार से अधिक धावकों ने ऑनलाइन पंजीयन कराया था। दौड़ सुबह सात बजे जिला मुख्यालय के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मैदान से शुरू हुई। विधायक चंदन कश्यम ने हरी झंडी दिखाकर दौड़ शुरू कराई। कलेक्टर पीएस एल्मा ने अतिथियों का स्वागत किया और मैराथन आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

हवाला प्रकरण में मेरठ क्राइम ब्रांच ने की छापेमारी

जागरण संवाददाता, सहारनपुर

मेरठ पुलिस ने पांच दिन पहले दो आरोपितों को गिरफ्तार कर हवाला के 23 लाख रुपये बरामद किए थे। दोनों से मिली जानकारी के आधार पर शनिवार को मेरठ क्राइम ब्रांच और सदर बाजार पुलिस ने दो आरोपितों की तलाश में देवबंद क्षेत्र के एक गांव व नगर के कई मोहल्लों में छापेमारी की। क्राइम ब्रांच ने एक गांव से तीन लोगों को हिरासत में लिया है। मेरठ सदर बाजार पुलिस ने पांच दिन पहले बेगमपुल स्थित यूनियन बैंक के सामने से सहारनपुर के बड़गांव थाना क्षेत्र के अंबहेटा मोहन गांव निवासी सोहेल और मेरठ के लिसाड़ी गेट थाना क्षेत्र के फतेहउल्लापुर के दिलनवाज को गिरफ्तार किया था। इनसे 23 लाख रुपये मिले थे। आरोपितों ने पूछताछ में बताया था कि देवबंद क्षेत्र के एक गांव निवासी उनके दोस्त उस्मान के बड़े भाई बासित ने उन्हें हवाला की रकम खातों में ट्रांसफर कराने के लिए 15 हजार रुपये महीने में नौकरी पर रखा था। वहीं, प्रवर्तन निदेशालय (ईडी), एटीएस और आयकर विभाग की टीम भी जांच में लगी हुई है। शनिवार को मेरठ रेंज के आइजी प्रवीण कुमार के आदेश पर क्राइम ब्रांच और मेरठ सदर थाने की पुलिस ने देवबंद नगर के रेलवे रोड, शास्त्री चौक व सराय मोहल्ला समेत क्षेत्र के एक गांव में छापेमारी की। दोनों आरोपित घर पर नहीं मिले तो पुलिस ने पूछताछ के लिए तीन लोगों को हिरासत में ले लिया। शनिवार को मेरठ आयकर विभाग की एक टीम भी देवबंद पहुंची। टीम ने रेलवे रोड स्थित एक बैंक में कुछ खातों के संबंध में जानकारी जुटाई। एक अधिकारी ने बताया कि खातों में ट्रांसफर की गई राशि के संबंध में कुछ जानकारी मिली है।

बजट बाद की बात

किसी बढ़िया योजना-नीति का गलत और किसी खराब योजना-नीति का सही क्रियान्वयन करीब समान नतीजा देते हैं। बजट 2020-21 पेश हो चुका है। अर्थविद बारीक मीमांसा में लगे हैं। जाकी रही भावना जैसी...को चरितार्थ करने वाले भी कम नहीं हैं। अधिकांश की नजर में यह दूरदर्शी बजट है। इसमें अर्थव्यवस्था को मजबूती देने का अगले एक दशक का खाका है। अर्थव्यवस्था को रफ्ता-रफ्ता गति देते हुए 2024 तक पांच लाख करोड़ डॉलर के क्लब में शामिल करने का इसे आधार माना जा रहा है। सरकार के सामने असली चुनौती आम बजट 2020-21 के प्रस्तावों को प्रभावी रूप से लागू करने की है। ये चुनौती इसलिए भी टेढ़ी खीर दिखाई दे रही है, क्योंकि पिछले बजट की कई अहम घोषणाएं अभी तक सिरे नहीं चढ़ सकी हैं। सरकार इस नाकामी पर भले ही दलील दे कि पिछला बजट पेश किए अभी सिर्फ सात महीने ही हुए हैं, लेकिन आम बजट-2020-21 का रंग चोखा दिखाने के लिए उसमें हींग और फिटकरी पर्याप्त मात्रा में डालनी होगी। ऐसे में क्षेत्रवार वर्तमान बजट के प्रस्तावों को लागू कराने के लिए सरकार के सामने चुनौतियों की पड़ताल आज हम सबके लिए बड़ा मुद्दा है।

ग्राफिक्स: राकेश दीप

आशा का अर्थशास्त्र

विवेक कौल
इजी मनी ट्राइलॉजी के लेखक और अर्थशास्त्री

सरकारें आशावादी होती हैं। पिछले साल की घोषणाओं पर हुआ काम उनके लिए मायने नहीं रखता है। उनके लिए ज्यादा अहमियत यह बात रखती है कि इस साल और ज्यादा संख्या में कौन-कौन सी नई घोषणाएं की जाएं।

जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए आशावादी होना जरूरी होता है, पर अति आशावादिता हमेशा उचित बात नहीं होती है। हाल ही में पेश आम बजट 2020-21 को ही ले लीजिए। इसमें देश की अर्थव्यवस्था की सुस्ती तोड़ने के लिए आशावाद की कमी नहीं है। लेकिन यह कितना तार्किक है, इस बात की पड़ताल बहुत जरूरी है। एक फरवरी को पेश किए गए बजट में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने देश को बताया कि अगले वित्त वर्ष में सरकार विनिवेश से दो लाख दस हजार करोड़ रुपये कमाने की आशा रखती हैं। पिछले साल भी कुछ ऐसी ही कहानी सुनाई गई थी। इस वित्त वर्ष में सरकार विनिवेश से करीब एक लाख पांच हजार करोड़ कमाना चाहती थी। अप्रैल और दिसंबर 2019 के बीच में सरकार केवल अठारह हजार एक सौ करोड़ कमा पाई है। इसलिए इस वर्ष के विनिवेश को देखते हुए यह कहना बनता है कि अगले वर्ष का विनिवेश लक्ष्य बहुत ज्यादा आशावादी है।

पिछले साल के बजट भाषण में सीतारमण ने ये कहा था कि चुनिंदा केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम का रणनीतिक विनिवेश जारी रहेगा। अभी तक ऐसा कुछ होता हुआ नजर नहीं आ रहा है। इतिहास गवाह है कि भारत में रणनीतिक विनिवेश बहुत कम हुआ है। कुछ साल पहले ओएनजीसी ने हिंदुस्तान पेट्रोलियम को खरीदा था और सरकार ने इसे रणनीतिक विनिवेश मान लिया था। असली रणनीतिक विनिवेश तब होता है जब एक सरकारी कंपनी निजी क्षेत्र की कंपनी को बेची जाए। सीतारमण ने ये भी कहा था कि सरकार और भी सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों का रणनीतिक विनिवेश करेगी। ऐसा अभी तक कुछ नहीं हुआ है। कहा तो ये भी गया था कि एयर इंडिया की रणनीतिक विनिवेश की प्रक्रिया फिर से शुरू की जाएगी। ये शुरू तो हो गई है पर जिस गति से चल रही है उसको देख कर ऐसा नहीं लग रहा है कि इस वित्त वर्ष में पूरी हो सकेगी। यहां पर ये भी कहना जरूरी है कि पिछली बार से इस बार एयर इंडिया के बिकने की संभावना कहीं ज्यादा है।

इस साल के बजट में सरकार ने आइडीबीआइ बैंक को निजी, खुदरा और संस्थागत निवेशकों को स्टॉक एक्सचेंज के माध्यम से, बेचने का इरादा बनाया है। अब देखना ये होगा कि सरकार ये इरादा पूरा कर पाती है कि नहीं। इतिहास सरकार की मंशा के प्रतिकूल है। इससे भी ज्यादा आइडीबीआइ बैंक जैसी लचर स्थिति में है, उसमें अगर निजी निवेशकों ने बैंक को खरीदा तो अपने आप में ये बड़ी बात होगी। सरकार ने भारतीय जीवन बीमा निगम का भी थोड़ा हिस्सा विनिवेश करने का मन बना लिया है। ये एक महत्वपूर्ण निर्णय है। इससे बीमा निगम के काम करने में पारदर्शिता बढ़ेगी लेकिन, बीमा निगम को शेयर बाजार पर लिस्ट करना आसान नहीं होगा। इसलिए जरूरी है कि इस पर अभी से काम शुरू हो जाए। अमूमन सरकारें विनिवेश पर बजट के दौरान घोषणा करके सो जाती हैं।

वित्त मंत्री ने पिछले बजट में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के पास पड़ी जमीन पर सार्वजनिक अवसंरचना (पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर) बनाने की बात भी कही थी। इस पर भी कुछ खास प्रगति नहीं हुई है। इस बार के बजट में सीतारमण ने एक इन्वेस्टमेंट क्लीयरेंस सेल की बात की है जो लैंड बैंक की भी जानकारी देगी। अब देखना ये है कि किस हद तक ये प्रस्ताव वास्तविकता में बदलता है। पिछले साल के बजट में ये दावा भी किया गया कि एक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक की सेवाएं बाकी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक के ग्राहकों तक पहुंचाई जाएगी। ऐसा कुछ भी होता नजर नहीं आ रहा है।

अगर सकल कर राजस्व की ओर नजर डालें तो कुछ ऐसी ही तस्वीर उभर कर सामने आती है। पिछले साल बजट में ये उम्मीद लगाई गई थी कि इस साल के सकल कर राजस्व में 18.3 प्रतिशत का इजाफा होगा। अप्रैल और दिसंबर 2019 के बीच सकल कर राजस्व में 3 प्रतिशत की गिरावट हुई है। इसके बावजूद सरकार ने ये उम्मीद लगाई है कि अगले साल सकल कर राजस्व में 12 प्रतिशत का इजाफा होगा। 12 प्रतिशत बढ़त अपने आप में बहुत ज्यादा नहीं है पर इस साल के कर संग्रह को देखने के बाद ये बहुत ज्यादा लगता है। पर सरकारें आशावादी होती हैं, इसलिए उनके लिए पिछले साल की घोषणाओं पर क्या काम हुआ है, महत्वपूर्ण नहीं होता है। उनके लिए ये ज्यादा महत्वपूर्ण होता है कि इस साल और भी नई घोषणाएं की जाएं।

जनमत

क्या आम बजट 2020-21 के प्रस्तावों को सही तरीके और तय समय के भीतर लागू करके अपेक्षित नतीजे पाए जा सकते हैं?

हां 95%
05% नहीं

क्या पिछले बजट के कई अहम प्रस्तावों को लागू न कर पाने के साथ वर्तमान प्रस्तावों को समय से सिरे चढ़ाने में सरकार सक्षम है?

हां 85%
15% नहीं

आपकी आवाज

किसी भी राजनीतिक पार्टी की सरकार ने आम बजट क्यों न पेश किया हो, लेकिन उस बजट के प्रस्तावों पर एक वित्तीय वर्ष में वो शायद ही खरी उतरी हो। मोदी सरकार पिछले आम बजटों में स्मार्ट सिटी, बेरोजगारी, महंगाई और अन्य आमजन के आधार से जुड़ी योजनाओं-प्रस्तावों पर खरी नहीं उतर पाई है, इसलिए 2020-21 में भी शायद यह खरा उतर पाए। लेकिन पिछले बजट की कमियों को दूर करने और इस बजट को कामयाब करने के लिए मोदी सरकार को सबसे पहले देश की आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ उद्योग-धंधों और आमजन से जुड़े प्रस्तावों पर प्राथमिक आधार पर काम करना होगा, ताकि अगले बजट से पहले यह प्रस्ताव रफ्तार पकड़ सके।
राजेश कुमार चौहान

बजट एक साल के लिए होता है। हालांकि मोदी सरकार ने देश को आगे ले जाने के लिए ऐसा बजट तैयार किया है जो कि अगले कुछ वर्षों में देश के विकास को रफ्तार देगा। हो सकता है इसका असर अभी न दिखे लेकिन आगामी सालों में यह दूरदर्शी बजट देश को विकास की ओर ले जाने वाला सिद्ध होगा।
रत्नाकर

कोई भी नीति या योजना खराब नहीं होती है। सभीनीतियों से किसी न किसी स्तर पर सभी तबके का भला होता है। अगर प्रत्यक्षतौर पर गरीब वर्ग को फायदा पहुंचता है तो अप्रत्यक्ष रूप से इसका लाभ अमीर तक जाता है। जरूरत बस इतनी है कि योजनाओं को लागू सही तरीके से किया जाय। समय का भी ध्यान रखा जाए।
अभिषेक

आसान नहीं लक्ष्य संधान

अर्थव्यवस्था की सुस्ती के बीच पेश किए गए आम बजट 2020-21 में कई दूरदर्शी कदम उठाए जाने का प्रस्ताव है। देश की वित्तीय बुनियाद को मजबूत रखने के लिए इसके महत्वाकांक्षी प्रावधानों से अधिकांश अर्थवेत्ता और रेटिंग एजेंसियां प्रभावित हुईं। हालांकि आर्थिक विशेषज्ञों के मुताबिक वर्तमान समस्या के समाधान के लिए इन प्रस्तावों को समयबद्ध और कारगर तरीके से लागू कराना सरकार के लिए आसान नहीं होगा।

हिमालयी विनिवेश लक्ष्य

बजट में वित्त वर्ष 2020-21 के लिए 2.1 लाख करोड़ रुपये विनिवेश से जुटाने का लक्ष्य रखा गया है। वित्तीय घाटे का लक्ष्य संशोधित किया गया है। वित्त वर्ष 2019-20 के लिए यह जीडीपी का 3.8 फीसद रहा जबकि बजट अनुमान में इसे 3.3 फीसद रखा गया था। अब वित्त वर्ष 2020-21 के लिए इसे जीडीपी का 3.5 फीसद कर दिया गया है। ये आत्मविश्वास बताता है कि सरकार अपने विनिवेश लक्ष्य को पूरा करने के प्रति संकल्पित है। अगर विनिवेश लक्ष्य हासिल हो जाता है तो यह ऐतिहासिक होगा। हालांकि क्रेडिट सुईस की रिपोर्ट सरकार की इस मंशा पर सवाल खड़े करती दिखती है। वित्त वर्ष 2019-20 के लिए विनिवेश लक्ष्य 1.05 लाख करोड़ रुपये रखा गया था। जो लक्ष्य से बहुत पीछे रहा है।

लघु बचतों से रकम

वित्त वर्ष 2020-21 और 2019-20 (संशोधित) में प्रत्येक से लघु बचतों से 2.4 लाख करोड़ रुपये जुटाने की बात कही गई है। वित्त वर्ष 2019-20 के लिए इस मद में शुरुआती अनुमान 1.3 लाख करोड़ रुपये था। विशेषज्ञ इस पर भी हैरत जता रहे हैं कि क्या वित्तीय घाटे का 30 फीसद हिस्सा इससे पूरा करना संभव होगा।

अप्रत्यक्ष दबाव

बजट 2020-21 को सही तरीके से लागू कराने की चुनौती इसलिए भी बड़ी है क्योंकि पूर्व में सरकार की आर्थिक घोषणाओं के लक्ष्य को भी हासिल करना है। रिकार्ड स्तर पर रोजगार सृजन, 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करना, 2024 तक पांच लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था तैयार करना। इन मोर्चों पर भी वित्तमंत्री को रात-दिन एक करने की जरूरत होगी।

सकल टैक्स राजस्व

वित्त वर्ष 2020-21 के लिए सकल टैक्स राजस्व वृद्धि का लक्ष्य 12 फीसद रखा गया है। जबकि बजट में नामिनल जीडीपी वृद्धि दर का लक्ष्य 10 फीसद रखा गया है। जीएसटी संग्रहण में 12.76 फीसद वृद्धि के साथ 6.90 लाख करोड़ रुपये का लक्ष्य है। गोल्डमैन सैक्स का मानना है कि इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रति माह के औसत संग्रहण में 15 फीसद इजाफे की दरकार होगी। आयकर संग्रह में भी जीडीपी के 2.8 फीसद के हिसाब से वृद्धि का अनुमान है। समग्र रूप से अगर नामिनल जीडीपी 10 फीसद सालाना की दर वृद्धि करे और टैक्स राजस्व में 12 फीसद का इजाफा हो तो टैक्स बायोंसी 1.2 हासिल करना बहुत महत्वाकांक्षी लक्ष्य है। खासकर उस हालात में जब वित्त वर्ष 2019-20 में ये 0.5 रहा हो।

...यानी चौगुनी मशक्कत

भरत झुनझुनवाला
वरिष्ठ अर्थशास्त्री

किसानों की आय दोगुनी करने का एक मात्र उपाय है कि हर जिले की ळह फसल जिसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में मांग हो, उसे चिन्हित किया जाए फिर उसके उत्पादन एवं मार्केटिंग की व्यवस्था पर प्रभावी मेहनत हो।

सेंटर फॉर मॉनीटरिंग इंडियन इकोनॉमी के अनुसार साल 2013 से 2019 के बीच हमारे देश के किसानों की आय में लगभग 7 प्रतिशत प्रतिवर्ष की वृद्धि हुई है। यदि इसमें किसानों द्वारा बाजार से खरीदी जाने वाली सामग्री पर उनके द्वारा किए गए अधिक खर्च की गणना कर लें तो मेरे अनुमान से आय में वृद्धि 5 प्रतिशत प्रतिवर्ष होगी। इसके सामने, सरकार ने वायदा किया है कि मार्च 2023 तक किसान की आय दोगुनी कर दी जाएगी। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए किसान की आय में लगभग 30 प्रतिशत प्रतिवर्ष की वृद्धि होना जरूरी है।

वित्त मंत्री ने किसानों द्वारा किए जा रहे उत्पादन की मात्रा में वृद्धि हासिल करने पर जोर दिया है जैसे संतुलित फर्टिलाइजर के प्रयोग और सोलर पंप-सेट के उपयोग से। यह कदम सही दिशा में है लेकिन अंतरराष्ट्रीय बाजार में कृषि पदार्थों के मूल्यों में लगातार गिरावट आ रही है। कृषि उत्पादन को बढ़ाने वाली तकनीकें निरंतर विकसित होती जा रही हैं। जैसे ट्यूबवेल, टिश्यू कल्चर और रासायनिक फर्टिलाइजर। लेकिन खाद्य उत्पादों की खपत में समानांतर वृद्धि नहीं हो रही है क्योंकि विश्व की जनसंख्या में ठहराव आ गया है। फलस्वरूप कृषि उत्पादों की सप्लाई बढ़ रही है जबकि डिमांड कम ही बढ़ रही है। तदनुसार कृषि उत्पादों के दाम गिर रहे हैं। अतः सरकार के प्रयास से जो कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी उससे किसान की आय में वृद्धि होना कम ही संभव है क्योंकि इन उत्पादों के बाजार मूल्यों में उतनी ही गिरावट आने की संभावना है। अपने देश में ही कई अनुभव उपलब्ध हैं जब किसानों को अपने बढ़े हुए उत्पादन को खेत में ही बर्बाद करना पड़ा था। चूंकि बाजार में फसल के दाम गिर गए थे। लिहाजा उत्पादन में वृद्धि से अक्सर किसान को नुकसान होता है। इस परिस्थिति में उत्पादन बढ़ने के स्थान पर माल की क्वालिटी में सुधार करके इस चुनौती का सामना किया जा सकता है। वित्त मंत्री ने कहा है कि हॉर्टिकल्चर के कलस्टर बनाकर हर जिले के एक उत्पाद को बढ़ाया जाएगा। इस कदम को पूरी ताकत से लागू करना चाहिए। भारत के पास विविध प्रकार की जलवायु की अमूल्य संपदा है। हमारे देश में हर मौसम में किसी क्षेत्र में गर्मी तो किसी क्षेत्र में ठंड होती है। अतः ट्यूलिप जैसे फूलों का निर्यात हम वर्ष भर कर सकते हैं। नीदरलैंड जैसे देश में ट्यूलिप फूलों की खेती से अपार आय होती है। ट्यूनीशिया जैतुन के फलों को और फ्रांस वाइन को पूरे विश्व में सप्लाई करता है। हम भी ऐसा कर सकते हैं लेकिन हर जिले में किस उत्पाद को बढ़ाया जाए इसके लिए गहन रिसर्च करना जरूरी है। इस दिशा में हमारी प्रयोगशालाएं और विश्वविद्यालय लचर हैं। किसी किसान ने बताया कि उन्होंने अपनी स्थानीय यूनिवर्सिटी के बताए अनुसार अपने खेत में कीनू के वृक्ष लगाए। जब फल हुए तो उनका आकार छोटा था। जब यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर के पास अपनी शिकायत लेकर पहुंचे तो प्रोफेसर ने कहा कि हां भाई हमारे भी वृक्ष सफल नहीं हुए। यानि प्रोफेसर ने बिना सोचे समझे ही संस्तुति कर दी थी। इस प्रकार की रिसर्च से किसानों को भयंकर घाटा लगता है और नए उत्पादों में प्रवेश करने से पहले वे हजार बार सोचते हैं। अतः संभव है कि हम हर जिले के लिए विशेष उत्पादों को चिन्हित करें और उनके उत्पादन एवं अंतरराष्ट्रीय मार्केटिंग की व्यवस्था करें। इस दिशा में सरकार को भारी निवेश करने की जरूरत पड़ेगी। जैसे हर राज्य में आइआइटी हैं, उसी प्रकार हर 5 जिलों के बीच विशेष उत्पाद पर रिसर्च करने के केंद्र बनाने होंगे। तब इस लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है।

बजट में दूसरा स्वागत योग्य कदम किसानों की परती भूमि पर सोलर विद्युत उत्पादन कर ग्रिड को सप्लाई करने का है। यह कदम भी किसानों के लिए लाभप्रद हो सकता है लेकिन इसमें ग्रिड से जोड़ने की समस्याएं हैं जिन्हें दूर करना होगा। घिसी पिटी फसलों के उत्पादन को बढ़ाने से किसान की आय दोगुनी करने का लक्ष्य हासिल करना कठिन होगा। एक मात्र उपाय है कि हर जिले के लिए जो फसल उचित हो और जिसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में मांग हो उसे चिन्हित किया जाए फिर उसके उत्पादन एवं मार्केटिंग की व्यवस्था की जाए अन्यथा जैसे पिछले दस वर्षों में किसान की आय 5 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है वैसे ही बढ़ती रहेगी।

उद्योगों को चमकाने की फीकी कलई

अनिल सिंह
संपादक - अर्थकाम.कॉम

आर्थिक समीक्षा में 'मेक इन इंडिया' योजना में संशोधन कर 'असेम्बल इन इंडिया' जोड़ दिया गया। तभी संकेत मिल गया था कि मैन्युफैक्चरिंग को मजबूत बनाने का इरादा अब ढीला पड़ गया है।

सरकार ने सितंबर 2014 में जोर-शोर से 'मेक इन इंडिया' योजना शुरू करते वक्त लक्ष्य रखा था कि देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में इसका योगदान 16 प्रतिशत से बढ़ाकर 2022 तक 25 प्रतिशत कर दिया जाएगा। लेकिन सितंबर 2019 तक यह 17.38 प्रतिशत पर अटका हुआ था। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इस बार के बजट में 'उद्योग, वाणिज्य व निवेश' पर बोलना शुरू किया तो उन्होंने भारत की शाश्वत उद्यमशीलता का उल्लेख किया। जब प्रोत्साहन की बात आई तो मोबाइल फोन, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण व सेमी-कंडक्टर पैकेजिंग बनाने पर केंद्रित स्कीम तक सिमट गईं। इस स्कीम में उन्होंने मेडिकल उपकरणों को भी नत्थी कर दिया। लेकिन ये उद्योग क्षेत्र तो खुद ही तेजी से बढ़ रहे हैं। उन्हें शायद किसी प्रोत्साहन की जरूरत नहीं थी।

टेक्निकल टेक्सटाइल के 16 अरब डॉलर के आयात को पलटने के लिए चार साल के राष्ट्रीय टेक्निकल टेक्सटाइल मिशन का प्रस्ताव रखा गया और इसके लिए 1480 करोड़ रुपये का आवंटन कर दिया। लेकिन गुजरे जमाने का टेक्सटाइल उद्योग सरकारों के पुरजोर प्रयासों के बावजूद सालों-साल से क्यों दुर्दशा का शिकार है या क्यों बांग्लादेश व वियतनाम जैसे देश हमें टेक्सटाइल निर्यात में मात दे रहे हैं, इसकी कोई समीक्षा नहीं पेश की। वित्त मंत्री ने पांच नए स्मार्ट शहरों, निर्यातकों और सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्योगों (एमएसएमई) का भी उल्लेख किया। देश के हर जिले में निर्यात हब बनाने की बात की। लेकिन नहीं बताया कि हमारा निर्यात साल-दर-साल क्यों घटता जा रहा है। अंततः जब उद्योग व वाणिज्य क्षेत्र के लिए बजट आवंटन करना था तो असल आंकड़ा 27,227 करोड़ रुपये तक सिमट गया। यह मौजूदा वित्त वर्ष के 28,608 करोड़ रुपये के संशोधित अनुमान से 4.82 प्रतिशत कम है। इंफ्रास्ट्रक्चर इस सरकार की नहीं, देश के लिए भी बड़ी प्राथमिकता है। वित्त मंत्री ने दिसंबर अंत में घोषित पांच साल में 103 लाख करोड़ रुपए निवेश करने के राष्ट्रीय इंफ्रास्ट्रक्चर पाइपलाइन का एक बार फिर उल्लेख किया। लेकिन जब कुछ ठोस करने की बारी आई तो मामला इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस कंपनियों की इक्विटी में 22,000 करोड़ रुपये लगाने पर आ टिका। ये कंपनियां लगभग एक लाख करोड़ रुपये का फाइनेंस जुटाने में मदद कर सकती हैं। लेकिन 103 लाख करोड़ रुपये में से अधिकांश रकम निजी क्षेत्र को जुटानी है। घोटाले में फंसी इंफ्रास्ट्रक्चर लीजिंग एंड फाइनेंस सर्विसेज़ (आइएल एंड एफएस) के अनुभव को देखते हुए यह पेशकश कितनी कारगर होगी, इसको लेकर भारी संदेह है।

रियल एस्टेट को उबारने के लिए मकान खरीदने-बेचने पर कैपिटल गेन्स टैक्स में थोड़ी रियायत दी गई है। अभी तक मकान की कीमत सर्किल रेट के 5 प्रतिशत से ज्यादा कम है तो अंतर पर 20 प्रतिशत कैपिटल गेन्स टैक्स देना पड़ता है। अब यह अंतर सर्किल रेट के 10 प्रतिशत से ज्यादा कर दिया है। देश के नौ प्रमुख शहरों में ही लगभग 7.75 लाख मकान अनबिके पड़े हैं, तब बजट का यह कदम कितना कारगर होगा?

वित्त मंत्री ने सिंथेटिक फाइबर से बनने वाले कपड़ों व कुछ प्लास्टिक उत्पाद बनाने के कच्चे माल पीटीए (प्योरिफाइड टेरेफ्थैलिक एसिड) पर एंटी-डंपिंग ड्यूटी खत्म की है, उसका घरेलू उद्योग ने स्वागत किया है। वैसे तो देश में रिलायंस इंडस्ट्रीज और इंडियन ऑयल जैसी कंपनियां पीटीए बनाती हैं, लेकिन वे पीटीए की सारी मांग नहीं पूरी कर पातीं। उद्योग का कहना है कि इससे देश को निर्यात बढ़ाने में मदद मिलेगी। उद्योग को निराशा के बीच आशा की बस यही एक किरण नजर आ रही है।

अमल की हकीकत

बजटीय क्रियान्वयन से संबंधित कागजात को देखें तो पिछले बार की कई अहम घोषणाएं अभी तक आगे नहीं बढ़ पाई हैं।

लंबी है फेहरिस्त

राज्यों की बिजली वितरण कंपनियों के लिए मौजूदा स्कीम के स्थान पर नई स्कीम लागू करने का अभी कैबिनेट नोट तैयार है। रेंटल हाउसिंग सेक्टर को बढ़ावा देने के लिए एक मॉडल टेनेंसी कानून बनाने का एलान किया गया था। इसका का भी नोट तैयार है और कैबिनेट की मंजूरी के बाद जल्द ही राज्यों को वितरित करने का दावा किया जा रहा है। कमजोर व बंद होने वाले सरकारी उपक्रमों के जमीन पर सस्ते आवासीय इकाई बनाने की घोषणा को अमल में लाने के लिए कैबिनेट नोट तैयार किया जा रहा है।

सरकार की दलील

वित्त मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी इसकी वजह बताते हैं कि पिछला बजट पेश किए हुए अभी सिर्फ सात महीने हुए हैं। ऐसे में कई ऐसी घोषणाएं हैं जिनके प्रारूप को अंतिम रूप नहीं दिया जा सका है या कई ऐसे घोषणाएं है जो कैबिनेट की मंजूरी का इंतजार कर रहीं हैं।

प्रस्ताव: वित्त मंत्री ने पिछले बजट में नागरिक उड्डयन सेक्टर, मीडिया (एनीमेशन) व बीमा सेक्टर को विदेशी निवेश के लिए और खोलने का एलान किया था।

वर्तमान स्थिति: बजट प्रपत्रों के मुताबिक अभी इस बारे में विभिन्न मंत्रालयों के साथ विचार विमर्श शुरू ही हुआ है। जैसे मीडिया में इक्विटी बढ़ाने को लेकर सूचना व प्रसारण मंत्रालय के साथ विमर्श हुआ है लेकिन अंतिम फैसला कब होगा इसका पता नहीं है। इसमें सिर्फ एक घोषणा सिंगल ब्रांड रिटेल सेक्टर के लिए स्थानीय सोर्सिंग नियमों को बदलने का पालन किया गया है।

प्रस्ताव: सूचीबद्ध कंपनियों के लिए न्यूनतम पब्लिक शेयरहोल्डिंग की सीमा मौजूदा 25 फीसद से बढ़ा कर 35 फीसद करना।

वर्तमान स्थिति: सभी सरकारी उपक्रमों का कम से कम 25 फीसद शेयर निर्गम करने की घोषणा पर भी अमल की शुरुआत नहीं हुई है।

दैनिक जागरण

कड़ी मेहनत देर से ही सही परंतु फल अवश्य देती है

मध्यस्थता का विचार

सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश एसए बोबडे ने मुकदमों से पहले मध्यस्थता को अनिवार्य बनाने के लिए नए कानून की जो जरूरत जताई वह कोई नई बात नहीं है। सच तो यह है कि इसके पहले स्वयं प्रधान न्यायाधीश ने ही पिछले वर्ष इस तरह के किसी कानून की आवश्यकता पर बल दिया था। ऐसा कोई कानून इसलिए आवश्यक हो गया है, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय व्यापार, वाणिज्य और निवेश के कई मामले अदालतों तक पहुंचते हैं और वे वहां लंबा समय लेते हैं। बेहतर व्यापारिक-औद्योगिक गतिविधि और निवेश के लिए उपयुक्त माहौल के निर्माण के लिए मुकदमेबाजी से पहले मध्यस्थता संबंधी कानून का निर्माण वक्त की जरूरत बन गया है और इसे पूरा किया ही जाना चाहिए। उचित यह होगा कि इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए सरकार सक्रिय हो, लेकिन इसी के साथ खुद न्यायपालिका को भी देखना होगा कि उसके स्तर पर मध्यस्थता का निर्वहन कैसे हो सके। यह इसलिए आवश्यक है, क्योंकि स्वयं उच्चतर न्यायपालिका के स्तर पर कई ऐसे मामले वर्षों तक खिंचते रहते हैं, जिनका निस्तारण कहीं अधिक शीघ्रता से हो जाना चाहिए। चूंकि व्यापार, वाणिज्य और निवेश के अदालती मामलों का निपटारा होने में देरी होती है तो इससे न केवल भारतीय न्यायपालिका की छवि प्रभावित होती है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय निवेश संबंधी गतिविधियों पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। एक ऐसे समय जब कारोबारी माहौल सुगम बनाने के लिए हर स्तर पर प्रयास हो रहे हैं तब इसका कोई औचित्य नहीं कि मुकदमेबाजी से पहले मध्यस्थता के कानून की जो आवश्यकता महसूस की जा रही है उसे प्राथमिकता के आधार पर पूरा न किया जाए।

यह भी समय की मांग है कि सामान्य अदालती मामलों का निस्तारण जल्द करने की कोई प्रक्रिया विकसित की जाए। इससे अधिक निराशाजनक और कुछ नहीं हो सकता कि अदालती मामलों के समयबद्ध निपटारे के लिए एक लंबे अर्से से बातें हो रही हैं, लेकिन इस दिशा में जितनी तेजी से आगे बढ़ा जाना चाहिए वैसा होता हुआ नजर नहीं आ रहा है। धीमी, थका देने वाली और जटिल अदालती प्रक्रिया का किस तरह दुरुपयोग किया जा रहा है, इसकी ताजा और शर्मनाक बानगी दिल्ली के वसंत विहार दुष्कर्म मामले में देखी जा सकती है। इस मामले में उच्चतम न्यायालय तक अपना फैसला सुना चुका है, लेकिन गुनहगारों के लिए अदालती विकल्प खत्म होने का नाम नहीं ले रहे हैं। यह स्थिति तब तक दूर नहीं होने वाली जब तक न्यायिक सुधारों की रफ्तार तेज नहीं की जाती। न्यायपालिका और विधायिका को मिलकर वह राह निकालनी चाहिए जिससे न केवल अदालतों पर मुकदमों का बोझ समाप्त हो, बल्कि लोगों के लिए समय पर न्याय मिलना भी सुनिश्चित हो।

वसूली पर लगाम

झारखंड के स्वास्थ्य मंत्री ने अपने विभाग के अंतर्गत ही कार्य करनेवाले ड्रग इंस्पेक्टरों के विरुद्ध दवा दुकानदारों से वसूली के आरोप लगाए हैं। हालांकि उन्होंने स्पष्ट किया है कि सभी ड्रग इंस्पेक्टर ऐसे नहीं हैं। फिर भी, मंत्री का यह आरोप काफी गंभीर है, क्योंकि दवा का व्यवसाय सीधे तौर पर लोगों के स्वास्थ्य और जीवन से जुड़ा होता है। ऐसे में यदि वसूली का धंधा पनप रहा है तो इसपर लगाम जरूरी है। दवा दुकान ड्रग इंस्पेक्टरों को लाभ पहुंचाएंगे तो वे कहीं न कहीं अपना लाभ भी देखेंगे। यह लाभ लोगों के स्वास्थ्य को ही नुकसान पहुंचाएगा। मंत्री ने ड्रग इंस्पेक्टरों के ऐसे कारनामे पर सख्ती से रोक लगाने की भी बात कही है। यह एक अच्छी पहल कही जा सकती है, लेकिन अब उनकी जिम्मेदारी यह भी है कि वे ऐसी वसूली पर रोक लगाने की दिशा में तत्काल ठोस कदम उठाएं। यदि वसूली की जानकारी होने के बाद भी ऐसा चलता रहता है तो कहीं न कहीं इसके लिए वे भी जिम्मेदार माने जाएंगे। यह भी सही है कि स्वास्थ्य विभाग में अभी तक औषधि प्रशासन के कार्यों की नियमित समीक्षा नहीं होती। इसी का नतीजा है कि इस क्षेत्र में मनमानी होती रही है। औषधि प्रशासन पर निगरानी रखने के लिए कोई पारदर्शी तंत्र भी विकसित नहीं है। दवा दुकानदार भी ऐसी वसूली की शिकायत सरकार स्तर पर नहीं करते। इसका कारण यह है कि वे भी कानूनों और नियमों का पूरी तरह पालन नहीं करते। उनमें यह भी डर व्याप्त होता है कि किसी न किसी नियम के उल्लंघन में उनके लाइसेंस पर ही आफत न आ जाए। दवा दुकानों में फार्मासिस्ट का होना अनिवार्य है, लेकिन कई दुकानों में फार्मासिस्ट उपलब्ध नहीं हैं। एक-एक फार्मासिस्ट कई दवा दुकानों के लिए काम करते हैं। इस पहलू को हमेशा नजरअंदाज किया जाता रहा है। जो भी हो, उम्मीद की जा सकती है जब मंत्री ने बात छेड़ दी है तो वे औषधि के वितरण, प्रबंधन और बाजार पर नियमित निगरानी का तंत्र भी विकसित करेंगे। दवा विक्रेताओं को भी नियमों का पालन कर इस पहल में सहयोग करना चाहिए, ताकि किसी तरह की वसूली की गुंजाइश ही न रहे।

स्वास्थ्य मंत्री ने दवा दुकानों से ड्रग इंस्पेक्टरों द्वारा वसूली का गंभीर मसला उठाया है। यह सीधे तौर पर लोगों के स्वास्थ्य से जुड़ा है। जरूरत तत्काल प्रभावी कदम उठाने की है

अराजकता बढ़ाने वाला रुख

संजय गुप्त

संसद से पारित कानून के खिलाफ सड़क पर उतरने का कोई मतलब नहीं होता, लेकिन कांग्रेस और कुछ अन्य विपक्षी दलों ने यही करना शुरू कर दिया है

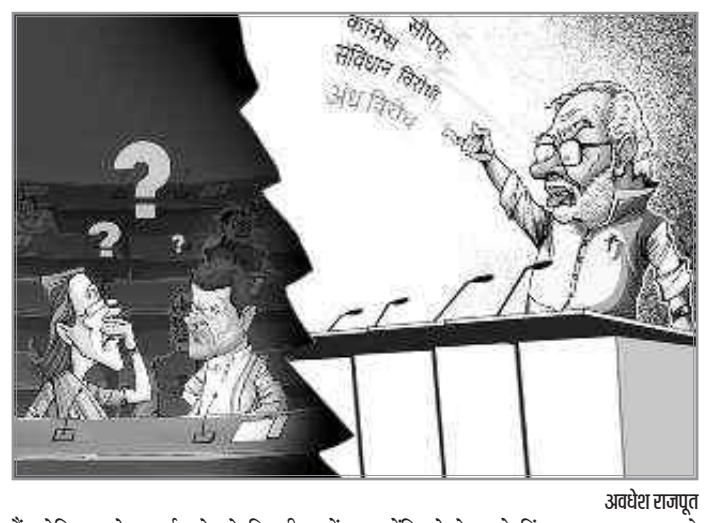

अवधेश राजपूत

राष्ट्रपति के अभिभाषण पर हुई चर्चा का जवाब देते हुए प्रधानमंत्री ने दोनों सदनों में विपक्ष और खासकर कांग्रेस के आरोपों की जिस तरह धज्जियां उड़ाते हुए उसके दुष्प्रचार को बेनकाब किया उसके बाद कम से कम उन लोगों को तो वास्तविकता का आभास हो ही जाना चाहिए जो नागरिकता संशोधन कानून यानी सीएए को लेकर अंदेशे से ग्रस्त हैं या फिर उसके खिलाफ धरना-प्रदर्शन कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने न केवल यह नए सिरे से साफ किया कि इस कानून से किसी भारतीय नागरिक पर कोई प्रभाव नहीं पड़ने वाला, बल्कि यह भी बताया कि इसमें संशोधन की जरूरत क्यों पड़ी? उन्होंने जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री के साथ अन्य अनेक नेताओं के उन बयानों का जिक्र किया जिनमें पूर्वी पाकिस्तान से परेशान होकर भारत में शरण लेने आए लोगों को राहत देने की जरूरत जताई गई थी। उन्होंने 1950 में असम के मुख्यमंत्री को लिखी गई नेहरू जी की उस चिट्ठी का भी जिक्र किया जिसमें कहा गया था कि पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) से आए शरणार्थियों और प्रवासियों में अंतर करना होगा। इसी के साथ उन्होंने नेहरू-लियाकत समझौते का भी उल्लेख किया, जिसमें दोनों देशों ने अपने-अपने यहां के अल्पसंख्यकों की चिंता करने की हामी भरी थी। चूंकि पाकिस्तान ने इस समझौते का पालन नहीं किया इसलिए वहां के अल्पसंख्यक प्रताड़ित होकर भारत आते रहे। यह सिलसिला आज भी कायम है, लेकिन विपक्ष जानबूझकर इसकी अनदेखी करना पसंद कर रहा है। वह यह समझने को भी तैयार नहीं कि पाकिस्तान में दलितों के साथ किस तरह छल हुआ और उसके चलते वहां मंत्री रहे जोगेंद्र नाथ मंडल को किस तरह भारत आना पड़ा? पाकिस्तान में आज भी अल्पसंख्यक प्रताड़ित हो रहे हैं, लेकिन हमारे विपक्षी दल कुछ कहने को तैयार नहीं। आखिर क्यों?

कांग्रेस सीएए के प्रति किस तरह अंध विरोध से ग्रस्त है, इसका उदाहरण है उसके शासित राज्यों द्वारा इस कानून के खिलाफ प्रस्ताव पारित किया जाना। यह संविधान विरोधी आचरण तब किया गया जब नागरिकता के मामले में राज्य सरकारों की कहीं कोई भूमिका नहीं। नागरिकता कानून संबंधी संशोधन विधेयक पर लोकसभा और राज्यसभा में व्यापक बहस हुई थी। इसमें सभी दलों ने भाग लिया था। संसद से पारित कानून के खिलाफ सड़क पर उतरने का कोई मतलब नहीं होता, लेकिन कांग्रेस और कुछ अन्य विपक्षी दलों ने यही करना शुरू कर दिया। इन दलों ने ऐसा माहौल बना दिया है कि यह कानून मुसलमानों के खिलाफ है। कुछ गैर राजनीतिक संगठन भी इसी काम में लग गए। इसी के चलते धरने-प्रदर्शन भी आयोजित होने लगे। दिल्ली में शाहीन बाग इलाके में चल रहा धरना तो एक नाकाबंदी है। इस धरने से लाखों लोग परेशान हो रहे हैं, लेकिन उसे समर्थन दे रहे विपक्षी दलों को इसकी परवाह नहीं। उनके इसी रवैये को देखते हुए प्रधानमंत्री ने यह कहा कि यदि संसद से पारित कानून के खिलाफ जनता को भड़काया जाएगा और हिंसा को आंदोलन का अधिकार मान लिया जाएगा तो लोकतंत्र का चलना मुश्किल होगा।

कांग्रेस को यह बताना चाहिए कि आखिर नेहरू को पाकिस्तान के प्रधानमंत्री लियाकत अली खान के साथ समझौता क्यों करना पड़ा? इसी तरह लाल बहादुर शास्त्री को यह क्यों कहना पड़ा कि पूर्वी पाकिस्तान के पीड़ित अल्पसंख्यकों को राहत देने के लिए कुछ उपाय किए जाने चाहिए? क्या इससे खराब बात और कोई हो सकती है कि 1964 में तो पड़ोसी देशों में हो रहे धार्मिक उत्पीड़न पर चिंता जताई गई, लेकिन आज ऐसा करने से न केवल बचा जा रहा है, बल्कि इस उत्पीड़न के शिकार लोगों को राहत देने के लिए बनाए गए कानून का विरोध हो रहा है। प्रधानमंत्री ने यह सही सवाल पूछा कि क्या नेहरू और शास्त्री ने ऐसे बयान इसलिए दिए, क्योंकि वे देश को हिंदू राष्ट्र बनाना चाहते थे? कम से कम कांग्रेस को यह तो स्मरण ही होगा कि मनमोहन सिंह ने राज्यसभा में नेता विपक्ष के तौर पर बांग्लादेश जैसे देशों के प्रताड़ित अल्पसंख्यकों को लेकर क्या मांग की थी? कायदे से उन्हें प्रधानमंत्री बनने के बाद अपनी इस मांग के अनुरूप कदम उठाने चाहिए थे, लेकिन उन्होंने दस साल तक कुछ नहीं किया। इससे भी हैरानी की बात यह है कि अब जब मोदी सरकार ने वही काम किया जैसा वह चाह रहे थे तो कांग्रेस विरोध कर रही है। यह तो एक तरह से खुद के खिलाफ खड़ा होना है।

हालांकि प्रधानमंत्री ने कांग्रेस के दोहरे मानदंडों को बेनकाब करने में कोई कसर नहीं उठा रखी, लेकिन लगता नहीं कि उसके रवैये में कोई सुधार होगा। इसके भी आसार कम ही हैं, जो लोग सीएए के खिलाफ धरना प्रदर्शन कर रहे हैं वे भी अपनी जिद छोड़ेंगे, क्योंकि उनका विरोध प्रायोजित है और उसका मकसद भी कुछ और है। शाहीन बाग और ऐसे ही जो धरने देश के अन्य हिस्सों में चल रहे हैं वे बिना किसी राजनीतिक छत्रछाया के चल ही नहीं सकते। शाहीन बाग धरने को लेकर तो ऐसे प्रमाण भी सामने आ गए हैं कि उसे राजनीतिक दलों के साथ पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया यानी पीएफआइ जैसे कुछ संदिग्ध किस्म के संगठन समर्थन और पैसा दे रहे हैं। इस तरह के धरनों में मुस्लिम समाज के मुट्ठी भर लोग ही शामिल हैं, लेकिन देश को यह दिखाया जा रहा है कि उसमें हर वर्ग के लोगों की भागीदारी है। यह निराशाजनक है कि चंद लोगों का रुख पूरे मुस्लिम समुदाय के लिए कठिनाई का कारण बन गया है।

विपक्षी दल सीएए विरोधी राजनीति पर इतना आगे बढ़ गए हैं कि उन्हें वापस लौटना मुश्किल हो सकता है। वे इस कानून के साथ ही एनपीआर को लेकर भी अनर्गल बयानबाजी कर रहे हैं। ऐसा करके वे एक तरह से अपने ही बुने जाल में फंसते जा रहे हैं। कुछ समय बाद उनके लिए जनता को यह समझाना मुश्किल होगा कि वे सीएए और एनपीआर पर जो कुछ कह रहे थे उसका आधार और औचित्य क्या था? उन्हें यह बताने में भी मुश्किल होगी कि वे संसद से पारित कानून का विरोध कैसे कर सकते हैं? विपक्षी दलों न सही मीडिया के उन लोगों को तो यह समझ आना ही चाहिए कि वे सीएए पर लोगों को गुमराह कर एक तरह से आग लगाने का काम कर रहे हैं। जहां तक उन मुसलमानों की बात है जो प्रधानमंत्री के बार-बार के स्पष्टीकरण के बाद भी समझने को तैयार नहीं तो इस नतीजे पर पहुंचने के अलावा और कोई उपाय नहीं कि वे गैर कानूनी तरीके से देश में आ गए लोगों के हितैषी बन रहे हैं? समाज का कोई भी वर्ग हो, उसे सबसे पहले देश की चिंता करनी होगी और उसके बाद जाति-मजहब और समुदाय की।

response@jagran.com

प्रिय लेखक के अवसान की पीड़ा

हास्य-व्यंग्य

संतोष त्रिवेदी

उन्हें जो सम्मान नहीं मिले, हम सब उन्हें हथियाने का संकल्प लेते हैं। यही पुण्यात्मा को सच्ची श्रद्धांजलि होगी

साधक जी गहरे सदमे में थे। उनके प्रिय लेखक का निधन हो गया था और यह खबर उन्हें पूरे बत्तीस मिनट की देरी से मिली। अब तक तो सोशल मीडिया में कई लोग बाजी मार ले गए होंगे। फिर भी उन्होंने खुद को संभाला। ऐसा करना जरूरी था, अन्यथा क्षति और व्यापक हो सकती थी। पहले तो उन्होंने इस खबर की पुष्टि की। इस बार पक्की सूचना थी कि उनके 'प्रिय लेखक' साहित्यिक यात्रा के बजाय अंतिम यात्रा पर ही निकले हैं। इससे इत्मिनान हुआ। पहले वह दो बार 'फेक-न्यूज' से गच्चा खा चुके थे। वरिष्ठ लेखक से नजदीकी दिखाने की होड़ में उनके स्वर्गारोहण से पहले ही सोशल मीडिया पर वह उनका 'शोकोत्सव' मना चुके थे। अचानक लेखक की निगाह जब अपनी ही 'जीवित श्रद्धांजलि' पर पड़ी तो गड़बड़ हो गई।

उस सबक को याद कर साधक जी तुरंत सोशल मीडिया पर आए। वहां कोहराम मचा हुआ था। एक नवोदित कवि 'ट्रेंड' कर रहा था। उसने लेखक जी के शव के साथ ही सेल्फी ले ली थी। उसे वायरल होते देख उनका दिल बैठ गया, पर उन्हें अपनी प्रतिभा पर पूरा भरोसा था। ऐसे झटके खाने का उनका तजुर्बा रहा है। उन्होंने जल्दी से पुराने अलबम खंगाले। कभी वह लेखक के बड़े खास थे। सो उनके साथ खींचे गए चित्रों का खासा स्टॉक था। उन्होंने एक दुर्लभ फोटो को 'प्रिय लेखक से आखिरी आशीर्वाद का सौभाग्य इस नाचीज को' कैप्शन के साथ परोसा ही था कि पूरी साहित्यिक बिरादरी उस पर टूट पड़ी। लोगों ने अंततः उनके दुख को मान्यता दे दी। वह बराबर हर श्रद्धांजलि को 'लाइक' कर रहे थे। इससे उनका दुख लगातार 'अपडेट' हो रहा था। उन्होंने एक घंटे में ही उस नवोदित कवि के दुख को पटखनी दे दी।

स्वर्गवासी लेखक की ऐसी श्रद्धांजलि देखकर कई वरिष्ठ भीतर ही भीतर 'कलपने' लगे। सोचने लगे कि साहित्य में ऐसे जीवित रहने से अच्छा है कि इस तरह की मौत ही आ जाए। कम से कम एक दिन के लिए ही सही, वे चर्चित तो होंगे। पर प्रकटतः यह सब तो नहीं कह सकते थे। आखिर लोकलाज भी कोई चीज होती है। साहित्यकार होने के नाते सभी पर्याप्त रूप से संवेदनशील थे। जिस लेखक का शोक इतना वायरल हो चुका हो, उस पर कुछ तो लिखना होगा। यही सोचकर एक वरिष्ठ ने मर्मांतक संस्मरण लिखा, 'वह कहते रहे कि साहित्य की सद्गति होने तक लिखते रहेंगे। अब किसको पता था कि साहित्य से पहले उनको ही सद्गति मिलेगी। जीवन भर वह न जाने कहां-कहां पड़े रहे, किस-किसको पकड़े रहे! ईश्वर अब उन्हें अपने चरणों में स्थान दे!'

दूसरे वरिष्ठ उनसे भी ज्यादा आहत दिखे जो स्वर्गीय लेखक के समकालीन थे। पिछले महीने ही 'पचहत्तर पार' का उत्सव मनाया था। उन्होंने कहा, 'मेरा उनसे गहरा लगाव था। जब वह नवोदित लेखक थे तब मेरे ही किरायेदार थे। किराया तो छोड़िए, हमने कभी भी उनको उधारी देने से मना नहीं किया। मांगने के मामले में वह शुरू से ही उदार थे। यहीं से साहित्य में 'उदारवाद' की नींव पड़ी। ऐसी पूंजी के बिना साहित्य आज स्वयं को अनाथ महसूस कर रहा है।'

ऐसे-ऐसे संस्मरण पढ़कर साधक जी घबराने लगे। नवोदित कवि को तो वह निपटा चुके थे, पर ये तो उनकी ही तरह प्रतिभा से 'लैस' थे। उन्होंने अतिरिक्त दुख से आखिरी वार किया, 'अपने प्रिय लेखक की याद में हम हर वर्ष 'लेखक उठाओ सम्मान' देंगे। इसके लिए हमारे साहित्यिक गिरोह के दस सदस्य त्याग के लिए तैयार हैं। ये अगले दस वर्षों तक एक-दूसरे को यह सम्मान लेते-देते रहेंगे। इससे साहित्य में सद्भाव भी बना रहेगा। जीवन भर उनको जो सम्मान नहीं मिले, हम सब उन्हें हथियाने का संकल्प लेते हैं। उस पुण्यात्मा के लिए यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।'

उधर लेखक जी की आत्मा स्वर्ग से यह देखकर तड़प रही थी कि आभासी दुनिया में मिले इतने 'सम्मान' को काश उनकी रूह भी 'लाइक' कर पाती!

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य

विदेशी नागरिकों को दी गई भारतीय नागरिकता

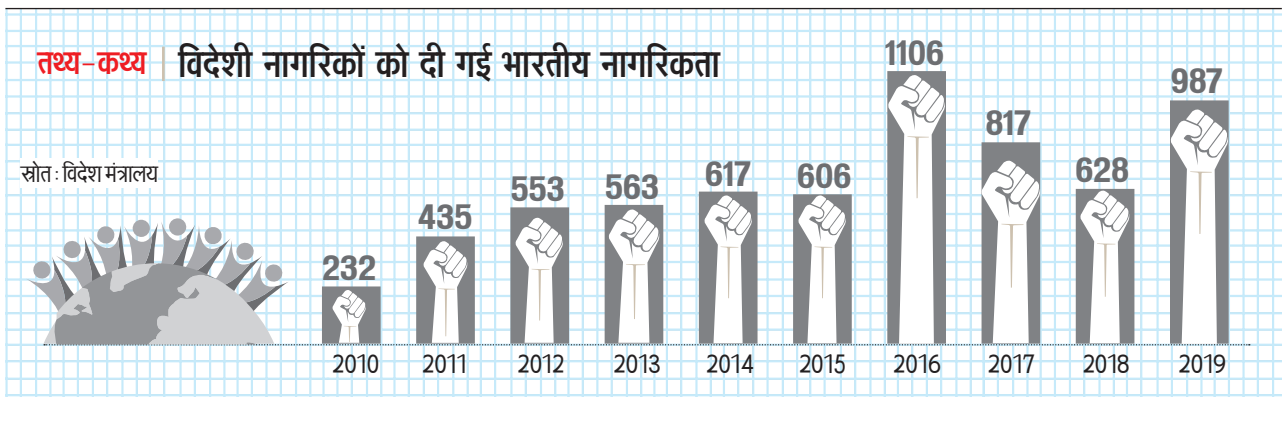

ऊर्जा

अंतर्जगत की यात्रा

संत रैदासजी को लेकर एक किंवदंती प्रचलित है कि जब उन्होंने 'कठौती में गंगा' को प्रकट किया तो यह एक मिसाल बन गई। इसके बारे में यह मान्यता है कि कोई महात्मा गंगा स्नान करने जा रहे थे। रास्ते में उनकी चरण-पादुका टूट गई। वह रैदास के पास आए और उनसे उसे ठीक करने के लिए कहा। पादुका की मरम्मत करते समय रैदासजी पूछ बैठे कि आप सुबह-सुबह कहां जा रहे हैं? रैदास के इस प्रश्न पर महात्मा जी बोले-'वह गंगा स्नान के लिए जा रहे हैं।' इसके बाद महात्मा जी ने दंभ भरे शब्दों में कहा, 'रैदास, तुम क्या गंगा स्नान की महत्ता जानो?'

इस पर रैदास जी बोले, 'सच कह रहे हैं आप, लेकिन गंगा में एक पैसा मेरा भी चढ़ा दीजिएगा। स्नान के बाद महात्मा जी ने पहले अपना चढ़ावा गंगा को भेंट किया। इसके बाद जब उन्होंने मां गंगा को रैदासजी का एक पैसा चढ़ाना चाहा तो गंगा प्रकट हुईं और हाथ में एक पैसा लेकर अति कीमती एक कंगन दिया और कहा कि इसे रैदास को दे देना। इस घटना से महात्माजी आश्चर्य में तो पड़ गए, लेकिन उन्होंने कंगन रैदासजी को न देकर लोभवश राजा को दे दिया, लेकिन हो गया उल्टा। कंगन देखकर रानी ने इसी तरह के दूसरे कंगन की जिद की। राज्य का जौहरी भी जब इतना शानदार कंगन नहीं बना पाया तो उन्हें राजा के समक्ष सच बोलना पड़ा। राजा ने महात्माजी से कहा कि यदि बात झूठी हुई तो उन्हें मृत्युदंड दिया जाएगा। राजा ने संत रैदास से वैसे कंगन का अनुरोध किया। संत रैदास ने पास रखी कठौती में जल भरकर गंगा का स्मरण किया तो उस कठौती से गंगा प्रकट हुईं और उन्होंने दूसरा कंगन प्रदान किया।

इसके निहितार्थ पर दृष्टि डालने से यही प्रतीत होता है कि मन रूपी कठौती को जितना निर्मल और छल-छद्म से मुक्त रखेंगे तभी ईश्वरीय साक्षात्कार हो सकता है। कठौती के जरिये सूक्ष्म आत्मशक्ति को साधने और जागृत करने के लिए अंतर्जगत की ओर उन्मुख होने से ही जीवन सफल बन सकता है।

सलिल पांडेय

कोरोना वायरस वैक्सीन की तलाश

मुकुल व्यास

ऑस्ट्रेलिया में इस वैक्सीन को तैयार करने में जुटे शोधार्थियों का कहना है कि अगले छह माह में वे इसे विकसित कर सकेंगे

चीन में महामारी फैलाने वाले नॉवेल कोरोना वायरस को रोकने के लिए दुनिया के कई रिसर्चर वैक्सीन बनाने में जुट गए हैं और इस दिशा में उन्हें कुछ सफलता भी मिल रही है। भारतीय मूल के वैज्ञानिक एसएस वासन और उनकी टीम ने कोरोना वायरस का वैक्सीन तैयार करने के लिए ऑस्ट्रेलिया में कॉमनवेल्थ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च ऑर्गनाइजेशन (सीएसआइआरओ) की कड़ी सुरक्षा वाली प्रयोगशाला में वायरस का पहला बैच विकसित कर लिया है। चीन के बाहर तैयार किया गया यह पहला बैच है। इससे गहन रिसर्च के लिए पर्याप्त स्टॉक जमा हो गया है। इससे पहले ऑस्ट्रेलिया के डॉहर्टी इंस्टीट्यूट के शोधार्थियों ने मानव नमूने से वायरस को अलग कर लिया था।

ऑस्ट्रेलियाई शोधार्थियों को उम्मीद है कि वायरस के खिलाफ वैक्सीन छह महीने के भीतर तैयार हो जाएगा। चीनी वैज्ञानिकों द्वारा कोरोना वायरस का आनुवंशिक नक्शा सार्वजनिक किए जाने के बाद नए वैक्सीन की खोज में तेजी आ गई है। बड़ी दवा कंपनियां और दूसरे रिसर्च दल वायरस के खिलाफ कारगर वैक्सीन विकसित करने के लिए अलग-अलग एप्रोच अपना रहे हैं। अमेरिका में मेरीलैंड स्थित नेशनल हेल्थ इंस्टीट्यूट के शोधार्थियों का कहना है कि उन्होंने कोरोना वायरस के महत्वपूर्ण हिस्से का एक संशोधित रूप तैयार कर लिया है जो शरीर को वायरस के खिलाफ एंटीबॉडीज निर्मित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

इस टीम की प्रमुख किज्जमेकिया कॉर्बेट का कहना है कि उनका दल वायरस के एक खास प्रोटीन पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। उनकी रिसर्च चीन में 2001 में प्रकट हुई सार्स (सीवियर एक्यूट रेस्पिरेट्री सिंड्रोम) महामारी पर किए गए अध्ययन पर आधारित है। कोरोना वायरस की ही एक दूसरी किस्म ने यह बीमारी फैलाई थी। समझा जाता है कि वायरस की यह किस्म वुहान के वायरस से मिलती-जुलती थी।

वुहान वायरस की संरचना को समझने के लिए एक ऐसी गेंद की कल्पना कीजिए जिसकी सतह पर चारों तरफ कीलें लगी हों। कीलों जैसी संरचनाएं दरअसल वायरस के मुख्य हथियार हैं। इन्हें स्पाइक प्रोटीन भी कहा जाता है। ये प्रोटीन फेफड़े की झिल्ली में मौजूद एसीई 2 रिसेप्टर के साथ जुड़ जाते हैं। एक तरह से ये रिसेप्टर कोशिका की दीवार के प्रवेशद्वार हैं, जिनके जरिये वायरस शरीर में दाखिल हो जाता है। कॉर्बेट ने बताया कि उनकी टीम इस महत्वपूर्ण प्रोटीन का संशोधित रूप तैयार करने के लिए चौबीसों घंटे काम कर रही है। यह संशोधित प्रोटीन वायरस के हमले को नाकाम करने के लिए शरीर को एंटीबॉडीज निर्मित करने के लिए प्रेरित करेगा। कॉर्बेट ने कहा कि कोरोना वायरस श्रेणी के वायरस रोगाणुओं के बड़े परिवार से संबंध रखते हैं। इनमें से सात वायरस मनुष्यों को संक्रमित करते हैं। बहरहाल इस मोर्चे पर अभी काफी शोध किए जाने की आवश्यकता है।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

राजरंग

सियासत के अनूठे रंग

दिल्ली विधानसभा चुनाव में सियासी रंगों में बदलाव के कई नमूने देखने को मिले। इसमें सबसे दिलचस्प यह रहा कि राजनीतिक रुप से मुखर बॉलीवुड के कई सितारे आम आदमी पार्टी के प्रचार के लिए लगातार अपनी तरफ से पेशकश करते रहे, मगर इन सितारों की भीड़ जुटाऊ क्षमता और स्टार वैल्यू के बाद भी प्रचार अभियान में शामिल होने के लिए की गई इनकी पेशकश को नजरअंदाज कर दिया गया। बताया जाता है कि प्रचार की पेशकश करने वाले ऐसे चेहरों में स्वरा भास्कर, तापसी पन्नू और ऋचा चड्ढा जैसे सितारे थे। मगर आप नेतृत्व ने नागरिकता कानून और एनआरसी की मुखालफत करने वाले इन सितारों को प्रचार अभियान से जोड़ने का जोखिम नहीं लिया। चुनाव अभियान को भाजपा की राष्ट्रवादी पिच पर ही सिमट जाने के खतरों के मद्देनजर आप ने नरम हिंदुत्व की राह पर चलने के लिए ऐसे सितारों से परहेज किया जबकि पिछले चुनाव में बॉलीवुड के कई सितारे आप के प्रचार की ताकत रहे थे।

अति उत्साहित अधिकारी

नेता अपने विरोधियों पर हमले का मौका नहीं छोड़ते, लेकिन नौकरशाही से उम्मीद की जाती है कि वह बिना पूर्वाग्रह तथ्यों के आधार पर फैसले करे। खासतौर पर जांच एजेंसियों के अधिकारियों के लिए यह जिम्मेदारी बड़ी हो जाती है, मगर कुछ जांच एजेंसियों के अधिकारी राजनीतिक आकाओं को खुश करने के अति उत्साह में ऐसे फैसले कर लेते हैं, जो राजनीतिक रूप से उनके आका के लिए नुकसानदेह साबित हो जाता है। पिछले दिनों ऐसे ही एक एजेंसी ने चुनाव के ठीक पहले एक विरोधी राजनीतिक दल के वरिष्ठ नेता के खिलाफ अनौपचारिक रूप से खबरें लीक की। अब माना जा रहा है कि चुनाव के ठीक पहले बिना ठोस सुबूतों के ऐसे आरोप लगाने का दांव उलटा पड़ गया।

एकीकरण की चुनौती

कैडर मर्जर के निर्णय को लेकर जबसे पीएमओ ने रेल मंत्रालय की क्लास लगाई है, मंत्रालय को मानो सांप सूंघ गया है। यही नहीं, जिस तरह यूनियनों ने इस निर्णय का विरोध किया है और एक के बाद एक समूह इस फैसले के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं, उससे इस निर्णय के भविष्य को लेकर भी सवाल खड़े हो गए हैं। यही नहीं, विरोध के सबसे ज्यादा सुर सिविल सेवा से आने वाले उन अफसरों की ओर से सुनाई दे रहे हैं जिन्हें भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था की रीढ़ माना जाता है, क्योंकि यही वह तबका है जो कैडर एकीकरण से सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाला है। इस वर्ग के अफसरों कहना है कि अभी तक सिविल सेवा में आइएएस, आइपीएस और आइएफएस के बाद अफसरों की पहली पसंद रेलवे रहा है, लेकिन अब शायद ही कोई रेलवे में आना चाहेगा। इससे रेलवे में बेहतरीन प्रतिभावान अफसरों की कमी हो जाएगी। दूसरी ओर इंजीनियरिंग के अफसरों की भरमार होने से सर्वोच्च स्तर पर प्रशासकीय एवं प्रबंधकीय क्षमता प्रभावित होने का खतरा है। कैडर एकीकरण से विशेषज्ञताएं प्रभावित होंगी। साथ ही नॉन-गजेटेड स्तर पर विभागीय खाई कायम रहेगी। गुप्ता कमेटी ने भी इन्हीं वजहों से कैडर एकीकरण के विचार को खारिज कर दिया था, लेकिन हालिया निर्णय लेते वक्त इस तथ्य को नजरअंदाज कर दिया गया। इन हालात में कैडर एकीकरण समिति के आगे चुनौतीपूर्ण परिस्थिति तो पैदा हो ही गई है।

जातीय बयान पर घिरे नेताजी

भाजपा से टिकट न मिलने पर चुनाव से ठीक पहले कांग्रेस का हाथ थामने वाले नेताजी को जातीय टिप्पणी महंगी पड़ गई। आखिरकार वह अपनी पार्टी में ही अलग-थलग पड़ गए। हुआ यह है कि राम मंदिर ट्रस्ट के गठन की घोषणा के बाद कांग्रेस नेता उदित राज को पता नहीं क्या सूझा कि उन्होंने जातीय संख्या का हवाला देते हुए इसमें दलितों के कम प्रतिनिधित्व पर सवाल खड़ा कर दिया और कहा कि दलित ब्राह्मणों से संख्या में ज्यादा हैं। फिर भी ऐसा क्यों? उनका यह ट्वीट ब्राह्मणों और दलितों के बीच कटुता पैदा करने वाला था। फिर क्या था कांग्रेस के कुछ नेताओं ने उदित राज पर ट्वीट के जरिये ही मोर्चा खोल उन्हें सार्वजनिक रूप से नसीहत दे डाली। इनमें जितिन प्रसाद और राजीव त्यागी सबसे आगे रहे। इन पुराने दिग्गजों ने अपने सहयोगी उदित राज को सोशल मीडिया पर ही खरी-खरी सुनाने में वक्त जाया नहीं किया। अब शायद उदित राज इससे कोई सबक लें।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

आजकल

सार्वजनिक बेनकाब होने से क्रोधित कवि

साहित्य की दुनिया में अशोक वाजपेयी लंबे समय से प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से राजनीति करते रहे हैं। लेखकों के बीच भी और प्रकाशकों के बीच भी। फर्क इतना आया है कि अब उनके साहित्यिक वृत्त के बाहर के लेखक मुखर होकर उनकी राजनीति को रेखांकित करने लगे हैं। उनके अर्धसत्य को बेनकाब करने लगे हैं। अर्धसत्य का दौर अब रहा नहीं तो इस रेखांकन से उनका क्रोधित होना स्वाभाविक है

अनंत विजय

मीडिया और उसकी भूमिका या उसके काम करने का तरीका एक ऐसा विषय है जिसपर घंटों बात हो सकती है, पक्ष में भी और विपक्ष में भी। मीडिया पर होनेवाली चर्चा में कुछ ऐसी बातें भी होती हैं जो पिछले कई वर्षों से बोली जा रही हैं यथा मीडिया चौराहे पर खड़ा है, मीडिया पर विश्वसनीयता का संकट है आदि। इन सब जुमलेबाजियों के बीच मीडिया की अपनी साख कायम है, वह अपना विस्तार भी कर रहा है। पर चर्चा है तो होती ही रहेगी। इसी तरह की एक चर्चा जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में रखी गई थी, विषय था चौथा स्तंभ। इसी तरह के कई जुमले वहां भी उछाले गए। पूर्व पत्रकार और अब राजस्थान के एक पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर विराजमान ओम थानवी, पांचजन्य के संपादक हितेश शंकर, पत्रकारिता पर नजर रखने का दावा करनेवाली एक वेबसाइट के कार्यकारी संपादक अतुल चौरसिया के साथ मैं भी इस चर्चा में शामिल था।

इस तरह की चर्चा में अगर तैयारी के साथ वक्ता नहीं आते हैं तो वे राजनीति की अंगुली पकड़कर अपना बेड़ा पार करवाना चाहते हैं। ओम थानवी ने यही किया और राजनीति की बात करते-करते साहित्य के प्रदेश में जा पहुंचे। इस बात को रेखांकित करने लगे कि मीडिया ने सरकार का विरोध करनेवाले उन लेखकों को पुरस्कार वापसी गैंग का नाम दिया जिन्होंने कलबुर्गी की हत्या के बाद साहित्य अकादमी का अपना पुरस्कार लौटा दिया था। मैंने विस्तार से उनको बताया कि क्यों इन लेखकों को गैंग कहा गया। इस स्तंभ में साहित्य वाले हिस्से की चर्चा ही करूंगा। अतुल चौरसिया ने एक ऐसी स्थापना सामने रखने की कोशिश की जो बिल्कुल ही तथ्यहीन तर्क की बुनियाद पर टिकी थी। उन्होंने मोदी सरकार के पहले की सरकार को इस आधार पर उदारवादी बताया कि उनके समय में न्यूज चैनलों के लाइसेंस उदारता के साथ दिए जाते थे और मोदी के पूर्व के सरकारों में मीडिया फलता-फूलता था। उन्होंने रजत शर्मा के इंडिया टीवी और एनडीटीवी के उदाहरण दिए, पर उत्साह में बहुधा चूक हो जाती है और अतुल भी चूक गए। उन्होंने यहां तक कह दिया कि मोदी के शासनकाल में सिर्फ अर्णब के चैनल को लाइसेंस दिया गया। मैंने प्रतिवाद किया और उनको मंच से ही बता दिया कि कितने चैनलों को लाइसेंस दिए गए। बाद में वह सोशल मीडिया पर और भी मनोरंजक सफाई देने में जुटे रहे। सूचना प्रसारण मंत्रालय की एक सूची लगाई, पर जो तर्क दिए वे भी गलत थे। दक्षिण भारत में कई हिंदीतर भाषाओं में क्षेत्रीय चैनल का प्रसारण कर रहे एक मीडिया समूह को राष्ट्रीय हिंदी चैनल चलाने की अनुमति भी मिली थी। वह चल भी रहा है। कांग्रेस के एक नेता की पत्नी का चैनल भी शुरू हुआ।

दरअसल जब पिछले साल मेरी किताब 'मार्क्सवाद का अर्धसत्य' प्रकाशित हुई थी तो कुछ लोगों ने मुझसे कहा था कि झूठ की विचारधारा को अर्धसत्य क्यों कहा तो कुछ साथियों ने इस बात पर चुटकी ली कि झूठ की विचारधारा से अर्धसत्य निकालने का काम मैं ही कर सकता हूं, लेकिन जैसे-जैसे दिन बीतते जाते हैं तो मेरा विश्वास इस बात को लेकर दृढ़ होता जाता है कि अर्धसत्य को एक विचारधारा के तौर पर स्थापित करने में मार्क्सवादियों और उनके अनुयायियों या साथियों का बड़ा योगदान है। अशोक वाजपेयी मार्क्सवादी नहीं हैं, पूर्व में वामपंथ के मुखर विरोधी थे, पर बदली राजनीतिक परिस्थिति में उनके समर्थक या साथी हैं। तमाम क्रांतिकारी कवि इन दिनों उनकी परिक्रमा करते नजर आते हैं। वह भी वामपंथियों के साथ रहते हुए अर्धसत्य को बढ़ावा देने की कला में माहिर हो गए हैं। पाठक इस बात को समझ सकते हैं कि अगर अवसर ही विचार हैं की अवधारणा अर्धसत्य के कंधे पर सवार हो जाए तो किस तरह की बातें सामने आ सकती हैं। अशोक वाजपेयी इन दिनों इसी मिश्रण के साथ साहित्य की भूमि पर खड़े नजर आते हैं।

जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में मीडिया पर हुई चर्चा के दौरान पूरे समय वह बैठकर सुनते रहे थे। चर्चा खत्म होने के बाद तमतमाते हुए मेरे पास पहुंचे थे और कहा कि आप मंच से सफेद झूठ बोलते हैं। इस प्रसंग की चर्चा उनके कॉमरेड ओम थानवी ने सोशल मीडिया पर लिखे एक पोस्ट में भी की, लेकिन ओम थानवी ने अश्वत्थामा हतो, नरो के बाद शंख बजा दिया और इस प्रसंग को छोड़कर आगे बढ़ गए। अर्धसत्य के आधार पर अपनी बात को सामने रखने का एक और उदाहरण। जब अशोक वाजपेयी ने मुझपर झूठ बोलने का आरोप लगाया तो मैंने वहीं बहुत विनम्रतापूर्वक उनको याद दिलाया कि साहित्य में एकमात्र सत्यवादी हरिश्चंद्र तो वही हैं। मैं चाहता था कि अशोक वाजपेयी तथ्यों के आधार पर बात करें, लेकिन क्रोध हमेशा विवेक का दुश्मन होता है और उस वक्त वह क्रोधित थे। क्रोध में उन्होंने यहां तक कह दिया कि 69 लोगों ने साहित्य अकादमी पुरस्कार लौटाए थे। यह संख्या भी गलत है। साहित्य अकादमी के युवा, अनुवाद, बाल पुरस्कारों को जोड़ने के बाद भी पुरस्कार वापसी की घोषणा करनेवाले 39 लेखक थे। घोषणा इस वजह से कि न तो उनके पुरस्कार वापस हो सकते थे और न ही उनके द्वारा भेजी गई राशि वापस हो सकती थी। इनमें से भी कई लेखकों ने राशि के चेक वापस नहीं किए। कुछ ने चेक भेजे तो उसमें किसी का नाम नहीं लिखा था, कुछ ने स्मृति चिन्ह नहीं भेजा। एक लेखक ने तो खेद जताकर पुरस्कार वापसी की अपनी घोषणा को रद भी कर दिया। अशोक वाजपेयी इतने भोले तो नहीं हैं कि उनको लेखकों की इस चतुराई का पता न हो। पकी आंखों से साहित्य की राजनीति करनेवाले अशोक वाजपेयी को मालूम होगा कि पुरस्कार वापस करने की घोषणा करनेवाले कई लेखक अब छाती ठोककर अपनी पुस्तक पर छपे अपने परिचय में अकादमी पुरस्कार प्राप्त लेखक लिखते हैं। जो साहित्य अकादमी परिसर में कदम नहीं रखने की कसम खा चुके थे वे भी अब अकादमी की बैठकों में न केवल शामिल होते हैं, बल्कि अकादमी से बैठक में शामिल होने का मानदेय भी लेते हैं।

कोई भी व्यक्ति क्रोधित तब होता है जब उसके तर्क चुक जाएं। पुरस्कार वापसी अभियान पर अशोक वाजपेयी जब भी मुंह खोलते हैं तो उनका कहा गलत ही साबित होता है। पुरस्कार वापसी पर उनके तर्क एकदम कमजोर रहते हैं। पुरस्कार वापसी पर तो इतना लिखा जा चुका है कि अब कुछ शेष रहा नहीं है और यह कई बार साबित भी हो चुका है कि कैसे बिहार विधानसभा चुनाव के ठीक पहले जनता दल यूनाइटेड के एक बड़े नेता के घर पर हुई बैठक में इसकी रणनीति बनी थी। किस तरह से पुरस्कार वापसी अभियान के एवज में बिहार में विश्व कविता सम्मेलन के आयोजन की ठेकेदारी की बात होती है। यह अलग बात है कि जिस नीतीश कुमार की राजनीति के लिए पुरस्कार वापसी अभियान चलाया गया था वही नीतीश, भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ हो लिए। इसके बाद विश्व कविता सम्मेलन का आयोजन नहीं हो सका, टेंडर निकलने के बाद भी ठेका नहीं मिलने की पीड़ा तो होती ही है।

साहित्य की दुनिया में अशोक वाजपेयी लंबे समय से प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से राजनीति करते रहे हैं। नौकरशाह होने की वजह से साधन व संसाधन की कमी कभी नहीं रही। अब भी रजा फाउंडेशन के स्वामित्व की वजह से संसाधन की कमी नहीं है। लिहाजा उनकी राजनीति चल रही है। लेखकों के बीच भी और प्रकाशकों के बीच भी। फर्क इतना आया है कि अब उनके साहित्यिक वृत्त के बाहर के लेखक मुखर होकर उनकी राजनीति को रेखांकित करने लगे हैं। उनके अर्धसत्य को बेनकाब करने लगे हैं। अर्धसत्य का दौर अब रहा नहीं तो इस रेखांकन से उनका क्रोधित होना स्वाभाविक है। खिन्न तो वह इस बात से भी होंगे कि ललित कला अकादमी के उनके कार्यकाल के दौरान की गड़बड़ियों की सीबीआइ जांच भी अंतिम चरण में है।

फिर से

वैतरणी नदी आखिर है किधर

हिंदुओं के लिए गरुण पुराण बेहद महत्वपूर्ण है। मुमुक्षुओं के लिए इसकी महत्ता काफी अधिक है और आखिरी सांसें गिन रहे लोगों को यह पुराण पढ़कर सुनाया जाता है। गुरुड़ पुराण के मुताबिक मरने के बाद वैतरणी नाम की नदी पार करनी होती है। बहरहाल ओडिशा में एक नदी है जिसका नाम वैतरणी है। इसके बेसिन को ब्राह्मणी-वैतरणी बेसिन कहा जाता है, लेकिन इसके साथ ही महाराष्ट्र में भी एक वैतरणी नदी है, जो नासिक के पास पश्चिमी घाट से निकलती है और अरब सागर में गिरती है।

वैतरणी से थोड़ी ही दूरी पर मशहूर गोदावरी का भी उद्गम स्थल है और नासिक के पास से निकलकर यह प्रायद्वीपीय भारत की सबसे लंबी नदी बन जाती है। इसको दक्षिण की गंगा भी कहते ही हैं, लेकिन एक अदद गोदावरी नेपाल में भी है। वैसे बुंदेलखंड के चित्रकूट में एक गुप्त गोदावरी भी निकलती है और जो एक पहाड़ी गुफा के भीतर से पतली धारा के रूप में बहती है। गोदावरी की सहायक नदी है इंद्रावती, जो छत्तीसगढ़ में बहती है, पर एक इंद्रावती नेपाल में भी मौजूद है।

उत्तर प्रदेश की गोमती नदी की बात करें तो एक गोमती त्रिपुरा में भी है जो वहां से आगे बांग्लादेश जाती है। इसी नदी पर त्रिपुरा का सबसे बड़ा और बदनाम बांध बना हुआ है। गंगा का नाम तो नदी शब्द का करीबन पर्यायवाची ही बन गया है। आदिगंगा से लेकर गोरीगंगा और काली गंगा से लेकर वनगंगा और बाल गंगा तक नाम की नदियां अस्तित्व में हैं। पंजाब की रावी का एक नाम इरावती भी है, लेकिन एक और इरावती है, पर यह इरावती नमाइ और माली नदियों के मिलने से बनती है और म्यांमार में बहती है। यह हिमालयी हिमनदों से शुरू होती है। पंजाब वाली रावी पाकिस्तान होती हुई सिंधु में मिल जाती है और म्यांमार वाली इरावती अंडमान सागर में।

परिणीता दांडेकर लिखती हैं कि कावेरी नाम की भी दो नदियां हैं। एक तो वह मशहूर कावेरी नदी, जिसके पानी के लिए तमिलनाडु और कर्नाटक में रार मचा रहता है, जबकि दूसरी कावेरी पश्चिम की तरफ बहने वाली नदी नर्मदा की सहायक नदी है। हांगकांग में सतलज, झेलम और व्यास नदियां मौजूद हैं। संभवतया यह 1860 के आसपास हुआ जब हांगकांग में तैनात पंजाब के सिख सैनिकों ने वहां की नदियों के नाम अपने पसंद के रख दिए। नदियों के नामों में वैदिक संस्कृत का प्रभाव स्पष्ट रूप से कर्नाटक में दिखता है जहां शाल्मला, नेत्रावती, कुमारधारा, पयस्विनी, शौपर्णिका, स्वर्णा, अर्कावती, अग्नाशिनी, कबिनी, वेदवती, कुमुदावती, शर्वती, वृषभावती, गात्रप्रभा, मालप्रभा जैसी नदियों के नाम मौजूद हैं। गुजरात की नदियों, साबरमती और रुक्मावती के नाम याद कीजिए। कितने सुंदर और शास्त्रीय नाम हैं! लेकिन एक नदी वहां ऐसी भी है जिसका नाम है भूखी। एक अन्य नदी है उतावली। राजस्थान अलवर जिले में एक नदी का नाम जहाजवाली भी है।

कुछ नदियों के नाम में इलाकाई और भाषाई असर भी आता है। मसलन तमिल और मलयालम में आर और पुझा (यानी नदी) कई नदियों के नाम में जुड़े हैं। जैसे-चालाकुडी पूझा, पेरियार, पेंडियार वगैरह। इसी तरह भूटान, सिक्किम और तवांग इलाके में छू का मतलब नदी ही होता है। अब वहां की नदियों हैं, न्यामजांगछू या राथोंग छू। असम में भी नदियों के नाम के आगे कुछ खास शब्द लगाए जाते हैं। और वह है दि। दिहांग, दिबांग, दिखोऊ, दिक्रोंग आदि। बोडो में दि शब्द का मतलब होता है पानी। याद रखिए ब्रह्मपुत्र घाटी में सबसे पहले बसने का दावा भी बोडो ही करते हैं। जाहिर है, नदियों के नाम इतिहास के सूत्र छोड़ते हैं। भाषा विज्ञानियों को इस दिशा में काम करना चाहिए।

(साभार : गुस्ताख ब्लॉग में मंजीत ठाकुर)

ट्वीट-ट्वीट

जिस दिल्ली से वैकल्पिक राजनीति की उम्मीद पूरे देश में जागी थी आज उसी दिल्ली में इतना कम मतदान यही सिद्ध करता है कि जनता आशाओं को धूमिल करने वाले राजनीतिक विमर्श से विमुख है। जरा सोचिए कि सत्तर सीटों में से सबसे कम मतदान नई दिल्ली सीट पर हुआ।

कुमार विश्वास@DrKumarVishwas

मुझे पता चला कि जो लोग कागज नहीं दिखाएंगे का दम भर रहे थे, वे दिल्ली में मतदान के लिए लगी कतारों में अपने पूरे कागजों के साथ मौजूद रहे।

कंचन गुप्ता@KanchanGupta

पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त डॉ. एसवाइ कुरैशी ने बड़ा बुनियादी और गंभीर सवाल उठाया है कि दिल्ली चुनाव में जहरीली बयानबाजी करने वाले नेताओं पर चुनाव आयोग ने पर्याप्त कार्रवाई क्यों नहीं की? आखिर उनके खिलाफ एफआइआर क्यों नहीं दर्ज कराई गई?

सीमा चिश्ती@seemay

संसद के दोनों सदनों में पीएम मोदी के भाषण यह साबित करते हैं कि सीएए के जरिये न केवल ऐतिहासिक गलती को दुरुस्त किया गया, बल्कि यह मुस्लिम विरोधी भी नहीं और इसकी जड़ें भारत की धर्मनिरपेक्ष परंपराओं में गहराई से समाई हैं।

श्रीमय तालुकदार@sreemoytalukdar

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अमेरिका के मोदी नहीं हैं। राजनीतिक पंडितों को अब इन दोनों नेताओं की तुलना करना बंद कर देना चाहिए।

सदानंद धूमे@dhume

जिस दिन देश में पुरुष चुनाव में वोट डालने से पहले घर की महिला से चर्चा करने लगे कि किस पार्टी या उम्मीदवार को वोट डालना सही रहेगा, उस दिन सही मायने में बराबरी का लोकतंत्र आएगा। तब तक महिला-पुरुष बराबरी की बातें ढकोसला हैं।

अखिलेश शर्मा@akhileshsharma1

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या प्रधानमंत्री मोदी का यह कहना सही है कि संसद के फैसलों का सड़क पर विरोध अराजकता है?

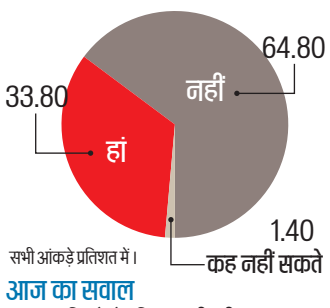

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या लड़कियों के लिए शादी की न्यूनतम उम्र सीमा बढ़ाकर 21 वर्ष कर दी जानी चाहिए?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

अलका जी ने 'हाथ' से जड़ा पार्टी चिन्ह,
बेमतलब ही लोग अब होते दिखते खिन्न।
होते दिखते खिन्न यही हैं गांधीवादी,
खुद हिंसा अपनाय शांति की करें मुनादी!
राजनीति का क्षेत्र हुआ इनसे ही हलका,
डंडा-थप्पड़ मार रहे हैं राहुल-अलका!!

- ओमप्रकाश तिवारी

रचनाकर्म

वर्तमान के लिए इतिहास में छिपे सबक

ब्रजबिहारी

भारतीय उपमहाद्वीप के साथ पूरा विश्व आज इस्लामी कट्टरता और उससे उपजे आतंकवाद का दंश झेल रहा है। ऐसा लग रहा है कि धर्मों और उन पर आधारित सभ्यताओं के बीच चल रहा द्वंद्व किसी गहरी अंधेरी सुरंग में पहुंच गया है, जहां से आगे की राह नहीं दिखाई देती। क्या सचमुच हमारी आधुनिक सभ्यता इस भीषण टकराव को दूर करने में नाकाम साबित हो रही है? क्या इससे निपटने के लिए हमें इतिहास से सबक सीखने की जरूरत है? येल यूनिवर्सिटी में धार्मिक अध्ययन की सीनियर लेक्चरर सुप्रिया गांधी की पुस्तक 'द एंपरर हू नेवर वाज-दारा शुकोह इन मुगल इंडिया' ऐसे ही प्रश्नों का ईमानदार जवाब तलाशने की एक सार्थक कोशिश करती नजर आती है। यह पुस्तक न सिर्फ आज के संदर्भ में प्रासंगिक है, बल्कि भविष्य के लिए भी उपयोगी है। लेखिका ने विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध मूल प्राथमिक स्रोतों को खंगालने के बाद दारा शुकोह के व्यक्तित्व और कृतित्व के यथार्थ पर पड़ी मिथ्या की परत को तार-तार करने का काम किया है।

इतिहास के छात्र जानते हैं कि मुगल शहंशाह शाहजहां अपने बड़े बेटे दारा शुकोह को ही अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे और इसके लिए उन्हें बाकायदा तैयार भी किया जा रहा था, लेकिन दारा के छोटे भाई औरंगजेब को यह मंजूर नहीं हुआ और उसने न सिर्फ अपने पिता को कैद कर लिया, बल्कि अपने सभी भाइयों की हत्या कर खुद मुगलिया सल्तनत का वारिस बन बैठा। औरंगजेब की कट्टरपंथी विचारधारा के प्रभाव में तत्कालीन दरबारी और स्वतंत्र लेखकों और इतिहासकारों ने दारा शुकोह को इस्लाम और सल्तनत के दुश्मन के रूप में पेश किया। साथ ही औरंगजेब को इस्लाम की हिफाजत करने वाले जांबाज के रूप में दर्शाया गया। यह बताने की कोशिश की गई कि कैसे दारा ने सूफी मत और हिंदुत्व के प्रभाव में आकर इस्लाम का नुकसान किया है। दारा से औरंगजेब कितनी नफरत करता था, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि दिल्ली में हूमायूं के मकबरे में दारा की कब्र गुमनामी के अंधेरे में खोई हुई है। उसे पहचानने के लिए उस पर कोई अभिलेख अंकित नहीं है।

बहरहाल सच्चाई को इस तरह के प्रयासों से छिपाया नहीं जा सकता है। उसके बीज भ्रम की जमीन के अंदर पड़े रहते हैं और परिस्थितियां अनुकूल होते ही अंकुरित हो जाते हैं। दारा शुकोह के साथ भी यही हुआ। दारा ने अपने छोटे से जीवनकाल में उपनिषद सहित कई हिंदू धर्मग्रंथों के फारसी अनुवाद करवाए थे। इन रचनाओं को न सिर्फ भारतीय विद्वानों, पाश्चात्य विचारकों ने भी अपनी लेखनी में शामिल किया और दारा की हकीकत को जिंदा रखा। इसी का नतीजा है कि आज की पीढ़ी एक बार फिर दारा शुकोह को जानने-समझने की कोशिश कर रही है। उस दारा शुकोह के बारे में जो अपने परदादा अकबर की तरह सभी धर्मों में अंतर खोजने के बजाय उनमें समानता की तलाश करने का हामी था। उसे इस्लाम, हिंदुत्व और ईसाइयत में कोई फर्क ही नजर नहीं आता था। वह मानता था कि हमारे रास्ते भले ही अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन हम सबकी मंजिल एक ही है और वह है परमतत्व के साथ एकाकार हो जाना।

हालांकि इतिहास में अगर-मगर की गुंजाइश नहीं होती है, लेकिन इसके बावजूद यह सवाल समीचीन है कि क्या उत्तराधिकार की खूनी जंग में औरंगजेब की जगह अगर दारा शुकोह को जीत मिली होती और वह हिंदुस्तान का सुल्तान बना होता तो पूरे भारतीय उपमहाद्वीप ही नहीं, बल्कि पूरे दक्षिण एशिया का इतिहास और वर्तमान कुछ और होता? तब शायद पाकिस्तान का अस्तित्व ही नहीं होता और इस्लाम एवं हिंदुत्व के बीच विभाजक रेखाएं भी नहीं होतीं।

यह किताब बताती है कि अगर इस्लाम भारत में औरंगजेब की कट्टरपंथी विचारधारा के बजाय दारा शुकोह की उदारवादी सोच के साथ आगे बढ़ा होता तो धार्मिक कट्टरता को प्रश्रय नहीं मिल पाता...

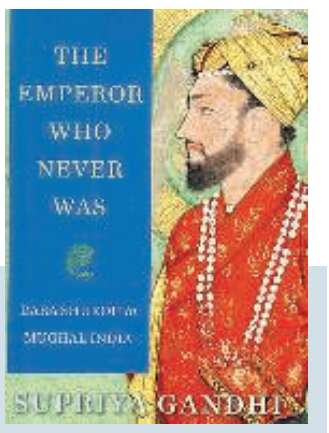

पुस्तक : द एंपरर हू नेवर वाज-दारा शुकोह इन मुगल इंडिया
लेखिका : सुप्रिया गांधी
प्रकाशक : हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
मूल्य : 699 रुपये

नायाब दुनिया से पर्दा उठाने का प्रयास

प्रणव सिरोही

पुस्तक : अंटार्कटिका-भारत की हिमानी महाद्वीप के लिए यात्रा
लेखक : एसजेड कासिम और दीनबंधु साहू
प्रकाशक : नियोगी बुक्स
मूल्य : 750 रुपये

आज भले ही भारत अपने पहले अंतरिक्ष मानव मिशन की तैयारी में जुटा हो, लेकिन एक दौर वह भी था, जब धरती के दूसरे कोने की थाह लेना ही बड़ा दुष्कर काम था। एसजेड कासिम और दीनबंधु साहू ने 'अंटार्कटिका-भारत की हिमानी द्वीप के लिए यात्रा' शीर्षक से प्रकाशित पुस्तक में उसी दौर की यादें ताजा की हैं। लेखकद्वय ने इस किताब में भारत के पहले अंटार्कटिका अभियान और इस महाद्वीप का जीवंत वर्णन किया है।

इसमें बताया गया है कि कैसे हिमभंजक जहाज 'पोलर सर्किल' पर सवार होकर भारत से 25 दिनों की समुद्री यात्रा और 11,173 किलोमीटर की दूरी तय करके वे पृथ्वी पर मौजूद एक अलग ही दुनिया में दाखिल हुए। यह किताब केवल एक यात्रा वृत्तांत न होकर भारत के ध्रुवीय अनुसंधान कार्यक्रम का रोचक किस्सा बयान करती है। यह अंटार्कटिका पर भारत के पहले स्टेशन दक्षिण गंगोत्री, दूसरे स्टेशन मैत्री और तीसरे स्टेशन भारती की स्थापना के किस्से से परिचित कराती है। इसके साथ ही इस रहस्यमयी और चमत्कृत कर देने वाले भूखंड की उत्पत्ति, उसके प्राणियों एवं वनस्पति और अत्यंत विषम परिस्थितियों में वहां अस्तित्व बचाए रखने की तमाम तरकीबों से रूबरू कराती है। इसमें कई रोचक तथ्य भी दिए गए हैं। जैसे कि लेंबर्ट हिमनद, जो न केवल अंटार्कटिका, बल्कि पृथ्वी पर उपस्थित सबसे बड़ा हिमनद है। या फिर किताब उस प्रचंड वेग वाले रोअरिंग फोर्टीज समुद्र के वीभत्स रूप का दर्शन कराती है, जिसकी लहरें अन्वेषकों को भीतर तक भयाक्रांत कर देती हैं।

वास्तव में यह पुस्तक इस महाद्वीप के नैसर्गिक सौंदर्य के मनोरम दृश्यों से एकाकार कराते हुए दो अलग-अलग शख्सियतों के प्रत्यक्ष अनुभवों की अभिव्यक्ति है। शुभ्रता शर्मा का अनुवाद भी अच्छा है। पुस्तक में नयनाभिराम चित्रों की भरमार है, जिससे यह संग्रहणीय बन पड़ी है। न केवल अकादमिक शोधार्थियों, बल्कि आम पाठकों को भी यह आकर्षित करने में सक्षम है।

मध्य प्रदेश डायरी

कोरोना से भी खतरनाक है 'गुस्से' का वायरस

आशीष व्यास
संपादक, नई दुनिया, मध्य प्रदेश

अभी एक सप्ताह ही बीता है। 26 जनवरी की पूर्व संध्या पर इंदौर पहुंचे मुख्यमंत्री कमलनाथ ने एक घटना सुनाई। चूंकि वे दाओस से सीधे आए थे, इसलिए संस्मरण भी ताजा था और दुख भी। उन्होंने बताया कि दाओस में जब वे एक प्रदर्शनी देख रहे थे तो उनके कोट पर लगे बैच में मध्य प्रदेश लिखा देख एक व्यक्ति पूछ बैठा-यह वही मध्य प्रदेश है, जहां 'गैस-कांड' हुआ था? तीन दशक बाद भी भोपाल गैस हादसा प्रदेश के माथे पर लगा ऐसा दाग है, जो मिट नहीं पाया है। इसे मिटाने का संकल्प लेते हुए मुख्यमंत्री ने फिर से मध्य प्रदेश की नई छवि गढ़ने की बात की है। माना जा सकता है कि इस कड़ी में पहला आयोजन मार्च में हो रहा-आइफा अवार्ड है। यह 'ताज' इंदौर के माथे पर सजने के कई कारण हो सकते हैं, लेकिन उनमें से एक बड़ा कारण है-यहां का शांत और आदर्श वातावरण। इंदौर में जन्मे फिल्म अभिनेता सलमान खान ने भी आइफा का एलान करते हुए इसी तरह इंदौर की तारीफ की। हालांकि उनकी कही बातें प्रदेश के हर कोने में अभी ठीक से पहुंची भी नहीं थीं कि धार जिले के बोरलाई गांव में कुछ ऐसा घट गया, जिसकी कल्पना कम से कम मालवा-निमाड़ क्षेत्र में तो किसी ने नहीं की थी। दरअसल उधार दिए गए ढाई लाख रुपये वापस मांगने गए कुछ किसानों को ग्रामीणों द्वारा पीट-पीटकर अधमरा कर दिया गया, इसमें से एक की मौत भी हो गई। छवि सुधारने के लिए निर्णायक प्रयासों में जुटे मध्य प्रदेश के माथे पर एक और दाग लग गया है।

धड़कन बढ़ाती कलंक-कथाएं : इस 'कलंक-कथा' के जरिये ध्यान खींचने वाली बात यह है कि इस बार धर्म के तर्कों में जकड़ी रहने वाली उन्मादी भीड़ नहीं है। वैचारिक प्रतिबद्धताओं ने भी अपनी सीमाएं नहीं लांघी हैं। न जाति है, न गाय है और न ही इलाका है। भीड़ की यह नई मानसिकता आक्रोशित उन्माद की भी नई परिभाषा लिख रही है। सरकार को केस स्टडी के रूप में बहुत गंभीरता से इसका अध्ययन करवाना चाहिए, क्योंकि यही सरकार मध्य प्रदेश गोवंश वध प्रतिषेध (संशोधन) विधेयक लेकर आई थी। सरकार ने यह तर्क दिया था कि इस कड़े कानून के कारण मध्य प्रदेश में मॉब लिंचिंग (उन्मादी भीड़ की हिंसा) की घटनाओं पर रोक लग सकेगी, लेकिन धार की घटना ने धड़कनों को नई तरह की कदमताल करवाई है। इससे पहले भी शिवपुरी जिले के भावखेड़ी गांव में दो बच्चों को दबंगों द्वारा पीटकर मार डालने की घटना हुई थी। स्वजनों ने आरोप लगाया था कि बच्चे खुले में शौच कर रहे थे, इसके चलते दबंगों ने उन्हें पीटा था।

कानून लाएगा मप्र : धार की घटना के बाद अब मप्र सरकार के विधि एवं विधायी कार्य मंत्री पीसी शर्मा कह रहे हैं कि सरकार इसे लेकर कानून लाएगी। दो राज्य पहले भी इस पर अपनी-अपनी विधानसभा में कानून पास कर चुके हैं। मणिपुर पहला राज्य है, जो 2018 में उन्मादी भीड़ की हिंसा रोकने के लिए प्रोटेक्शन फ्रॉम मॉब वायलेंस बिल-2018 ला चुका है। इसके तहत यह प्रावधान किया गया है कि अगर किसी भीड़ ने किसी की जान ली तो दोषियों को आजीवन कारावास और पीड़ित परिवार को पांच लाख रुपये तक की मदद दी जाएगी। पीड़ित के गंभीर रूप से घायल होने पर 10 साल तक की सजा और 50 हजार से तीन लाख रुपये तक का जुर्माना दोषियों को भुगतना होगा। इसके बाद राजस्थान सरकार राजस्थान लिंचिंग संरक्षण विधेयक-2019 लेकर आई। इसके तहत उन्मादी हिंसा की घटना में पीड़ित की मौत पर दोषियों को आजीवन कारावास और पांच लाख रुपये तक के जुर्माने की सजा भुगतनी होगी। किसी भी रूप से इसमें सहायता करने वाले को भी वही सजा मिलेगी, जो हिंसा करने वाले को मिलेगी।

आइफा में वन मैन शो : आइफा के आयोजन के लिए मध्य प्रदेश को मौका मिलना वास्तव में बड़ी बात है। आमतौर पर मीडिया से दूरी रखने वाले मुख्यमंत्री कमलनाथ जिस तरह से खुद ही माइक संभाले नजर आए उससे जाहिर है कि मंच पर भले ही बॉलीवुड हस्तियों का जमावड़ा रहे, लेकिन बैक स्टेज पर तो वन मैन शो ही रहेगा। ठीक मैग्निफिसेंट मप्र की तरह। दरअसल मैग्निफिसेंट मप्र, ट्राइबल टूरिज्म और अब आइफा। तीनों ही आयोजन इस ओर इशारा करते हैं कि मुख्यमंत्री कमलनाथ ने अपना फोकस तय कर लिया है। दरअसल मध्य प्रदेश के होकर भी कमलनाथ इतने सालों तक कभी मध्य प्रदेश के करीब महसूस नहीं हुए। दून स्कूल की शिक्षा, कोलकाता के प्रेसीडेंसी कॉलेज से उच्च शिक्षा, संजय गांधी से दोस्ती, दिल्ली की राजनीति और केंद्रीय मंत्री का दर्जा पाकर वे एक खास वर्ग से जुड़े रहे। अब आइफा के बहाने उनका अभिजात्य वर्ग का संपर्क भी सामने आएगा।

स्वरा के स्वर से खामोश हुए दिग्विजय : नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के विरोध में इंदौर में एक प्रदर्शन में शामिल होने आईं बॉलीवुड अभिनेत्री स्वरा भास्कर के साथ पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने भी मंच साझा किया। बोलने में माहिर स्वरा ने इतना बोला कि दिग्विजय की बोलती बंद कर दी। यानी उन्हें बोलने का मौका ही नहीं दिया। देश-प्रदेश में अपने विवादास्पद बयानों के जरिये सुर्खियों में रहने वाले मध्य प्रदेश के इस पूर्व मुख्यमंत्री ने भी स्वरा को सुनने आई भीड़ की मंशा को भांपते हुए मंच उन्हें ही सौंप दिया। स्वरा आईं और चली गईं, लेकिन कैलाश विजयवर्गीय के संदर्भ में उनके ये स्वर अभी तक गूंज रहे हैं कि इंदौर के पोहे-जलेबी खाकर बड़े हुए, अब पोहा खाने वालों को बांग्लादेशी कह रहे हैं। कौन सा नशा फूंक रहे हो अंकल!

75 से 90 फीसद तक की गिरावट आई है तेंदुओं की तादाद में भारत में। सेंटर फॉर वाइल्डलाइफ स्टडी (सीडब्ल्यूएस) इंडिया और वाइल्डलाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के एक ताजा अध्ययन में यह बात सामने आई है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 9 फरवरी 2020

बंगाल

टकराव से किनारा

बंगाल के राज्यपाल जगदीप धनखड़ और ममता सरकार के बीच टकराव कोई नई बात नहीं है, परंतु जिस तरह से राज्यपाल विधानसभा के बजट सत्र के अभिभाषण से पहले तेवर दिखा रहे थे उससे सियासी गलियारे में चर्चा गर्म थी कि बजट सत्र की शुरुआत टकराव के साथ होगी और वह भी राज्यपाल एवं सरकार के बीच। इसकी तैयारी भी सत्तारूढ़ दल के विधायकों ने भी कर रखी थी। क्योंकि राज्यपाल ने गुरुवार को ही संकेत दे दिए थे कि वह अपनी मन की बातें सदन में रखेंगे, लेकिन शुक्रवार को राज्यपाल ने टकराव से किनारा कर लिया और सत्तारूढ़ दल के विधायकों ने भी सदन एवं संवैधानिक प्रमुख की गरिमा को पूरी तरह से सम्मान दिया।

हालांकि राज्यपाल भले ही अभिभाषण दे रहे थे, लेकिन उनके मन में कहीं न कहीं टीस जरूर उठी होगी, क्योंकि उन्हें राज्य सरकार के तैयार किए गए भाषण को बिना किसी फेरबदल के पढ़ना पड़ा। जिसमें केंद्र सरकार के खिलाफ काफी तल्ख टिप्पणियां थी। जैसे 'असहिष्णुता, धार्मिक कट्टरता और नफरत अब इस देश के नए मानक हो गए हैं। सभी तरह की असहमतियों को अस्वीकार कर देना अब देशभक्ति के नाम पर नया फैशन बन गया है।' यही नहीं सीएए, एनपीआर और एनआरसी को लेकर भी राज्य सरकार ने जो बातें लिखी थीं उसे भी बिना किसी हिचक के पढ़कर सरकार के साथ किसी भी तरह के टकराव की संभावनाओं को भी समाप्त कर दिया। राज्यपाल ने कहा, राज्य सरकार एनपीआर, एनआरसी और सीएए के जरिये लोगों में फूट डाले जाने के सख्त खिलाफ है। वहीं राज्यपाल ने ममता सरकार की उपलब्धियां एवं तमाम योजनाओं का गुणगान से लेकर राज्य की उन्नत कानून व्यवस्था, सरकार संचालित योजनाओं का बखान भी किया, जिस पर कुछ दिन पहले उन्होंने अलग राय व्यक्त किया था।

राज्यपाल जगदीप धनखड़ ने टकराव से किनारा कर लिया और सत्तारूढ़ दल के विधायकों ने भी सदन एवं संवैधानिक प्रमुख की गरिमा को पूरी तरह से सम्मान दिया

हालांकि शुक्रवार दोपहर डेढ़ बजे तक ऐसा लग रहा था कि धनखड़ भी केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान के नक्शे कदम पर आगे चलेंगे। धनखड़ के तेवर को देखते हुए राज्य सरकार ने पहले ही टीवी चैनलों के कैमरों एवं प्रिंट मीडिया के फोटोग्राफरों के सदन में कैमरे के साथ प्रवेश पर रोक लगा दी थी। ताकि यदि कोई टकराव जैसे हालात सदन में पैदा हों तो उसकी वीडियो फुटेज या फिर फोटो मीडिया को नहीं मिल सकें। वहीं सदन में पहुंचे तृणमूल विधायक सीएए, एनआरसी और एनपीआर के विरोध वाले बैज, सिर पर पट्टी और गले में संविधान वाले पोस्टर पहन रखे थे। जिसे देखकर समझ में आने लगा था कि राज्यपाल यदि अपने मन की बातें करते हैं तो विरोध शुरू हो जाएगा, परंतु राज्यपाल बड़े ही सहज तरीके से सदन में पहुंचे और भाषण दिया। हालांकि अभिभाषण में सिर्फ एक बार हमारी सरकार का इस्तेमाल किया। वहीं सिर्फ मुख्यमंत्री शब्द बोले। ममता का नाम भाषण में कहीं नहीं था। खैर, जो भी हो केरल विधानसभा जैसे हालात बंगाल में नहीं बना और टकराव टल गया।

देखा जाए तो दोनों पक्षों ने टकराव टाल कर समझदारी का परिचय दिया है। इससे प्रदेश में प्रशासनिक स्तर पर शांति का वातावरण बनेगा और विकास की राह प्रशस्त होगी।

हिमाचल प्रदेश

कुपोषण दूर करने के लिए सराहनीय पहल

चूंकि बच्चे समाज का भविष्य होते हैं तो उनके स्वास्थ्य को लेकर हिमाचल की सभी सरकारें गंभीर रही हैं। बच्चों के स्वास्थ्य के लिए जन्म के बाद ही नहीं, बल्कि जन्म से पूर्व भी सरकार पूरा ध्यान रखती है। इसके लिए कई योजनाएं भी शुरू की गई हैं। बच्चे कुपोषण का शिकार न हों इसके लिए आंगनबाड़ी के माध्यम से खाद्य सामग्री उपलब्ध करवाई जाती है। इस बीच, मंडी जिला प्रशासन ने सराहनीय पहल की है। छोटी काशी के नाम से विख्यात मंडी शहर के दो प्रमुख मंदिरों बाबा भूतनाथ व महामृत्युंजय मंदिर में चढ़ाए जाने वाले फल व नारियल आंगनबाड़ी केंद्रों के माध्यम से बच्चों में वितरित किए जाएंगे। पहले इन्हें पुजारी श्रद्धालुओं में बांट देते हैं। अब प्रशासन ने इनके सदुपयोग का निर्णय लिया गया है।

श्रद्धालुओं व आम लोगों को मंदिर के भीतर सूचना बोर्ड के माध्यम से भी जागरूक किया जाएगा ताकि अधिक से अधिक लोग इस पुनीत कार्य में योगदान दे सकें। दोपहर तक एकत्र होने वाले फलों व नारियल को आंगनबाड़ी केंद्रों में पहुंचाया जाएगा ताकि समय पर उन्हें बच्चों को वितरित किया जा सके। प्रशासन की इस पहल को कुछ स्वयंसेवी संस्थाओं ने भी सहयोग करने का निर्णय लिया है। पहले यह योजना शहर के नजदीक आंगनबाड़ी केंद्रों में शुरू की जाएगी। अगर योजना सफल रहती है तो इसका विस्तार कर इसे ग्रामीण क्षेत्रों में भी लागू किया जाएगा। हिमाचल प्रदेश को देवभूमि माना जाता है। यहां पर कई मंदिर हैं। इनमें हर रोज सैकडों लोग पहुंचते हैं। अन्य राज्यों से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं। मंडी शहर में शुरू गई इस उल्लेखनीय योजना को प्रदेश के अन्य जिलों में भी लागू किया जा सकता है। इससे जहां बच्चों को पोषक तत्व मिल सकेंगे, वहीं ऐसे लोगों को भी एक जरिया मिल सकेगा जो चाहकर भी बच्चों के लिए दान नहीं कर पाते हैं। इस तरह की योजना की सफलता के लिए लोगों को भी आगे आना चाहिए।

प्रतीकात्मक फोटो

बच्चों को कुपोषण जैसी गंभीर समस्या से बचाने के लिए मंदिरों में चढ़ाए फलों को आंगनबाड़ी केंद्रों में वितरित करने की योजना प्रदेश के सभी जिलों में लागू होनी चाहिए

प्रशासन की यह योजना निःसंदेह सराहनीय है, लेकिन इसमें जनसहयोग बहुत आवश्यक है। जब तक लोग सहभागी नहीं बनेंगे, तब तक योजना के आकार लेने की संभावना कम रहती है। उम्मीद की जानी चाहिए कि प्रशासन के इस कदम को लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा और वे राज्य के अन्य मंदिरों में भी इस तरह की योजना में सहभागी बनेंगे। यदि यह योजना सफल होती है तो इसमें एक अनुकरणीय मिसाल बनने की क्षमता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि इसकी कामयाबी के बाद देश के दूसरे हिस्सों में भी अपनाया जा सकता है। इससे न केवल कुपोषण की समस्या पर कुछ हद तक अंकुश लगेगा, बल्कि उन संसाधनों की बर्बादी भी रुकेगी जो बिना उपयोग के ऐसे ही व्यर्थ हो जाते हैं।

बिहार

अपराधियों को मिले कड़ी सजा

शराब पीने के लिए गिलास नहीं देने पर एक दिव्यांग की पीट-पीटकर हत्या जैसी वारदात बिहार में अपराधियों के बढ़ते मनोबल का परिचायक है, जिस पर तत्काल कार्रवाई करते हुए कड़ी से कड़ी सजा दिलाई जानी चाहिए। बेगूसराय में एक चाय दुकानदार की कुछ अपराधियों ने सिर्फ इसलिए हत्या की दी कि उन्होंने उनलोगों को शराब पीने के लिए गिलास देने से मना कर दिया था। वे अक्सर उससे गिलास मांगते थे, लेकिन चाय दुकानदार को पता था कि बिहार में शराबबंदी है। इसलिए किसी भी तरह के सहयोग से साफ मना कर दिया। बस इतनी सी बात पर अपराधियों ने उसकी पीट-पीटकर हत्या की। स्थानीय लोग बचाव में दौड़े जरूर, पर अपराधी फायरिंग करते हुए भाग निकले। इन अपराधियों को कड़ी सजा दी जानी चाहिए, अन्यथा समाज में भय का माहौल व्याप्त होगा और लोग असामाजिक तत्वों के आगे घुटने टेक देंगे।

यह स्थिति किसी भी समाज के लिए खतरनाक है। उस चाय दुकानदार का हौसला प्रशंसनीय है, जिसने दिव्यांग होने के बावजूद मेहनत-मजदूरी कर इज्जत से दो वक्त की रोटी के लिए चाय बेचना शुरू किया। उसने कानून का भी हमेशा ख्याल रखा और अपने नागरिक दायित्वों का पूरी तरह निर्वहन किया, अन्यथा अपराधियों को महज गिलास देने से मना नहीं करता। उन्हें पता था कि बिहार में शराबबंदी है और कोई उनकी दुकान से गिलास लेकर शराब का सेवन करे तो गलत है। इसकी कीमत जान देकर चुकानी पड़ी। पुलिस ने कहा है कि अपराधियों की पहचान की जा रही है। पुलिस अपनी कार्रवाई कर रही है, पर इसका ध्यान रखना होगा कि रोजमर्रा के ऐसे कितने ही मामलों की तरह यह भी एक रूटीन भर का मामला बनकर नहीं रह जाए।

प्रतीकात्मक फोटो

अपराधियों की शीघ्र गिरफ्तारी जरूरी है। यह भी विचारणीय प्रश्न है कि जब राज्य में शराबबंदी है तो ऐसे असामाजिक तत्व खुलेआम शराब पीने का दुस्साहस कैसे कर सकते हैं। हाल के महीनों में कई पुलिसकर्मियों के विरुद्ध बर्खास्तगी जैसी सख्त कार्रवाई भी हुई है, लेकिन अभी भी शराब का खेल जारी है। सरकार को चाहिए कि इन मामलों में और सख्ती बरते, दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाए, ताकि समाज में कानून के राज का सीधा संदेश जाए और अपराधियों में भय पैदा हो।

पंजाब

प्रदूषण की चिंता

पंजाब प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (पीपीसीबी) की ओर से गत दिवस लुधियाना स्थित पीएयू में आयोजित वर्कशॉप में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के चेयरमैन सहित अन्य अतिथियों ने पानी और वायु के प्रदूषण पर जो चिंता व्यक्त की, वह गौर करने लायक है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के चेयरमैन जस्टिस आदर्श कुमार गोयल ने कहा कि देश में पर्यावरण की स्थिति काफी गंभीर है। कूड़ा प्रबंधन सही ढंग से नहीं हो रहा। देश की 351 नदियां और 100 औद्योगिक कलस्टर प्रदूषित हो चुके हैं। हत्या करने वाले को सजा मिलती है, लेकिन प्रदूषित हवा और पानी के कारण रोजाना बड़ी संख्या में लोग मर रहे हैं। अप्रत्यक्ष तौर पर यह उनकी हत्या ही है। देखा जाए तो पंजाब में, जहां नदियों का पानी और हवा दोनों ही तेजी से प्रदूषित होती जा रही है। इसके अतिरिक्त लुधियाना जैसे शहर में कूड़े का ढेर भी बड़ी चिंता का सबब है। यह ठीक है कि प्रदूषण पर चिंता व्यक्त की जा रही है और वर्कशॉप, सेमिनार आयोजित किए जा रहे हैं, लेकिन आवश्यकता सभाओं और सेमिनारों से बाहर निकलकर मैदान में पहुंचने और वास्तविक स्थिति से रूबरू होने की है। इससे समस्या को और बेहतर तरीके से समझने में मदद मिलेगी और सार्थक हल के मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऐसा नहीं है कि पंजाब में इस दिशा में कुछ हो नहीं रहा है। संत बलबीर सिंह सीचेवाल जैसे लोग जहां नदियों को प्रदूषण से मुक्ति दिलाने के लिए अथक परिश्रम कर रहे हैं, वहीं प्रदेश में बड़ी संख्या में ऐसे किसान भी हैं जो पराली को आग लगाने के खिलाफ खड़े हैं। वहीं ऐसे किसान भी बहुत बड़ी संख्या में हैं जो पराली को आग लगाकर प्रदेश के साथ-साथ पड़ोसी राज्यों का वातावरण भी जहरीला बनाने से परहेज नहीं करते। इन्हें रोकने के जो प्रयास अब तक किए गए, उनका बहुत असर नहीं हुआ। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि जल व वायु प्रदूषण से निजात पाने के लिए ऐसी ठोस और व्यावहारिक नीतियां बनाई जाएं, जिनका असर भी धरातल पर दिखाई दे। साथ ही नियम-कानून का पालन सुनिश्चित करने के लिए संबंधित विभागों और अधिकारियों की जवाबदेही भी सुनिश्चित की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त सरकार को वर्ष भर लगातार जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए। लोगों को भी चाहिए कि वे समाज और पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझें और प्रदूषण फैलाकर अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारने का काम न करें।

आवश्यकता इस बात की है कि जल व वायु प्रदूषण से निजात पाने के लिए ऐसी ठोस और व्यावहारिक नीतियां बनाई जाएं, जिनका असर भी धरातल पर दिखाई दे

वास्तव में देश में कमजोर कूड़ा प्रबंधन के कारण 4100 बड़े शहरों में कूड़े के ढेर देखने को मिल जाते हैं। देश में केवल 25 से 30 फीसद कूड़े का निपटारा हो रहा है। बाकी इधर-उधर बिखरा रहता है। इस स्थिति से यह साफ है कि कूड़ा प्रबंधन ढंग से नहीं हो रहा है। वहीं सीवरेज की क्षमता भी केवल 37 फीसद ही है। सीवरेज का पानी सीधे वाटर बॉडी में पहुंच कर उसे दूषित कर रहा है। स्थिति इतनी खराब हो चुकी है कि अगर अब भी इस पर काबू न पाया गया तो प्रदूषित हवा, पानी और धरती से जीवन को खतरा हो सकता है। पर्यावरण संरक्षण के लिए युद्धस्तर पर काम करने की जरूरत है। यह काम मुश्किल जरूर है, लेकिन नामुमकिन नहीं। इसके लिए सरकार, प्रशासन, इंडस्ट्री और देश के लोगों की भागीदारी जरूरी है।

उत्तराखंड में चिह्नित होंगे हिम तेंदुओं के संभावित स्थल

केदार दत्त, देहरादून

- सिक्योर हिमालय परियोजना के तहत राज्य में होने जा रही हिम तेंदुओं की गणना
- उच्च हिमालयी क्षेत्र में दुर्लभ हिम तेंदुओं की मौजूदगी हमेशा से रही है उत्सुकता के केंद्र में

उत्तराखंड के उच्च हिमालयी क्षेत्र में पहली बार होने जा रही हिम तेंदुओं की गणना के लिए वन महकमे ने कमर कस ली है। सिक्योर हिमालय परियोजना के तहत मार्च से प्रस्तावित गणना से पहले स्थानीय ग्रामीणों की मदद से हिम तेंदुआ संभावित स्थल चिह्नित किए जाएंगे। इस सिलसिले में गंगोत्री नेशनल पार्क, गोविंद वन्यजीव विहार से लेकर अस्कोट अभयारण्य के अंतर्गत आने वाले और इन संरक्षित क्षेत्रों की सीमा से सटे गांवों के निवासियों के साथ बैठकों का क्रम शुरू किया जाएगा।

उच्च हिमालयी क्षेत्र में दुर्लभ हिम तेंदुओं की मौजूदगी हमेशा से हर किसी की उत्सुकता के केंद्र में रही है। उत्तराखंड के परिप्रेक्ष्य में देखें तो यहां भी अच्छी-खासी तादाद में हिम तेंदुओं की मौजूदगी का अनुमान है। गंगोत्री नेशनल पार्क व गोविंद वन्यजीव विहार से लेकर अस्कोट अभयारण्य तक के क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर लगे कैमरा ट्रैप में कैद होने वाली हिम तेंदुओं की तस्वीरें इसकी तस्दीक करती हैं। बावजूद इसके अभी इस रहस्य से पर्दा उठना बाकी है कि आखिर यहां हिम तेंदुओं की वास्तविक संख्या है कितनी। इसी के दृष्टिगत सिक्योर हिमालय परियोजना के अंतर्गत राज्य में पहली मर्तबा हिम तेंदुओं की गणना कराई जा रही है, जो गंगोत्री से लेकर अस्कोट अभयारण्य तक के उच्च हिमालयी क्षेत्र में चलेगी।

उत्तराखंड में अच्छी-खासी तादाद में हिम तेंदुओं की मौजूदगी का अनुमान है। फाइल

राज्य में सिक्योर हिमालय परियोजना के नोडल अधिकारी एवं मुख्य वन संरक्षक आरके मिश्र के अनुसार सर्दी खत्म होने के बाद मार्च से गणना कार्य प्रस्तावित है। इसमें आइटीबीपी, एसएसबी के साथ ही स्थानीय ग्रामीणों की मदद ली जाएगी। इससे पहले गोविंद वन्यजीव विहार और अस्कोट अभ्यारण्य के अंतर्गत 60 गांवों के अलावा इन सेंचुरियों के साथ ही गंगोत्री नेशनल पार्क से सटे गांवों के निवासियों के साथ बैठकें होंगी। मिश्र ने बताया कि ग्रामीणों के साथ होने वाली बैठकों में वे स्थल चिह्नित किए जाएंगे, जहां अक्सर हिम तेंदुए नजर आते हैं। इसके अलावा आइटीबीपी व एसएसबी के साथ ही इसी परिप्रेक्ष्य में बैठकें होंगी। इससे हिम तेंदुआ संभावित स्थल चिह्नित होने से गणना कार्य में मदद मिलेगी। उन्होंने जानकारी दी कि जल्द ही गणना कार्य के मद्देनजर कार्मिकों के प्रशिक्षण का क्रम भी शुरू किया जाएगा। कोशिश ये है कि हिम तेंदुओं की गणना का कार्य दो साल के भीतर पूरा करा लिया जाए।

मुजफ्फरनगर में मिली तोप ब्रिटिशकालीन है

जागरण संवाददाता,आगरा : मुजफ्फरनगर में खेत की खोदाई में मिली तोप ब्रिटिशकालीन है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआइ) की रसायन शाखा ने तोप के आधे हिस्से की केमिकल क्लीनिंग कर ली है। तोप पर बने चिह्न और उसकी डिजाइन के आधार पर उसके ब्रिटिश काल (करीब 200 से 250 वर्ष पुरानी) होने का अनुमान जताया जा रहा है।

उप्र स्थित मुजफ्फरनगर के हरिनगर में 20 जनवरी को खेत की खोदाई में प्राचीन तोप मिली थी। 23 जनवरी को तोप एएसआइ के माल रोड स्थित आगरा सर्किल ऑफिस लाई गई थी। रसायन शाखा ने 27 जनवरी को उसका परीक्षण करने के बाद केमिकल क्लीनिंग का काम शुरू किया था। तोप पर काफी मिट्टी लगी हुई है। अब तक तोप के आधे हिस्से की सफाई की जा चुकी है। इसमें उसके ऊपर बने क्राउन के आधार पर प्रारंभिक रूप से उसके ब्रिटिश काल का होने की बात सामने आई है। तोप अच्छी गुणवत्ता के लोहे से बनी है। हालांकि तोप के पूरा साफ होने के बाद ही उसकी वास्तविक स्थिति सामने आ पाएगी। केमिकल क्लीनिंग के बाद उसका प्रिजर्वेशन किया जाएगा। अधीक्षण पुरातत्वविद वसंत कुमार स्वर्णकार ने बताया कि तोप ब्रिटिशकालीन है। फिलहाल केमिकल क्लीनिंग का काम अभी जारी है।

जर्मन तकनीक से और सस्ते उपकरण बनाएगा एलिम्को

शशांक शेखर भारद्वाज, कानपुर

- मार्केट में कृत्रिम पैर की कीमत डेढ़ लाख रुपये, संस्थान में 25 हजार
- सीएसआर फंड से दिव्यांगों की होगी मदद, व्हीलचेयर में इंग्लैंड का सहयोग

दिव्यांगों के लिए कृत्रिम हाथ-पैर और अन्य उपकरण बनाने वाले एशिया के नंबर वन संस्थान आर्टिफिशियल लिंब्स मैन्यूफैक्चरिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (एलिम्को) और सस्ते उपकरण तैयार करेगा। यह न सिर्फ विदेशी उपकरणों को न सिर्फ टक्कर देंगे, बल्कि बाजार से बेहद सस्ते भी होंगे। इन उपकरणों का उपयोग बेहद आसान होगा।

एलिम्को ने जर्मनी की ऑटोबॉक और इंग्लैंड की मोटीवेशन कंपनी से करार किया है। ऑटोबॉक के सहयोग से करीब एक हजार हाई एंड प्रोस्थैटिक लेग (कृत्रिम पैर) बन चुके हैं। अब अन्य उपकरणों की तैयारी की जा रही है। एक प्रोस्थैटिक लैग की कीमत 20 से 25 हजार रुपये आ रही है।

बाजार में इसी तरह के प्रोस्थैटिक लेग डेढ़ लाख रुपये में मिल रहा है। कृत्रिम पैर सस्ते होने से यह एडीप (उपकरणों की खास फिटिंग के लिए सहायता योजना) में आ जाएंगे, जिससे अधिक से अधिक लोगों को लाभ मिलेगा।

जैसी जरूरत वैसी व्हीलचेयर : मोटीवेशन कंपनी के साथ मिलकर संस्थान की खास तरह की व्हील चेयर बनाने की योजना है। यह व्हीलचेयर दिव्यांगों की जरूरत के मुताबिक होगी। इसे न्यूरो व आर्थो के मरीज और दुर्घटना में दिव्यांग हुए लोग इस्तेमाल कर सकेंगे। इन्हें अलग-अलग तरह का तैयार किया जाएगा। यह दो तरह की होंगी, जिसमें एक्टिव फोल्डिंग व्हीलचेयर और रफ टैरेन व्हीलचेयर शामिल हैं।

एपीओसी में होती पूरी जांच

संस्थान में एलिम्को प्रोस्थैटिक आर्थोटिक सेंटर बनाया गया है, जिसमें मरीज के शरीर के मुताबिक पूरी जांच होती है। इतना ही नहीं, यहां पर लेजर तकनीक से कृत्रिम पैर की डिजाइन बनती है। वजन, लंबाई, उम्र के हिसाब से आकलन किया जाता है।

चार चरणों में होगा काम

ऑटोबॉक ने कंप्यूटराइज्ड न्यूमैरिकली कंट्रोल्ड (सीएनसी) मशीन स्थापित की है, जिससे शरीर की बनावट के मुताबिक हूबहू लाइटवेट, फ्लैक्सिबल और हाई क्वालिटी के कृत्रिम पैर बनाए जा रहे हैं।

जर्मनी की कंपनी के साथ चार चरणों में काम किया जाएगा। पहले चरण में कृत्रिम पैर बन गए हैं। दूसरे चरण में उन्हें भारतीय तकनीक के मुताबिक सस्ता किया जाएगा। यह निर्माण कंपनी की स्वीकृति के बाद होगा। कई अन्य उपकरण भी बनाए जाएंगे।

– कर्नल पीके दुबे, जीएम (मार्केटिंग), एलिम्को

बरेली सेक्शन पर एचओजी सिस्टम से लैस पहली ट्रेन पाटलीपुत्र

जागरण संवाददाता, बरेली

- एचओजी कोच ओएचई लाइन से सीधे इलेक्ट्रिक सप्लाई लेते हैं
- ट्रेन में पॉवर केबिन सिर्फ स्टैंड बाय के तौर पर रहेगा

पाटलीपुत्र से वाया बरेली होते हुए चंडीगढ़ तक जाने वाली पाटलीपुत्र-चंडीगढ़ सुपरफास्ट एक्सप्रेस (22355) बरेली सेक्शन की ऐसी पहली ट्रेन बन गई है, जिसके हेड ऑन जेनरेशन (एचओजी) सिस्टम से लैस कोच ओवर हेड इक्विपमेंट (ओएचई) लाइन से सीधे इलेक्ट्रिसिटी लेने में सक्षम हैं।

ये हाईटेक कोच ओएचई लाइन से सीधे सप्लाई लेकर कोच के अंदर एसी, लाइट व पंखे आदि संचालित करते हैं। ऐसे कोच के साथ चलने वाली ट्रेन में पॉवर कार सिर्फ स्टैंडबाय के तौर पर लगाया जाता है, ताकि आपात समय में बिजली आपूर्ति पॉवर कार से ली जा सके। बरेली सेक्शन पर हाईटेक कोच के साथ ट्रेन का संचालन दो फरवरी से शुरू किया गया है।

वायु, ध्वनि प्रदूषण की छुट्टी : प्रदूषण के बढ़ते स्तर को देखते हुए रेलवे ग्रीन एनर्जी पर निर्भरता बढ़ाने के साथ रेल कोच भी पर्यावरण के अनुकूल ही बना रहा है। इस कोच से कार्बन डाईऑक्साइड का उत्सर्जन नहीं होता है। पॉवर कार स्टैंडबाय पर रहने से शोर कम होता है। डीजल की बचत भी होती है।

प्रतीकात्मक

रेलवे ने दी जानकारी

इस सुविधा को शुरू करने के बाद उत्तर रेलवे ने तीन फरवरी को ट्वीट करके ट्रेन में सफर करने वाले यात्रियों से नए कोच की जानकारी भी साझा की है। कोच की क्या खासियत है, यह जानकारी भी दी है। जल्द ही अन्य ट्रेनों में भी यही खास कोच लगाए जाएंगे।

लघु ग्रह के धरती से टकराने की आशंका निराधार

रमेश चंद्रा, नैनीताल

15 फरवरी 2020 को लघु ग्रह-163373 पृथ्वी से 58 लाख किमी की दूरी से होकर गुजरेगा

- धरती से टकराने की आशंका को लेकर इन दिनों सुर्खियों में है यह लघु ग्रह

बेशक लघु ग्रह पृथ्वी के सबसे बड़े दुश्मन हों, मगर निकट भविष्य में इनसे कोई खतरा नहीं है। 15 फरवरी को धरती के करीब आ रहे एक लघु ग्रह के धरती से टकराने की अफवाहों को वैज्ञानिकों ने सिरे से नकार दिया है। धरती से टकराने की आशंका को लेकर यह लघु ग्रह इन दिनों सुर्खियों में है।

इस लघु ग्रह को 163373 संख्या के नाम से जाना जाता है। इसे 2002 में खोजा गया था। लघु ग्रह को पृथ्वी के निकट से गुजरने वाले पिंडों में शामिल किया गया है। खोज के बाद से ही नासा समेत दुनिया की अनेक स्पेस एजेंसियां इस पर नजर रखे हुए हैं। आकार में यह 589 मीटर का है। यह हमारे सौर परिवार का सदस्य है। सूर्य का एक चक्कर पूरा करने में इस ग्रह को 650 दिन का सफर तय करना होता है। इस लघु ग्रह को लेकर चर्चा है कि 15 फरवरी को धरती के पास से गुजरते समय पृथ्वी से टकरा जाएगा। इसे लेकर भारतीय तारा भौतिकी संस्थान बेंगलुरु के वरिष्ठ खगोलीय वैज्ञानिक प्रो. आरसी कपूर का कहना है कि जब यह हमारे पास से गुजरेगा तो धरती व इसके बीच की दूरी 58 लाख किमी होगी। इतनी अधिक दूरी के चलते धरती से टकराने की संभावना ही नहीं रह जाती। पृथ्वी के साथ इसकी कक्षा की तुलना करें तो इसकी कक्षा दीर्घ वृत्ताकार है, जिसके चलते अपने भ्रमणकाल में यह जब सूर्य के सर्वाधिक नजदीक होता है तब दस करोड़ किमी दूर होता है और जब दूर से गुजरता है तो दूरी 33 करोड़ किमी हो जाती है। लिहाजा इस लघु ग्रह की धरती से टकराने की बात कोरी अफवाह है।

लघु ग्रह को पृथ्वी के निकट से गुजरने वाले पिंडों में शामिल किया गया है। प्रतीकात्मक

अक्सर धरती के करीब से होकर गुजर जाते हैं लघु ग्रह

नैनीताल स्थित आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) के वैज्ञानिक डॉ. शशिभूषण पांडे का कहना है कि हमारे सौर परिवार में असंख्य छोटे-बड़े पिंड हैं। साल में कई बार धरती के नजदीक से होकर अपने पथ में आगे बढ़ जाते हैं। इनके धरती से टकराने की संभावना बनी रहती है, लेकिन निकट भविष्य में ऐसा कोई भी पिंड पृथ्वी के बेहद करीब से नहीं गुजर रहा है, जिसके धरती से टकराने की संभावना हो।

स्टेशनों पर बार कोड स्कैन करने के साथ ही बुक हो जाएगा टिकट

जागरण संवाददाता, गोरखपुर

- मोबाइल यूटीएस एप पर मिलेगी सुविधा, नहीं लगानी पड़ेगी लाइन

रेलवे स्टेशनों पर अब जनरल टिकट के लिए लंबी लाइन नहीं लगानी पड़ेगी। काउंटर के पास या गेटों पर बार कोड स्कैन करने के साथ ही टिकट बुक हो जाएगा। यह सुविधा मोबाइल यूटीएस (अनरिजर्व्ड टिकटिंग सिस्टम) एप पर मिलेगी।

यूटीएस एप से स्टेशन परिसर के भीतर या रेल लाइन के आसपास 15 मीटर के दायरे में टिकट बुक नहीं होते हैं। ऐसे में यात्रियों की सहूलियत के लिए रेलवे ने यह अहम निर्णय लिया है। फिलहाल इज्जतनगर मंडल के 'ए' श्रेणी के स्टेशनों पर यह सुविधा मिलने लगी है। पूर्वोत्तर रेलवे के गोरखपुर, लखनऊ और छपरा जंक्शन पर ट्रायल चल रहा है। जल्द ही एवन और ए कटेगरी के स्टेशनों पर यह नई व्यवस्था शुरू हो जाएगी।

प्रथम चरण में एवन और 'ए' के अलावा 'बी' व 'डी' श्रेणी के कुछ स्टेशनों के साथ कुल 65 जगहों पर यात्रियों को यह सुविधा उपलब्ध कराने का लक्ष्य निर्धारित है। पूर्वोत्तर रेलवे में 16 अक्टूबर 2018 से मोबाइल यूटीएस एप की सुविधा लोगों को मिल रही है। पूर्वोत्तर रेलवे में एक फीसद यात्री भी एप से टिकट बुक नहीं करते हैं।

एप की खासियतें

- स्टेशन परिसर से 15 मीटर के दायरे में बुक नहीं होंगे टिकट
- स्टेशन के पांच किलोमीटर के दायरे में टिकट बुक कराने की सुविधा
- स्टेशन से दो किलोमीटर के दायरे में बनता है प्लेटफार्म टिकट
- एप से बुक टिकट सेव नहीं होते, स्क्रीन शॉट संभव नहीं
- यात्रा पूरी होते ही अपने आप समाप्त हो जाता है टिकट
- वापस नहीं होता है मोबाइल एप से बुक टिकट का किराया

मोबाइल यूटीएस एप सिस्टम में यात्रियों को एक और अतिरिक्त सुविधा मिल जाएगी। क्यूआर बार कोड लगाने की प्रक्रिया शुरू हो गई है।

– पंकज कुमार सिंह, सीपीआरओ, एनई रेलवे

वुहान में फंसे भारतीयों के लिए देवदूत बनी टीम एयर इंडिया

इन दिनों

नेशनल डेस्क, नई दिल्ली

चीन के वुहान शहर में फैले कोरोना वायरस के प्रकोप से हर कोई डरा हुआ है। हालात ये हैं कि हर देश अपने नागरिकों को वहां से सुरक्षित निकालने का कोई न कोई उपाय कर रहा है। ऐसे में हमारे नागरिकों को वहां से निकालने की जिम्मेदारी एयर इंडिया के 34 जांबाजों की टीम को सौंपी गई, जिसे उन्होंने बखूबी अंजाम दिया। आइए जानें कैसे टीम एयर इंडिया ने यह संभव किया...

कैप्टन अमिताभ सिंह, कमल मोहन, संजय अचलकर, एस.एच. रेजा व भूपेश नारायण। फाइल, प्रेट्र

आज कोरोना वायरस का नाम सुनते ही लोगों में डर बैठ जाता है। अब आप सोच सकते हैं कि जब इस वायरस से सबसे ज्यादा प्रभावित चीन के वुहान शहर में जाने की बात हो तो किसी का क्या हाल होगा, लेकिन एयर इंडिया के कुछ जांबाजों ने वहां जाकर न सिर्फ भारतीय नागरिकों को वापस लाने में सफलता हासिल की, बल्कि अपने कर्तव्य को भी पूरा किया। इस पूरी प्रक्रिया के इंचार्ज और एयर इंडिया के डायरेक्टर ऑपरेशंस अमिताभ सिंह ने बताया कि इस बचाव दल में कुल 34 सदस्य शामिल थे।

अमिताभ सिंह ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि जब हम वुहान पहुंचे तो ऐसा लगा जैसे हम किसी ऐसे शहर में पहुंच गए हैं जहां का सर्वनाश हो चुका है और भूतों का बसेरा है। शुरू में यह किसी अन्य उड़ान की तरह था और वायुमार्ग व्यस्त थे, लेकिन जब हम नीचे उतरने लगे तो सन्नाटा हम पर मंडराने लगा। हवाई अड्डे पर खामोशी छाई हुई थी। सभी विमानों को पार्क कर सील कर दिया गया था। सड़कें खाली थीं।

अमिताभ के मुताबिक, पांच पायलट और 15 केबिन क्रू को निर्धारित प्रस्थान से दो-तीन दिन पहले वुहान से भारतीयों को निकालने के मिशन के बारे में बताया गया। उड़ान से एक दिन पहले, पायलट और केबिन क्रू को मिशन की विस्तृत जानकारी दी गई। एयरलाइन ने चालक दल और सहायक कर्मचारियों के लिए मेडिकेटेड सूट, सुरक्षात्मक जूते, दस्ताने, एन-35 मास्क, चश्मा और टोपी की भी खरीदारी की थी।

मिशन को अंजाम देने के लिए बोइंग 747 विमान का इस्तेमाल किया गया, जिसे आमतौर पर वीवीआइपी के लिए सुरक्षित रखा जाता है। यह विमान दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से 31 जनवरी की दोपहर 12.30 बजे वुहान के लिए रवाना हुआ। इसमें अतिरिक्त ईंधन, स्पेयर पार्ट्स और पर्याप्त भोजन-पानी की व्यवस्था भी की गई। जंबो नाम से मशहूर इस विमान को इसलिए चुना गया था क्योंकि यह एक डबल डेकर विमान है, जिसमें एक साथ 423 यात्री बैठ सकते हैं। टीम में शामिल एक अन्य पायलट ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि उसने अपने परिवार को इस मिशन में अपनी भूमिका के बारे में नहीं बताया था। चार घंटे की लंबी उड़ान के बाद जंबो वुहान में उतरा, लेकिन उसे यात्रियों के लिए करीब आठ घंटे का लंबा इंतजार करना पड़ा। इस दौरान विमान दल के लोग काफी चिंतित दिखे कि आखिर यह देरी क्यों हो रही है। इस बारे में अमिताभ सिंह ने बताया कि दरअसल, चीनी अधिकारियों ने एयर इंडिया के विमान के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से उड़ान भरने के बाद ही छात्रों को भारतीय वाणिज्य दूतावास के लिए अपने होटल और हॉस्टल से जाने की अनुमति दी। विमान के वुहान पहुंचने के बाद ही छात्रों को हवाई अड्डे तक जाने की अनुमति दी गई, जिस कारण यह देरी हुई। चीनी अधिकारियों से समन्वय का काम अमिताभ सिंह के पास ही था।

उड़ान का संचालन कैप्टन कमल मोहन, कैप्टन संजय अचलकर, कैप्टन एस.एच. रेजा, कैप्टन भूपेश नारायण ने किया। केबिन क्रू टीम का नेतृत्व मंजू तंवर कर रही थीं। फ्लाइट में मौजूद तीन डॉक्टरों और चार नर्सिंग स्टाफ की टीम ने सभी 324 यात्रियों के तापमान को मापा और यात्रियों को बोर्ड करने की अनुमति देने से पहले उन्हें मास्क पहनना सिखाया।

विमान के अंदर बरती गई सावधानियां : विमान के अंदर जोखिम को कम करने के लिए कई तरह की सावधानियां बरती गईं। सभी यात्रियों को इकोनॉमी क्लास में बैठाया गया। इंजीनियर और डॉक्टर आगे के सेक्शन में फर्स्ट क्लास में थे, जबकि अतिरिक्त केबिन क्रू और कमर्शियल स्टाफ को ऊपरी डेक पर एक्जेक्यूटिव क्लास में जगह दी गई। पायलट को कॉकपिट तक ही सीमित रखा गया। यह उड़ान एक फरवरी की सुबह 7.30 बजे नई दिल्ली लौटी, जहां स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अधिकारी और सेना व भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के कर्मचारी तैनात थे। यात्रियों को फौरन उतारा गया और चिकित्सकीय जांच के बाद उन्हें विशेष बस से कैंप तक पहुंचाया गया। इसके बाद एयर इंडिया की इस टीम के कई सदस्य फिर से वुहान जाने की तैयारी में जुट गई क्योंकि उन्हें बाकी बचे लोगों को भी वापस लाना था।

यशस्वी : मुश्किल इम्तिहान ने बनाया और मजबूत

चर्चित चेहरा

निखिल शर्मा, नई दिल्ली

अंडर-19 विश्व कप में टीम इंडिया को फाइनल तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाने वाले यशस्वी जायसवाल का बल्ला इन दिनों खूब चल रहा है, लेकिन अपने यहां तक के सफर में उन्होंने तमाम संघर्ष झेले और उन्हें पार किया। जानते हैं इस युवा बल्लेबाज के जोश, जुनून और संघर्ष से भरी दास्तां को...

तीन साल तक वह मैदान कर्मी के साथ मुंबई के आजाद मैदान में मुस्लिम यूनाइटेड क्लब के टेंट में रहा। उसे ऐसा करना भी पड़ा क्योंकि उसे दूध की डेयरी से बाहर निकाल दिया गया था, जहां वह सोता था। यशस्वी जायसवाल उस वक्त सिर्फ 11 वर्ष का था और तब उसके दिमाग में सिर्फ एक चीज चल रही थी वो था उसका सपना। भारत के लिए क्रिकेट खेलने का। अब छह साल बीत चुके हैं। यशस्वी अब 17 वर्ष के हो गए हैं।

यशस्वी शीर्ष क्रम के शानदार बल्लेबाज हैं, जो इस समय दक्षिण अफ्रीका में चल रहे अंडर-19 विश्व कप में अपनी छाप छोड़ रहे हैं। उन्होंने विश्व कप के सेमीफाइनल में नाबाद 105 रनों की अहम पारी खेलकर भारतीय टीम को ना सिर्फ 10 विकेट से जीत दिलाई बल्कि टीम को फाइनल में पहुंचा दिया, जहां उसका सामना रविवार को बांग्लादेश से होगा।

यशस्वी के पिता की उत्तर प्रदेश के भदोही में एक छोटी सी दुकान है। दो भाइयों में छोटे यशस्वी अपने सपनों को पूरा करने के लिए मुंबई पहुंच गए। उनके पिता को इससे कोई दिक्कत नहीं हुई क्योंकि वह मुश्किल से अपने परिवार का पेट भर पा रहे थे। यशस्वी के चाचा संतोष का मुंबई के वर्ली में घर था, लेकिन यह रहने के लिए काफी नहीं था। इसके बाद संतोष ने मुस्लिम यूनाइटेड क्लब के मालिकों से यशस्वी को टेंट में रहने की इजाजत मांगी, जहां वह मैनेजर थे। यह तब की बात थी जब उनको कल्बादेवी में दूध की डेयरी से निकाल दिया गया था। पूरा दिन क्रिकेट खेलने के बाद यशस्वी थककर वहां सोने जाते थे। एक दिन उन्होंने यह कहकर यशस्वी का सामान बाहर फेंक दिया कि वह कुछ नहीं करता है, किसी काम में हाथ नहीं बंटाता है और सिर्फ सोता है। तब तीन साल के लिए यह टेंट ही उनका घर बन गया। यशस्वी इस बात का पूरा ध्यान रखते थे कि उनके संघर्ष की कहानी भदोही नहीं पहुंचे, नहीं तो उसका क्रिकेट करियर खत्म हो जाता। ऐसा कम ही होता था जब उसके पिता उसको कुछ पैसे भिजवाते थे, लेकिन वह भी काफी नहीं रहते थे।

जब बेचे पानी के बताशे : संघर्ष के दिनों में यशस्वी ने काफी कुछ देखा। आजाद मैदान में रामलीला के दौरान उन्होंने पानी के बताशे बनाए बिना उनको सोने नहीं देता था।

रोटी बनाने की ड्यूटी : यशस्वी ने एक साक्षात्कार में कहा था कि रामलीला के दौरान मैं अच्छा कमाता था। मैं भगवान से प्रार्थना करता था कि मेरे टीम के साथी यहां पर पानी के बताशे खाने नहीं आएं। कई बार ऐसा हुआ और मुझे उन्हें बताशे खिलाते हुए अच्छा नहीं लगता था। वह पूरी कोशिश करते थे कि कुछ पैसे कमाए जा सकें। वह बड़े लड़कों के साथ मैच खेलकर और बड़ा स्कोर करके 200-300 रुपये सप्ताह कमा लेते थे। यशस्वी हमेशा देखते थे कि उनकी उम्र के लड़के अपने साथ खाना लाते थे या उनके परिजन उनके लिए खाने का डिब्बा लाते थे, लेकिन वह खाना खुद बनाते और खाते। वह नाश्ता नहीं करते थे और किसी से नाश्ता खिलाने का आग्रह करते। वह भोजन और रात का खाना टेंट में ही करते और उनकी ड्यूटी रोटी बनाने की थी।

इस तरह शुरू हुआ सफर : मुंबई के अंडर-19 कोच सतीश सामंत यशस्वी से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने उनको मुंबई का अगला बड़ा खिलाड़ी करार दिया। सामंत ने कहा कि उसके अंदर गेंदबाजों का दिमाग पढ़ते और खुद को उसके मुताबिक ढालने की क्षमता है। कई अंडर-19 के खिलाड़ी जल्द शॉट खेलने के लिए उत्सुक दिखाई देते हैं, लेकिन वह ऐसा नहीं करता। मुंबई की अंडर-19 टीम में चुने जाने से पहले यशस्वी की किस्मत तब बदली जब उसे कोच ज्वाला सिंह से मिले। ज्वाला खुद भी उत्तर प्रदेश से यहां आकर बसे हैं और उन्हें यशस्वी में खुद का बचपन दिखा। ज्वाला ने कहा कि वह मात्र 12 साल का होगा और वह एक अच्छे गेंदबाज को आसानी से खेल रहा था। मैं तब सीधा उससे जुड़ गया, क्योंकि जब मैं उत्तर प्रदेश से मुंबई आया था तो मेरे पास भी रहने के लिए घर नहीं था। कोई गॉडफादर नहीं था, कोई राह दिखाने वाला भी नहीं। उसने पिछले पांच साल में 49 शतक लगाए हैं। यशस्वी अब कदमवदी में एक छोटी चॉल में रह रहा है, जिसे वह अपना घर बताता है।

आइपीएल नीलामी में बदली किस्मत : अंडर-19 विश्व कप से पहले हुई आइपीएल नीलामी में यशस्वी की किस्मत बदल गई। उनको राजस्थान रॉयल्स ने दो करोड़ से ऊपर की रकम में खरीदा। अब उम्मीद है कि यशस्वी उस छोटी सी चॉल में नहीं रहेंगे। रविवार को बांग्लादेश से फाइनल मुकाबले से पहले ही उन पर दुनियाभर की निगाहें टिक गई हैं।

के. परासरन : जिनका घर ही ट्रस्ट का पता

इनसे मिलिए

नेशनल डेस्क, नई दिल्ली

दो बार देश के अटॉर्नी जनरल रह चुके पद्म सम्मान विजेता (पद्म भूषण व पद्म विभूषण) 92 वर्ष के वरिष्ठ वकील के. परासरन बीते वर्ष अयोध्या राम जन्मभूमि मामले में सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के दौरान सुर्खियों में थे तो इस वर्ष इस फैसले के बाद गठित किए गए ट्रस्ट की वजह से चर्चा में आ गए। उन्हें 'श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र' ट्रस्ट का पहला ट्रस्टी बनाया जाना है और यह ट्रस्ट उनके घर के पते पर ही पंजीकृत किया गया है...

बीते दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संसद में जब यह कहा कि केंद्रीय कैबिनेट ने राम मंदिर ट्रस्ट के गठन को मंजूरी दे दी है तो लंबे समय से चला आ रहा इंतजार खत्म हो गया और इसी के साथ वकील समुदाय के पितामह कहे जाने वाले के. परासरन एक बार फिर सुर्खियों में आ गए। इस बार सुर्खियों में आने की वजह उनकी वकालत नहीं, बल्कि उन्हें 'श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र' ट्रस्ट का पहला ट्रस्टी बनाया जाना है और साथ ही यह ट्रस्ट उनके घर के पते पर ही पंजीकृत किया गया है।

92 वर्षीय परासरन बीते वर्ष अयोध्या राम जन्मभूमि मामले में सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के दौरान सुर्खियों में थे। 2016 के बाद से कोर्ट में उनकी उपस्थिति भले ही कम रही थी, लेकिन दो बड़े मुकदमों ने उन्हें एक बार फिर सुर्खियों में ला दिया था। पहला-सबरीमाला और दूसरा अयोध्या राम जन्मभूमि मामला। इन दोनों मुकदमों के चलते दो बार देश के अटॉर्नी जनरल रह चुके परासन चेन्नई से दिल्ली वापस आए। हिंदू धर्मग्रंथों के जानकार परासरन सर्वोत्कृष्ट सरकारी वकील हैं। 1970 के बाद से वह हर सरकार के विश्वसनीय रहे। अदालत में अक्सर हिंदू धर्मग्रंथों पर व्याख्यान देते हैं। इतना ही नहीं, अपने धर्म से समझौता किए बिना कानून में दिए गए इनके योगदान के लिए मद्रास के पूर्व मुख्य न्यायाधीश संजय किशन कौल ने इन्हें भारत में वकील समुदाय का पितामह कहा था।

सबरीमाला और अयोध्या राम जन्मभूमि मामले से पहले एक और केस में वह सुर्खियों में रहे। राम सेतु केस में जब दोनों विरोधी पार्टियां परासरन के पास पहुंचीं तो उन्होंने सरकार के खिलाफ जाकर, सेतुसमुद्रम परियोजना से सेतु की रक्षा करने का निर्णय लिया। जब जजों ने परासरन से पूछा कि वह सरकार का विरोध क्यों कर रहे हैं तो उन्होंने स्कंद पुराण का जिक्र किया, जिसमें इस सेतु का वर्णन है।

1927 में तमिलनाडु के श्रीरंगम में जन्मे के. परासरन के पिता केशव अयंगर वकील और वैदिक विद्वान थे। उन्होंने मद्रास हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में वकालत की। परासरन के तीनों पुत्र मोहन, सतीश और बालाजी भी वकील हैं। मोहन परासरन संप्रग-2 सरकार में कुछ समय के लिए सॉलिसिटर जनरल रहे। अब परिवार की चौथी पीढ़ी ने भी इस विरासत को आगे बढ़ाते हुए वकालत की दुनिया में कदम रखा है। परासरन ने 1958 में सुप्रीम कोर्ट में प्रैक्टिस शुरू की थी। बीती सदी के सातवें दशक में बड़े मामलों में परासरन का सामना अक्सर नानी पालकीवाला से होता था। आपातकाल के दौरान परासरन तमिलनाडु के एडवोकेट जनरल थे। 1980 में देश के सॉलिसिटर जनरल नियुक्त किए गए। 1983 से 1989 तक देश के अटॉर्नी जनरल के रूप में काम किया। 1992 में जब मुंबई निवासी मिलन बनर्जी को अटॉर्नी जनरल नियुक्त किया गया, तब परासरन को 'सुपर एजी' के रूप में संदर्भित किया गया। बनर्जी को मध्यस्थता और वाणिज्यिक कानूनों में महारत हासिल थी, लेकिन संवैधानिक मामलों में सरकार के पास परासन ही सबसे अच्छा विकल्प रहे।

सरकारें बदलीं, लेकिन परासरन की सराहना हमेशा की गई। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने उन्हें संविधान के कामकाज की समीक्षा के साथ प्रारूपण और संपादकीय समिति के सदस्य के रूप में नियुक्त किया। वाजपेयी के नेतृत्व वाली राजग सरकार ने उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया। वहीं, मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली संप्रग-1 सरकार ने उन्हें पद्म विभूषण से नवाजा और उन्हें संसद के उच्च सदन में मनोनीत किया।

तीन साल की वेदा की दुनिया हुई दीवानी

उभरता सितारा

तनु गुप्ता, आगरा

कहते हैं प्रतिभा कुदरत की देन होती है, बस सही समय और मंच पर वह सामने आती है। बीते दिनों आगरा की वेदा ने एक मंच पर कुछ ऐसा कर दिखाया कि रातोंरात सोशल मीडिया की स्टार बन गईं। इतना ही नहीं, साढ़े पांच मिनट की परफॉर्मेंस के बल पर उन्हें एक टीवी शो में रोल भी मिल गया...

प्रतिभा एक खुशबू की तरह होती है, जिसे फैलने से कोई रोक नहीं सकता। जरूरत होती है तो बस समय और सही मंच की। बीते दिनों आगरा की तीन साल की वेदा के साथ कुछ ऐसा ही हुआ। उनके साढ़े पांच मिनट के एक वीडियो ने सोशल मीडिया पर ऐसी धूम मचाई कि सप्ताहभर में ढाई करोड़ से अधिक लोगों ने उसे देखा और देखते ही देखते वह इंटरनेट की सनसनी बन गईं।

भारत सहित सिंगापुर, कुवैत, अफगानिस्तान, फिलीपींस, अमेरिका तक के करीब ढाई लाख से अधिक व्यूअर्स ने वेदा के वीडियो को शेयर किया है। इतना ही नहीं छह फरवरी की रात टेक्सास रेडियो से वेदा के वीडियो को सुनाया भी गया। वेदा के माता-पिता कुछ ही समय पहले आगरा की आवास विकास कॉलोनी से मुंबई शिफ्ट हुए हैं।

दरअसल, गत 26 जनवरी को मुंबई के बांद्रा स्थित सेंट एंड्रयूज ऑडिटोरियम में संकल्प पुनर्वास संस्था ने सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया था। इसमें संगीत शिक्षक माधव अग्रवाल ने बेटी वेदा ने दिल है छोटा सा...गीत गाया। नन्ही सी वेदा पिंक और ब्लैक फ्रॉक में मंच पर अपने पिता संग प्रस्तुति देने के लिए उतरी तो किसी ने शायद ही सोचा होगा की ये छोटी सी बच्ची क्या कमाल करेगी। गीत की पहली पंक्ति गाने के बाद कमॉन गायज कहकर हरेक का दिल जीत लिया। साढ़े पांच मिनट के गीत के दौरान वेदा स्टेज पर डांस भी करती रही। दो फरवरी की रात वेदा के माता-पिता ने परफारमेंस का वीडियो फेसबुक पेज पर अपलोड किया तो धड़ाधड़ लाइक और शेयर मिलने लगे। इजाफा उस वक्त हुआ जब अभिनेता जॉनी लीवर की बेटी जैमी लीवर ने इसे अपने फेसबुक और ट्विटर पेज यो यो पर शेयर किया। 48 घंटे के भीतर वेदा के वीडियो को 20 लाख से ज्यादा लोगों ने देख लिया और 15 हजार से अधिक लोगों ने अपने सोशल अकाउंट पर इसे शेयर कर दिया था। हर दिन के साथ ये गिनती बढ़ती गई और सात दिन बाद व्यूअर्स की संख्या ढाई करोड़ पार कर चुकी है।

वेदा के पिता माधव अग्रवाल को बचपन से ही संगीत का शौक था। तीन साल पहले वह मुंबई शिफ्ट हो गए। वेदा की मां मेघा वहीं टिफिन सर्विस चलाती हैं। माधव ने बताया कि जब वह संगीत का रियाज करते हैं तो वेदा आसपास ही रहती है।

जावेद ने कहा अगली बार करुंगा साथ में डांस : प्रस्तुति के बाद अभिनेता जावेद जाफरी ने ग्रीन रूम में आकर वेदा की तारीफ की और अगली बार स्टेज शेयर करने के इच्छा जताई। वीडियो वायरल होते ही सोनी चैनल पर जल्द शुरू होने जा रहे शो 'पापा की परी' के लिए भी वेदा को साइन कर लिया गया है।

ताऊ-दादी खुशी में बांट रहे लड्डू : आगरा की आवास विकास कॉलोनी स्थित माधव के पैतृक निवास पर खुशी का माहौल है। परिवार की दुलारी बिटिया की इस उपलब्धि पर दादी बीना अग्रवाल और ताऊ मनीष अग्रवाल मिठाइयां बांट रहे हैं। घर पर उन्हें बधाई देने वालों का तांता लगा हुआ है।

देश-दुनिया से मिल रही सराहना

यूं तो वेदा के वीडियो को अबतक लाखों लोगों की सराहना मिल चुकी है। दुनियाभर से कमेंट मिलने अभी भी लगातार जारी हैं। भारत सहित, सिंगापुर, कुवैत, अफगानिस्तान तक के व्यूवर्स वेदा के वीडियो को शेयर कर रहे हैं। कुछ चुनिंदा कमेंट-

ट्वीटर पर आज की सबसे प्यारी चीज।

दीपिका नारायण भारद्वाज, फिल्म निर्देशक

वीडियो देखकर मेरा दिन बन गया। शेयर करने के लिए शुक्रिया।

हर्ष गोयंनका, बिजनेस टाइकून

शानदार आत्मविश्वास और बहुत प्यारी आवाज। मेरा आशीर्वाद छोटी बच्ची के साथ है। ईश्वर करे वो भविष्य में एक महान गायक बने।

डॉ. अनीता बैंजमिन, ग्लोबल पीस एंबेसडर

दुनिया की सबसे बड़ी थ्रीडी प्रिंटेड इमारत दुबई में

दुबई में दुनिया की सबसे बड़ी थ्रीडी प्रिंटेड इमारत बनकर तैयार हो गई है। अब इसका उपयोग दुबई नगरपालिका द्वारा सामान्य प्रशासनिक कार्यों के लिए किया जाएगा। यह निर्माण उस घोषणा का हिस्सा है जिसमें 2030 तक 25 प्रतिशत इमारतों को थ्रीडी करने के लिए कहा गया था। इसे बोस्टन की कंपनी एपिस कोर ने डिजाइन किया है और थ्रीडी प्रिंटर, जिप्सम कम्पाउंड युक्त क्रेन से बनाया गया है।

2030

तक 25 प्रतिशत इमारतों को थ्रीडी करने के लिए कहा गया था। यह निर्माण उस घोषणा का हिस्सा है

बिल्डिंग के बारे में

दुबई में तैयार इस दो मंजिला इमारत को 6900 वर्ग फीट में बनाया गया है। इसमें दुबई नगर पालिका का ऑफिस है। इसका इस्तेमाल सामान्य प्रशासनिक कार्यों के लिए किया जाएगा।

कैसे किया तैयार

थ्रीडी प्रिंटर ने कुछ इंच मोटी सामग्री की परतों के साथ दीवारें तैयार कीं। इसके बाद पूरी ऊंचाई की दीवारें बनाई गईं। आखिर में छत इनके ऊपर रखी गई। फिर खिड़कियों के लिए खाली जगह छोड़कर दीवारों को इंसुलेशन से भर दिया।

अगला लक्ष्य

कंपनी का अगला प्रोजेक्ट सुइसियाना और कैलिफोर्निया में है। यहां कंपनी को 500 वर्ग फीट में एक रहने योग्य घर 24 घंटे में तैयार करना है।

कम लागत और अधिक टिकाऊ

इस बिल्डिंग को बनाने में लेबर की लागत 70 प्रतिशत और इमारत की लागत 90 प्रतिशत तक कम हो गई। इसमें तेजी से सूखने वाले सीमेंट, जिप्सम के तत्वों को मिलाया गया है। थ्रीडी प्रिंटिंग तकनीक से तैयार इमारत की लागत सामान्य मटेरियल के मुकाबले आधी से कम आती है और यह उससे अधिक मजबूत और टिकाऊ होती है।

चीन में सबसे ऊंची थ्रीडी प्रिंटेड बिल्डिंग

दुनिया में सबसे ऊंची थ्रीडी प्रिंटेड बिल्डिंग चीन के सूजो में है। 90 फीट ऊंची इस बिल्डिंग में 5 मंजिलें हैं। दुनिया में सबसे पहले 1980 में इस तकनीक को खोज गया था। इसके खोजकर्ता इंजीनियर और फिजिसिस्ट चुक हुल थे।

पांच ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी में मददगार होंगे स्टार्ट-अप्स

राज्य ब्यूरो, मुंबई : देश की इकोनॉमी को पांच लाख करोड़ डॉलर का आकार देने में स्टार्ट-अप कंपनियां बड़ी भूमिका निभाएंगी। यह बात आज मुंबई में केंद्रीय कौशल विकास एवं रोजगार मंत्री महेंद्रनाथ पांडे ने कही। पांडे शनिवार को रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी के तहत अटल इन्क्यूबेशन सेंटर द्वारा आयोजित दूसरे न्यू इंडिया स्टार्ट-अप कॉन्क्लेव को संबोधित कर रहे थे। ये सेंटर नीति आयोग के अटल इन्क्यूबेशन मिशन के तहत संचालित किए जा रहे हैं।

पांच लाख करोड़ डॉलर की भारतीय अर्थव्यवस्था का लक्ष्य पाने में अमेरिका बेहद महत्वपूर्ण कारोबारी साझीदार रहने वाला है। दोनों देशों के बीच व्यापारिक रिश्तों की अपार संभावनाएं हैं।

— तरनजीत सिंह संधू, अमेरिका में भारत के राजदूत

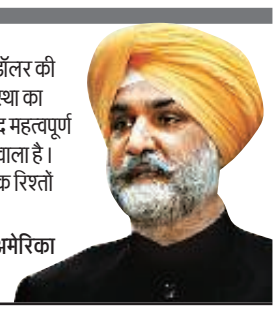

डीजल-पेट्रोल की कीमत में लगातार गिरावट से घरेलू ग्राहकों को बड़ा फायदा

- कोरोना की चिंता में कच्चे तेल के भाव में लगातार गिरावट
- सात जनवरी के बाद से पेट्रोल का दाम तीन रुपये से ज्यादा गिरा

नई दिल्ली, आइएएनएस : डीजल-पेट्रोल के भाव में लगातार गिरावट के चलते ग्राहकों को बड़ी राहत मिली है। शनिवार को भी पेट्रोल 24 पैसे और डीजल 27 पैसे प्रति लीटर सस्ता हो गया। इस गिरावट के बाद शनिवार को दिल्ली में पेट्रोल 72.45 रुपये, मुंबई में 78.11 रुपये, कोलकाता में 75.13 रुपये और चेन्नई में 75.27 रुपये प्रति लीटर के हिसाब से बिका। वहीं दिल्ली में डीजल 65.43 रुपये, मुंबई में 68.57 रुपये, कोलकाता में 67.79 और चेन्नई में 69.10 रुपये प्रति लीटर रहा। सात जनवरी के बाद से पेट्रोल का दाम तीन रुपये से ज्यादा गिरा है।

इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक इस महीने दिल्ली में पेट्रोल 82 पैसे और डीजल 85 पैसे प्रति लीटर सस्ता हुआ है। कोरोना वायरस से प्रभावित ग्लोबल मार्केट में तेल की मांग में कमी के डर से कच्चे तेल के भाव में लगातार गिरावट देखने को मिली है। पिछले कई सप्ताह से कोरोना प्रभावित कच्चे तेल के भाव में 20 परसेंट तक की गिरावट दर्ज की गई है। इसके

प्रतीकात्मक

अलावा शुक्रवार को रूस ने कच्चे तेल के उत्पादन में कमी के लिए और इंतजार करने की बात कही थी। इससे भाव में एक परसेंट की गिरावट देखने को मिली। ग्लोबल स्तर पर उत्पादन इकाईयों में अस्थायी रूप से उत्पादन रुकने के चलते ईंधन की खपत में कमी आई है। इस समय कच्चे तेल की कीमत करीब 55 डॉलर प्रति बैरल के आस-पास आ गई है। घरेलू बाजारों में खुदरा तेल की कीमत ग्लोबल मार्केट में कच्चे तेल के भाव पर निर्भर करती हैं। तेल कंपनियां प्रतिदिन आधार पर तेल की कीमत तय करती हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था के लिहाज से तेल की कीमत बहुत महत्वपूर्ण है। यह देश की इकोनॉमी को कई स्तर पर प्रभावित करती है। गौरतलब है कि भारत कच्चे तेल की खपत का अधिकतर हिस्सा आयात करता है। इससे विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव तो बनता ही है, साथ ही चालू खाते के घाटे में इजाफा होता है।

कच्चे तेल के भाव में गिरावट से उपभोक्ताओं को राहत मिली ही है और सरकार ने भी राहत की सांस ली है। ग्लोबल मार्केट में कच्चे तेल की सप्लाई के माध्यम से इसकी कीमतों पर नियंत्रण रखा जाता है। दाम में और गिरावट के बाद कच्चे तेल के निर्यातक देशों के संगठन ओपेक द्वारा इसके उत्पादन में कटौती का फैसला किया जा सकता है।

कोरोना से दुनिया को लग रही बड़ी आर्थिक चपत

जेएनएन, नई दिल्ली

वैश्विक अर्थव्यवस्था में सुस्ती छाई है और उसे दुनिया के बड़े देशों से उम्मीद है। हालांकि कोरोना वायरस के प्रकोप के चलते दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था चीन पर असर पड़ना तय है और चीन के लड़खड़ाने से दुनिया पर बड़ा और बुरा असर पड़ेगा। चीन में कोरोना से कुछ वर्ष पहले सामने आए सार्स ने सैंकड़ों लोगों की जान ले ली थी और इसका असर वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी पड़ा था।

वैश्विक अर्थव्यवस्था में 16 फीसद हिस्सा : वैश्विक अर्थव्यवस्था में चीन 2003 की सार्स महामारी के वक्त से ही अनिवार्य हिस्सा है। यह विश्व की फैक्ट्री के रूप में विकसित हुआ है और आइफोन जैसे प्रॉडक्ट यहीं से निकलते हैं। साथ ही बहुत सी चीजों की यह मांग पैदा करता है। चीन का दावा है कि उसके पास हजारों-लाखों धनी उपभोक्ता हैं जो लग्जरी उत्पादों, पर्यटन और कारों पर खर्च करते हैं। एक अनुमान के तौर पर 2003 में वैश्विक अर्थव्यवस्था में चीन की हिस्सेदारी चार फीसद थी, वहीं आज यह करीब 16 फीसद तक पहुंच चुकी है।

सार्स ने पहुंचाया था नुकसान : सार्स के चलते 8,098 लोग बीमार हुए थे और 774 मारे गए थे। हालांकि चीन के वुहान शहर में कोरोना के सामने आने के बाद से 700 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है और दुनिया के करीब 25 देशों के 35 हजार लोग संक्रमण से जूझ रहे हैं। चीनी अधिकारियों ने वुहान के साथ कुछ अन्य शहरों को भी बंद कर दिया है। बावजूद इसके वायरस लगातार फैलता जा रहा है।

उत्पादन पर ब्रेक : लूनर महीने के दौरान छुट्टी के चलते चीन में कार संयंत्र बंद हैं। इसके बाद वैश्विक कार निर्माता फॉक्सवैगन, टोयोटा, डेमलर, जनरल मोटर्स, रेनों, होंडा और ह्युंडई अपना काम फिर से शुरू करने वाले थे। एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स के मुताबिक, यह प्रकोप पहली तिमाही में कार निर्माताओं के उत्पादन को 15 फीसद घटा सकता है। टोयोटा ने कहा है कि वह 17 फरवरी तक अपने संयंत्रों को बंद रखेगा। ब्रिटिश ब्रांड बरबरी ने चीन में अपने 64 में से 24 स्टोर्स बंद कर दिए हैं। सबसे ज्यादा खतरा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पर पड़ रहा है। दुनिया के सबसे बड़े स्मार्टफोन चिप निर्माता क्वालकॉम ने चेताया है कि कोरोना का प्रकोप मांग में महत्वपूर्ण अनिश्चितता का कारण बन सकता है, आपूर्ति के लिए उत्पादन की आवश्यकता होगी। वहीं हुंडई ऑटो पार्ट्स की कमी से जूझ रहा है।

उम्मीदों पर टिका विश्वास : विशेषज्ञों का मानना है कि फिलहाल जो स्थिति है उससे निपटा जा सकता है। यदि कोरोना वायरस के प्रभावितों की संख्या में कमी आती है और चीन की फैक्ट्रियां फिर से शुरू होती हैं तो इसका असर पहली तिमाही में चीनी अर्थव्यवस्था पर अस्थायी असर डालेगा और यह वैश्विक अर्थव्यवस्था पर छोटा सा प्रभाव छोड़ेगा।

महामारी का खतरा : बीमारियां प्राकृतिक आपदाओं की तुलना में ज्यादा नुकसानदेह हो सकती हैं। विश्व बैंक के एक शोध के अनुसार, गंभीर महामारी वैश्विक जीडीपी के लगभग 5 फीसद या 3 लाख करोड़ डॉलर से अधिक का आर्थिक नुकसान कर सकती हैं। विश्व बैंक ने 2013 में महामारी पर अपनी रिपोर्ट में कहा कि गंभीर महामारी अपने अचानक और व्यापक प्रभाव में एक विश्व युद्ध जैसी होती है। ऐसा करने से उपभोक्ता वस्तुओं और ऊर्जा की मांग सीमित हो जाती है। कंपनियां और सरकारों द्वारा दुकानों और निष्क्रिय कारखानों को बंद करने के निर्णय से उत्पादन रुक जाता है।

ऐसे लड़ना होगा : चीनी सरकार कोरोना के सामने आने के बाद आर्थिक गिरावट को रोकने के लिए तेजी से आगे बढ़ी है। पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना ने इस सप्ताह महत्वपूर्ण ब्याज दर में कटौती की है। साथ ही भारी मात्रा में नकदी को बाजारों में उतारा है। नए टैक्स और सब्सिडी की भी घोषणा की है। अर्थशास्त्रियों को उम्मीद है कि सरकार आगामी दिनों में अतिरिक्त उपायों की घोषणा करेगी। यदि वायरस फैलता रहता है, तो वे मानते हैं कि बीजिंग को अपने ऋण को नियंत्रण में लाने और अर्थव्यवस्था में सीधे पैसा डालने के लिए लंबे समय से चल रहे प्रयासों को छोड़ना होगा।

मजबूत स्थिति में है इकोनॉमी : सीतारमण

निर्देश ▶ ठोस वजह के बगैर लोन देने से मना करने वाले बैंक की एमएसएमई करें शिकायत

आठ परसेंट की ग्रोथ रेट जल्द हासिल करने की वित्त मंत्री ने जताई उम्मीद

चेन्नई, एएनआइ : सुस्ती की बहस के बीच वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इकोनॉमी की वर्तमान स्थिति को लेकर संतोष जताया है। 'जन-जन का बजट' नाम से आयोजित कार्यक्रम में कारोबारियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि इस समय देश की इकोनॉमी अच्छी स्थिति में है, खासकर वृहत अर्थव्यवस्था के संकेतक अपने सुनहरे दौर में हैं। वित्त मंत्री ने सूक्ष्म, लघु व मध्यम उपक्रमों (एमएसएमई) से कहा कि अगर कोई बैंक उन्हें बेवजह लोन देने से आनाकानी कर रहा है या ठोस कारण नहीं बता रहा, तो वे वित्त मंत्रालय में इसकी शिकायत कर सकते हैं।

वित्त मंत्री का कहना था कि बुनियादी कारक बेहतर हैं और विदेशी मुद्रा भंडार के साथ-साथ प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआइ) अपने शीर्ष स्तर पर है। इस

शनिवार को कारोबारियों को संबोधित करतीं वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण। एएनआइ

दौरान वित्त मंत्री ने जानकारी दी कि बैंक अधिकारियों से संवाद बढ़ाने की योजना तैयार की जा रही है। सीतारमण ने बताया कि वित्त मंत्रालय के अधिकारी एमएसएमई सेक्टर के साथ मिलकर जमीनी स्तर पर कार्य कर रहे हैं। लोन मिलने में व्यवधान की बात पर वित्त मंत्री ने कहा कि मंत्रालय जल्द ही इसके लिए विशेष सेंटर बनाने जा रहा है। विशेष सेंटर को ई-मेल के जरिये शिकायत भेजी जा सकेगी। शिकायत की एक प्रति बैंक को भी भेजनी होगी।

सीतारमण ने कहा कि सरकार इकोनॉमी को गति देने का हरसंभव प्रयास कर रही है। उन्होंने उम्मीद जताई कि देश की इकोनॉमी जल्द ही आठ परसेंट की विकास दर हासिल कर लेगी। गौरतलब है कि वर्ष 2019 ग्लोबल इकोनॉमी के लिए बहुत संकट भरा रहा है। इस दौरान इसकी ग्रोथ रेट 2.9 परसेंट आंकी गई, जो वर्ष 2009 की मंदी के बाद सबसे कम है।

जीसएटी में खामियों को दूर कर रही सरकार

चेन्नई, आइएएनएस : जीएसटी में खामियों के चलते सरकार को बड़ा राजस्व नुकसान उठाना पड़ रहा है। इसके अलावा करदाताओं को भी मुश्किलों से दो-चार होना पड़ता है। इसी को ध्यान में रखते हुए जीएसटी में लगातार सुधार के प्रयास किए जा रहे हैं। मौजूदा समय में इसमें सुधार के लिए तकनीकी साधनों का सहारा लिया जा रहा है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बताया कि आठ परसेंट की ग्रोथ रेट हासिल करने के लिए सरकार जीएसटी में सुधार कर रही है। उन्होंने बताया कि इसके लिए तकनीकी का भरपूर उपयोग किया जा रहा है। वित्त मंत्री ने कहा कि पिछले कई महीनों से एक लाख करोड़ रुपये से अधिक का जीएसटी कलेक्शन किया जा रहा है। इसमें सुधार के बाद कलेक्शन बढ़ने की उम्मीद है। गौरतलब है कि पिछले वर्ष नवंबर में जीएसटी कलेक्शन 1,04,000 करोड़ रुपये, दिसंबर में 1,03,000 करोड़ रुपये दर्ज किया गया था। इस वर्ष जनवरी में यह और बढ़कर 1,11,000 करोड़ रुपये रहा। जीएसटी कलेक्शन में इजाफा सुधार की ओर एक अच्छा संकेत है। राजस्व सचिव अजय भूषण पांडेय के मुताबिक जीएसटी में सुधार के लिए सरकार डाटा एनालिटिक्स, आयकर विभाग से जानकारी जुटाने, आयात-निर्यात की जानकारी रखने जैसे उपाय अपना रही है।

चवन्नी के खर्च में एक किलोमीटर का सफर

मनीष तिवारी, ग्रेटर नोएडा

ऑटो एक्सपो में जहां एक तरफ राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों के द्वारा लक्जरी वाहनों की श्रृंखला पेश की जा रही है। वहीं दूसरी तरफ पुणे की सहगल एलमोटो ने डिलिवरी कर्मचारियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए इलेक्ट्रिक कार्गो रिक्शा पेश किया है। महज एक लाख रुपये कीमत के रिक्शे में 250 किलो तक का वजन ढोया जा सकता है। डिलिवरी कर्मचारियों को इस वाहन से बड़ी सुविधा होगी। कंपनी का दावा है कि इसके प्रति किलोमीटर परिचालन पर महज 25 पैसे का खर्च आएगा।

- एक लाख रुपये कीमत का है इलेक्ट्रिक कार्गो रिक्शा
- फुल चार्ज में तय करेगा 80 किलोमीटर तक का सफर

सुविधा के दौर में ऑनलाइन बाजार का क्रेज दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। लोग घर बैठे जरूरत की सारी चीजें ऑनलाइन मंगा रहे हैं। इससे जहां एक तरफ लोगों के समय की बचत हो रही है, वहीं सामान भी सस्ता मिल रहा है। देखने में आता है कि ज्यादातर डिलिवरी कर्मचारी मोटरसाइकिल पर पीछे बड़े से बैग में सामान रखकर डिलिवरी के लिए निकलते हैं। सामान अधिक होने के कारण उन्हें असुविधा होती है। बैग से सामान गिरने का डर बना रहता है। इन कर्मियों को कड़ाके की ठंड, तपाने वाली गर्मी और मूसलधार बारिश जैसी मौसमी मार से सामना करना पड़ता है। उनकी इन्हीं दिक्कतों को ध्यान में रखते हुए कंपनी प्रबंधन ने रिक्शा तैयार किया है। कंपनी के मैनेजर जेएस पीटर ने बताया बैटरी पर आठ साल की गारंटी दी जा रही है। डिलिवरी कर्मचारियों की सुविधा को देखते हुए रिक्शा तैयार किया गया है। ज्यादातर डिलिवरी कर्मचारी मोटरसाइकिल से डिलिवरी करते हैं, जिसका परिचालन खर्च पौने दो रुपये प्रति किलोमीटर तक आता है।

सैंट्रो आज भी फेवरेट कार है शाहरुख की, ऑटो एक्सपो में लॉन्च की न्यू हुंडई क्रेटा

बॉलीवुड के नामचीन अभिनेताओं में शुमार शाहरुख खान ने ऑटो एक्सपो में ऑल न्यू हुंडई क्रेटा लॉन्च की। इस अवसर पर उन्होंने सैंट्रो को अभी भी अपनी पसंदीदा कार बताते हुए कहा कि उन्हें ड्राइविंग करना बेहद पसंद है।

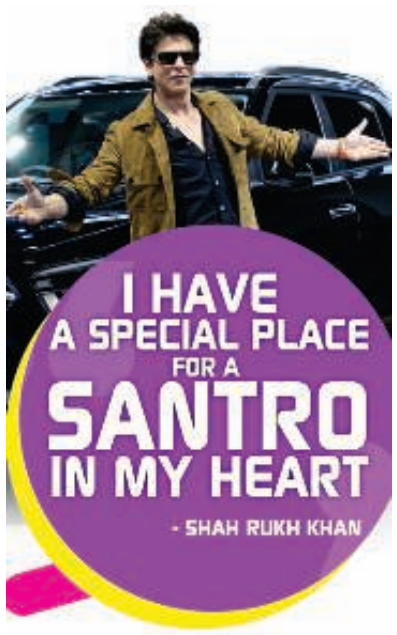

देखें शाहरुख खान को कार लॉन्च करते हुए ऊपर छपी तस्वीर को Google Lens से स्कैन करके

वीडियो देखने के लिए

1. अपने मोबाइल पर Google Lens App डाउनलोड करके OPEN करें. Go to goo.gle/lens, or use the Google Lens App on Android/Google App on iOS
2. ऊपर छपी तस्वीर को Google Lens के साथ स्कैन करें
3. छपी तस्वीर पर आधारित विश्लेषणात्मक वीडियो देखें

ऐसा होगा रिक्शा

रिक्शे की बॉडी को स्टील का बनाया गया है। चालक के बैठने के लिए आगे छोटा केबिन बनाया गया है। दोनों साइड से केबिन खुला होगा। पीछे स्टेनलेस स्टील का बंद केबिन बनाया गया है, जिसमें 250 किलोग्राम तक वजन ले जाया जा सकता है। इस रिक्शे की बैट्री लगभग छह घंटे में फुल चार्ज हो जाएगी, जिसमें 80 किलोमीटर तक का सफर तय किया जा सकता है। रिक्शे की अधिकतम गति 30 किलोमीटर प्रति घंटा होगी।

पांच लाख करोड़ डॉलर इकोनॉमी लक्ष्य में अमेरिका प्रमुख साझेदार

वाशिंगटन, प्रेट्र : अमेरिका में भारत के नवनियुक्त राजदूत तरनजीत सिंह संधू ने कहा है कि पांच लाख करोड़ डॉलर इकोनॉमी के लक्ष्य को प्राप्त करने में अमेरिका प्रमुख व्यापारिक साझेदार होगा। एक स्वागत समारोह में अमेरिका के कारोबारियों को संबोधित करते हुए संधू ने कहा कि दोनों देशों के बीच अपार व्यापारिक साझेदारी संभावनाएं मौजूद हैं।

संधू ने कहा कि इकोनॉमिक लक्ष्यों को तय करते समय प्रधानमंत्री ने यह स्पष्ट कर दिया था कि इस यात्रा में अमेरिका हमारा प्रमुख व्यापारिक साझेदार होगा। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के शीर्ष नेताओं के आपसी रिश्ते भी बहुत अच्छे हैं। पिछले वर्ष अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच चार बार मुलाकात हुई। आपसी रिश्तों में कारोबारी लोगों के योगदान का जिक्र करते हुए संधू ने कहा कि युवा उद्यमी, पुरुष एवं महिला कारोबारी आपसी रिश्तों की रीढ़ हैं। संधू के मुताबिक दो हजार से अधिक अमेरिकी कंपनियां अस वक्त भारत में काम कर रही हैं।

महिंद्रा एंड महिंद्रा का तिमाही मुनाफा 73 परसेंट गिरा, इस वर्ष से बड़ी आस

- बिक्री में कमी को बताया मुनाफे में गिरावट की वजह
- आने वाले महीनों में ग्रामीण बाजारों में बिक्री बढ़ने की बड़ी उम्मीद

नई दिल्ली, प्रेट्र : अग्रणी ऑटो निर्माता कंपनी महिंद्रा एंड महिंद्रा के तिमाही मुनाफे में भारी गिरावट देखने को मिली है। कंपनी ने शनिवार को बताया कि चालू वित्त वर्ष की अक्टूबर-दिसंबर तिमाही के दौरान उसका शुद्ध मुनाफा 73 परसेंट गिरकर 380 करोड़ रुपये रहा। पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में कंपनी को 1,396 करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ था। हालांकि कंपनी ने कहा कि अच्छे मानसून और खरीफ की फसल में उत्पादन अधिक होने के चलते वाहन उद्योग में सुधार की उम्मीद है।

समीक्षाधीन अवधि में कंपनी का कुल राजस्व 12,120 करोड़ रुपये दर्ज किया गया। पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में यह 12,893 करोड़ रुपये रहा था। कंपनी के मुताबिक उसकी बिक्री में कमी के चलते मुनाफे में गिरावट दर्ज की गई है। समीक्षाधीन अवधि में कंपनी ने 1,23,353 वाहन बेचे, जबकि पिछले वर्ष 1,33,508 वाहन बेचे थे। इस तरह वाहन की बिक्री में आठ परसेंट की गिरावट देखी गई। इस

प्रतीकात्मक

दौरान कंपनी के ट्रैक्टर की बिक्री में भी छह परसेंट की गिरावट आई।

कंपनी द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक समीक्षाधीन अवधि में वाहनों और ट्रैक्सटर्स के निर्यात में भी गिरावट देखने को मिली। इस अवधि में कंपनी का निर्यात 22 परसेंट गिरकर 9,633 यूनिट्स रहा। पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में कंपनी ने 12,363 यूनिट्स निर्यात की थीं।

महिंद्रा का कार्यकाल बढ़ा

मुंबई, आइएएनएस : अग्रणी ऑटो कंपनी महिंद्रा एंड महिंद्रा ने अपने एक्जीक्यूटिव चेयरमैन आनंद महिंद्रा का कार्यकाल बढ़ा दिया है। इस फैसले के बाद वे नवंबर, 2021 तक अपने पद पर बने रहेंगे। इससे पहले कंपनी ने बताया था कि वे इसी वर्ष अप्रैल में एक्जीक्यूटिव चेयरमैन का पद छोड़ देंगे। कंपनी का यह फैसला सेबी के उस आदेश के बाद आया है, जिसमें एक्जीक्यूटिव चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर के पदों को अलग करने की समय-सीमा अप्रैल, 2022 तक बढ़ाने की बात कही गई थी। इससे पहले सेबी ने कहा था कि कोई एक व्यक्ति कंपनी के एक्जीक्यूटिव चेयरमैन और एमडी के पद पर एक साथ नहीं रह सकता।

आयात शुल्क बढ़ने पर खिलौना उद्योग को एतराज

जागरण संवाददाता, कोलकाता

खिलौनों पर आयात शुल्क एक ही बार में तीन गुना कर देने से देश के एक लाख से अधिक थोक खिलौना व्यापारी बुरी तरह से प्रभावित होंगे। केंद्रीय बजट में खिलौनों पर आयात शुल्क 20 से बढ़ाकर 60 फीसद करने के प्रस्ताव के बाद शनिवार को एक दिवसीय सांकेतिक हड़ताल पर गए खिलौना व्यापारियों ने ये आरोप लगाए। केंद्र सरकार ने पहली फरवरी को अगले वित्त वर्ष के लिए पेश आम बजट में स्थानीय उद्योग के हितों का हवाला देते हुए खिलौनों पर आयात शुल्क बढ़ाकर 60 फीसद करने का प्रस्ताव रखा है।

पश्चिम बंगाल एक्जिम एसोसिएशन के संयुक्त सचिव मोहित बांथिया ने कहा कि 200 फीसद आयात शुल्क बढ़ाना बहुत ही कठोर फैसला है। गौरतलब है कि देश में प्रति वर्ष कुल 2,500 करोड़ रुपये के खिलौनों का आयात होता है। इसमें से 75 फीसद खिलौने चीन से मंगाए जाते हैं। कोलकाता में कुल 130 करोड़ रुपये मूल्य के खिलौनों का आयात किया जाता है।

नए टैक्स नियमों से बचत की आदत पर दिख सकता है विपरीत असर

आम बजट से हफ्तों या महीनों पहले से यह माना जा रहा था कि पर्सनल इनकम टैक्स कम किया जाएगा। कॉरपोरेट इनकम टैक्स रेट में पहले ही कटौती की जा चुकी थी ऐसे में पर्सनल इनकम टैक्स में भी कटौती की संभावना जताई जा रही थी। हालांकि किसी को भी इस बात का अंदाजा नहीं था कि सीधे टैक्स कम करने के बजाय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण पर्सनल इनकम टैक्स का एक समानांतर सिस्टम पेश कर देंगी।

इससे पहले अगस्त में कॉरपोरेट टैक्स के मामले में भी यही किया गया था। यानी कॉरपोरेट के पास विकल्प है कि अगर वे सारी टैक्स छूट छोड़ दें तो वे घटे रेट पर टैक्स का भुगतान कर सकते हैं। इसी तरह से अब व्यक्तिगत करदाताओं के पास विकल्प है कि अगर वे टैक्स छूट का फायदा न लें तो वे घटे हुए रेट पर इनकम टैक्स का भुगतान कर सकते हैं। अब कोई व्यक्ति टैक्स छूट का कितना फायदा उठाता है उसके आधार पर उसके लिए टैक्स कम हो सकता है और कम नहीं भी हो सकता है। टैक्सपेयर्स को एक विकल्प दिया गया है और हर एक टैक्सपेयर को फैसला लेना है कि उसे इस विकल्प का इस्तेमाल करना चाहिए या नहीं।

मोटे तौर पर देखें तो ऐसा लगता है कि जो लोग 10 से 12 लाख रुपये तक या 15 लाख रुपए तक कमा रहे हैं वे कम टैक्स रेट वाला नया सिस्टम चुनना चाहेंगे क्योंकि उनको कम टैक्स देना होगा। इसके अलावा उनके लिए टैक्स रिटर्न फाइल करना भी सरल होगा। वहीं 25-30 लाख रुपये या इससे अधिक कमाने वालों के लिए कोई खास फायदा या नुकसान नहीं है। ऐसा नहीं है कि जितनी तरह की टैक्स छूट उपलब्ध है उसका फायदा हर कोई उठा सकेगा। हालांकि कई तरह के उदाहरण में ऐसा मानकर कैलकुलेशन किया जा रहा है कि टैक्सपेयर्स सभी तरह की टैक्स छूट का फायदा उठा सकते हैं। लेकिन कम इनकम वालों के लिए यह व्यावहारिक नहीं है।

मैं खास तौर पर इस बात को लेकर चिंतित हूं कि क्या इस वैकल्पिक टैक्स सिस्टम को अपनाने के बाद लोग बचत के प्रति उदासीन होंगे? क्योंकि लोगों को ज्यादातर ऐसे टैक्स छूट के विकल्पों को छोड़ना होगा जो सेक्शन 80 सी के तहत आते हैं। जैसे पब्लिक प्रॉविडेंट फंड, न्यू पेंशन सिस्टम और ईएलएसएस फंड। इन विकल्पों में बड़े पैमाने पर लोग निवेश करते हैं क्योंकि यहां इनको टैक्स बचाने का बेहतर विकल्प मिलता है। लेकिन अगर कोई 80-सी के तहत आने वाले निवेश के विकल्पों में निवेश किए बिना ही कम टैक्स दे सकता है तो बहुत कम लोग बचत करेंगे। निश्चित तौर पर यह एक समस्या है।

नए टैक्स व्यवस्था के पीछे यह सोच काम कर रही है कि जो करदाता बचत करना चाहते हैं उनके पास बचत के लिए ज्यादा रकम होगी। लेकिन यह उनके ऊपर है कि क्या वे वास्तव में ऐसा करना चाहते हैं। यह अच्छा है या बुरा? इस पर अलग-अलग राय हो सकती है। फिर भी मेरा मानना है कि रिटायरमेंट से जुड़े निवेश जैसे ईपीएफ और एनपीएस टियर-1 को इसके दायरे से बाहर रखा जाना चाहिए, भले ही सेक्शन 80-सी के तहत आने वाले विकल्पों को यह छूट न मिले। निश्चित तौर पर यह एक गलती है और इसे बजट पारित होने से पहले ठीक किया जाना चाहिए।

बचतकर्ताओं के लिए सबसे बड़ा बदलाव डिविडेंड डिस्ट्रीब्यूशन टैक्स यानी डीडीटी हटाया जाना है। ऐसा होने की उम्मीद भी थी और टैक्स सिस्टम को साफ सुथरा बनाने की दिशा में यह बड़ा कदम है। अब कंपनियों या म्यूचुअल फंड की ओर से दिया जाने वाला डिविडेंड निवेशकों के पास पूरा पहुंचेगा। और इसके बाद इस पर निवेशक के इनकम टैक्स स्लैब के हिसाब से टैक्स लगाया जाएगा। रिटायर हो चुके व्यक्ति जैसे निवेशक जो कम टैक्स स्लैब में आते हैं, उन्हें कम टैक्स चुकाना होगा।

बॉण्ड से नया म्युचुअल फंड बनाने का स्वाद सरकार को लग चुका है और अब यह सरकार की आदत बन चुकी है। पीएसयू बॉण्ड ईटीएफ की सफलता के बाद वित्त मंत्री ने घोषणा की है कि सरकारी बॉण्ड से नया फंड बनाया जाएगा। रिटेल इन्वेस्टर को सरकारी बांड सीधे बेचने का यह एक तंत्र है। भारत में यह प्रचलन एकदम नया है। डेट फंड में क्रेडिट से जुड़ी दिक्कतों की वजह से जिस तरह से डेट फंड निवेशको को मुश्किल का सामना करना पड़ा है। मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं है कि निवेशक इस प्रोडक्ट को हाथों हाथ लेंगे।

लेकिन क्या लंबी अवधि में ये नए प्रोडक्ट प्राइवेट कंपनियों के डेट बांड से लोगों की दिलचस्पी खत्म कर पाएंगे यह देखने की बात होगी। फिलहाल के लिए तो निश्चित तौर पर निवेश के लिए यह अच्छा उत्पाद है। अगर पर्सनल फाइनेंस और बचत के लिहाज से कुल मिलाकर देखा जाए तो यह दिलचस्प बजट है और पर्सनल इनकम टैक्स में सुधार के लिए रचनात्मक तरीका खोजा गया है। अब आपके पास एक सरल टैक्स स्ट्रक्चर कम टैक्स रेट और कुछ टैक्स छूट होंगी। लेकिन यह सब आपके पास एक विकल्प के तौर पर होगा। आप चाहें तो इसका इस्तेमाल करें या न करें।

धीरेंद्र कुमार, सीईओ
वैल्यू रिसर्च

बोनस

नौकरीपेशा वर्ग इस महीने की पहली तारीख को पेश किए गए आम बजट की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा था। बजट पेश हुआ और व्यक्तिगत करदाताओं को आयकर में सीधी छूट के बदले टैक्स की एक समानांतर व्यवस्था मिली, जिसमें शामिल होने या पुरानी व्यवस्था पर बने रहने का अधिकार करदाताओं को ही दिया गया है। हालांकि विशेषज्ञ यह भी मान रहे हैं कि आयकर की नई व्यवस्था अपनाने वाले लोग बचत के उपायों के प्रति उदासीन हो सकते हैं। फिर भी, इसमें कागजी कार्रवाई से इस हद तक मुक्ति दी गई है कि अधिकतर बचतकर्ता इसे अपना सकते हैं।

...तो पैंगोलिन से फैला कोरोना वायरस

कोरोना वायरस चीन के बाद लगभग पूरी दुनिया को अपने कब्जे में लेने को आतुर है। इंसानी जान का दुश्मन कोरोना अब तक सात सौ लोगों की जान लील चुका है और तीस हजार से ज्यादा लोग प्रभावित हैं। चीनी शोधकर्ताओं ने कोरोना के लिए पैंगोलिन को जिम्मेदार ठहराया है। वैज्ञानिकों के मुताबिक, कोरोना से पीड़ित मरीज और पैंगोलिन में मौजूद इस वायरस का आनुवांशिक अनुक्रम 99 फीसद समान है। हालांकि अभी तक यह शोध प्रकाशित नहीं हुआ है।

चीनी चिकित्सा पद्धति में होता है इसका प्रयोग

पैंगोलिन स्तनधारी प्राणी है, जिसके शरीर पर शल्क (स्केल) जैसी संरचना होती है। इसी के जरिए यह अन्य प्राणियों से खुद की रक्षा कर पाता है। फिलहाल ऐसे शल्क दुनिया में सिर्फ इसी के पास होते हैं। चींटी और दीमक खाने के कारण इसे चींटीखोर भी कहा जाता है। यह संरक्षित जानवर हैं। दुनिया में सर्वाधिक तस्करी इसी जीव की होती है। इसी कारण यह गंभीर संकट में हैं। इसका उपयोग पारंपरिक चीनी चिकित्सा पद्धति में किया जाता है। इसके कुछ हिस्सों का उपयोग त्वचा और गठिया के साथ कई अन्य रोगों में किया जाता है। चीन में पैंगोलिन बेचने वालों को 10 या उससे ज्यादा की सजा हो सकती है।

चमगादड़ और मनुष्य के बीच की कड़ी

चीन में कोरोना वायरस के प्रकोप की जांच में जुटे शोधकर्ताओं का कहना है कि लुप्तप्राय पैंगोलिन चमगादड़ों और मनुष्यों के बीच की गायब कड़ी हो सकते हैं। चमगादड़ों को इस बीमारी का नवीनतम वाहक माना गया है। आनुवांशिक विश्लेषण के मुताबिक, मनुष्यों में फैला वायरस 96 फीसद चमगादड़ों के समान था। फ्रांस के पाश्चर इंस्टीट्यूट के अरनोड फांटेनेट के अनुसार, यह बीमारी चमगादड़ों से सीधे मनुष्य तक नहीं पहुंचती है बल्कि हमें लगता है कि कोई अन्य जानवर इसका मध्यस्थ है।

संक्रमण के लिए पैंगोलिन जिम्मेदार

गुआंगझू स्थित दक्षिण चीन कृषि विश्वविद्यालय का कहना है कि उसके दो शोधकर्ताओं, शेन योंगी और जिओ लिहुआ, ने पैंगोलिन को जानवरों और मनुष्यों से लिए गए कोरोना वायरस की आनुवांशिक तुलना के आधार पर एनसीओवी-2019 के संभावित स्रोत के रूप में पहचाना है। पता चला है कि यह संक्रमण फैलाने और अन्य चीजों के लिए जिम्मेदार हैं। यह अनुक्रम 99 फीसद समान है।

शोध से मिलेगी मदद

शोध में आनुवंशिक अनुक्रम की समानता पर और बातें सामने आ सकती हैं। कनाडा के हैमिल्टन में मैकमास्टर विश्वविद्यालय के कोरोना वायरस शोधकर्ता अरिंजय बनर्जी का कहना है कि पैंगोलिन के रक्त नमूने से यह पता चल सकता है कि यह मनुष्यों तक कैसे पहुंचा और भविष्य में इसके प्रसारण को कैसे रोका जा सकता है।

जल्द प्रकाशित होगा शोध

चीनी शहर वुहान में दिसंबर में कोरोना वायरस का प्रकोप उभरा था। माना जा रहा था कि सीफूड और जंगली जानवरों के बाजार में बड़ी संख्या में लोग पहुंचते हैं। यहीं पर संक्रमित होने वाले कई लोग काम करते थे। हालांकि पैंगोलिन बाजार में बेची जाने वाली चीजों में सूचीबद्ध नहीं था लेकिन इसकी अवैध बिक्री की जाती रही है। पिछले महीने, बीजिंग में वैज्ञानिकों ने दावा किया कि सांप कोरोना वायरस का स्रोत थे, लेकिन उस सिद्धांत को अन्य शोधकर्ताओं ने खारिज कर दिया। उधर, विश्वविद्यालय के अध्यक्ष लियू याहॉन्ग ने बताया कि कोरोना वायरस को नियंत्रित करने के प्रयासों में मदद के लिए शोध के परिणाम जल्द ही प्रकाशित किए जाएंगे।

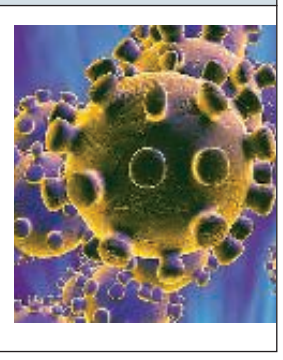

न्यूज गैलरी

'दुश्मन की चुनौती से निपटने में ईरान पूरी तरह सक्षम'

तेहरान : ईरान अपने दुश्मनों की चुनौतियों से निपटने के लिए पर्याप्त ताकतवर है। अमेरिका की ओर से दशकों से दबाव और प्रतिबंध झेल रही देश की वायुसेना भी पर्याप्त ताकतवर है। यह बात ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने कही है। वायुसेना कमांडरों को संबोधित करते हुए खामेनेई ने कहा, हम युद्ध छेड़ने के लिए मजबूत नहीं हैं बल्कि दुश्मनों की चुनौतियों का खात्मा करने के लिए मजबूत बने हैं। हम किसी को भी धमकाना नहीं चाहते। लेकिन किसी की धमकियों को बर्दाश्त भी नहीं करेंगे। राष्ट्र की सुरक्षा के लिए यह आवश्यक है। इराक की राजधानी बगदाद में ईरान के शीर्ष कमांडर सुलेमानी को अमेरिकी ड्रोन हमले में मारे जाने के बाद से ईरान और अमेरिका के बीच तनाव बढ़ा हुआ है। (एएफपी)

हाफिज के खिलाफ पाक की कोर्ट ने टाला फैसला

लाहौर : पाकिस्तान की एक अदालत ने मुंबई हमले के मास्टरमाइंड हाफिज सईद के खिलाफ आतंकी फंडिंग के दो मामलों में अपने फैसले को टाल दिया है। सईद ने अर्जी देकर फैसले को टालने की गुहार लगाई थी। लाहौर की आतंक रोधी अदालत (एटीसी) के जज अरशद हुसैन भट्ट ने जमात-उद-दावा के प्रमुख सईद के खिलाफ दोनों मामलों में गत हफ्ते अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। अदालत के एक अधिकारी ने बताया, 'एटीसी के जज ने शनिवार को हाफिज सईद की अर्जी को स्वीकार कर लिया। इसमें आतंकी फंडिंग के सभी मामलों को एक करने और सुनवाई पूरी होने के बाद फैसला सुनाए जाने का आग्रह किया है।' अधिकारी के अनुसार, अभियोजक ने सईद की अर्जी का विरोध किया और कहा कि दो मामलों में सुनवाई पूरी हो चुकी है और अदालत कानून के तहत फैसला सुना सकती है। इसके बाद अदालत ने मंगलवार तक के लिए सुनवाई स्थगित कर दी और सईद की अर्जी पर बहस के लिए अभियोजक और बचाव पक्ष के वकीलों को नोटिस जारी कर दिया। (प्रेट्र)

कजाखस्तान में जातीय संघर्ष, आठ की मौत, 40 घायल

मसांची : दक्षिण कजाखस्तान में शुक्रवार को जातीय गुटों में हुए संघर्ष में जहां आठ लोगों की मौत हो गई, वहीं दर्जनों लोग घायल हो गए। संघर्ष के दौरान उपद्रवियों ने आम लोगों की संपत्ति को आग के हवाले कर दिया। राष्ट्रपति कासिम जोमार्ट तोकेव ने किर्गिस्तान की सीमा के निकट हुई हिंसा के मामले में शनिवार को आपातकालीन सत्र बुलाया। साथ ही मामले की जांच के लिए आयोग का गठन भी कर दिया है। गृह मंत्री येरलान तुर्गुम्बेव ने राजधानी नूर-सुल्तान में कहा कि आठ लोगों की मौत हुई है और 40 से अधिक लोग घायल हुए हैं। माना जाता है कि यह संघर्ष कजाख और अल्पसंख्यक दुंगन्स के बीच हुआ है। दुंगन्स मुस्लिम हैं और इनकी रिहायश किर्गिस्तान, कजाखस्तान और पूर्वोत्तर चीन में है। उप प्रधानमंत्री बर्दिबेक सपरबयव अस्पताल में भर्ती लोगों से मिले और कहा कि दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा। (एएफपी)

चीन में कोरोना से पहली बार दो विदेशियों की मौत

महामारी ▶ मरने वालों में एक अमेरिकी महिला और एक जापानी पुरुष

चीन में मौत का आंकड़ा 700 के पार, अब तक लगभग 35,000 संक्रमित

बीजिंग, एजेंसियां : महामारी का रूप लेते जा रहे कोरोना वायरस से चीन के वुहान शहर में पहली बार दो विदेशी नागरिकों की मौत हुई है। इनमें अमेरिका की एक महिला और जापान का एक पुरुष शामिल है। इनको मिलाकर शनिवार तक चीन में मरने वालों की संख्या 723 हो गई है, जबकि 34,598 लोग इससे संक्रमित पाए गए हैं। यह आंकड़ा 2002-03 में सार्स नामक बीमारी से हुई 774 लोगों की मौत के करीब पहुंचते जा रहा है। चीन ने कहा है कि फिलहाल हुबेई में दवा समेत मेडिकल सामग्रियों की सप्लाई में सुधार हुआ है, लेकिन हालात जल्द काबू में नहीं हुए तो सप्लाई गड़बड़ा सकती है।

अमेरिकी दूतावास के प्रवक्ता ने शनिवार को अपने नागरिक की मौत की पुष्टि की है। प्रवक्ता ने कहा कि 60 साल की अमेरिकी महिला की छह फरवरी को वुहान के एक अस्पताल में मौत हो गई। वुहान में अधिकारियों ने कोरोना वायरस से किसी विदेशी नागरिक की मौत का यह पहला मामला बताया है। हालांकि, वुहान के अस्पताल में जापान के 60 साल के एक नागरिक की भी मौत हुई है। उसे निमोनिया की शिकायत पर अस्पताल में भर्ती कराया गया था, बाद में कोरोना वायरस के लक्षण भी उसमें पाए गए थे। जापान के विदेश मंत्रालय ने टोक्यो में इसकी घोषणा की। मंत्रालय ने कहा कि बीमारी की पहचान में मुश्किल के चलते जापानी व्यक्ति की मौत का कारण वायरल निमोनिया बताया गया है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के महानिदेशक टेड्रोस अदनोम घेब्रेयसस ने कहा है कि संगठन के विशेषज्ञों का एक दल जल्द ही चीन जाएगा। उन्होंने कहा कि दल के मुखिया के सोमवार या मंगलवार तक हुबेई पहुंच जाने की उम्मीद है, बाकी सदस्य उसके बाद जाएंगे। उन्होंने इस मिशन में अमेरिका के मेडिकल दल के शामिल होने की भी उम्मीद जताई। डब्ल्यूएचओ कोरोना वायरस को जल्द ही कोई नया नाम देने वाला है। हालांकि, नाम ऐसा होगा जिससे किसी जगह विशेष के नाम का संकेत नहीं मिलता हो। चीन ने फिलहाल इसे नोवेल कोरोनावायरस निमोनिया (एनसीपी) नाम दिया है। वहीं, जापान के तट के पास खड़े क्रूज में और तीन लोगों के कोरोना वायरस से संक्रमित पाया गया है। पहले क्रूज से 61 लोग पॉजिटिव मिले थे।

एक दिन में 86 मौतें : चीन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग ने शनिवार को कहा कि कोरोना वायरस से एक दिन में ही 86 लोगों की मौत हो गई है। इसमें सबसे ज्यादा वुहान में 81 लोग शामिल हैं। जबकि, 3,399 नए मामले सामने आए हैं।

फ्रांस में पांच ब्रिटिश नागरिक संक्रमित पाए गए : दुनिया भर में कोरोना वायरस का प्रकोप तेजी से फैल रहा है। अब तक 27 देश इसकी चपेट में आ गए हैं। पेरिस में फ्रांस की स्वास्थ्य मंत्री एग्नीस बजीन ने बताया कि आल्प में स्की रिसॉर्ट में ठहरे पांच ब्रिटिश नागरिक भी कोरोना वायरस से संक्रमित पाए गए हैं। फ्रांस में अब तक 11 लोगों में कोरोना वायरस की पुष्टि हुई है।

ट्रंप ने कहा -कोरोना वायरस पर अच्छा काम कर रहा चीन : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि कोरोना वायरस से निपटने में चीन बेहतर काम कर रहा है।

चीन के वुहान शहर में एक अस्पताल में कोरोना वायरस के संक्रमण से पीड़ित मरीज को आइसोलेशन वॉर्ड में लेकर जाते चिकित्सक। यहां संक्रमित होने वाले लोगों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ रही है। एपी

चीन से आने वालों को अलग रख रहा हांगकांग

हांगकांग ने चीन से आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अनिवार्य रूप से दो हफ्ते के लिए कोरंटाइन यानी अलग-अलग कमरों में भर्ती करना शुरू कर दिया है। प्रशासन को उम्मीद है कि इस कदम से चीन से हांगकांग आने वाले लोगों में कमी आएगी। इससे कोरोना वायरस के बढ़ते प्रकोप को रोकने में कामयाबी मिलने के साथ ही राशन पानी की कमी से भी नहीं जूझना पड़ेगा। शनिवार को अनिवार्य कोरंटाइन का असर भी दिखा। शुक्रवार को जहां चीन से हांगकांग 96 हजार से ज्यादा लोग आए थे, वहीं शनिवार को यह संख्या मात्र नौ हजार रह गई। प्रशासन पूरी तरह सतर्कता बरत रहा है।

महाराष्ट्र में चीन के नागरिक समेत छह लोगों की जांच रिपोर्ट निगेटिव

नई दिल्ली, एजेंसियां : कोरोना वायरस के प्रकोप को रोकने के लिए देश में अत्यधिक सतर्कता बरती जा रही है। केरल के तीन मामलों को छोड़कर अभी तक देश में कोरोना वायरस का कोई मामला सामने नहीं आया है। महाराष्ट्र में एक चीनी नागरिक समेत जिन छह लोगों को संदिग्ध मानकर अस्पताल में भर्ती कराया गया था, उनकी जांच रिपोर्ट भी निगेटिव आई है। इस बीच, नागरिक उड्डयन महानिदेशालय ने कहा है कि 15 जनवरी के बाद चीन की यात्रा करने वाले विदेशी नागरिकों को भारत में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जाएगी।

मुंबई में अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे पर शनिवार तक 18,084 लोगों की स्क्रीनिंग की गई। महाराष्ट्र के स्वास्थ्य मंत्री राजेश टोपे ने बताया कि 18 जनवरी के बाद से राज्य में 35 मामले संदिग्ध मिले थे, जिनके खून की जांच कराई गई। इनमें एक चीनी नागरिक भी शामिल है, जिसे पुणे के नायडू अस्पताल में भर्ती किया गया था। 31 वर्षीय चीनी नागरिक को दिल्ली से पुणे की उड़ान के दौरान उल्टी होने के बाद अस्पताल में भर्ती कराया गया था। चीनी नागरिक समेत इनमें से 30 लोगों की जांच निगेटिव आई है। जबकि, पांच लोगों की जांच रिपोर्ट अभी पुणे के राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान से नहीं मिली है। इस बीच, शनिवार की शाम को पुणे के नायडू अस्पताल में 26 साल के एक युवक को भर्ती कराया गया। यह युवक हाल ही में हांगकांग और सिंगापुर होते हुए फिलीपींस से भारत लौटा था। ब्राजीली वायु सेना के विमान ने वुहान से एक भारतीय को सुरक्षित निकाला है। राजनयिक सूत्रों ने ताया कि भारतीय को पोलैंड ले जाया गया है।

मलेशियाई हिंदुओं ने 'थाइपुसम' मनाया

बातू केव्स, एएफपी : 'कोरोना' के डर से बेअसर मलेशियाई हिंदू शनिवार को 'थाइपुसम' त्योहार मनाने के लिए देशभर के मंदिरों में बड़ी संख्या में जुटे। आयोजन में भाग लेने के लिए राजधानी कुआलालंपुर के बाहरी इलाके में स्थित भगवान मुरुगन के बातू गुफा मंदिर परिसर में भारी भीड़ उमड़ी। नंगे पैर 272 कदम चलने के बाद श्रद्धालु मंदिर पहुंचे। संक्रमण की आशंकाओं के बावजूद गुफा स्थल में श्रद्धालुओं की भीड़ कम नहीं थी।

पाक कोर्ट ने नाबालिग ईसाई लड़की के साथ शादी को वैध ठहराया

कराची, प्रेट्र : पाकिस्तान में अल्पसंख्यक समुदाय की लड़कियों का अपहरण करके उनका धर्म परिवर्तन कराकर शादी करने के मामले अक्सर सुनने को मिलते हैं। ताजा मामला एक 14 साल की ईसाई लड़की का है, जिसकी शादी को अदालत ने शरई कानून के मुताबिक वैध ठहराया है। कोर्ट ने फैसले में कहा है कि चूंकि लड़की का मासिक धर्म शुरू हो चुका है, इसलिए इस्लामी कानून के हिसाब से शादी जायज है। अब लड़की के माता-पिता इस फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील करेंगे।

लड़की के पिता यूनिस और मां नगीना मसीह के मुताबिक, 14 साल की हुमा का पिछले साल अक्टूबर में सिंध से अपहरण कर लिया गया था। बाद में अपहरणकर्ता अब्दुल जब्बार ने धर्म परिवर्तन कराकर उससे निकाह कर लिया। इसके खिलाफ लड़की के माता-पिता ने सिंध के हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। इसमें उन्होंने कहा था कि वे अपनी बेटी से मिलना चाहते हैं। उसे देखना चाहते हैं। जस्टिस मुहम्मद इकबाल कलहोरो और न्यायाधीश इरशाद अली की पीठ ने तीन फरवरी को दिए अपने आदेश में कहा कि यह ठीक है कि लड़की नाबालिग है, लेकिन उसका मासिक धर्म शुरू हो चुका है। ऐसे में इस्लामी कानून के मुताबिक अपहरणकर्ता अब्दुल जब्बार के साथ उसकी शादी पूरी तरह वैध है। कोर्ट ने लड़की की उम्र की पुष्टि के लिए पुलिस को जांच का भी आदेश दिया है। लड़की के परिजनों की वकील तबस्सुम युसूफ ने कहा कि जांच अधिकारियों ने अपहरणकर्ता का पक्ष लिया है। वह सुप्रीम कोर्ट से न्याय की मांग करेंगी। उन्होंने कहा कि फैसला सिंध बाल विवाह निरोधक अधिनियम 2014 के अनुकूल नहीं है। इस कानून के तहत 18 साल से कम उम्र की लड़कियों की शादी को वैध नहीं माना जा सकता है।

पाक में हिंदुओं का अपमान करने वाले पोस्टर के लिए नेता निलंबित

लाहौर, प्रेट्र : सत्ताधारी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआइ) पार्टी ने अपने लाहौर चैप्टर के महासचिव को निलंबित कर दिया है। पार्टी ने पोस्टर पर अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय को निशाना साधने वाले नारे का तीव्र विरोध होने के बाद यह कदम उठाया। शनिवार को मीडिया रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई।

मियां अकरम उस्मान ने कश्मीर एकजुटता दिवस के सिलसिले में पोस्टर लगाया था। पूरे देश में पांच फरवरी को कश्मीर एकजुटता दिवस मनाया गया था। पोस्टर पर 'हिंदू बात से नहीं लात से मानता है' नारा लिखा था। सोशल मीडिया पर इस नारे को लेकर उस्मान की आलोचना होने के बाद पार्टी ने पोस्टर के लिए माफी मांगी। ये पोस्टर लाहौर में सार्वजनिक स्थलों पर लगाए गए थे।

निलंबित करने के बाद उस्मान को भेजे गए कारण बताओ नोटिस में उल्लेख किया गया है कि पोस्टर पर लिखे गए शब्द पार्टी की नीतियों का उल्लंघन करते हैं। पार्टी के लाहौर अध्यक्ष जुहैर अब्बास खोखर ने यह नोटिस जारी किया। विशेष समिति अब इस मामले की जांच करेगी।

उस्मान ने कहा, मोदी की जगह हिंदू छाप दिया : उस्मान ने भड़काऊ पोस्टर के लिए प्रिंटर को दोषी ठहराया। उसने कहा कि वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधना चाहते थे। गलती से मोदी की जगह प्रिंटर ने हिंदू छाप दिया। उन्होंने ट्वीट किया, 'मैं सीमा के दोनों तरफ रहने वाले शांतिप्रिय हिंदुओं से माफी मांगता हूं। जैसे ही मेरे ध्यान में आया सभी पोस्टर हटा लिए गए। अकेले मेरी गलती नहीं है।'

कश्मीर एकजुटता दिवस पर लिखा था भड़काऊ नारा

पीटीआइ नेता मियां अकरम उस्मान। फाइल

थाइलैंड में सिरफिरे जवान ने ली 20 लोगों की जान

बैंकॉक, रायटर : थाइलैंड के नाकहोन रैचासीमा शहर में सेना के एक जवान की गोलीबारी में 20 लोगों की मौत हो गई है और 21 घायल हुए हैं। जाकरापंथ थोम्मा नाम का जवान फिलहाल पकड़ से बाहर है। अपुष्ट सूत्रों के अनुसार उसने शॉपिंग मॉल में लोगों को बंधक बना रखा है। गोलीबारी से पहले थोम्मा ने फेसबुक पर गन लिए फोटो पोस्ट की और लिखा- मौत सभी को बुला रही है। फेसबुक ने उसके अकाउंट को रद कर दिया है।

राजधानी बैंकॉक से करीब 250 किलोमीटर दूर उत्तर-पूर्वी शहर नाकहोन रैचासीमा में सैनिक ने कई स्थानों पर निर्दोष लोगों पर फायरिंग की। टर्मिनल 21 शॉपिंग मॉल के नजदीक उसकी फायरिंग से सबसे ज्यादा जनहानि हुई है। रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता कोंगचीप तंत्रावानी ने कहा कि जवान थोम्मा ऐसा क्यों कर रहा है, पता नहीं। शायद वह पागल हो गया है। स्थानीय न्यूज चैनलों में आए हमले के फुटेज से पता चलता है कि थोम्मा कार से शॉपिंग मॉल के करीब आकर रुका और उसने वहां पर गन से लोगों पर फायरिंग की।

160 देशों में प्रतिबंधित हथियारों को अब अपनाने लगा है अमेरिका

न्यूयॉर्क टाइम्स से

तैयार किए जा रहे क्लस्टर बम और एंटी-पर्सनल लैंड माइंस जैसे घातक हथियार

अमेरिकी रक्षा विभाग पेंटागन की भावी युद्ध योजनाओं का बनते जा रहे हैं अहम हिस्सा

वाशिंगटन : अमेरिका में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप इस वादे के साथ सत्ता में आए थे कि वह अंतहीन युद्धों को खत्म कर देंगे, लेकिन उनका प्रशासन अब उन हथियारों को अपना रहा है, जिन्हें दुनिया के 160 से ज्यादा देश प्रतिबंधित कर चुके हैं। क्लस्टर बम और एंटी-पर्सनल लैंड माइंस जैसे घातक हथियार भविष्य में इस्तेमाल के लिए तैयार किए जा रहे हैं। ये हथियार अमेरिकी रक्षा विभाग पेंटागन की भावी युद्ध योजनाओं का अहम हिस्सा बनते जा रहे हैं। हालांकि अभी ऐसा कोई ठोस औचित्य नहीं बताया गया है कि क्यों इनका इस्तेमाल किया जाएगा?

अमेरिकी रक्षा मंत्री मार्क एस्पर हथियार संबंधी इस तरह की नई नीतियों का समर्थन करते हैं। इस बदलाव पर उस समय से गौर किया जा सकता है, जब वर्ष 2017 में जिम मैटिस रक्षा मंत्री थे। उस समय आए एक सैन्य रणनीति मसौदे में रूस और चीन को अमेरिका का प्रमुख प्रतिद्वंद्वी बताया गया था। इन दोनों के पास उल्लेखनीय थल सेना है और युद्ध के मैदान में दुश्मन सेनाओं को रोकने के लिए बारूदी सुरंगों का इस्तेमाल किया था। पेंटागन के प्रवक्ता जोनाथन हॉफमैन ने गत सोमवार को पत्रकारों से कहा कि विभिन्न रक्षा शाखाओं के साथ व्यापक चर्चा के परिणामस्वरूप नीति में बदलाव किया जा रहा है। हालांकि उन्होंने यह बताने से इन्कार कर दिया कि किसके कहने पर नीति बदली जा रही है।

रक्षा विभाग के पूर्व अधिकारियों ने बताया कि रूस के हमले और यूक्रेन से क्रीमिया को अलग करने की घटना के विश्लेषण के दौरान प्रशासन में लैंड माइंस और दूसरे उन हथियारों पर बहस छिड़ी थी, जिनको मना किया जा चुका था। नवंबर, 2017 में मैटिस ने 2008 के एक मेमो को रद कर दिया था। इस मेमो में लगभग सभी क्लस्टर हथियारों के उपयोग पर रोक लगाने और इनके जखीरे को नष्ट करने का आदेश दिया गया था।

1997 में हुई थी ओटावा संधि

एंटी-पर्सनल लैंड माइंस पर प्रतिबंध लगाने के लिए 1997 में ओटावा संधि हुई थी। उस समय इस पर 120 देशों ने हस्ताक्षर किए थे। अब 164 देश इस संधि का हिस्सा हैं। इस संधि को अमेरिका, रूस और चीन जैसे देशों ने नहीं अपनाया है।

चिंताजनक

हैकिंग ग्रुप अवरमाइन ने दिया अंजाम, गूगल, फेसबुक और ट्विटर के सीईओ का अकाउंट भी कर चुके हैं हैक

फेसबुक के ट्विटर, इंस्टाग्राम और मैसेंजर अकाउंट हैक

सैन फ्रांसिस्को, एजेंसियां : दुनिया की सबसे बड़ी सोशल मीडिया साइट फेसबुक के ट्विटर, इंस्टाग्राम और मैसेंजर अकाउंट को हैक किए जाने की खबर है। इसे हैकिंग ग्रुप 'अवरमाइन' ने अंजाम दिया है। हालांकि अब सभी अकाउंट को री-स्टोर कर लिया गया है। बता दें कि अवरमाइन ग्रुप इससे पहले गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई, फेसबुक के सीईओ मार्क जुकरबर्ग और ट्विटर के सीईओ जैक डॉर्सी का अकाउंट हैक कर चुका है।

हैकर्स ने थर्ड पार्टी प्लेटफार्म के जरिये इंस्टाग्राम पर फेसबुक के अकाउंट को हैक किया और हैकर्स के ग्रुप की एक तस्वीर पोस्ट की। अवरमाइन ने फेसबुक के ट्विटर अकाउंट को हैक करके पोस्ट किया, 'हाय, हम लोग अवरमाइन हैं। अच्छा, फेसबुक को भी हैक किया जा सकता है, लेकिन इसकी सिक्योरिटी कम-से-कम ट्विटर से अच्छी है। माइक्रो ब्लागिंग साइट ट्विटर के प्रवक्ता ने हैक होने की पुष्टि की है। एक ई-मेल बयान में उन्होंने बताया, 'अकाउंट को एक थर्ड पार्टी प्लेटफार्म ने हैक कर लिया था। कंपनी ने थर्ड पार्टी प्लेटफार्म का नाम तो नहीं बताया है, लेकिन सोशल मीडिया मैनेजमेंट टूल 'कोरोस (केएचओआरओएस)' द्वारा किए गए ट्वीट के स्क्रीनशॉट शेयर किए हैं। कोरोस डिजिटल मार्केटिंग और पीआर विभागों द्वारा सोशल मीडिया अकाउंट का प्रबंधन करने के लिए उपयोग की जाने वाली एक वेब सेवा है। इतना ही नहीं यह सोशल मीडिया अकाउंट को थर्ड पार्टी एप से जोड़ता है।

ट्विटर के प्रवक्ता ने कहा कि जैसे ही हमें अकाउंट हैक होने के बारे में बताया गया, हमने उसे लॉक कर दिया।' फेसबुक ने भी शुक्रवार को अपने आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट हैक होने की पुष्टि की। फेसबुक के प्रवक्ता जो ओसबोर्न ने कहा, 'हमारे कुछ कॉरपोरेट सोशल अकाउंट को थोड़े समय के लिए हैक कर लिया गया था, लेकिन बाद में इस दिक्कत को ठीक कर लिया गया।' अवरमाइन ग्रुप साल 2016 से एक्टिव है। कहा जाता है कि इस ग्रुप में दुबई के कुछ किशोर हैं। फेसबुक अकाउंट को ठीक उसी तरह हैक किया गया है, जिस तरह पिछले महीने नेशनल फुटबाल लीग का अकाउंट हैक किया गया था।

अवरमाइन दुबई का हैकिंग ग्रुप है। प्रतीकात्मक

वैश्विक गड़बड़ी के बाद ट्विटर फिर से हुआ ऑनलाइन

वाशिंगटन, रायटर : एप, वेबसाइट और ट्विटर डेक से ट्वीट भेजने में आने वाली वैश्विक परेशानी के बाद शनिवार को ट्विटर फिर से ऑनलाइन हो गया। एक ट्वीट में कंपनी ने कहा, अब आप दोबारा ट्वीट कर सकते हैं। तकनीकी दिक्कत को दूर कर लिया गया है। हमारे साथ जुड़ने के लिए आप सभी का धन्यवाद।' बता दें कि शुक्रवार दोपहर एक बजे ट्विटर ऑफलाइन हो गया था। दुनियाभर के लगभग दस हजार यूजर्स ने शिकायत दर्ज कराई थी कि वे सोशल मीडिया का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। वहीं कुछ यूजर्स का कहना था कि ट्विटर की टाइमलाइन तो काम कर रही है, लेकिन ट्वीट नहीं जा रहे हैं।

ट्रंप ने महाभियोग में गवाही देने वाले दो अफसरों को हटाया

वाशिंगटन, प्रेट्र : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने महाभियोग प्रक्रिया के दौरान अपने खिलाफ गवाही देने वाले दो अफसरों को हटा दिया है। दोनों ने अमेरिकी संसद के निचले सदन प्रतिनिधि सभा की समिति के समक्ष महाभियोग मामले में ट्रंप के खिलाफ गवाही दी थी। बता दें कि तीन दिन पहले ही अमेरिकी संसद के उच्च सदन सीनेट ने ट्रंप को महाभियोग के सभी आरोपों से बरी कर दिया था।

अधिकारियों की इस हिमाकत से चिढ़े ट्रंप ने राहत पाते ही यूरोपीय संघ में अमेरिका के राजदूत गोर्डन सोंडलैंड और राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद (एनएससी) में यूक्रेन मामलों के विशेषज्ञ लेफ्टिनेंट कर्नल एलेक्जेंडर विंडमैन को बर्खास्त कर दिया। विंडमैन और सोंडलैंड डेमोक्रेट्स के बहुमत वाली प्रतिनिधि सभा में महाभियोग की जांच के दौरान मुख्य गवाह थे। इससे पहले सोडलैंड ने कहा था, 'राष्ट्रपति ट्रंप यूरोपीय संघ में बतौर अमेरिकी राजदूत मुझे तत्काल वापस बुलाना चाहते हैं।' वहीं विंडमैन के वकील ने कहा कि लेफ्टिनेंट कर्नल को सच बोलने के लिए पद से हटाया गया है। बता दें कि विंडमैन को हटाए जाने से कुछ देर पहले राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा, 'मैं चाहता हूं कि विंडमैन चले जाएं। अगर कोई यह सोचता है कि मैं उनसे खुश हूं तो ऐसा बिल्कुल नहीं है।'

ह्वाइट हाउस ने महाभियोग मामले से जुड़े इन दो अधिकारियों की बर्खास्तगी पर अभी कोई टिप्पणी नहीं की है। ह्वाइट हाउस ने विंडमैन के जुड़वा भाई लेफ्टिनेंट कर्नल येवगेनी विंडमैन को भी पद से हटा दिया है। दोनों ह्वाइट हाउस की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद का हिस्सा थे।

यूरोपीय संघ में अमेरिका के राजदूत गोर्डन सोंडलैंड और एनएससी के सदस्य विंडमैन को बर्खास्त किया

मेरे सामने महिला हॉकी में काफी बदलाव आया। मैं इस बदलाव की गवाह बनकर बेहद खुश हूं।
— रानी रामपाल, भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान

मौजूदा पीढ़ी में सिर्फ कोहली ही दिग्गज बनने लायक : मोइन

कराची, प्रेट्र : पाकिस्तान के पूर्व विकेटकीपर बल्लेबाज मोइन खान का मानना है कि भारतीय कप्तान विराट कोहली मौजूदा पीढ़ी के बल्लेबाजों में अकेले हैं जो कई रिकॉर्ड तोड़कर दिग्गज बन सकते हैं। उन्होंने कहा, 'मेरा मानना है कि कोहली मौजूदा पीढ़ी के एकमात्र बल्लेबाज हैं जो कई रिकॉर्ड तोड़कर एक दिग्गज बन सकते हैं। महेंद्र सिंह धौनी ने भारतीय क्रिकेट का चेहरा बदल दिया।

रिकॉर्ड पांचवें खिताब पर होगी युवाओं की नजर

भारत और बांग्लादेश के बीच आज होगी खिताबी भिड़ंत, यशस्वी और कार्तिक से होंगी उम्मीदें, इतिहास रचना चाहेगी पड़ोसी देश की टीम

अंडर-19 विश्व कप

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: गत चैंपियन भारत पहली बार फाइनल में पहुंचे बांग्लादेश के खिलाफ दक्षिण अफ्रीका के पोचेफ्रस्ट्रूम में रविवार को अंडर-19 विश्व कप फाइनल में रिकॉर्ड पांचवीं बार खिताब जीतने के प्रबल दावेदार के रूप में उतरेगा। भारत की 2018 की विजेता टीम में पृथ्वी शॉ और शुभमन गिल थे जो सीनियर टीम में जगह बनाने में कामयाब रहे तो मौजूदा टीम में यशस्वी जायसवाल, स्पिनर रवि बिश्नोई और तेज गेंदबाज कार्तिक त्यागी हैं जो इस टूर्नामेंट में स्टार बन गए। फाइनल का नतीजा चाहे जो भी निकले, भारत ने अंडर 19 स्तर पर अपना दबदबा स्थापित कर दिया है।

सातवां फाइनल खेलेगी भारतीय टीम: सेमीफाइनल में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को 10 विकेट से हराने वाली भारतीय टीम 2000 के बाद सातवां फाइनल खेलेगी जब उसने पहला खिताब जीता था। अंडर-19 स्तर पर सफलता सीनियर स्तर पर कामयाबी की गारंटी नहीं होती क्योंकि सभी खिलाड़ी जूनियर से सीनियर स्तर के बदलाव में लय कायम नहीं रख पाते। उन्मुक्त चंद इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं, जो 2012 में अंडर-19 खिताब दिलाने के बाद सीनियर टीम में जगह नहीं बना सके। हालत यह है कि अब उत्तराखंड की रणजी टीम में भी वह अंतिम एकादश में जगह बनाने के लिए जूझ रहे हैं। दूसरी ओर शॉ और शुभमन गिल ने सीनियर स्तर पर भी पहचान बनाई।

भारत ने हर बार उतारी नई टीम : भारत ही संभवतः ऐसी टीम है जिसने हर अंडर-19 विश्व कप में नई टीम उतारी है क्योंकि यहां प्रतिभाओं की कमी नहीं है और बुनियादी ढांचा दुरुस्त है। भारत के अंडर-19 क्षेत्ररक्षण कोच अभय शर्मा ने कहा कि टीम की सफलता का सबसे बड़ा कारण है कि हम एक क्रिकेटर को एक ही विश्व कप खेलने देते हैं। दूसरी टीमों में ऐसे क्रिकेटर हैं जो पिछला विश्व कप भी खेले हैं। भारतीय टीम ने विश्व कप से पहले दुनिया भर में 30 मैच खेले। दक्षिण अफ्रीका के हालात में ढलने के लिए श्रीलंका और मेजबान के खिलाफ त्रिकोणीय सीरीज भी खेली।

एक बार फिर सामने बांग्लादेश : फाइनल में भारत का सामना बांग्लादेश से होगा जो पिछली बार क्वार्टर फाइनल में हार गई थी। ध्रुव जुरेल की अगुआई में भारतीय टीम ने एशिया कप में और प्रियम गर्ग की अगुआई में इंग्लैंड में त्रिकोणीय सीरीज में बांग्लादेश को हराया था। शर्मा ने कहा कि बांग्लादेश बहुत अच्छी टीम है। हम उसे हल्के में नहीं लेंगे। वहीं बांग्लादेश के कोच अकबर अली ने सेमीफाइनल के बाद कहा था कि हम अनावश्यक दबाव नहीं लेना चाहते। भारत के खिलाफ हमें तीनों विभागों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा। मैं अपने प्रशंसकों से कहूंगा कि हमारे लिए दुआ करते रहें। उम्मीद है कि हम भारतीय टीम को हराने में सफल होंगे।

भारतीय अंडर-19 क्रिकेट टीम के सदस्य • फेसबुक

दोपहर 1:30 बजे से स्टार स्पोर्ट्स

> वैसे ही दम दिखाते रहिए जैसा आप हमेशा दिखाते आए हैं। कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपके सामने कौन सी विपक्षी टीम है, बस धुंआ उड़ा दो।
> **रिद्धिमान साहा**, भारतीय विकेटकीपर

> मैं आप लोगों को यही कहना चाहता हूं कि अभी तक जो करते आए हैं वही कीजिएगा। फाइनल का अतिरिक्त दबाव मत लीजिएगा। अपना नैसर्गिक खेल खेलिए और मुझे पूरी उम्मीद है कि आप कप घर लेकर आएंगे।
> **चेतेश्वर पुजारा**, भारतीय बल्लेबाज

> जिस तरह खेलते आए हैं उसी तरह खेलिए। हम सब आपका समर्थन करते हैं। पूरा देश आपके साथ है।
> **अजिंक्य रहाणे**, भारतीय बल्लेबाज

> यह एक बड़ा मौका है और इसका पूरा लुत्फ उठाइए। बहुत शुभकामनाएं।
> **विजय शंकर**, भारतीय ऑलराउंडर

मंडेला चौक घूमने पहुंची भारतीय टीम

जोहानिसबर्ग : भारत की अंडर-19 टीम विश्व कप फाइनल से पहले दो दिन का ब्रेक लेकर नेलसन मंडेला चौक और जोहानिसबर्ग में गोल्ड रीफ सिटी घूमने गई। टीम के क्षेत्ररक्षण कोच अभय शर्मा ने कहा कि खिलाड़ियों को ऑस्ट्रेलिया और पाकिस्तान के खिलाफ दो दबाव वाले मैचों के बाद यह ब्रेक दिया गया। शर्मा ने कहा कि अधिकांश खिलाड़ी पहली बार दक्षिण अफ्रीका आए हैं। हमें लगा कि उन्हें ब्रेक देकर घुमाना चाहिए। उनके लिए यह बेहतरीन अनुभव रहा। टीम ने साथ में लंच भी किया। इसके बाद शुक्रवार को लंबे अभ्यास सत्र में भाग लिया। इसमें क्षेत्ररक्षण पर खास तवज्जो दी गई। शर्मा ने कहा कि टीम में सभी को अपनी भूमिका पता है और प्रदर्शन में इसकी झलक मिल रही है। भारतीय टीम के साथ मुख्य कोच पारस महांब्रे और बल्लेबाजी कोच ऋषिकेश कानितकर भी हैं। उन्होंने बताया कि भारतीय टीम ने पाकिस्तान के खिलाफ मैच से पहले मानसिक रूप से खुद को कैसे तैयार किया। उन्होंने कहा कि भारत और पाकिस्तान का मैच हमेशा बड़ा होता है और दबाव रहता ही है। जज्बातों का सैलाब उमड़ता है और ऐसे में सहयोगी स्टाफ की भूमिका अहम होती है। मैने उस घबराहट को भांपा और मैच से पहले संयमित होने के लिए दो मिनट का सत्र लिया।

भारतीय अंडर-19 क्रिकेट टीम के सदस्य गुरुवार को जोहानिसबर्ग घूमने गए • फेसबुक

भारतीय महिला टीम ने ऑस्ट्रेलिया को हराया

मेलबर्न, प्रेट्र: स्मृति मंधाना के अर्धशतक के दम पर भारत ने आखिरकार बल्लेबाजी में फॉर्म हासिल करते हुए ऑस्ट्रेलिया को शनिवार को सात विकेट से हराकर त्रिकोणीय टी-20 सीरीज के फाइनल में प्रवेश की उम्मीदें बरकरार रखी हैं। ऑस्ट्रेलिया ने पांच विकेट पर 173 रन बनाए जिसमें एशले गॉर्डनर के 57 गेंद में 93 रन शामिल हैं। मेग लेनिंग ने 22 गेंद में 37 रन बनाए। भारत ने लक्ष्य 19.4 ओवर में हासिल कर लिया।

सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा ने 28 गेंद में 49 रन और मंधाना ने 48 गेंद में 55 रन बनाए। इस जीत के साथ भारत अंकतालिका में इंग्लैंड के बाद दूसरे स्थान पर है। ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बीच रविवार को होने वाले आखिरी लीग मैच से पता चलेगा कि फाइनल किन टीमों के बीच होगा। दो बार नाकाम रहने के बाद 16 वर्ष की शेफाली ने भारत को शानदार शुरुआत दी। उन्होंने अपनी पारी में आठ चौके और एक छक्का लगाया। शेफाली को एलिसा पेरी ने निकोला कारे के हाथों लपकवाया। उसके बाद जेमिमाह रोड्रिगज ने 19 गेंद में पांच चौको की मदद से 30 रन बनाए। कप्तान हरमनप्रीत कौर 20 गेंद में 20 रन बनाकर नाबाद रही। मंधाना 19वें ओवर में कारे की गेंद पर पगबाधा आउट हुई। इससे पहले ऑस्ट्रेलियाई पारी का आकर्षण गार्डनर रही जिन्होंने अपनी पारी में 11 चौके और तीन छक्के लगाए। भारत के लिए दीप्ति शर्मा ने दो विकेट लिए।

भारत-ए और न्यूजीलैंड-ए के बीच दूसरे दिन का खेल धुला

लिंकन, प्रेट्र : भारत-ए और न्यूजीलैंड-ए के बीच चार दिवसीय अनधिकृत टेस्ट के दूसरे दिन बारिश के कारण एक भी गेंद नहीं फेंकी जा सकी। न्यूजीलैंड का स्कोर 90 ओवर में पांच विकेट पर 276 रन है।

एक नजर में

पाकिस्तान को बढ़त

रावलपिंडी: बाबर आजम (नाबाद 143) और शान मसूद (100) की शतकीय पारियों के दम पर पाकिस्तान ने यहां रावलपिंडी क्रिकेट स्टेडियम में खेले जा रहे पहले टेस्ट मैच के दूसरे दिन बांग्लादेश पर 109 रनों की बढ़त बनाई। बांग्लादेश ने अपनी पहली पारी में 233 रन बनाए। जवाब में पाकिस्तान ने दूसरे दिन शनिवार का अंत तीन विकेट के नुकसान पर 342 रनों के साथ करते हुए अच्छी बढ़त ले ली। आजम के साथ अशद शफीक 60 रन बनाकर खेल रहे हैं। (प्रेट्र)

भारतीय हॉकी टीम जीती

भुवनेश्वर: भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने शनिवार को यहां एफआइएच प्रो लीग मैच में विश्व चैंपियन बेल्जियम को 2-1 से हराकर उलटफेर भरी जीत हासिल की। मंदीप सिंह ने मैच के दूसरे ही मिनट में गोल दागा। इसके बाद गौतियर बोकार्ड ने 33वें मिनट में पेनाल्टी कॉर्नर से गोल कर दुनिया की नंबर एक टीम को 1-1 की बराबरी पर ला दिया। घरेलू टीम के लिए रमनदीप सिंह का 47वें मिनट में किया गया गोल निर्णायक रहा जो उन्होंने पेनाल्टी कॉर्नर से किया। दोनों टीमें अब रविवार को फिर एक-दूसरे के आमने-सामने होंगी। (प्रेट्र)

स्कोर बोर्ड

टॉस : भारत (गेंदबाजी) — मैन ऑफ द मैच : काइली जेमिसन

न्यूजीलैंड 273/8 (50 ओवर)

	रन	गेंद	चौके	छक्के
मार्टिन गुप्टिल रन आउट	79	79	08	03
निकोल्स एलबीडब्ल्यू बो. चहल	41	59	05	00
टॉम ब्लंडेल का. सैनी बो. शार्दुल	22	25	03	00
रॉस टेलर नाबाद	73	74	06	02
टॉम लाथम एलबीडब्ल्यू बो. जडेजा	07	14	00	00
जिमी नीशाम रन आउट	03	05	00	00
डि ग्रैंडहोम का. अय्यर बो. शार्दुल	05	08	01	00
मार्क चैपमैन का. एवं बो. चहल	01	02	00	00
टिम साउथी का. सैनी बो. चहल	03	10	00	00
काइली जेमिसन नाबाद	25	24	01	02

अतिरिक्त : (बा-4, लेबा-4, वा-6) 14
कुल : 50 ओवर में आठ विकेट पर 273 रन

विकेट पतन : 1-93 (निकोल्स, 16.5), 2-142 (ब्लंडेल, 26.3), 3-157 (गुप्टिल, 29.2), 4-171 (लाथम, 33.1), 5-175 (नीशाम, 34.2), 6-185 (डि ग्रैंडहोम, 36.6), 7-187 (चैपमैन, 37.4), 8-197 (साउथी, 41.3)

गेंदबाजी: शार्दुल ठाकुर 10-1-60-2, जसप्रीत बुमराह 10-0-64-0, नवदीप सैनी 10-0-48-0, युजवेंद्रा सिंह चहल 10-0-58-3, रवींद्र जडेजा 10-0-35-1

भारत 251 (48.3 ओवर)

	रन	गेंद	चौके	छक्के
पृथ्वी शॉ बो. जेमिसन	24	19	06	00
मयंक अग्रवाल का. टेलर बो. बेनेट	03	05	00	00
विराट कोहली बो. साउथी	15	25	01	00
श्रेयस अय्यर का. लाथम बो. बेनेट	52	57	07	01
लोकेश राहुल बो. ग्रैंडहोम	04	08	00	00
जाधव का. निकोल्स बो. साउथी	09	27	01	00
जडेजा का. ग्रैंडहोम बो. नीशाम	55	73	02	01
शार्दुल ठाकुर बो. ग्रैंडहोम	18	15	03	00
नवदीप सैनी बो. जेमिसन	45	49	05	02
युजवेंद्रा सिंह चहल रन आउट	10	12	01	00
जसप्रीत बुमराह नॉटआउट	00	01	00	00

अतिरिक्त : (लेबा-4, वा-12) 16

कुल : 48.3 ओवर में 251 रनों पर सभी आउट

विकेट पतन : 1-21 (मयंक, 2.3), 2-34 (शॉ, 4.6), 3-57 (कोहली, 9.4), 4-71 (राहुल, 13.2), 5-96 (जाधव, 20.5), 6-129 (अय्यर, 27.3), 7-153 (शार्दुल, 31.1), 8-229 (सैनी, 44.3), 9-251 (चहल, 47.5)

गेंदबाजी: बेनेट 9-0-58-2, टिम साउथी 10-1-41-2, काइली जेमिसन 10-1-42-2, कोलिन डि ग्रैंडहोम 10-1-54-2, जिमी नीशाम 9.3-0-52-1

परिणाम : न्यूजीलैंड 22 रनों से जीता

वनडे में उतरी टी-20 की खुमारी

दूसरे मैच में न्यूजीलैंड से हारी भारतीय टीम, भारत ने गंवाई वनडे सीरीज

ऑकलैंड, प्रेट्र : पांच मैचों की टी-20 सीरीज में न्यूजीलैंड का सूपड़ा साफ करने वाली भारतीय टीम की खुमारी वनडे में उतर गई। पहले वनडे में 347 रन बनाने के बावजूद मैच गंवाने वाली भारतीय टीम शनिवार को दूसरे वनडे में 274 रनों का लक्ष्य नहीं हासिल कर सकी। अब न्यूजीलैंड ने तीन मैचों की सीरीज में 2-0 की अपराजेय बढ़त ले ली है। गेंदबाज नवदीप सैनी और रवींद्र जडेजा ने मैच का रुख मोड़ने की कोशिश की लेकिन असफल रहे।

रॉस टेलर के नाबाद अर्धशतक के बाद गेंदबाजों के दमदार प्रदर्शन की बदौलत न्यूजीलैंड ने दूसरे वनडे में भारत को 22 रन से हरा दिया। न्यूजीलैंड ने पहले खेलते हुए आठ विकेट पर 273 रन बनाए जिसके बाद भारतीय टीम 48.1 ओवर में 251 रन ही बना सकी। भारत को सीरीज के पहले वनडे में चार विकेट से शिकस्त झेलनी पड़ी थी। सीरीज का तीसरा और अंतिम वनडे 11 फरवरी को माउंट माउंगानुई में खेला जाएगा।

न्यूजीलैंड की सधी शुरुआत : मेजबान टीम ने भारतीय गेंदबाजों के सामने सधी शुरुआत की। ओपनर मार्टिन गुप्टिल (79) और हेनरी निकोल्स (41) ने पहले विकेट के लिए 93 रनों की साझेदारी की। एक समय न्यूजीलैंड ने तीन विकेट पर 157 रन बना लिए थे लेकिन 40 रनों पर उसने अगले पांच विकेट गंवा दिए। इसके बाद टेलर ने वनडे क्रिकेट में पदार्पण करने वाले काइली जेमिसन के साथ नौवें विकेट के लिए 51 गेंदों पर 76 रनों की साझेदारी की। टेलर 74 गेंद में छह चौकों और दो छक्कों के साथ 73 रन बनाकर नाबाद रहे। जेमिसन ने 24 गेंद में नाबाद 25 रन बनाए। इन दोनों ने आखिरी पांच ओवर में 53 रन बनाए। भारत ने इस मैच में कुलदीप यादव और मुहम्मद शमी की जगह युजवेंद्रा सिंह चहल और सैनी को मौका दिया। चहल ने तीन और शार्दुल ठाकुर ने दो विकेट लिए।

भारत शीर्ष क्रम फेल : लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत का शीर्ष और मध्य क्रम फेल रहा। उसके दो विकेट 34 रन पर ही गिर गए। मयंक अग्रवाल (3) को बेनेट की गेंद पर टेलर ने लपका जबकि पृथ्वी शॉ को छह फुट आठ इंच लंबे जेमिसन ने बोल्ड किया। यह मैन ऑफ द मैच जेमीसन का पहला अंतरराष्ट्रीय विकेट रहा। इसके बाद विराट कोहली (15) को टिम साउथी ने बोल्ड किया। लोकेश राहुल (4) पांचवें नंबर पर बल्लेबाजी करने उतरे लेकिन खास नहीं कर सके। फिर केदार जाधव (9) को भी साउथी की गेंद पर हेनरी निकोल्स ने लपक लिया और भारत का स्कोर पांच विकेट पर 96 रन हो गया। श्रेयस अय्यर ने 57 गेंदों की अपनी पारी में सात चौके और एक छक्का लगाया। उन्हें हामिश बेनेट ने विकेट के पीछे टॉम लाथम के हाथों कैच कराया।

सैनी और जडेजा ने वापस लौटाया रोमांच : जब लग रहा था कि भारत आसानी से यह मैच हार जाएगा तो ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा (55) और युवा तेज गेंदबाज नवदीप सैनी (45) ने आठवें विकेट के लिए ताबड़तोड़ 76 रन जोड़े। दोनों ने टीम को जीत के करीब पहुंचा दिया लेकिन जिता नहीं सके। जडेजा ने 73 गेंदों की पारी में दो चौके एक छक्का लगाया जबकि सैनी का नया रूप दिखाई दिया। उन्होंने 49 गेंदों की पारी में पांच चौके और दो छक्के लगाए। जब वह चौके-छक्के लगा रहे थे तो भारतीय ड्रेसिंग रूम में कोहली उछल रहे थे। उन्हें और भारतीय प्रशंसकों को लग रहा था कि ये दोनों कुछ आश्चर्यजनक कर देंगे लेकिन सैनी के गलत शॉट खेलकर जेमिसन की गेंद पर आउट होने से खेल फिर पलट गया। इसी कारण जेमिसन मैन ऑफ द मैच बने। वहीं मैच के बाद धीमी ओवर गति के कारण रेफरी क्रिस ब्रॉड ने मेजबान टीम पर 60 प्रतिशत का जुर्माना लगाया।

पृथ्वी शॉ को आउट करने के बाद जोश में न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज काइली जेमिसन • एपी

7 नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए सातवां अर्धशतक लगाया रवींद्र जडेजा ने। ऐसा करके उन्होंने महेंद्र सिंह धौनी और कपिल देव को पछाड़ दिया, जिन्होंने इस नंबर पर छह-छह अर्धशतक लगाए

6 बार विराट कोहली को वनडे में न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज टिम साउथी आउट कर चुके हैं जबकि सभी प्रारूपों में मिलाकर नौवीं बार साउथी ने भारतीय कप्तान का विकेट लिया। ऐसा करके साउथी कोहली को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे ज्यादा बार आउट करने वाले गेंदबाज बने। जेम्स एंडरसन और ग्रीम स्वान ने आठ-आठ बार ऐसा किया था

2019 विश्व कप के बाद भारतीय टीम पहली बार कोई सीरीज हारी है। तब से भारत ने 13 द्विपक्षीय सीरीज खेली, जिसमें 11 में जीत दर्ज की और एक ड्रॉ रही

25 रन नाबाद बनाए काइली जेमिसन ने अपने पदार्पण मैच में। 10वें नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए भारत के खिलाफ किसी खिलाड़ी का पदार्पण मैच में यह दूसरा सर्वश्रेष्ठ स्कोर है

4000 वनडे रन घरेलू मैदान में बनाने वाले बल्लेबाज बने गुप्टिल। उन्होंने 92वीं वनडे पारी में यह आंकड़ा छुआ। सचिन तेंदुलकर ने भी इतनी ही पारियों में भारत में वनडे में 4000 रन पूरे किए थे। इस सूची में शीर्ष पर कोहली हैं जिन्होंने केवल 78 वनडे पारियों में ही घरेलू मैदान पर 4000 रन पूरे किए थे। न्यूजीलैंड के रॉस टेलर ने 97 और टीम इंडिया के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धौनी ने यह मुकाम 99 पारियों में हासिल किया

न्यूजीलैंड के फील्डिंग कोच उतरे मैदान पर

ऑकलैंड: इस मैच में एक रोचक वाकया देखने को मिला। भारतीय पारी का 37वां ओवर शुरू हुआ तो मैदान पर पूर्व क्रिकेटर और न्यूजीलैंड के मौजूदा फील्डिंग कोच ल्यूक रोंची दिखाई दिए। वह फील्डिंग कर रहे थे। पारी के 36वें ओवर के आखिर में मिशेल सैंटनर के पेट में दिक्कत हुई, जिससे उन्हें मैदान छोड़कर जाना पड़ा और उनकी जगह ल्यूक रोंची मैदान पर उतरे। दरअसल, न्यूजीलैंड के कई खिलाड़ी फिटनेस की समस्य से जूझ रहे हैं। जहां नियमित कप्तान केन विलियमसन चोट की वजह से बाहर हैं।

लगातार तीसरे मैच में बुमराह विकेट लेने में फेल

ऑकलैंड : भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को दूसरे वनडे में भी विकेट नहीं मिला। उन्होंने 10 ओवर में 64 रन दिए लेकिन विकेट नहीं ले सके। यह बुमराह का लगातार तीसरा वनडे रहा जिसमें उन्हें कोई विकेट नहीं मिला। बुमराह के साथ ऐसा पहली बार हुआ है कि लगातार तीन वनडे में उन्हें कोई विकेट नहीं मिला। इससे पिछले वनडे में न्यूजीलैंड के खिलाफ ही उन्होंने हैमिल्टन में 10 ओवर में 53 रन दिए लेकिन विकेट नहीं मिल सका। वह मुकाबला भारत 347 रन बनाकर हार गया था। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बेंगलुरु में खेले गए सीरीज के तीसरे और अंतिम वनडे में भी वह कोई विकेट नहीं ले सके थे। इसी साल 19 जनवरी को खेले गए उस वनडे में बुमराह ने 10 ओवर में केवल 38 रन दिए, लेकिन विकेट नहीं ले सके। भारत ने उस मुकाबले को सात विकेट से जीता था।

इस साल वनडे का महत्व नहीं : कोहली

ऑकलैंड, प्रेट्र: शानदार लय में चल रही भारतीय टीम को तीन मैचों की वनडे सीरीज के दूसरे मुकाबले में शनिवार को न्यूजीलैंड ने 22 रन से हराकर 2-0 की अजेय बढ़त हासिल कर ली। जिसके बाद भारतीय कप्तान विराट कोहली ने कहा कि इस साल वनडे मैचों का ज्यादा महत्व नहीं है।

टी-20 सीरीज में शानदार जीत दर्ज करने वाली भारतीय टीम के कप्तान ने इस साल खेले जाने वाले टी-20 विश्व कप और टेस्ट चैंपियनशिप की ओर इशारा करते हुए कहा कि प्रशंसकों के नजरिए से पिछले दोनों मुकाबले शानदार रहे। हमने इस मैच को जिस तरह खत्म किया, उससे प्रभावित हूं। गेंदबाजी करते समय हमने अच्छी स्थिति को हाथ से जाने दिया। मुझे लगता है नवदीप सैनी और रवींद्र जडेजा ने शानदार जज्बा दिखाया। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि इस साल वनडे का उतना महत्व नहीं है जितना टी-20 और टेस्ट मैचों का है।

टी-20 विश्व कप इस साल अक्टूबर में होगा और भारतीय टीम इस साल ज्यादा वनडे मुकाबले नहीं खेल रही है। इस सीरीज के बाद टीम को दक्षिण अफ्रीका के साथ तीन मैचों की वनडे सीरीज खेलनी है जो 2020 की उनकी आखिरी वनडे सीरीज होगी।

> पिछले मैच में बल्लेबाजों ने हमें जीत दिलाई और शनिवार को गेंदबाजों ने यह काम किया। मुझे लगता है यह ठीक-ठाक लक्ष्य था। हम शुरुआत में विकेट लेने में सफल रहे और गेंदबाजों ने लगातार अंतराल पर विकेट लिए। अब 3-0 की जीत शानदार होगी। उम्मीद है कि हम ऐसा कर सकेंगे।
> **टॉम लाथम**, न्यूजीलैंड के कप्तान

> पहले ही वनडे मैच में मैन ऑफ द मैच बनना उम्मीदों से कही ज्यादा है। हमारी कोशिश पूरे 50 ओवर खेलना और रॉस टेलर के साथ जमे रहने की थी। मेरे लिए पहला विकेट लेना और ज्यादा रन नहीं देना काफी राहत देने वाला रहा। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में काफी दबाव होता है लेकिन यह शानदार था।
> **काइली जेमिसन**, न्यूजीलैंड के गेंदबाज

सैनी को गलत समय पर आउट होने का पछतावा

ऑकलैंड, प्रेट्र : भारतीय तेज गेंदबाज नवदीप सैनी शनिवार को यहां दूसरे वनडे में महत्वपूर्ण मौके पर आउट होने से काफी निराश हैं जिसके कारण टीम ने सीरीज गंवा दी। सैनी ने मैच के बाद कहा कि जब मैंने जाकर वीडियो देखूंगा तो मुझे पछतावा होगा। अगर मैं आउट नहीं होता तो शायद नतीजा अलग हो सकता था। मुझे पछतावा होगा कि मैं करीब पहुंच कर भी जीत नहीं दिला सका।

टेनिस डायरी

टेनिस में पहली बार किसी मैच को स्टेडियम में 51954 लोगों ने देखा, इस प्रदर्शनी सिंगल्स मैच में रोजर ने राफेल को हराया

फेडरर-नडाल के मैच में प्रशंसकों ने बनाया रिकॉर्ड

केपटाउन, एएफपी: दुनिया के दो महान टेनिस खिलाड़ियों स्विट्जरलैंड के रोजर फेडरर और स्पेन के राफेल नडाल के बीच शुक्रवार देर रात को यहां हुए प्रदर्शनी मैच को देखने 51954 लोग पहुंचे। इस मैच को द मैच इन अफ्रीका नाम दिया गया था और इसका आयोजन फेडरर फाउंडेशन ने अफ्रीका के दक्षिणी इलाके में शिक्षा और एथलीटों की मदद के इरादे से कराया गया। यह मैच फेडरर और नडाल की अपेक्षाओं से कहीं अधिक साबित हुआ, क्योंकि इससे कुल 35 लाख अमेरिकी डॉलर (25 करोड़ रुपये) जुटाए जा सके।

39 ग्रैंडस्लैम जीत चुके इन दिग्गजों के बीच हुए इस मैच के लिए 2010 के फीफा विश्व कप के लिए बनाए गए केपटाउन स्टेडियम में लोगों का हुजूम जुट गया। आयोजकों का कहना है कि इससे पहले किसी टेनिस मैच में 50000 से अधिक दर्शक नहीं जुटे हैं। यह एक नया रिकॉर्ड है। इससे पहले फेडरर और एलेक्जेंडर ज्वेरेव के मैच के लिए 42517 लोग पहुंचे थे।

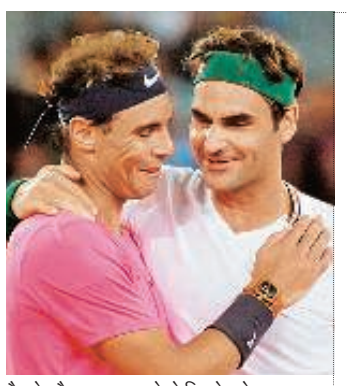

दक्षिण अफ्रीका फेडरर की मां का जन्मस्थान है और 38 साल के फेडरर यहां आकर हमेशा भावुक हो जाते हैं। फेडरर ने मैच से पहला कहा, 'अपनी मां के जन्मस्थान पर एक नेक काम के लिए अपने टेनिस करियर के सबसे बड़े प्रतिद्वंद्वी का सामना करना जादुई अहसास है।' इस टेनिस समारोह में एक डबल्स मैच भी खेला गया, जिसमें फेडरर के साथ माइक्रोसॉफ्ट के सह-संस्थापक बिल गेट्स भी खेले। नडाल के साथ दक्षिण अफ्रीका के कॉमेडियन एवं टेलीविजन होस्ट ट्रेवर नोह ने हिस्सा लिया। डबल्स का मैच एक सेट का हुआ जिसमें फेडरर और गेट्स ने 6-3 से जीत हासिल की। नडाल और फेडरर के बीच जो सिंगल्स मुकाबला हुआ, उसे भी फेडरर ने 6-4, 3-6, 6-3 से जीता। फेडरर की मां लिनेट ने मैच से पहले टॉस का सिक्का उछाला।

फेडरर ने कुल 20 ग्रैंडस्लैम जीते हैं जबकि नडाल ने 19 ग्रैंडस्लैम अपने नाम किए हैं। दक्षिण अफ्रीका में फेडरर पहली बार टेनिस खेल रहे थे। दक्षिण अफ्रीका के रग्बी विश्व कप विजेता टीम के कप्तान सिया कोलीसी मैच के दौरान उपस्थित थे और उन्होंने अपनी राष्ट्रीय टीम की रग्बी जर्सी फेडरर को दी जिसमें स्विट्जरलैंड के इस टेनिस खिलाड़ी का नाम लिखा था।

मैच के दौरान एक-दूसरे से मिलते राफेल नडाल (बायें) और रोजर फेडरर • एएफपी

फेड कप टूर्नामेंट में ओसाका हारीं, सेरेना जीतीं

पेरिस, रायटर: जापान की महिला टेनिस खिलाड़ी नाओमी ओसाका की यहां फेड कप टूर्नामेंट में वापसी निराशाजनक रही जब वह स्पेन की सारा सोरिबेस टोरमो के खिलाफ मैच 0-6, 3-6 से हार गईं। दो बार की ग्रैंडस्लैम विजेता ओसाका से जापान को उम्मीद थी कि वह पांच बार की विजेता स्पेन के खिलाफ टीम को बढ़त दिलाएंगी लेकिन वह ऐसा करने में नाकाम रहीं। वहीं, कार्ला सुआरेज नवारो ने मिस्की डोई को रिवर्स सिंगल्स में शनिवार को 6-3, 6-4 से हराकर स्पेन को 2-0 की बढ़त दिलाई। 18 बार फेड कप खिताब जीतने वाली अमेरिका की टीम ने लातविया के खिलाफ 2-0 की उपयोगी बढ़त हासिल की हुई है। सोफिया केनिन ने अनास्तासिजा सेवास्टोवा को 6-2, 6-2 से हराकर अमेरिका को 1-0 से आगे किया। इसके बाद सेरेना विलियम्स ने येलेना ओस्टापेंको को 7-6, 7-6 से हरा दिया।

11297 शिकायतें दर्ज कराई हैं यात्रियों ने घरेलू विमानन कंपनियों में 2019 में। 2018 में कुल 8409 शिकायतें दर्ज कराई गई थीं। नागरिक उड्डयन मंत्रालय की ओर से संसद में पेश डाटा के अनुसार सबसे अधिक शिकायतें मार्च में 1,684 दर्ज की गई हैं।

रविवार विशेष

टेक ज्ञान से ब्रेक डांस और कॉमेडी तक, सोशल मीडिया के सुपर स्टार करोड़ों दिलों पर राज कर रहे हैं। इसी सप्ताह जारी बिजनेस मैगजीन फोर्ब्स की प्रभावशाली युवाओं की 30 अंडर-30 में लिस्ट में यूट्यूबर गौरव चौधरी और वाइन स्टार भुवन बाम भी शामिल हैं। वहीं, 18 साल का टिक टोअर युवराज सिंह बॉलीवुड में छा गया है और अमिताभ बच्चन, ऋतिक रोशन जैसे दिग्गज उसके प्रशंसक बन चुके हैं। इन युवाओं ने केवल और केवल अपनी रचनात्मकता और कुछ कर दिखाने के जज्बे के बूते जहां बेशुमार शोहरत कमाई है, वहीं दौलत के मामले में भी वह झंडे गाड़ रहे हैं। कमाई की बात करें तो यह प्रतिमाह 20 लाख रुपये तक है। जोधपुर, बीकानेर से **मनीष गोधा** की रिपोर्ट।

मचा रहे धूम, कमाई भी बूम-बूम

सोशल मीडिया के सुपर स्टार : टेक ज्ञान से ब्रेक डांस और कॉमेडी तक, करोड़ों दिलों पर कर रहे राज

टेक्निकल गुरुजी : गौरव चौधरी

अजमेर में जन्मे और बीकानेर में पढ़े-लिखे 28 साल के गौरव चौधरी बीते कुछ साल से यूट्यूब पर टेक्निकल गुरुजी नाम से चैनल चला रहे हैं। इसमें वह नए मोबाइल और गैजेट्स के बारे में ज्ञान देते हैं। सबसे बड़ी बात यह कि शुद्ध हिंदी में। 1.5 करोड़ सब्सक्रिप्शन वाला उनका यह चैनल एक बड़ा हिंदी यूट्यूब चैनल है। बीकानेर से बीटेक और बिट्स पिलानी, दुबई कैंपस से माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक्स में एमई करने के बाद गौरव ने दुबई पुलिस के सीसीटीवी डिपार्टमेंट में बतौर सिक्युरिटी सिस्टम इंजीनियर काम कर रहे गौरव बताते हैं, टेक्नोलॉजी के प्रति मेरा रुझान बचपन से ही था। मुझे पता था कि भारत में, वह भी हिंदी पट्टी में, मोबाइल और रोजमर्रा के गैजेट्स या उपयोगी टेक्नोलॉजी को लेकर उत्सुकता है और आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी में उन्हें कोई एक्सपर्ट इसके बारे में सबकुछ बताता चले। मैंने

अभिनेत्री नोरा फतेही के साथ गौरव।

यही किया। गौरव के यूट्यूब चैनल के करीब 1.5 करोड़ सब्सक्राइबर्स हैं, जबकि उनके वीडियो व्यूज का आंकड़ा 1.5 अरब व्यूज का है। अपने यूट्यूब चैनल से अब तक 1.5 मिलियन डॉलर से अधिक (करीब 11 करोड़ रुपये) की कमाई कर चुके हैं। प्रतिमाह 20-25 लाख रुपये की कमाई कर रहे हैं। उन्हें कारों और बाइक का शौक है। मर्सिडीज, ऑडी, बीएमडब्ल्यू, पोर्श पानामेरा यह चार कारें उनके पास हैं। हायाबुसा बाइक भी है।

बाबा जैक्सन : युवराज सिंह

इन दिनों इंडियन माइकल जैक्सन की चहुंओर चर्चा है। जोधपुर का 18 साल का युवराज सिंह टिकटॉक स्टार बन चुका है। उसके डांस वीडियोज ने मेगा स्टार अमिताभ बच्चन, ऋतिक रोशन और टाइगर श्रॉफ जैसों का दिल जीता, जो अब उसकी फैन लिस्ट में शामिल हैं। बाबा जैक्सन नाम से टिकटॉक चैनल चलाने वाला यह राजस्थानी लड़का सोशल मीडिया का सुपर स्टार बन गया है। अब प्रसिद्ध कोरियोग्राफर रेमो डिसूजा ने आश्वासन दिया है कि वे भी उसे अपनी अगली फिल्म में अवसर देंगे। युवराज ने कहा, मुझे तो केवल माइकल जैक्सन को कॉपी करने का शौक था। दोस्तों ने वीडियो बनाए और जब ये सोशल मीडिया पर हिट होने लगे तो मैंने टिकटॉक पर वीडियो डालना शुरू कर दिया। युवराज के इस टिकटॉक चैनल के करीब 1.5 मिलियन सब्सक्राइबर हैं। 12वीं कक्षा में पढ़ने वाले युवराज के पिता जोधपुर में टाइल्स लगाने का काम करते हैं। दो बहनों समेत तीन बच्चों

स्ट्रीट डांसर फिल्म की टीम के साथ युवराज (मध्य)।

के इस परिवार का गुजारा भी मुश्किल से चलता है। जोधपुर के पावटा क्षेत्र में रहने वाले युवराज फिलहाल मुंबई में है। दिल्ली के एक प्रोफेशनल डांस ग्रुप के साथ भी जुड़ गए हैं। युवराज को फेमस होता देखकर मां और बहन बेहद खुश हैं। बहन ने बताया कि डांस का अभ्यास करते वक्त शीशा की बहुत जरूरत पड़ती है ताकि स्टेप्स देख सकें, लेकिन हमारे यहां इतना बड़ा शीशा नहीं था। तब युवराज मकान की छत पर कड़ी धूप में अभ्यास करता था ताकि अपनी परछाई को देख वह स्टेप्स सुधार सके।

प्रियंका चोपड़ा के साथ भुवन बाम। ● सौ. यूट्यूब, टिकटॉक (सभी फोटो)

बीबी की वाइन्स : भुवन बाम

बीबी यानी भुवन बाम। और बीबी की वाइन्स उनका यूट्यूब चैनल। दिल्ली निवासी 26 वर्षीय यह यूट्यूबर सोशल मीडिया का कॉमेडी किंग है। बड़ौदा, गुजरात में जन्में भुवन ने दिल्ली के ग्रीन फील्ड्स स्कूल और शहीद भगत सिंह कॉलेज से पढ़ाई करने के बाद करियर की शुरुआत एक संगीतकार के रूप में रेस्तरां में की। बाद में कुछ गाने भी कंपोज किए। लेकिन नाम मिला इंटरनेट पर। उन्होंने पहला कॉमेडी वीडियो एक न्यूज रिपोर्टर पर बनाया था। 2015 में यूट्यूब चैनल शुरू किया। इन वीडियोज में भुवन शहरी किशोरों के जीवन को हंसीमजाक के साथ दर्शाते हैं। खुद एक्टिंग करते हैं। उनके चैनल के वर्तमान में 1.62 करोड़ सब्सक्राइबर्स हैं। कमाई की बात करें तो यह औसत 25 लाख रुपये प्रतिमाह तक है। भुवन भी महंगी कारों के शौकीन हैं।

वाह उस्ताद नहीं, वाह बोड़ाम बोलिये जनाब

खासियत ▶ जाकिर हुसैन को भी पसंद है झारखंड के बोड़ाम में बनने वाला तबला

पूर्वी सिंहभूम के बोड़ाम प्रखंड के आंधारझोर में 200 वर्षों से बन रहे पारंपरिक वाद्ययंत्र

वीरेंद्र ओझा, जमशेदपुर

पूर्वी सिंहभूम, झारखंड स्थित बोड़ाम ब्लाक का आंधारझोर गांव वाद्ययंत्रों के लिए पूरे देश में मशहूर है। जिला मुख्यालय जमशेदपुर से करीब 20 किमी दूर इस गांव में ढोल, नगाड़ा, मांदर, मृदंग, तबला, कीर्तन खोल, नाल, सिंगबाजा, डमरू, बच्चों के लिए ढोलकी, ताशा, साइड ड्रम, रेगड़े, भांगड़ा ढोल जैसे पारंपरिक वाद्ययंत्र बनते हैं। देशभर के शहरों में यहां के वाद्ययंत्रों की गूंज सुनाई देती है। वाद्ययंत्रों की खासियत ऐसी कि तबले पर सधे हाथों की मस्त थाप पर मोहित होकर जब संगीतप्रेमी वाह उस्ताद बोल उठते हैं, उस समय उस्ताद के मन में वाह बोड़ाम चल रहा होता है।

जी हां, यहां से तबला खरीदने झारखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश, बंगाल, ओडिशा से लेकर दिल्ली और पंजाब तक के लोग आते हैं। तबला बनाने के माहिर मेघनाथ रूहीदास बताते हैं कि उस्ताद जाकिर हुसैन से लेकर बड़े-बड़े तबलावादकों को यहां का तबला पसंद है। यहां से तबला मंगाने के लिए ये उस्ताद एक-डेढ़ माह पहले फोन पर ऑर्डर देते हैं, जिसे उनके शिष्य आकर ले जाते हैं। रूहीदास बताते हैं कि यह हमारे लिए गर्व की बात है कि इतने प्रसिद्ध लोग हमारे यहां के तबले के मुरीद हैं। पंडित किशन महाराज भी यहां से तबला मंगवाते थे।

बोड़ाम ब्लाक के आंधारझोर गांव में तबले की गुणवत्ता परखते मेघनाथ रूहीदास (सबसे बाएं), साथ में हैं उनके सहयोगी। जागरण

पुरुष-महिला मिलकर बनाते हैं साज : आंधारझोर में वाद्ययंत्र बनाने का सिलसिला करीब 200 वर्ष से चल रहा है। इस कुटीर उद्योग को शीर्ष पर पहुचाने में यहां पुरुषों के साथ-साथ महिलाएं भी अहम भूमिका निभाती रही हैं। पुरुष वाद्य यंत्रों के लिए लकड़ी काटने-तराशने और चमड़ा साफ करने वचढ़ाने-कसने का काम करते हैं, जबकि महिलाएं छोल, नगाड़े, तबले, ताशा और अन्य गाजे-बाजे को सुंदर पेंटिंग के जरिए आकर्षक बनाती हैं। मधुर सुरों के साथ जुगलबंदी कर लोगों के दिलों के तार झंकृत करने वाले साज की आवाज में बोड़ाम के लोगों की कारीगरी भी घुली रहती है। सुर-संगीत को ऊंचाई देने के यंत्र बनाने का हुनर यहां सबके पास है। यही कारण है कि गांव का लगभग हर आदमी वाद्ययंत्र बनाने में माहिर है।

नीम-बबूल के तबले होते हैं उम्दा : मेघनाथ बताते हैं कि कुछ वाद्ययंत्रों का निर्माण लकड़ी से होता है, जबकि कुछ मिट्टी और लोहे से भी बनाए जाते हैं। वाद्ययंत्रों के निर्माण में शीशम, आम, कटहल, नीम आदि की लकड़ी ज्यादा इस्तेमाल की जाती है। वैसे नीम और बबूल से बने तबले उम्दा होते हैं। जाकिर हुसैन व किशन महाराज समेत कई तबला वादक इसी की मांग करते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक वाद्ययंत्रों ने तोड़ी कमर

एक समय था जब तबला, ढोलक, नाल की इतनी मांग होती थी कि बोड़ाम के कारीगरों को सोने-खाने तक की फुर्सत नहीं मिलती थी, अब ऐसा नहीं है। 10-15 साल में इलेक्ट्रॉनिक वाद्ययंत्रों के बाजार ने इस उद्योग की कमर तोड़ दी है। उनके परिवार के बच्चे और युवा भी पढ़-लिखकर दूसरे रोजगार में जा रहे हैं। गांव में लगभग 100 परिवार हैं, जो पहले इसी से आजीविका चलाते थे। अब तो उन्हें तबला बेचने के लिए हर रविवार को जमशेदपुर में अस्थायी दुकान सजाना पड़ता है। बावजूद नाम कायम है और तबले के शौकीन कई लोग इनके उत्पाद खरीदने को पहुंचते हैं।

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/positive-news

मिलिए 90 साल के 'युवा' से, समझ जाएंगे फलसफा

जीना इसी का नाम है

हिमांशु मिश्र, बरेली

रुहेलखंड विश्वविद्यालय के छात्र इस बुजुर्ग के स्वाभिमान और संघर्ष के कायल हैं। दिसंबर, जनवरी की भीषण ठंड में पारा चाहें कितना भी गिर जाए, उनका स्वाभिमान सर्वोच्च पर रहता है। वह झोले में नमकीन, गुड़, चना लेकर निकल पड़ते हैं। दिनभर में जो कमाते हैं, उससे परिवार चलाने में मदद करते हैं। छात्रों से कहते हैं, उम्र के साल मत गिनो, लक्ष्य गिनो...।

कलेंडर भले ही कहता रहे कि द्वारिका प्रसाद की उम्र 90 साल है मगर, जज्बा हर रोज उन्हें मेहनतकश युवा साबित करता है। मई-जून की तपती दोपहर उनके कदम नहीं रोक पाती। मौसम कोई भी हो, ताप अधिक हो या कम, उनका स्वाभिमान सदा सर्वोच्च पर स्थिर रहता है। छात्र उनके इसी जीवट के कायल हैं। परिवार में बेटे, बहू, पोता-पोती सब हैं। फिर भी आप चना, गुड़ बेचने क्यों आते हैं? अब बुजुर्ग हो गए हैं, आराम करिए... ये शब्द उनसे कई लोगों ने कहे। हर बार जवाब आता है- वे सब मेहनत कर अपनी जिंदगी अच्छे से बसर कर रहे हैं। मैं उन पर आश्रित क्यों रहूं। उम्र की परेशानियां कुछ नहीं। जो हिम्मत हार जाए, वो जिंदगी क्या...।

अनुभव और किस्से सुनने को लगती है भीड़ : जोगी नवादा में रहने वाले द्वारिका प्रसाद सुबह दस बजे अपने घर से ऑटो पकड़कर रुहेलखंड विश्वविद्यालय (बरेली, उप्र) पहुंच जाते हैं। खुद का बनाया हुआ बड़ा झोला पीठ पर टांगकर हर विभाग और हॉस्टल तक पहुंचते हैं। रोजाना आते हैं इसलिए छात्र, छात्राओं को इंतजार भी रहता है। झोले से निकाला गया गुड़, चना, नमकीन आदि की बिक्री करते हुए किस्से सुनाते हैं। कई छात्र तो उनसे बात करने के लिए ही खरीदारी करने पहुंच जाते हैं। द्वारिका कभी आजादी के किस्से सुनाते तो कभी देश में लगी इमरजेंसी के माहौल के माहौल से रूबरू कराते हैं। बरेली कब और कैसे बदलती गई, एक कहानी के तौर पर सुनाना शुरू करते हैं तो जमघट लगा रहता है। वह बताते हैं कि उनकी जमीन पर किसी ने कब्जा कर लिया है। पढ़े-लिखे नहीं इसलिए कुछ लोगों ने गुमराह कर लिया। जमीन पर कब्जा वापस लेने के लिए मामला कोर्ट में चल रहा है। तारीख होती है तो वहां भी जाता हूं। कहते हैं कि एक बेटा सब्जी विक्रेता है और दूसरा राजमिस्त्री। दोनों के बच्चे हैं। दिनभर बाद जब घर जाओ तो परिवार के साथ बैठकर सारी थकान दूर हो जाती है।

सिखा रहे जीने की कला...

- इस बुजुर्ग के स्वाभिमान और संघर्ष के कायल हैं रुहेलखंड विश्वविद्यालय के छात्र
- कैंपस में बेचते हैं गुड़-चना, छात्रों से कहते हैं- उम्र के साल मत गिनो, लक्ष्य गिनो

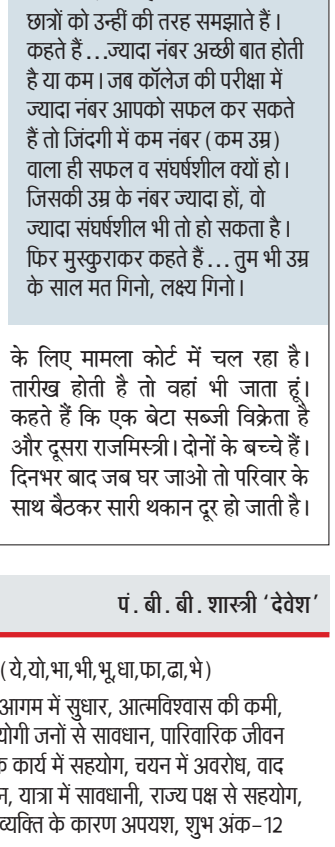
बरेली के रुहेलखंड विश्वविद्यालय में चना-गुड बेचने पहुंचे 90 वर्षीय द्वारिका प्रसाद। जागरण

उम्र की गिनती तुम भी मत करना...

आपकी उम्र क्या है...सवाल का जवाब छात्रों को उन्हीं की तरह समझाते हैं। कहते हैं...ज्यादा नंबर अच्छी बात होती है या कम। जब कॉलेज की परीक्षा में ज्यादा नंबर आपको सफल कर सकते हैं तो जिंदगी में कम नंबर (कम उम्र) वाला ही सफल व संघर्षशील क्यों हो। जिसकी उम्र के नंबर ज्यादा हों, वो ज्यादा संघर्षशील भी तो हो सकता है। फिर मुस्कुराकर कहते हैं... तुम भी उम्र के साल मत गिनो, लक्ष्य गिनो।

अनजान रिश्तों से बांधी भावनाओं की डोर...

संडे बॉक्स जरा हटके...

विनीत मिश्र, मथुरा

- लावारिस शवों को खुद मुखाग्नि देती हैं डॉ. लक्ष्मी गौतम
- निराश्रित महिलाओं के लिए बेटी बन करती हैं सेवा, निभाती हैं सभी दायित्व

ये अनजाने रिश्तों की एक सच्ची कहानी है। ये रिश्ते कागजी दस्तावेज तो नहीं बन सके, लेकिन अपनेपन की डोर से बंधते गए। जीते जी ही नहीं, दुनिया छोड़कर जाने के बाद भी। संवेदनाओं के इन मजबूत रिश्तों की डोर थामे हैं डॉ. लक्ष्मी गौतम। निराश्रितों के लिए बेटी बनकर सेवा करती हैं तो लावारिस शव का अंतिम संस्कार कर इंसानियत का फर्ज भी निभाती हैं।

धर्मनगरी वृंदावन में रहने वालीं डॉ. लक्ष्मी गौतम एक संस्थान में प्राचीन भारतीय इतिहास व संस्कृति पढ़ाती हैं। आश्रय सदन या फिर सड़क, किसी अनजान व असहाय की खबर मिलते ही लक्ष्मी पहुंच जाती हैं। उसकी हर संभव सहायता करती हैं। लावारिस शव हो तो घाट पर ले जाकर मुखाग्नि देती हैं। कनक फाउंडेशन नाम से सेवाभावी संस्था चला रहीं लक्ष्मी की तस्वीरें इन दिनों सोशल मीडिया पर सुर्खियां बटोर रही हैं, लोग उनके कामों को सराह रहे हैं। असहायों, अनजानों की मदद का उनका जज्बा मिसाल बन चुका है।

ऐसे शुरू हुआ सफर : लक्ष्मी बताती हैं कि वर्ष 2011 में राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा आश्रय सदनों में रह रहीं निराश्रित महिलाओं पर सर्वे कराया गया। सर्वे के दौरान उनकी समस्याएं पूछते-जानने के दौरान एक सवाल ने झकझोर दिया- जिन महिलाओं का कोई नहीं, उनका अंतिम संस्कार कैसे होता है? पता चला कि मौत के बाद शव बोरे में भरकर संबंधित विभाग की कार्रवाई के इंतजार में इधर-उधर छोड़ दिए जाते हैं। सर्वे रिपोर्ट तो भेज दी मगर, निराश्रितों का पारिवारिक सदस्य बनने की भी ठान ली। रिपोर्ट पर बाद में सुप्रीम कोर्ट ने आश्रय सदनों में मृत्यु होने पर वीडियोग्राफी कराने के निर्देश दिए थे। 2012 में उन्होंने कनकधारा फाउंडेशन बनाया। अब तक कितने अनजानों का अंतिम संस्कार किया? लक्ष्मी कहती हैं कि कभी गिनती नहीं की, औसतन हर साल ये संख्या 20 से 25 रहती ही है।

लक्ष्मी कहती हैं कि एक अंतिम संस्कार में चार से साढ़े चार हजार रुपये का खर्च आता है। यह खर्च खुद वहन करती हैं। दुनिया में जो आया है, सबको मोक्ष मिले, बस यही जीवन का उद्देश्य है। फाउंडेशन आश्रय सदन में राशन का इंतजाम कराता है। निराश्रितों का इलाज भी कराता है। आश्रयसदन में किसी भी महिला की मौत होती है, तो उसका अंतिम संस्कार करने के बाद 13 दिन बाद शुद्धीकरण कार्यक्रम भी करती हैं।

वृंदावन में लावारिश शव का अंतिम संस्कार करतीं डॉ लक्ष्मी गौतम। सौजन्य : डॉ. लक्ष्मी

जब बेटे के साथ किया अंतिम संस्कार

डॉ. गौतम के पति विजय कुमार बैंक में सहायक प्रबंधक पद से रिटायर्ड हैं। बड़ा बेटा अवन एनपीसीआइएल में साइंटिफिक अफसर है, बेटी अवनिका झारखंड में कोर्ट सब रजिस्ट्रार है। सबसे छोटा बेटा शुभम मर्चेंट नेवी में कैप्टन है। दो साल पहले का वाकया सुनाते हुए लक्ष्मी गौतम ने बताया कि छुट्टी पर शुभम घर आया था। वृंदावन में सड़क पर शव पड़ा होने की खबर मिली। शुभम को लेकर पहुंची। शव को श्मशान घाट ले गई। शाम होने को थी, स्कूटी की हेडलाइट में मुखाग्नि दी।

बर्ड वॉचरों के साथ बच्चों ने देखा पक्षियों का संसार

संवाद सहयोगी, रामनगर(नैनीताल)

- 115 प्रजाति के पक्षी नजर आए, ग्रीन विल्ड मलकोहा दिखने से बर्ड वॉचर उत्साहित
- पहले दिन सौ पक्षी प्रजाति की गई सूचीबद्ध, आज बनेगी अंतिम सूची

उत्तराखंड बर्ड फेस्टिवल के दूसरे दिन शनिवार को निर्धारित आठ ट्रेल में पक्षी विशेषज्ञों ने करीब 115 प्रजाति के पक्षियों का अवलोकन किया। अलग-अलग स्कूलों से पहुंचे दो सौ बच्चों ने भी पक्षियों का संसार देखा और उनके बारे में जाना।

फेस्टिवल में बर्ड वॉचिंग के लिए क्यारी में तीन, चूनाखान में एक, छोटी हल्द्वानी में एक व पवलगढ़ में दो ट्रेल बनाई गई हैं। इसके अलावा खेतों व गांव के आसपास भी बर्ड वॉचिंग की जा रही है। अलग-अलग चार टीमों ने दूरबीन से पेड़ों, खेतों, नदी-नालों में पक्षियों को देखकर उनके फोटो लिए। टीमों ने पक्षियों को सूचीबद्ध भी किया। उत्तराखंड के मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक राजीव भरतरी भी टीम के साथ बर्ड वॉचिंग के लिए गए। भरतरी ने बर्ड वॉचरों को बताया कि भरपूर प्रजाति वाले इस क्षेत्र को बर्ड डेस्टिनेशन के रूप में विकसित करने का प्रयास किया जाएगा।

दूसरे दिन लांग टेल्ड मिनिविट, नटहेच, पल्म हेडेड पैराकीट, कलीज फीजेंट, इंडियन रोबिन, ब्लैक चिन बेबलर, यलो फुटेड ग्रीन, पिगोन कॉमन ग्रीन, ग्रीन बिल्ड, इस्ट्रेड हॉर्न, क्रेस्टेड सरपेंट ईगल समेत अनेक प्रजाति के पक्षी देखे गए। क्षेत्र में मौजूद नए प्रजाति के पक्षियों को चेक लिस्ट में शामिल किया जाएगा।

वन संरक्षक पश्चिम सर्किल डॉ. पराग मधुकर धकाते ने बताया कि क्यारी ट्रेल पर गई टीम को ग्रीन विल्ड मलकोहा प्रजाति का पक्षी दिखा है, जो इस क्षेत्र में बहुत कम नजर आता है। पहले दिन सौ और करीब 115 प्रकार के पक्षी बर्ड फेस्टिवल के दूसरे दिन चिह्नित किए गए। रविवार को समापन पर फाइनल सूची बनाई जाएगी।

786 वाले 99 हजार नोट एकत्रित कर बनाया वर्ल्ड रिकार्ड

संवाद सूत्र, उदयपुर : करेंसीमैन के नाम से मशहूर उदयपुर के विनय भाणावत ने सात सौ छियासी अंक वाले 99 हजार नोटों का संग्रह कर वर्ल्ड रिकार्ड बनाया है। उनका नाम इंटरनेशनल जीनियस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड क्रायडन लंदन में दर्ज किया गया है।

इंटरनेशनल जीनियस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के मुख्य समन्वयक व अध्यक्ष डॉ. माइक ने लंदन स्थित कार्यालय से प्रमाण पत्र, स्मृति चिह्न व स्वर्ण पदक जारी कर बधाई दी। इंटरनेशनल जीनियस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स की भारत के हैदराबाद स्थित शाखा के मुख्य समन्वयक बिंगी नरेंद्र गौड़ ने यह जानकारी दी।

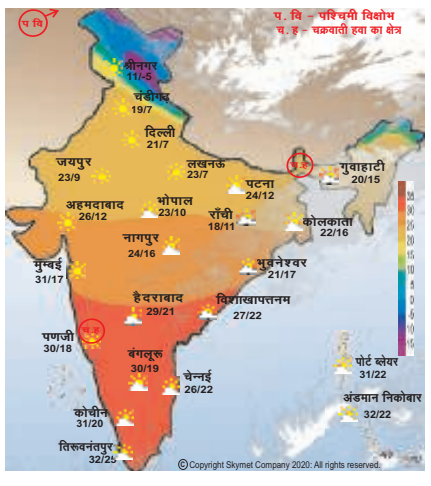

मौसम विशेष

दिल्ली सहित मैदानी भागों में ठंडी सुबह में कोहरा व कुहासा छाया रहेगा। दिन शीतल हवाओं के साथ आरामदायक तथा आसमान साफ रहेगा। जम्मू-कश्मीर, लद्दाख व हिमाचल प्रदेश में मौसम मुख्यतः शुष्क और सर्द बना रहेगा, जबकि सुबह में भी कुछ स्थानों पर तापमान शून्य से नीचे रहेगा।

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

शहर		शहर	
मुम्बई	32/18/आंबा अहमदाबाद		29/09/आंबा
कोलकाता	23/14/आंबा बड़ौदा		31/11/सा
चेन्नई	32/22/आंबा नागपुर		25/15/आंबा
हैदराबाद	30/20/आंबा इन्दौर		24/11/सा
बंगलूरू	29/18/सा रांची		20/12/आंबा
त्रिवेन्द्रम	32/24/सा पटना		26/12/सा
गुवाहाटी	22/13/आंबा जमशेदपुर		23/11/सा
गंगटोक	13/04/आंबा पुणे		31/16/आंबा

साप्ताहिक राशिफल

रविवार 9 फरवरी, 2020 से शनिवार 15 फरवरी, 2020 तक — पं. बी. बी. शास्त्री 'देवेश'

मेष (चू,चे,चो,ला,ली,लू,ले,लो,आ)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में सफलता, धन आगम में प्रगति, नए स्थान में व्यापार का योग, पारिवारिक सुख शांति, भौतिक साधनों की वृद्धि, संतान के प्रति कार्य योजना, शिक्षा में एकाग्रता, चयन में सफलता, वाद-विवाद से बचें, अधिकारी से अनबन, शुभ अंक-4

वृष (इ,ऊ,ए,ओ,पा,वी,वू,वे,वो)
धन आगम में प्रयास करें, धन के आवागमन में सावधानी रखें, पारिवारिक जीवन में मन खिन्न, शत्रु परास्त, दांपत्य में प्रसन्नता, जीवन साथी से मिलन, वाहन सावधानी से चलाएं, निर्माण की रूपरेखा, आय में प्रगति, अपयश, राज्य पक्ष से जांच योग, शुभ अंक-5

मिथुन (का,की,कू,घ,ड,छ,के,को,हा)
नए स्थान पर व्यापार का योग, सावधानी से कार्य करें, पारिवारिक जीवन में चिंता की समाप्ति, साधनों की वृद्धि, संतान के कार्य में प्रगति, शिक्षा में एकाग्रता बनाएं, व्यर्थ के कार्यों से बचें, जीवन साथी का सहयोग, यात्रा से लाभ, सलाह से कार्य करें, लोकप्रियता में वृद्धि, शुभ अंक-7

कर्क (ही,हू,हे,हो,डा,डी,डू,डे,डो)
व्यापार, उद्योग, नौकरी के क्षेत्रों में अवरोध, ध्यान से कार्य करें, नए क्षेत्र में सावधानी से कार्य करें, पारिवारिक जीवन में सुख शांति, साधन की वृद्धि, संतान से अनबन, शिक्षा में रुचि की कमी, व्यर्थ के कार्यों से बचें, यात्रा से बचें, राज्य पक्ष से सावधान, शुभ अंक-6

सिंह (मा,मी,मू,मे,मो,टा,टी,टू,टे)
आत्मविश्वास की वृद्धि, कार्य करने वालों से सहयोग, पारिवारिक जीवन में सुधार, वाहन का योग, संतान के कार्य के प्रति योजना, चयन में देरी, आलस्य से बचें, दांपत्य में अनबन, यात्रा से लाभ, अधिकारी जन सावधानी से कार्य करें, व्यय पर नियंत्रण करें, शुभ अंक-8

कन्या (टो,पा,पी,पू,ष,ण,ठ,पे,पो)
अर्थ साधन अच्छा, आत्मविश्वास की कमी, सहयोगी जनों से सावधान, पारिवारिक जीवन शांतिमय, साधनों की वृद्धि, संतान से अनबन, शिक्षा में रुचि, वाद-विवाद से बचें, दांपत्य में सुधार, खान-पान में सावधानी रखें, संपत्ति से हानि, सावधानी से कार्य करें, शुभ अंक-9

तुला (रा,री,रू,रे,रो,ता,ती,तू,ते)
नौकरी, उद्योग व्यापार के कार्य में प्रगति, धन आगम में प्रगति, पारिवारिक जीवन में साधन वृद्धि, वाहन योग, संतान की सफलता, तकनीकी विषय में रुचि, चयन में देरी, सलाह से किए गए कार्य में सफलता, जीवन साथी का मिलन, व्यय अधिक, अधिकारी से सहयोग, शुभ अंक-10

वृश्चिक (तो,ना,नी,नू,ने,नो,या,यी,यू)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में श्रम से सफलता, धन आगम अच्छा, साहस की वृद्धि, अच्छे समाचार की प्राप्ति, पारिवारिक जीवन में अवरोध, संतान के कार्य में सहयोग, शिक्षा में रुचि, त्वचा में विकार, दांपत्य में सुख, वाहन सावधानी से चलाएं, ग्रहों की प्रतिकूलता, शुभ अंक-11

धनु (ये,यो,भा,भी,भू,धा,फा,ढा,भे)
धन आगम में सुधार, आत्मविश्वास की कमी, सहयोगी जनों से सावधान, पारिवारिक जीवन अच्छा, संतान के कार्य में सहयोग, चयन में अवरोध, वाद दांपत्य में अनबन, यात्रा में सावधानी, राज्य पक्ष से सहयोग, आय में सुधार, व्यक्ति के कारण अपयश, शुभ अंक-12

मकर (भो,जा,ज,खी,खू,खे,खो,गा,गी)
अर्थ साधन ठीक, आत्मविश्वास की वृद्धि, नए स्थान में व्यापार, पारिवारिक जीवन में साधन की वृद्धि, वाहन योग, संतान के मंगल कार्य, शिक्षा में रुचि, शत्रु प्रभावी, यात्रा में लाभ, नए यंत्र स्थापन का योग, आय में प्रगति, व्यय पर नियंत्रण करें, शुभ अंक-1

कुम्भ (गू,गे,गो,सा,सी,सू,से,सा,दा)
प्रतिस्पर्धा का योग, धन आगम में सुधार, कार्य में सहयोग से सफलता, पारिवारिक जीवन में अनबन, भूमियोग, संतान के कार्य में सहयोग, शिक्षा में रुचि, स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें, दांपत्य में तनाव, यात्रा से लाभ, लोकप्रियता की वृद्धि, आय में सुधार, शुभ अंक-2

मीन (दी,दू,थ,झ,ञ, दे,दो,चा,ची)
धन आगम में प्रगति, नए स्थान में व्यापार का योग, पारिवारिक सुख-शांति, शिक्षा में एकाग्रता, चयन में सफलता, दांपत्य में प्रसन्नता, यात्रा से लाभ, अधिकारी से अनबन, राज्य पक्ष से सावधान, आय में प्रगति, व्यय पर नियंत्रण करें, मन में भय का प्रभाव, शुभ अंक-3

राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 9 फरवरी 2020
आजकल
16
www.jagran.com

भारत सरकार ने बीटी बैंगन की खेती पर रोक लगाई

आज ही 2010 में भारत सरकार ने बीटी बैंगन पर रोक लगा दी। आनुवांशिक तौर पर परिवर्तित बैंगन को अमेरिका स्थित मोनसैंटो और भारत स्थित माहिको ने विकसित किया था। इसे लेकर वैज्ञानिकों, किसानों और आम लोगों ने विरोध जताया था।

1951 में पहली शुरू हुआ जनगणना का काम

आज ही के दिन 1951 में भारत में जनगणना के लिए सूची बनाने का कार्य प्रारंभ हुआ था। यह नौवीं जनगणना थी। हालांकि स्वतंत्रता और बंटवारे के बाद यह पहली बार हो रही थी। उस वक्त देश की कुल आबादी करीब 36 करोड़ थी।

सामाजिक कार्यकर्ता से राजनीति के गलियारों तक पहुंचे अंतुले

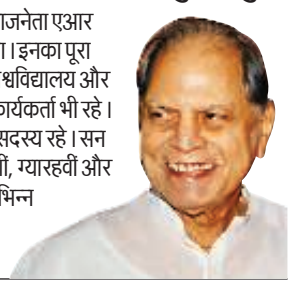

आज ही 1929 में सामाजिक कार्यकर्ता और राजनेता एआर अंतुले का जन्म महाराष्ट्र के रायगढ़ में हुआ था। इनका पूरा नाम अब्दुल रहमान अंतुले था। उन्होंने बंबई विश्वविद्यालय और लिंक्नस इन, लंदन से पढ़ाई की। वे सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता भी रहे। वर्ष 1962 से 1976 तक अंतुले महाराष्ट्र विधानसभा के सदस्य रहे। सन 1976 से 1980 तक वे राज्यसभा सांसद रहे। नवीं, दसवीं, ग्यारहवीं और चौदहवीं लोकसभा के सदस्य भी रहे। केंद्र सरकार में विभिन्न विभागों के मंत्री रहे। 2 दिसंबर 2014 को मुंबई में उनका निधन हो गया।

आपके कटे बाल भी कैंसर के इलाज में हो सकते हैं उपयोगी

- वैज्ञानिकों ने बालों से मेलानिन और केराटिन को अलग करने की विकसित की नई विधि
- केंद्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान के शोधकर्ताओं ने किया अध्ययन

कटे बालों से मिल सकता है जैविक फर्टीलाइजर। प्रतीकात्मक

नई दिल्ली, आइएसडब्ल्यू : कैंसर थैरेपी में मेलानिन और कॉस्मेटिक उद्योग में केराटिन का उपयोग बड़े पैमाने पर होता है। भारतीय वैज्ञानिकों ने अब एक ऐसी पद्धति विकसित की है, जो आपके कटे बालों से मेलानिन और केराटिन को अलग करने और उससे जैविक फर्टीलाइजर प्राप्त करने में उपयोगी हो सकती है।

मेलानिन और केराटिन मनुष्य के बालों में भरपूर मात्रा में पाया जाता है और दुनियाभर में हर दिन करीब तीन लाख टन मनुष्य के बालों का कूड़ा पैदा होता है। बाल जैविक रूप से अपघटित तो हो सकते हैं, पर अपशिष्टों के प्रवाह तंत्र में इनकी मौजूदगी पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म दे सकती है।

मेलानिन एक प्राकृतिक रंगद्रव्य (पिगमेंट) है, जो अधिकतर जीवों में पाया जाता है। जबकि, केराटिन एक रेशेदार संरचनात्मक प्रोटीन के परिवार का हिस्सा है, जिसे स्क्लेरोप्रोटीन के रूप में जाना जाता है। एक किलोग्राम केराटिन का बाजार मूल्य 15 हजार से 20 हजार रुपये है। वहीं, मेलानिन सोने से भी महंगा है और इसका मूल्य करीब पांच हजार रुपये प्रति ग्राम तक है। इस लिहाज से देखें तो इन दोनों तत्वों का महत्व काफी अधिक है।

हाइड्रेटेड आयनिक घोल का किया प्रयोग : केराटिन और मेलानिन को अलग करने के लिए हाइड्रेटेड आयनिक घोल का उपयोग किया गया है। इस घोल में बाल अपघटित होकर घुल जाते हैं। गुजरात के भावनगर में स्थित केंद्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान (सीएसएमसीआरआइ) के शोधकर्ता डॉ. कमलेश प्रसाद ने बताया कि आमतौर पर उपयोग होने वाले लवण (सॉल्ट) कमरे के तापमान पर ठोस होता है, लेकिन इस घोल में विशिष्ट लवण का उपयोग किया गया है, जो सामान्य कमरे के तापमान पर तरल अवस्था में होता है।

ऐसे अलग किया जाता है मेलेनिन और केराटिन : मानव बालों के नमूने को सबसे पहले एक खास सॉल्यूशन की मदद से साफ किया गया है। इसके बाद हाइड्रेटेड आयनिक तरल में डालकर नौ घंटे तक इसे हिलाया गया, ताकि बाल उसमें पूरी तरह घुल जाएं। ऐसा करने पर एक काले रंग का घोल बन जाता है। इस घोल में हाइड्रोक्लोरिक एसिड मिलाया गया, तो ब्लैक मेलानिन तलछट के रूप में बच जाता है। मेलानिन निकालने के बाद, बचे हुए सॉल्यूशन में एसीटोन मिलाया गया, जिससे केराटिन प्राप्त किया गया है।

एक किग्रा बालों में मिलता है 200 ग्राम मेलानिन: सीएसएमसीआरआइ के शोधकर्ता डॉ. कमलेश प्रसाद ने बताया कि मनुष्य के कटे बालों को घोलने में हाइड्रेटेड आयनिक घोल को प्रभावी पाया गया है। इस पद्धति से 10 से 22 फीसद मेलानिन और 36 से 38 फीसद तक केराटिन अलग करने में सफलता मिली है। इन तत्वों को अलग करने के बाद बचे अपशिष्ट को समुद्री शैवाल के साथ बराबर अनुपात में मिलाकर फर्टीलाइजर के रूप में उपयोग किया जा सकता है। एक किलोग्राम मनुष्य के बालों से 200 ग्राम मेलानिन, 360 ग्राम केराटिन और 300 मिलीलीटर आयनिक तरल मिल सकता है।

बनाया जा सकता है और कीमती : डॉ. प्रसाद का कहना है कि इस अध्ययन में फिलहाल मेलानिन का अपरिष्कृत रूप प्राप्त किया गया है। अगर परिष्कृत करके इसे सल्फर रहित कर दिया जाए तो इसका मूल्य और भी बढ़ सकता है। हो सकता है यह सोने जितना कीमती हो जाए।

फोटो न्यूज

बढ़ाई जा रही महामशीन की क्षमता

फ्रांस-स्विट्जरलैंड की सीमा पर जिनेवा में जमीन से 600 फीट नीचे 3.8 मीटर चौड़ी सुरंग में स्थित गॉड पार्टिकल खोजने वाले लॉर्ज हेड्रॉन कोलाइडर में मरम्मत और क्षमता बढ़ाने का कार्य चल रहा है। इसका संचालन यूरोपीय नाभिकीय अनुसंधान संगठन (सर्न) करता है। यह दुनिया का सबसे बड़ा पार्टिकल एक्सीलेटर है, जो बीते छह साल से बंद है। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि नई ताकत के साथ यह दोबारा शुरू होगा तो डार्क मैटर जैसी अबूझ पहेलियों से पर्दा हटेगा। तस्वीर में महा मशीन की मरम्मत कर रहे श्रमिक किनारे आराम कर रहे हैं। एएफपी

इधर-उधर की

मोटापे के चलते उल्लू डाइट पर

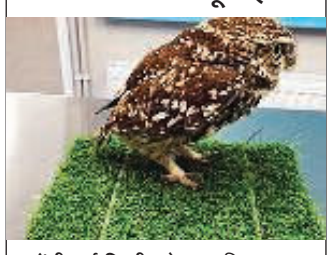

एजेंसी, नई दिल्ली : मोटापा दुनिया की सबसे बड़ी समस्या बनता जा रहा है। हर आदमी खुद को फिट रखने के लिए तरह-तरह की जुगत करता दिख रहा है, ऐसे में मोटापे से ग्रस्त एक उल्लू का डाइट (अल्पाहार) पर जाना सबके कौतूहल का विषय बना हुआ है। इंस्टाग्राम पर ब्रिटेन के सफॉक आउल सैंक्चुरी की ओर से साझा की गई एक पोस्ट के मुताबिक, यह उल्लू किसी गीले स्थान पर मिला। दरअसल प्लंप नामक यह उल्लू अधिक वजन के चलते उड़ नहीं पा रहा था। सैंक्चुरी में लाने के समय इस उल्लू का वजन 245 ग्राम था। इसके बाद उसे कुछ हफ्तों की कड़ी निगरानी और डाइट पर रखा गया। धीरे-धीरे उसका वजन कम हुआ और वापस खुले आकाश में छोड़ दिया गया। इंस्टाग्राम की इस पोस्ट पर दर्शकों ने प्लंप को शुभकामना संदेश दिए और आकाश में भी उसे डाइट बरकरार रखने व स्वस्थ रहने की कामना की है।

धूल के कण से खुलेगा चंद्रमा का राज

तलाशी राह ▶ नई तकनीक से किया जाएगा चंद्रमा से जुटाए गए नमूनों का विश्लेषण

शिकागो यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने 'एटम प्रोब टोमोग्राफी' का किया इस्तेमाल

चंद्रमा की सतह पर खोदाई कर नमूने एकत्र करते अंतरिक्ष यात्री जेम्स बी. इरविन। फाइल/एएनआइ

वाशिंगटन डीसी, एएनआइ : चंद्रमा की सतह की मिट्टी की केमिस्ट्री का विश्लेषण करने के लिए शोधकर्ताओं ने नई राह तलाशी है, उनका कहना है कि अब चंद्रमा की धूल के कण से भी इसके रहस्यों से पर्दा उठाया जा सकता है और यह पता लगाया जा सकता है कि आखिर चंद्रमा की सतह और उसके गर्त में कौन-कौन-से बहुमूल्य संसाधन दबे पड़े हैं।

दरअसल, शोधकर्ताओं ने चंद्रमा की मिट्टी के नमूनों का विश्लेषण करने के लिए एक नई विधि खोजी है। उनका दावा है कि इस तकनीक में इतनी उच्च संवेदनशीलता और हाई रिजॉल्यूशन है कि केवल एक कण जैसे नमूने से भी ऐसी चीजें खोजी जा सकती हैं जो आपको कहीं और नहीं मिलेंगी। शोधकर्ताओं की यह खोज 'मीटियोरिटिक्स एंड प्लेनेटरी साइंस' में प्रकाशित हुई है। इसका उद्देश्य चंद्रमा की सतह की स्थिति का आकलन करना और वहां पानी और हीलियम जैसे कीमती संसाधनों के निर्माण के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना है।

शोधकर्ताओं ने कहा कि नई तकनीक को एटम प्रोब टोमोग्राफी (एपीटी) कहा जाता है। इसका उपयोग आम तौर पर वैज्ञानिकों द्वारा स्टील और नैनोटायर जैसी औद्योगिक सामग्रियों को बेहतर बनाने के लिए किया जाता है। किसी भी सामग्री का बारीकी से विश्लेषण करने की इसकी क्षमता के कारण ही इस तकनीक से चंद्रमा के नमूनों का बेहतर अध्ययन किया जाता है।

भूवैज्ञानिकों के लिए भी नई है तकनीक : इस शोध की पहली लेखक और यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो की शोधकर्ता जेन्निका ग्रियर ने कहा, 'हम अंतरिक्ष से लाई गई चट्टानों का बारीकी से विश्लेषण कर रहे हैं। यह पहली बार है जब चंद्रमा से लाए गए किसी नमूने का इस तरह अध्ययन किया गया है। हम एक ऐसी तकनीक का उपयोग कर रहे हैं, जिसे कई भूवैज्ञानिकों ने अभी तक सुना भी नहीं है।' इस अध्ययन के सह-लेखक, फील्ड म्यूजियम के क्यूरेटर और यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो में एसोसिएट प्रोफेसर फिलिप हेक फिलिप हेक कहते हैं कि हम इस तकनीक को उन नमूनों पर लागू कर सकते हैं जिनका किसी ने अध्ययन नहीं किया है।

अनाज के दाने के बराबर नमूना है पर्याप्त : 1972 के नासा के अपोलो 17 मिशन के अंतरिक्ष यात्री चंद्रमा से 111 किलोग्राम चट्टानें और मिट्टी के नमूने लाए थे। शोधकर्ताओं ने कहा कि नई विधि के जरिये इनके विश्लेषण के लिए हमें इनके बहुत बड़े हिस्से की बजाय एक अनाज के दाने या मनुष्य के बाल के बराबर का नमूना भी पर्याप्त है।

संसाधनों को निकालने में मदद करेगा अध्ययन : नई तकनीक से विश्लेषण के दौरान जेन्निका ग्रियर ने इन नमूनों में लोहा, पानी और हीलियम की पहचान की है। उन्होंने कहा कि हमारा अध्ययन भविष्य में अंतरिक्ष यात्रियों को चंद्रमा से इन बहुमूल्य संसाधनों को निकालने के लिए चंद्रमा पर अपनी गतिविधियों को जारी रखने के लिए प्रेरित करेगा।

नासा ने पहली बार रखा था चंद्रमा की सतह पर कदम : वर्ष 1972 में अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के सफल चंद्र मिशन के बाद से चंद्रमा की सतह पर अब तक कोई नहीं गया है और न ही हाल-फिलहाल किसी एजेंसी या देश की वहां जाने की योजना है। शोधकर्ताओं ने कहा, 'अंतरिक्ष यात्रियों द्वारा चंद्रमा से लाई गई मिट्टी का हर कण बेहद कीमती है यह भविष्य में संसाधनों की कमी को पूरा कर सकता है।

दृष्टिहीनता से जुड़े प्रोटीन की पहचान

शोध अनुसंधान

शोधकर्ताओं ने एक ऐसे प्रोटीन की पहचान की है, जिसका संबंध उम्र संबंधी आंख के रोग मैक्युलर डिजेनरेशन से होता है। यह रोग दृष्टिहीनता का आम कारण माना जाता है। बुजुर्गों में यह रोग समय के साथ गंभीर होते जाता और रेटिना का केंद्र कमजोर पड़ जाता है।

नेचर पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, सामान्य लोगों की तुलना में एज-रिलेटेड मैक्युलर डिजेनरेशन (एएमडी) पीड़ितों के रक्त में एफएचआर4 नामक प्रोटीन उच्च स्तर पर पाया गया। यह निष्कर्ष 484 रोगियों और 522 सामान्य लोगों पर किए गए एक अध्ययन के आधार पर निकाला गया है। मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता पॉल बिशप ने कहा, 'रक्त में एफएचआर4 प्रोटीन के स्तर को मापने के साथ एएमडी के खतरे का आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है। यह शोध प्रोटीन के स्तर को घटाने के अलावा नए इलाज के विकास की राह भी प्रशस्त करता है और इससे दृष्टिहीनता के खतरे को भी कम करने में मदद मिलेगी।' -आइएएनएस

हाई बीपी वाली गर्भवती महिलाओं में हृदय रोग का खतरा

शोधकर्ताओं ने आगाह किया है कि पहली बार गर्भवती होने वाली उन महिलाओं में हृदय रोग का खतरा ज्यादा हो सकता है, जो उच्च रक्तचाप यानी हाई ब्लड प्रेशर (बीपी) से पीड़ित होती हैं। दुनिया भर में करीब दो से आठ फीसद गर्भवती महिलाएं प्रीक्लैम्प्सिया से पीड़ित पाई जाती हैं। इस समस्या की पहचान हाई बीपी से होती है। यह समस्या गर्भावस्था के 20 हफ्ते के बाद शुरू होती है। अमेरिका की रटगर्स यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के अनुसार, प्रीक्लैम्प्सिया के चलते शिशु का समय से पहले जन्म भी हो सकता है। यह निष्कर्ष 18 से 54 साल की 6360 महिलाओं में हृदय रोग को लेकर किए गए एक अध्ययन के आधार पर निकाला है। ये महिलाएं पहली बार गर्भावस्था में प्रीक्लैम्प्सिया से पीड़ित पाई गई थीं। शोधकर्ताओं ने कहा यह अध्ययन उच्च रक्तचाप वाली महिलाओं को मां बनने के दौरान तटस्थ रहने में मदद करेगा और उनके शिशु भी स्वस्थ पैदा होंगे। -आइएएनएस

फिल्म रिव्यू

★★★

मलंग

प्रमुख कलाकार : आदित्य राय कपूर, अनिल कपूर, दिशा पाटनी, कुणाल खेमू, एली अवराम
निर्देशक : मोहित सूरी
अवधि : दो घंटे 14 मिनट

मदमस्त नहीं करती फिल्म

मोहित सूरी ने गोवा की पृष्ठभूमि में रोमांस, एक्शन, थ्रिलर जैसे मसालों के साथ सस्पेंस का समावेश कर 'मलंग' का निर्देशन किया है। असीम अरोड़ा द्वारा लिखी कहानी की शुरुआत अद्वैत ठाकुर (आदित्य रॉय कपूर) द्वारा जेल में कैदियों से अपना हैंडबैंड हासिल करने को लेकर जंग से होती है। वहां से उसके डोले-शोले तो दिखते ही हैं, ताकत का अंदाजा भी हो जाता है। जब गोवा क्रिसमस की तैयारियों में डूबा है, तीन पुलिस अधिकारियों का कत्ल सिलसिलेवार ढंग से होता है। स्पेशल क्राइम ब्रांच का अधिकारी माइकल (कुणाल खेमू) पड़ताल में जुटता है। इन सभी को मारने से पहले अद्वैत पुलिस इंस्पेक्टर आगाशे (अनिल कपूर) को इसकी जानकारी मोबाइल पर देता है। आगाशे आपराधिक मामलों में अपराधी के कोर्ट जाने, तारीख मिलने और सुनवाई लंबी चलने के बजाय त्वरित कार्रवाई करने में यकीन रखता है। वह भी नशे का आदी होता है। कहानी अद्वैत के अतीत में आती-जाती है। पता चलता है कि गोवा घूमने आया युवा अद्वैत और सारा (दिशा पाटनी) रेव पार्टी में मिलते हैं। सारा अपने तरीके से जीना चाहती है। उसने अपने हाथ में एक बैंड बांधा है। अपना हर डर दूर करने के साथ वह एक गांठ खोलती जाती है। धीरे-धीरे परतें खुलती हैं कि पांच साल पहले ये सब कहां और कैसे मिले थे? पुलिस अधिकारियों की हत्या के पीछे क्या राज है?

मोहित सूरी ने मनमर्जी जिंदगी जीने की ख्वाहिश रखने वाले युवाओं को आजादी का मतलब समझाने का अप्रत्यक्ष रूप से प्रयास किया है। जटिल किरदारों के साथ उनके अंदर अंतर्द्वंद्व भी दर्शाने का प्रयास किया है, मगर उनके मानसिक और भावनात्मक द्वंद्व को प्रकट करने के लिए किरदारों की साइकोलॉजी को लेखक एक्सप्लोर नहीं कर पाए हैं। कई जगह एक्शन थोपा हुआ लगता है। सारा और अद्वैत के किरदारों की पारिवारिक पृष्ठभूमि में लेखक ज्यादा नहीं जाते। वह सतही तौर पर उनके बारे में जानकारी देते हैं।

फिल्म में कुछ किरदारों को ड्रग्स लेते दिखाया गया है, लिहाजा स्क्रीन पर उन दृश्यों के साथ अंग्रेजी में वैधानिक चेतावनियां दिखाई जाती हैं। हालांकि फिल्म में ड्रग्स का सेवन करने वाली जेस्सी (एली अवराम) ही उसके दुष्परिणामों पर बात करती है, बाकी किरदार नहीं। स्क्रीन पर गोवा की खूबसूरती आपका मन मोह लेती है। आदित्य एक्शन करते हुए अच्छे लगते हैं, हालांकि अभिनय में उनका दमखम कम नजर आता है। दिशा पाटनी ग्लैमरस दिखी हैं, लेकिन चेहरे पर भाव नहीं उभरते। दोनों की केमिस्ट्री अच्छी है, लेकिन किरदारों में अधूरापन है। अनिल कपूर दृश्यों में जीवंतता लाते हैं। आक्रामक पुलिस अधिकारी की भूमिका में वह जंचते हैं। कुणाल खेमू स्क्रिप्ट के दायरे में किरदार के साथ न्याय करते हैं। एली अवराम प्रभाव छोड़ने में कामयाब रहती हैं। ड्रग्स बेचने वाले विदेशी द्वारा हिंदी और मराठी में बात करने का प्रसंग रोचक है। टाइटल सांग और अंकित तिवारी द्वारा गाया फिर न मिले गाना कर्णप्रिय है। **स्मिता श्रीवास्तव**

★★★★★ उत्कृष्ट ★★★★ बहुत अच्छी ★★★ अच्छी ★★ औसत ★ औसत से कम

स्क्रीन शॉट

पापा की बातों से वरुण धवन को होता है तनाव

हिंदी फिल्मों की शूटिंग में पहले स्क्रिप्ट कलाकारों को नहीं दी जाती थी। सेट पर आने पर कलाकारों को सीन की जानकारी दी जाती थी। कई बार सीन को सेट पर ही लिखा जाता था। अब वैसा नहीं है। अब स्क्रिप्ट पढ़ने के बाद ही कलाकार फिल्म में काम करना स्वीकार करते हैं। मगर बात जब अपने पिता की आए तो बेटों को उनके मुताबिक ही चलना पड़ता है। यहां बात हो रही है वरुण धवन की। वह अपने पिता डेविड धवन के निर्देशन में 'कुली नंबर 1' में काम कर रहे हैं। डेविड अब भी कलाकारों को स्क्रिप्ट नहीं देते हैं। ऐसे में उनके साथ काम करने के संबंध में वरुण धवन कहते हैं, 'पापा स्क्रिप्ट नहीं देते हैं, लेकिन उनका होमवर्क सारे लोगों से बहुत ज्यादा होता है। वह अपने काम को लेकर इतने गंभीर और जुनूनी हैं कि वह हर वक्त बस काम के बारे में ही बात करते हैं। अगर मैं बोल भी दूं कि पापा मेरी दूसरी फिल्म आ रही हैं, तो वह कहते हैं, नहीं तुमको यह करना है। मैं कहता हूं कि यह मेरा काम नहीं है। मैं एक्टर हूं। वह कहते हैं, तुम्हें भी ध्यान देना चाहिए। वह निर्देशक हैं, लेकिन मैं निर्देशक नहीं हूं, वह डिपार्टमेंट मेरा नहीं है। पापा के साथ काम करने पर वह सब सीखने को मिलता है, जो लोग अनुभवों से सीखते हैं। जब फिल्म बनती है तो कैसे बनती है, कौन लोग अच्छे हैं काम के लिए, क्या करने से फिल्म अच्छी बनेगी, जैसी बातें वह मुझे बताते रहते हैं। वह कहते रहते हैं और मुझे तनाव हो जाता है।'

गुनीत मोंगा लाएंगी सात कहानियों की एंथोलॉजी

शॉर्ट फिल्मों का कॉन्सेप्ट भारत में अब बदल रहा है। अब शॉर्ट फिल्मों को मिलाकर एंथोलॉजी (कथा संकलन) बनाने का ट्रेंड जोरों पर है। नेटफ्लिक्स पर 'लस्ट स्टोरी' और 'घोस्ट स्टोरीज' जैसी एंथोलॉजी पहले से ही चल रही हैं। उसमें चार अलग-अलग निर्देशकों ने एक ही विषय पर चार अलग लघु फिल्म का निर्देशन किया था। अब निर्माता-निर्देशक गुनीत मोंगा शॉर्ट फिल्मों की एंथोलॉजी लेकर आ रही हैं, जिसका नाम 'जिंदगी इनशॉर्ट' होगा। इसमें सात लोगों की जिंदगी से जुड़ी हुई कहानियां होंगी, जो ऑनलाइन रोमांस, बचपन की मासूमियत, बुढ़ापे की उलझनों, शादी में प्यार, बेवफाई, परिवार में अपनी पहचान बनाने वाली महिला की परेशानियों की बात करेंगी। इन सात कहानियों के नाम 'छन्जू के दही भल्ले', 'नैनो सो फोबिया', 'सनी साइड अपर', 'स्वाहा', 'पिन्नी', 'स्लीपिंग पार्टनर' और 'थप्पड़' होंगी। गुनीत का कहना है कि इस एंथोलॉजी में जिंदगी की विभिन्न बारीकियों को संक्षेप में दिखाने का प्रयास है। इन सात शॉर्ट कहानियों का निर्देशन पुनर्वसु नाइक, ताहिरा कश्यप, राकेश सेन, गौतम गोविंद शर्मा, विजेयता कुमार, स्मृतिका पाणिग्रही और विनय चव्वल ने किया है। फिल्म में नीना गुप्ता, संजय कपूर, दिव्या दत्ता, दीपक डोबरियाल, ईशा तलवार, नकुल मेहता जैसे कई कलाकार हैं।

शारिब हाशमी को चाहिए सुपरपावर

हिंदी सिनेमा में अभिनेता शारिब हाशमी काफी काम कर रहे हैं। पिछले दिनों वेब शो 'द फैमिली मैन' में मनोज बाजपेयी के साथ नजर आए शारिब का काम सराहा गया था। 'जब तक है जान', 'फिल्मिस्तान, 'स्लमडॉग मिलेनियर', 'उजड़ा चमन' जैसी फिल्मों में अभिनय कर चुके शारिब को सुपरपावर चाहिए। शनिवार को सोशल मीडिया पर सवालों के जवाब में शारिब ने बताया कि उन्हें अगर सुपरपावर मिल जाए तो वह कई बड़े निर्देशकों की फिल्मों में अहम किरदार करना चाहेंगे। उनमें अनुराग कश्यप, जोया अख्तर, नितिन कक्कड़, हंसल मेहता, राज एंड डीके, अनुभव सिन्हा, दिबाकर बनर्जी, कनु बहल, शुजीत सरकार, अमर कौशिक, अमित शर्मा शामिल हैं। शारिब की आगामी फिल्म 'दरबान' होगी। शारिब के मुताबिक इस फिल्म में एक संदेश भी होगा। इस फिल्म के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि इस फिल्म के किरदार से बाहर निकलने में उन्हें वक्त लगा।

पहले दिन 'मलंग' ने कमाए छह करोड़

इस शुक्रवार को रिलीज फिल्मों में से मोहित सूरी द्वारा निर्देशित 'मलंग' कमाई के मामले में अव्वल रही। करीब 6.7 करोड़ रुपये की कमाई के साथ यह आदित्य रॉय कपूर की पहली सबसे बड़ी ओपनिंग फिल्म रही। वहीं समीक्षकों से अच्छी प्रतिक्रिया मिलने के बावजूद विधु विनोद चोपड़ा के निर्देशन में बनी फिल्म 'शिकारा' की पहले दिन बॉक्स ऑफिस की कमाई 1.2 करोड़ रुपये रही, जबकि ओम राउत के निर्देशन में बनी फिल्म 'तान्हाजी' का जलवा बॉक्स ऑफिस पर बरकरार है। अजय देवगन और सैफ अली खान अभिनीत इस फिल्म ने चौथे सप्ताह में करीब 21.65 करोड़ रुपये की कमाई की। इसके साथ ही इस फिल्म की कुल कमाई 259 करोड़ रुपये के पार पहुंच गई है। गोवा की पृष्ठभूमि में सेट 'मलंग' में अनिल कपूर, आदित्य रॉय कपूर और दिशा पाटनी प्रमुख भूमिका में हैं, जबकि 'शिकारा' साल 1990 में कश्मीरी पंडितों को जबरन बेघर करने की कहानी है। इन फिल्मों के साथ रिलीज हुई विक्रम भट्ट निर्देशित फिल्म 'हैक्ड' दर्शकों को आकर्षित करने में नाकामयाब रही। इस फिल्म से अभिनेत्री हिना खान ने हिंदी सिनेमा में डेब्यू किया है।

दीपिका बनेंगी राधा, कार्तिक कृष्ण?

अब फिल्ममेकर कंटेंट के साथ-साथ दर्शकों को नई जोड़ियों से भी रूबरू करवा रहे हैं। इरफान और विक्रांत मेस्सी के साथ काम कर चुकीं दीपिका पादुकोण अब कार्तिक आर्यन के साथ नजर आ सकती हैं। खबरें हैं कि दीपिका और कार्तिक को इम्तियाज अली अपनी फिल्म में साथ ला सकते हैं। सुनने में आया है कि इम्तियाज की अगली फिल्म राधा-कृष्ण पर आधारित होगी और इस फिल्म के लिए दीपिका और कार्तिक का नाम सामने आ रहा है। राधा कृष्ण से उम्र में बड़ी थीं। इसी तर्ज पर दीपिका और कार्तिक की जोड़ी को लेने की बात हो रही हैं। दीपिका पादुकोण 34 साल की हैं, जबकि कार्तिक आर्यन 29 साल के। इससे पहले कार्तिक को दीपिका के साथ 'पति, पत्नी और वो' के गाने धीमे धीमे... चैलेंज पर साथ में एयरपोर्ट पर डांस करते हुए देखा गया था। कुछ समय पहले कार्तिक इंस्टाग्राम पर अपनी और दीपिका की तस्वीर साझा करके लिख चुके हैं कि 'है किसी डायरेक्टर में दम'। इस पर जब दीपिका ने पूछा कि ये तस्वीरें क्यों लगाई हैं, इस पर कार्तिक ने 'ओम शांति ओम' का डायलॉग लिखते हुए कहा था, क्योंकि तब से कायनात इस कोशिश में लगी है। इस पर दीपिका ने लिखा था कि अगर किसी चीज को दिल से चाहो तो पूरी कायनात उसे तुमसे मिलाने की कोशिश में लग जाती है। लगता है अब इन दोनों की साथ काम करने की तमन्ना इम्तियाज अली की फिल्म में पूरी हो जाएगी। हालांकि किसी की भी तरफ से अब तक इस खबर की कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है।

सलमान से मिलने 'बिग बॉस' के घर सपरिवार पहुंचे गायक अदनान सामी

चर्चित रियलिटी शो 'बिग बॉस' के घर में सप्ताहांत में सितारे अपनी फिल्म या शो के प्रमोशन के लिए आते रहते हैं। इस बार शो में गायक अदनान सामी अपने म्यूजिक वीडियो 'तू याद आया' के प्रमोशन के सिलसिले में अपनी बेटी मेडीना और पत्नी रोया के साथ पहुंचे। सोशल मीडिया पर अदनान ने बेटी को गोद में लेकर सलमान खान के साथ कुछ तस्वीरें साझा करते हुए लिखा, 'पिछली रात 'बिग बॉस' के घर में भाई सलमान खान के साथ हमने खूब मजे किए।' पिछले महीने ही अदनान सामी को 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया था। सलमान अभिनीत फिल्म 'बजरंगी भाईजान' में भी अदनान अपनी आवाज दे चुके हैं।